Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शालहोत्रसंग्रह ।

चित्रदर्पणसहित.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Badri prasad Pahwa
P.o. Harchandpur
Distt. Etawah U.P.

1125	Trafo
1145	Ronalga 4
1160	Dap Bose 25 kg
4130	

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Babu Prasad Pahuja, Hanchandpur Etawah

॥ श्रीः ॥

शालहोत्रसंग्रह ।

(चित्रदर्पण सहित)

जिसको

ताल्लुकेदार श्रीकेशवसिंहजी साहब ताल्लुके तिअरिने नानाप्रकारके मनहरन सरस, सुंदर, सुगम, भावभरित छंदोंमें बनाया ।

जिसमें

घोडोंके क्रयविक्रय, गुणदोष शुभाशुभ, लक्षणकुलक्षण, अंग व प्रत्यंग निरीक्षण तथा उनके विषयक यावत् बातें और संम्पूर्ण रोगोंके उपचार विचार निदान चिकित्सा विधिविधान सहित विस्तारपूर्वक वर्णित हैं ।

उसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७७ शके १८४२.

कल्याण-मुंबई.

सब हक प्रकाशकर्त्ताने स्वाधीन रक्खा है.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूमिका ।

सोरठा—विविध ग्रंथकर सार, निजपर अनुभवहू सहित ।
बुधिवर कविन विचार, माथि केशव अम्मृत लह्यो ॥

महाशय ! हमारे पूर्व ऋषि ब्रह्मर्षि प्रणीत सर्वमान्य संस्कृत ग्रंथ, संस्कृत पठन पाठनाभावसे प्रायः लुप्तप्राय होतेजाते हैं; जिससे हमारी विद्या बुद्धि ज्ञान विचार क्रमशः उन्हींके साथ स्वाहा हो रहे हैं । हममें क्या करनेकी शक्ति थी और वर्तमान कालमें हम कैसे अशक्त निर्जीव हो रहे हैं । केवल विद्याभावसे जिस देशमें जिन मनुष्योंमें विद्यागुणकी गौरवता है वही देश वही मनुष्य धन्य है, लक्ष्मी महारानी उन्हींके आगे हाथ बांधे खडी हैं, बडे विचारका स्थल है कि विद्याकी वृद्धि कैसे हो ? सो परमात्माकी कृपासे अब आपही आप नित्यप्रति लाखों ग्रंथ ऐसी युक्तिसे छपते और वृद्धि पाते हैं कि जो पुस्तक कुछही पूर्व आपको ५०) रु० में भी समयपर इच्छानुरूप न मिलती थी अब वर्तमान कालमें वैसाही नहीं किन्तु उससे सौ गुणा उत्तम पुस्तक रुपया दो रुपयेमें घर बैठे मिलजाता है । दृष्टान्तमें बंबईका " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-यन्त्रालय प्रत्यक्ष है, भाषा या संस्कृतकी कोई भी पुस्तक मँगा परीक्षा कर लीजिये बहुतही कम खर्चमें मिलेगा. इस ईश्वरेच्छासे अब विद्वान् और गुणवान् होना कोई बहुत कठिन काम नहीं रहा, बहुत ही सुगम और सरल हो गया है ।

यह जो पुस्तक " शालहोत्रसंग्रह " आपके दृष्टिगोचर है । यह श्रीमान् तल्लुकेदार श्रीकेशव सिंहजी साहब तअल्लुके-तिअरि । तहसील-मोहाना । जिला-उन्नाव रचित और संगृहीत है । यह पुस्तक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय, कुण्डलिया, कवित्त, सवैया, हरिगी॰ पद्धरी, भुजंगप्रयात, नरेन्द्र, तोमरादि नानाप्रकारकी रुचिर, सरलछंद प्रबंधसे विभूषित है तथा यह बहुतही उपयोगी बहुतेरे अनुभाविक और विचित्र चमत्कारिक प्रयोगों तथा परमपूज्य धर्मधुरंधर ऋषि मुनि, पाण्डव, नकुल, शालहोत्रादि महान् ऋषियोंकी उक्ति युक्तिसे परिपूर्ण है पूरा ग्रंथ दो काण्डोंमें विभक्त है ।

प्रथमकाण्डमें—अश्वोत्पत्तिसे आदिले जन्मफल, रात्रि दिवस जन्मफल, वर्णविचार, गण विचार आयुप्रमाण, वाजी उत्पत्तिदेश, उत्तम नीच अनेकन प्रकारके रंग, सितारे पेशानी दोष, खरीद समयकी शुभाशुभ-चेष्टा, श्यामतालूभौंरी, शुभाशुभ अंगपहिंचान, दंतविचार युद्धसमय घोडा साजनके शुभाशुभ लक्षण, वेगवर्णन, सवारीवर्णन, कदम वर्णन आदि सैकडों परमोपयोगी विषय वर्णित हैं ।

द्वितीयकाण्डमें—घोडेकी सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा (सर्वप्रकारके रोगों और आधि व्याधि आदि बहुतेरे दैहिक दैविक निमित्तोंकी) विस्तारपूर्वक विधि विधान सहित वर्णित है तथा अश्व ताजा तैयार तेज चालाँक बनानेके अनेकन चूर्ण और मसाले हैं । घोडेकी सम्बन्धी कोई बात शेष नहीं है ।

इस प्रकार यह सर्वथा श्रेष्ठ और परम मान्य अपूर्व चमत्कारिक सिद्ध शालहोत्र ग्रंथ है; यदि निरंतराभ्यासी भारतवासी सुजन जन चाहैंगे तो वह इससे अनायासही कुछ गुण ढंग सीखकर बडेभारी द्रव्योपार्जनके भागी बनैंगे । प्रायः लोगोंके व्यवहारमें घोडा आता है, तिसमें भारतवासी तो घोडेका रखना बडाही उच्चतर समझते हैं, यह परमदुष्प्राप्य दुर्लभ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋषि मुनि प्रोक्त ग्रंथ (घोडाके क्रय विक्रय और व्यवहारमें) आपहीके लिये परम साक्षी और सच्चा सहायकमित्र आन प्राप्त हुआ है। स्वल्प मूल्यहीमें कडा दुर्लक्षण भयानक काम शालहोत्र पास रखनेसे सहजही दमाडियोंमें अवसान होता है।

प्रकट यह कि इस ग्रंथमें घोडोंके अनेक चित्र हैं। प्रति चित्रमें नंबर पडा हुआ है, पाठक जब चाहेंगे सहजहीमें ग्रंथके पृष्ठ लिखित घोडाके नम्बरसे ग्रंथके आदि सम्मिलित चित्रदर्पणके चित्रोंमें उसी नम्बरका घोडा खोजलेंगे।

घोडोंके व्यवसायियोंको यह पुस्तक बहुतही उपयोगी है, जो हुनर वह सर्वस्व देकरभी न पावें वह इससे अनायासही सीखेंगे। घोडा होते मार्गमें चलनेसे यह पुस्तक अवश्य पास होनी चाहिये। क्या राजा क्या रंक क्या धनी क्या कंगाल क्या साधु क्या गृहस्थ यह पुस्तक सबको समान सुखदायी है घोडोंके दलाल (बेचवानी) इस पुस्तकसे बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे और बडा लाभ उठावेंगे शुभम्।

आपका—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष-कल्याण.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

शालहोत्रसंग्रहकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठांक
पंचदेववन्दना	१
अश्वउत्पत्ति	३
यज्ञशाला मुनिआश्रमवर्णन	४
मुनि और इन्द्रकी वार्त्ता	५
उत्तरायण व दक्षिणायनजन्मफल	७
ताकी शांति	८
दक्षिणायन विचार	,,
अमावसको दोष	,,
दक्षिणायन अमावसको दोष	,,
ताकी शांति	९
श्रावणको फल	,,
ताकी शांति	,,
अन्य शांति	,,
रात्रिजन्मफल	१०
दिवसको फल	,,
ताकी शांति	,,
अन्य शांति चार प्रकारकी	,,
घोडीके प्रसवसमयते बछेराके राखेकी विधि	१३
खूझा निकारैकी विधि	१४
बच्चाके दूधपियावैकी विधि	,,
घूँटीविधि	१५
बछेरा अन्हवावैकी विधि	,,
घोडी बच्चा छोडि देइ ताको लेबेकी विधि	,,
दूधके अजीरणकी दवा	१६
दूधपिआवैकी विधि	,,
मक्खनदेइकी विधि	१७
मुसब्बर देइकी विधि	,,
बछेराकी चौबन्दी दागीकी विधि	१८
बछेराकी परीक्षा कि कैसा घोडा होगा	२०
बेचढे घोडेकी परीक्षा कदम चली कि नहीं	२१
बछेराकी उँचाई याने कितना ऊँचा होगा	,,
बाजीवर्णवर्णन	,,
ब्राह्मणवर्णलक्षण	२२
क्षत्रियवर्णलक्षण	,,
वैश्यवर्णलक्षण	२४
शूद्रवर्णलक्षण	२५
संकरवर्णलक्षण	,,
उचित अश्वकथन	२६
गणविचारलक्षणते गणविचारनक्षत्रनते	,,
गणमेलघोडा और मालिकका ताको फल	२८
बाजी आयुप्रमाणदंतपरीक्षा	३०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
वाजी आयुउत्पत्तिदेशवर्णन उत्तम, मध्यम अधम, नीच	३५
देशायुवर्णन	३८
रंगनामपहिंचान वर्णन	,,
शुभाशुभ तसबीरयुक्तवर्णन	,,
पद्मरंगशुभ	५१
अंजनी दोष	,,
पद्मअंजनी दोष	५२
सितारेपेसानी दोष	५३
अकरब दोष	,,
अधरबिंदु दोष	,,
दागरंग शुभाशुभ कईतरहके गोमे दोष	५४
अस्तुतिमंगल दोष	,,
पुष्परंग अशुभ	,,
अशुभरंगदाग	,,
पीठदाग अशुभ	५५
तिलकतोरदोष	,,
सहरभूकरंगदोष	,,
कंचुकीदागरंग अशुभ	,,
चीरंगीदागरंगदोष	,,
श्रुतिहतरंगदागदोष	,,
श्यामताद्व	,,
पञ्चस्थल शुभ	५६
मिश्रितरंग	,,
रंगप्रकृतिशरदगर्म	५७
भौंरी शुभाशुभ वर्णन	,,
विशेष दोष	७३
घोडीके दोष	,,
आलदोष	,,
चिंतामणि बारशुभ	,,
बत्तीसलक्षणअंगकी पहिंचान	७४
पुनः नाम अंग	,,
अंगस्वरूपलक्षण	,,
अंगनकी नाप	७५
सुतुरदंतादि (कबित्त)	७६
हीनदंत दोष	,,
अशुभलक्षण	७७
श्वेततालु	७९
श्यामजिह्वावाजी	,,
उद्दालक दोष	,,
भल्लूकास्यहय	८०
मेषदंतवाजी	,,
अंगविकार	,,
शृंगीवाजी	,,
दृष्टांतमाह विशेष दोष	८१
अश्वखरीदनेका मुहूर्त	,,
खरीदसमयशुभचेष्टा	८२
अशुभचेष्टा	,,
शिक्षा वर्णन	८४
हयशालारचना	८५
हयशालाप्रवेशन	८६
निःसारणमुहूर्त्त	,,
अश्वगजादिकर्म	८७
हयशालाप्रवेशन विधि	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
हयशालामें गिरदानआये अशुभ	८९	वाजीप्रकृतिवर्णन	.... १०५
हयशाला उपद्रव कथन	,,	पित्तप्रकृति	.... ,,
शांतिविधि	.... ,,	कफप्रकृति	.... १०६
युद्धसमयघोडासाजैके शुभाशुभ		वातप्रकृति	.... ,,
शकुन	.... ९०	रक्तप्रकृति	.... ,,
अश्ववेगवर्णन	.... ९१	धातुवर्णन	.... १०७
शीघ्रतावर्णन	.... ९२	नाटिकावतानाचिह्न	.... ,,
गतिवर्णन	.... ,,	धातुकोपप्रथमपित्त	.... ,,
आवर्त्तकवर्णन	.... ,,	खूनसे सफरा मिला	.... १०८
सवारवर्णन	.... ९३	चिकित्सा विधि	.... १०९
अश्व ताडन विधि	.... ,,	असाध्यपरीक्षा	.... ११०
अश्वस्थानवर्णन	.... ९४	जीभके असाध्यलक्षण	.... ,,
फेरनविधि	.... ९५	दूतपरीक्षावर्णन	.... ११३
वाहभूमि	.... ९६	वैद्यस्थानवर्णन	.... ११४
आरोहणविधि	.... ९७	वैद्यदर्शन अशुभ	.... ,,
बाग धरैकी विधि	.... ,,	वेलादूषित	.... ११५
कदमकाढनविधि	.... ,,	तिथिदूषित	.... ,,
लंगरडारिकै कदमकी विधि	.... ९८	नक्षत्रदूषित	.... ,,
कावाफेरनविधि	.... ९९	शुभदूतवर्णन	.... ,,
गस्तफेरनविधि	.... ,,	वैद्यदर्शनशुभ	.... ११६
धावनवर्णन	.... १००	दूतमुखवर्णपरीक्षा	.... ,,
धावनप्रमाण	.... ,,	दूतपरीक्षा चक्र	.... ,,
जल्दकरिबेकी विधि	.... ,,	वैद्य चलैके समय शकुन	.... ११७
ओछीलंबिनपर कुदावनकी विधि	१०१	शिरामोक्षण फस्त खोलना	.... ११८
तुरीफेरैकेमहीमा	.... १०२	रक्तपित्तकोपनिदान	.... १२४
मैजालिकी विधि	.... ,,	पित्तकोपते असाध्य लक्षण	.... ,,
रसलायकवाजी फेरैकी विधि	.... १०३	वातरक्तकोपवर्णन	.... १२५
अग्निपुराणोक्त अश्वशांति	.... १०४	श्लेष्मारक्तकोप	.... ,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
पित्तश्लेष्माकोप	.... १२६	श्लेष्माकमलज्वरलक्षण	.... १४४
धातरक्तकोप	.... १२७	शेषज्वरलक्षण	.... ,,
वातपित्तकोप	.... ,,	कालज्वरलक्षण	.... १४५
कफपित्तवातरक्तकोप	[illegible]	रक्तश्लष्मालक्षण	.... ,,
रक्तदोषअधिकसन्निपातलक्षण	,,	याहीमें असाध्यलक्षण	.... ,,
सन्निपातलक्षण	.... ,,	सन्निपातप्राणहर	.... ,,
सन्निपातते मंदाग्निहोइ ताकी दवा	१२९	रक्तसन्निपातलक्षण	.... ,,
आठोज्वरोंके नामलक्षण	१३०	सर्वज्वरको काढा	.... १४६
शांतिविधि	.... ,,	दशमूलतैलसन्निपातज्वरपर	.... ,,
पित्तकफवातज्वर	.... ,,	अन्यमतज्वरचिकित्सा	.... १४७
पित्तज्वर	.... ,,	तपसफरावलिक्षण	.... ,,
पित्तसन्निपातलक्षण	.... १३४	बलगर्मातपलक्षण	.... १४८
पित्तदोषनथुनाते रक्तचले	.... १३५	रक्तते तपहोइताकोलक्षण	.... १५०
पित्तरक्तलक्षण	.... ,,	वादीतपलक्षण	.... १५१
पित्तरक्तको असाध्यलक्षण	.... १३६	हुकनाकी तरकीब	.... १५२
पित्तलक्षणवर्णन	.... ,,	श्लश्माज्वरलक्षण	.... ,,
असाध्यलक्षण	.... ,,	सर्वतपकी दवा लक्षण	.... १५३
पित्तकी दवा	.... १३७	अन्य तप लक्षण	.... ,,
कफज्वरलक्षण	.... ,,	त्रिदोषज्वरसन्निपातलक्षण	.... १५४
वातज्वरलक्षण	.... १३८	ज्वरके पीछे पेशाबबंद होनेकी दवा व लक्षण....	.... १५५
वातसन्निपातलक्षण	.... १३९	शिरदर्द लक्षण	.... १५७
दूसरा वातज्वरलक्षण	.... १४०	अन्य	.... ,,
वातश्लेष्मज्वरलक्षण	.... १४१	शूल निदान चिकित्सा वर्णन	.... ,,
वातरक्तलक्षण	.... ,,	अन्य	.... ,,
याहीमें असाध्यलक्षण	.... ,,	कुरकुरी कई तरहकी अन्य	.... १७९
वातसन्निपातज्वरलक्षण	.... ,,	पेटमें कीरा हेरुहा जोंक वगैरह	१८१
वातरक्तलक्षण	.... १४२	जुलाब कई तरहके	.... १८२
असाध्यवातलक्षण	.... १४३		

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
दस्तबंदहोनेकी दवा	.... १८५	मुखवायु	.... ,,
उदरव्याधिनाशन	.... १८६	गिलिमवायु	.... २१८
खारिस्तिकी बहुततरहकी दवा	,,	गुल्मवायु	.... ,,
आमे वायुखाजु	.... १९६	कर्णवायु	.... ,,
दादछिछिला	.... १९८	रक्तवायु	.... २२०
बादखोरा खाजु	.... १९९	अर्द्धवायु	.... २२१
गजचर्म	.... ,,	कोहानवायु	.... २२२
अनेक प्रकारके बरसाती लक्षण व दवा	.... २००	भस्मकवायु	.... ,,
नेत्ररोग मुज्जा	.... २०५	कुमकुमवायु	.... २२३
अन्य मुज्जाफूलीमाडानाखूनाकी दवा	.... २०६	एकअंगवायु	.... २२६
नेत्रचोटकी दवा	.... २१०	लकवावायु	.... २२८
नेत्रबँभनीकी दवा	.... ,,	वातगुर्ग	.... २३०
रतौंधीकी दवा	.... ,,	ऊर्द्धवायु	.... २३१
ढरका बहेकी दवा....	.... २११	बलगमवायु	.... २३३
माडाकी दवा	.... ,,	गठियावायु	.... ,,
सफेदीकी दवा	.... ,,	धडकावायु	.... २३४
लोटरोगलक्षण व दवा	.... २१२	जहरवात कईतरहका	.... ,,
झोला भकरवायु	.... ,,	खूनतेजहर वात	.... ,,
प्रबलवायु	.... २१३	जहररोग लक्षण व दवा	.... २४९
अग्निवायु	.... २१४	जहरदौरा	.... २५०
हिरणवायु	.... ,,	चांदनीरोग लक्षण	.... २५१
ओढाकरनवायु	.... २१५	कनारेके लक्षण	.... २५७
टनकवायु	.... ,,	थीरीशरदीहोइ तिसकी दवा	.... २६२
कपोतवायु	.... २१६	नथुनाको रोग	.... २६३
कंपवायु	.... २१७	कुब्बकके लक्षण	.... २६४
		कनारका मसाला	.... २६५
		चषकी बीमारी	.... ,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मुखआवाहोइ तिसकी दवा	२६७	बैजामोतराकेल०व दवा	२८८
मेझुकी जीभपर	,,	गजपैर	२८९
कालबंदजीभसूखै	२६८	जानुआरोग	२९०
तालुकी बीमारी	,,	वेरहड्डी	२९३
तारूमेंदांतजामैं	२६९	जेरबाइ पैररोग	२९५
मुहमें छालापरैं	,,	तेजबहड्डी काटिका	,,
मुखपाकै छालापरैं	,,	घावसूखैकी दवा	,,
सब मुखसूजिजाइ	२७०	बार जामैंकी दवा	,,
अस्तीककी बीमारी	,,	चकावरिरोग	२९६
अन्य विधि मुखरोग	२७१	पुस्तकरोग	२९७
घिनीरोग	,,	गानारोग	२९८
सतपुरारोग	२७२	सुम जाको फटै	,,
नाकडारोग	,,	सुमभीतरछाला	२९९
खामूसैं आवैं	२७२	छीवालरोग	,,
कालादि तैल विधि	२७३	मांसवृद्धि	,,
वृषास्थितैल	२७४	कफगीरारोग	३००
कर्णपीर	,,	मधुपंकजरस	३०३
कानपाकैकी दवा	२७५	पंकजपानरस	३०४
कछुईकी बीमारी	,,	थामरतिलेपम	३०६
हसना रोग	२७७	तलथमरस	,,
वोगमाकी बीमारी	,,	गतिभंगरस	३०७
मुहते लारगिरै	२७९	कचरस	,,
पैररोग	,,	कईतरहके रस	,,
हड्डारोग	२८०	प्रगटरस	३०८
मोतरारोग	२८३	सर्वरसहरन दवा	३०९
मोतराबछेराके	२८४	परसिगीध लक्षण	,
अन्य मोतरालक्षण	२८७	गंभीररोग	३१०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
सुम एडी खुरकीते फटैं	.... ३१०
परम मोचजाय	.... ३ १
पैरभरिजाय	.... ३१२
चोटते सुम भीतर	.... ३१३
मांस फटिजाय	.... ,,
नसफार वा मोचे	.... ,,
बहुतरोजकीपै	.... ३१५
पुरानीपै	.... ३१६
लेप सर्व चोटका	.... ३१७
मोज वा गांठिमें चोट	.... ,,
पखोरापरकी लंक	.... ,,
शरदीगर्मीते भरिजाय देह ऐंठै	.... ३१९
भरेवा चोटकी दवा	... ,,
झिटका चोट मोच कूल उतरै	.... ,,
प्रमेहलक्षण दवा	.... ,,
रक्तप्रमेह	.... ३२२
कामस्तंभन	.... ,,
मूत्रकृच्छ्रप्रमेह	.... ,,
मूत्रप्रमेह	.... ३२२
घोडा बहुत मूतै	.... ३२३
लोहू मूते	.... ,,
अन्य	.... ,
गर्मी बादीकी पहिचान	... ,,
अन्य खून मूतै	.... ३२५
सलसलवोलियारोग	.... ३२६
जारिआनरोग	... ३ [illegible]
सुजाक	.... ३२८
पेशाब बंद	.... ३२९
घाउ लागैकी दवा	.... ३३०
घाउ धोवैकी विधि....	.... ३३१
कीरानाशन दवा	.... ,,
घावते लोहू न बंद होय	.... ,,
घाव सूखै	.... ,,
जखममें मांस बढै	.... ३३२
मलहम	.... ,,
वरमकी दवा	.... ३३४
तंगते छातीमें जखम	.... ,,
पीठि फूलै	.... ,,
पीठि लागी	.... ३३५
मदऊमें रगर लागी	.... ३३६
पीब लवाबसमकी दवा	.... ,,
मुरदारमांस दूरि करै	.... ३३७
जखममें खुरकी आवै	.... ,
नासूरकी दवा	.... ३३८
मलहम जखम सूखै....	.... ३३९
जखमपर बार जामैकी दवा	.... ३४०
सीनाबंद....	.... ,
अन्यगर्मीके दिनकी दवा	.... ३४१
शर्दी गर्मीते छाती भरै	.... ३४४
सब देह जकरि जाइ तिसकी दवा	३४६
अन्य	.... ,,
सीना शोथ	.... ३४८
सर्वअंगशोथ	.... ३४९
भिषरोगलक्षण वा दवा	.... ,,
बलगीरारोग लक्षण व दवा	.... ३५०

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
बंदबंद जकडेकी दवा	.... ३५१	माहुरकी गोली	.... ३६७
जीगीरारोग लक्षण व दवा	.... ३५२	कुलिंजन रोग	.... ३६८
अन्य	.... ३५३	वेलिरोग लक्षण	.... ३६९
अथ लीदिकी पहिचान	.... ३५४	सूखी खांसीकी दवा....	.... ३७०
बहुत दस्त आवे तिसकी दवा	.... ३५५	रक्तखांसी	.... ३७२
अतीसारकी दवा	.... ,,	खांसी व धांस	.... ,,
आनूनामरोग	.... ,,	शिरदमके लक्षण	.... ३७४
लीदिमें लोहू आवे	.... ,,	गर्मीते दम करै	.... ३७५
रक्तविहीन अतीसार	.... ३५६	शून्यकपालीरोग	.... ,,
अन्यमतसंग्रहणी	.... ३५७	गर्मिमिजाजकी दवा....	.... ३७६
गर्मीकी ऋतुमें पेट झरै	.... ,,	राजरोग	.... ,,
बदहजमीते पेट झैर	.... ,,	पीनसकी दवा	.... ३७७
कोखि चढिजाय	.... ३५८	गंडमाला	.... ३७८
अधिक दौराये रोग हो	.... ,,	अंडसूजनि....	.... ३७९
उदरवायुबंद	.... ३५९	अन्यप्रकार राजरोग	.... ३८०
लीदिबंद	.... ,,	कान बहिर होइ	.... ३८१
वातोदररोग	.... ३६०	तिल्ली बढिजाइ	.... ,,
जलोदररोग	.... ,,	नस्तररोग पैरका	.... ३८२
उदरदाहकी दवा	.... ३६१	पाँइ सूजैं	.... ,,
अजीर्णकी दवा	.... ,,	विषबेलि कुष्ठ	.... ३८३
विषहरणविधि	.... ३६२	चमडा सक्त होइ	.... ,,
स्थावरविषहरन दवा	.... ३६२	पित्तो उखरै	.... ,,
जंगमविषहरन दवा	.... ३६३	आगीमें जरै तिसकी दवा	.... ३८४
सर्प काटनेके लक्षण व दवा	.... ,,	बोगमा रोग लक्षण....	.... ,,
कृत्रिम विषहरन	.... ३६६	कमरी घेडाके लक्षण	.... ३८५
बाघ पकरेकी दवा	.... ,	पीठमें लचका	.... ३८६
कुत्ता काटेकी दवा	.... ३६७	झेली काढेकी विधि	.... ,,
चांडालकी गोलीसे मरै तिसकी दवा	,,	शर्दी गर्मीकी दवा	.... ३८७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
शीतकी दवा	.... ३८७	लार बहैकी दवा	.... ३९९
घोडीके गर्भ न रहै ताकी दवा	.... ३८८	वारुणी विधि	.... ,,
बच्चाकी दवा	.... ,,	मसाहरनाविधि	.... ,,
दूध न होइ ताकी दवा	.... ,,	वादी बवासीर	.... ,,
घोडेके नवसंगम	.... ३८९	कीरा पैरका मलहम	.... ४००
घोडी अलग करै	.... ,,	बहुतरोग हरन दवा....	.... ,,
मस्ती शांति करै	.... ,,	कमर जाकी मटकै तिसकी दवा	.... ४०१
घोडा मस्त करै	.... ३९०	मलग्रहणीलक्षण	.... ४०२
घोडा झरैकी दवा	.... ,,	शीतलता काम न रहै	.... ,,
आखता करै	.... ,,	विषशोधन विधि	.... ,,
मदन अधिक करै	.... ,,	काष्ठादि विष शोधन	.... ४०३
मदनहरन विधि	.... ३९१	काढा सर्वरोग पर	.... ४०४
रंग बदलैकी विधि	.... ३९२	पिंड सर्वरोग नाशन	.... ४०५
श्वेतरंग करन	.... ३९३	घृत सर्वरोग नाशन....	.... ४०७
नीलरंग करन	.... ,,	पित्तशांतिघृत	.... ,,
चित्ती मिटावेकी विधि	.... ३९४	खाजुशांतिघृत	.... ४०८
थनीदोष मिटावै	.... ,,	बछेरा आरोग्यकरनाविधि	.... ,,
भौंरी मिटावेकी विधि	.... ,,	नासु षट्ऋतु वा सर्वरोग	.... ४०९
सितारा मिटावै	.... ,,	फस्त खोलना सफ जगहकी	.... ४१५
बार अंगमें बढावै	.... ३९५	तीनों फसिलकी दवा	.... ४१९
बछेरा ऊपरको ओंठ ऊपर खैंचै	,,	गर्मीकी फस्ल	.... ,,
घोडा आगेको हालै....	.... ,,	वर्षाकी फस्ल	.... ४२०
घोडा शजल्द करै	.... ,,	जाडेकी फस्ल	.... ४२१
वदी वर्णन	.... ३९६	छह ऋतुकी दवा अलग	.... ,,
एते ऐब छूटैं	.... ,,	बारही मासकी दाना रातिब	.... ४३०
वदी छूटेकी धूप	.... ३९८	तीनों काल वर्णन	.... ४३२
अन्य नासु	.... ३९९	आह्निकवर्णन	.... ४३३

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय	पृष्ठांक
दानावर्णन	.... ४३५
सूखा चना देनेकी विधि	.... ४३६
देशाविभागदानविधि	.... ,,
चनाके बिरवा देइ	.... ४३७
खुइदि देनेकी विधि....	.... ,,
मसाला	.... ४३८
खिचरी देनेकी विधि	.... ,,
मोठकी खीर	.... ४३९
बछेराकी तैयारी विधि	.... ,,
शिशुचासनी तैयारी	.... ४४०
दुर्बलघोडाकी दवा	.... ४४१
तैयारीकी विधि	.... ,,
जौकी दरिया देइ	.... ४४२
हरदी देनेकी विधि	.... ४४३
महेलेकी विधि	.... ,,
हेलुवा बनावेकी विधि	.... ४४४
मूँगका हेलुवा मोटा करनेकी विधि	.... ,,
चारों रोगन देनेकी विधि	.... ४४५
पिंडादि वर्णन	.... ४४६
तुरंग तेज करनेकी विधि	.... ४४८
बहुत कोश चलावै....	.... ,,
सांप खवानेके गुण	.... ४४९
मिठाई देनेके गुण	.... ,,
तिल देनेकी विधि	.... ४५०
जलेबी देनेकी विधि....	.... ,,
मेषको सींग देइ	.... ,,
तैयारीकी दवा	.... ४५१
तैयारीका महेला	.... ४५२
पानी पीनेकी विधि....	.... ,,
इंगुरगुटिका व गुण	.... ,,
हियातवटीसर्वरोग	.... ४५३
अमृतवटी सर्वरोग	.... ४५४
मांस वा अंडा वा मछरी रुधिर-चर्बी सब तरहके देनेके विधि	,,
वरिया देनेकी विधि....	.... ४६१
मसालासाठिया	.... ४६२
मसालाबतीसा सर्वरोगपर	.... ४६३
अन्य दूसरा	.... ४६४
अन्य तीसरा	.... ,,
मसाला सोरहिया	.... ४६५
मसाला बारहीचिकित्सा	.... ,,
मसाला कामधेनुचूर्ण	.... ,,
मसाला दानाचारा बढै	.... ४६६
मसाला क्षुधाकरन	.... ,,
मसाला तैयारीका	.... ४६७
मसाला तुच्छ अहारी	.... ४६८
मसाला बलगम वा तैयारीका	.... ,,
मसाला ताजा होइ	.... ,,
मसाला क्षुधाकरन	.... ४६९
मसाला अबलघोडेका	.... ,,
मसाला वृद्ध घोडेका	.... ,,
मसाला तैयारीका	.... ४७०
मसाला पाचक	.... ,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषय.	पृष्ठांक	विषय.	पृष्ठांक.
मसाला खुराक बढै....	.... ४५०	मसाला क्षुधा करन गर्मीके दिनका	.... ४७४
मसाला पानी बहुत पियै	.... ,,	मसाला क्षुधाकरन और बगलम जाइ	.... ,,
मसाला अठरोजा	.... ,,	अन्य मसाला क्षुधाकरन	.... ४७५
मसाला भस्मावंती	.... ४७१	शूल कुरकुरीकी औटी	.... ४७६
मसाला तैयारीका	.... ,,	अग्निपुराणोक्त शांति	.... ,,
मसाला भूंख बढै	.... ४७२		
मसाला क्षुधाकरन	.... ,,		

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यज्ञशाला चित्र नंबर १ (देखो पृष्ठ १)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

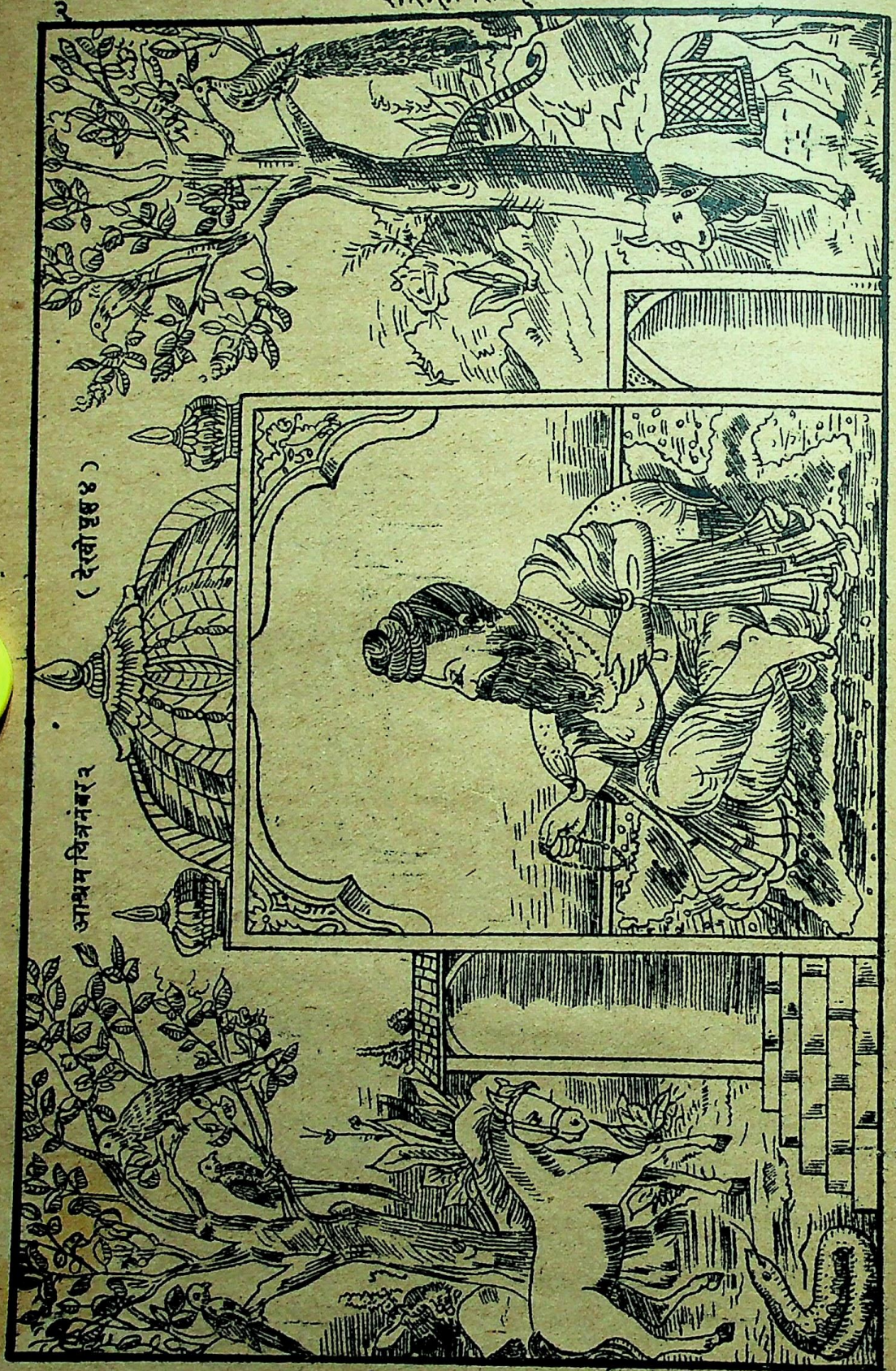

आश्रम चित्र नंबर २ (देखो पृष्ठ ४)

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

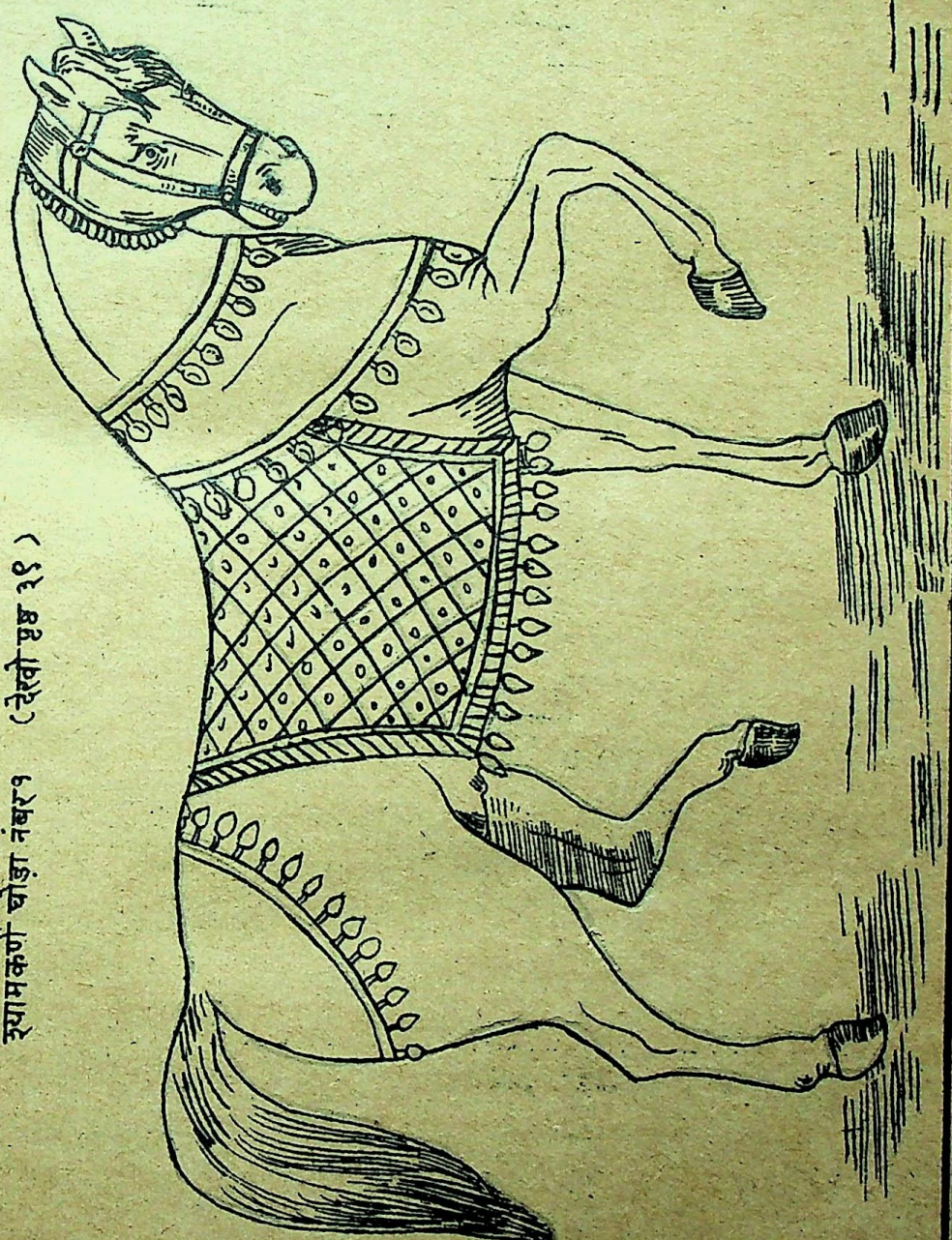

श्यामकर्णी घोड़ा नंबर१ (देखो पृष्ठ ३९)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वितीय श्यामकर्ण घोड़ा नंबर २ (देखो पृष्ठ ३९)

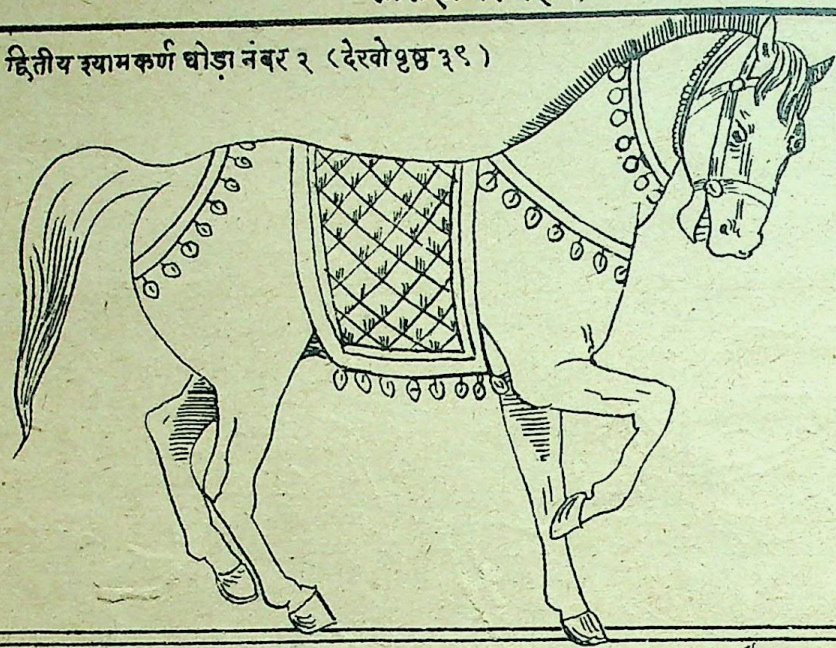

खंदलीरंग घोड़ा नंबर ३ (देखो पृष्ठ ३९)

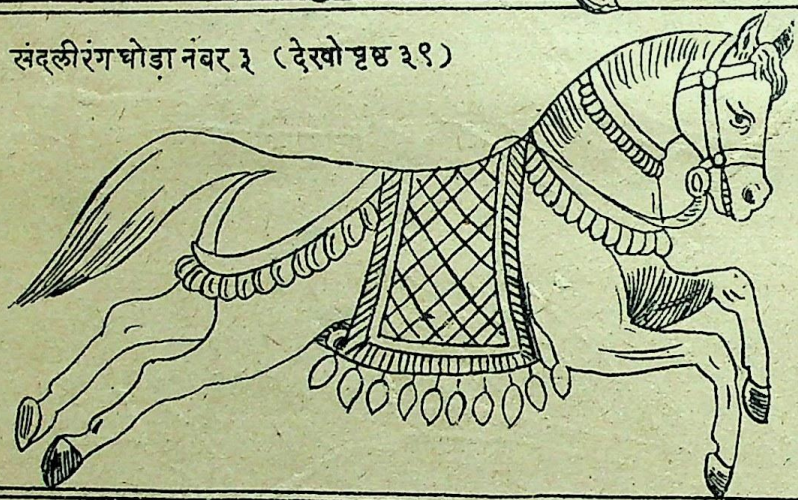

प्रथमसमुंदरंग घोड़ा नंबर ४ (दे० पृ० ३९)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वितीय समुंदरंग घोड़ा नंबर ५ (देखो पृष्ठ ४०)

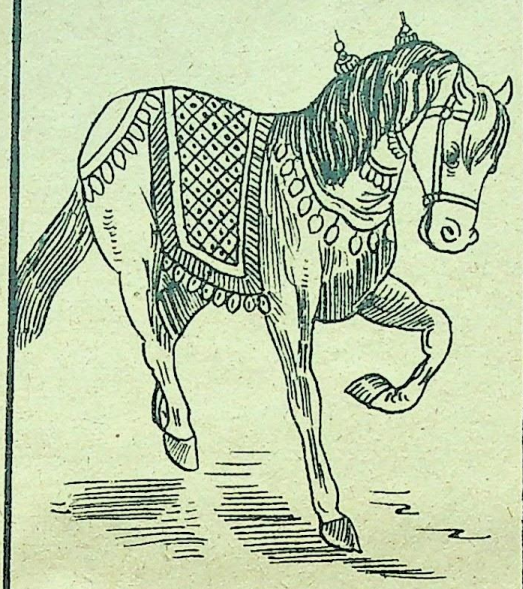

तृतीय समुंदरंग घोड़ा नंबर ६ (देखो पृष्ठ ४०)

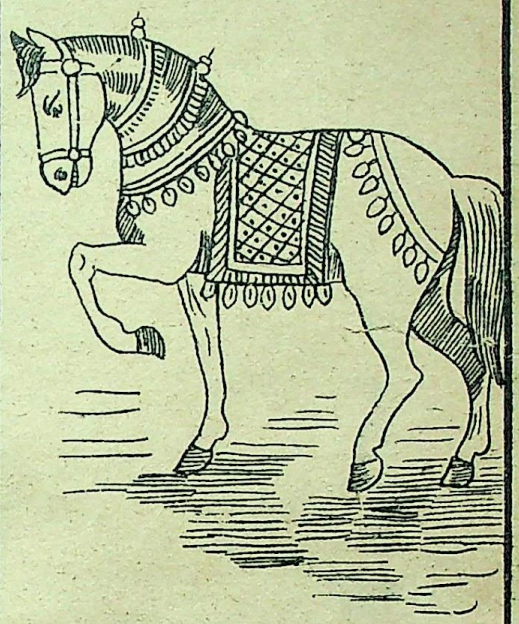

शूररंग अशुभ घोड़ा नंबर ७ (देखो पृष्ठ ४०)

सुरखारंग शुभ घोड़ा नंबर ८ (देखो पृष्ठ ४०)

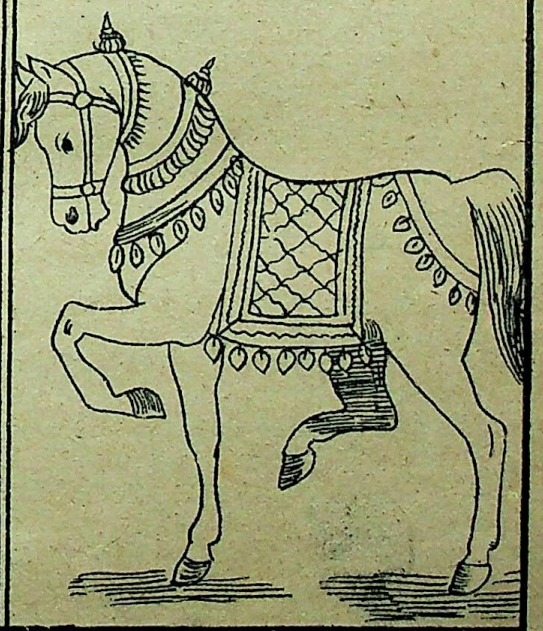

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरंग गुंजारंग घोड़ा नंबर ९ (दे० पृ० ४०)

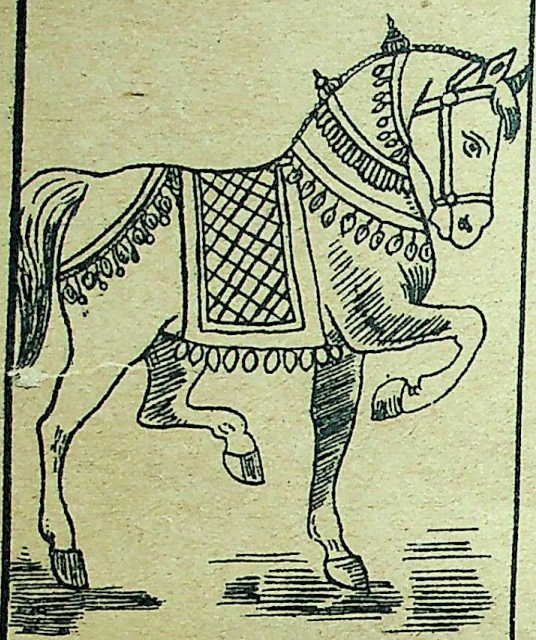

श्वानसुरंग घोड़ा नंबर १० (देखो पृष्ठ ४०)

तैलसुरंग घोड़ा नंबर ११ (देखो पृष्ठ ४०)

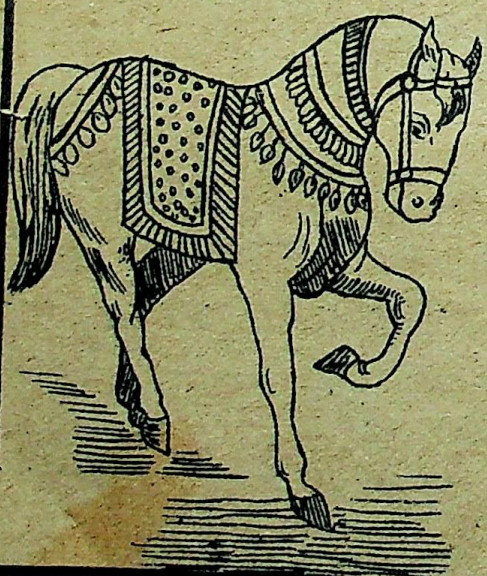

केहरीसुरंग घोड़ा नंबर १२ (देखो पृष्ठ ४०)

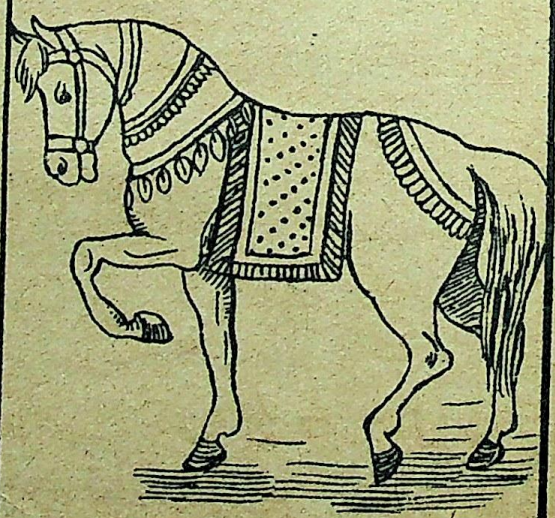

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिनीरंग घोड़ा नंबर १३ (देखो पृष्ठ ४१)

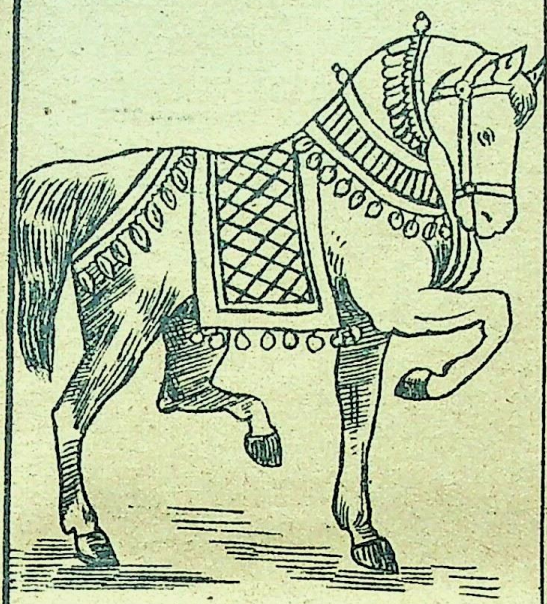

चौघररंग घोड़ा नंबर १५ (देखो पृष्ठ ४१)

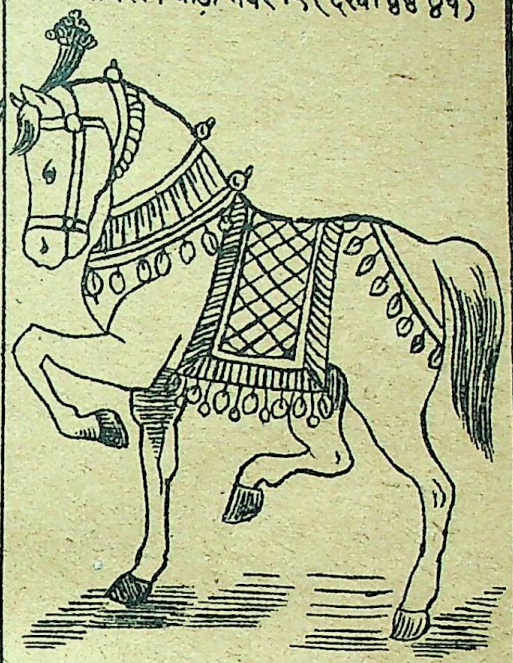

संजाफरंग घोड़ा नंबर १४ (देखो पृष्ठ ४१)

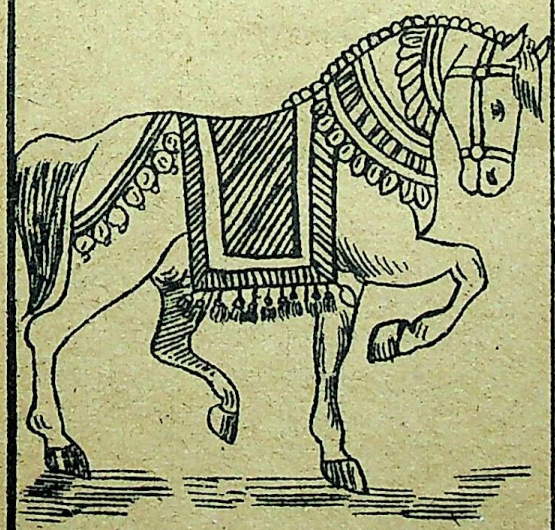

नीलरंग घोड़ा नंबर १६ (देखो पृष्ठ ४१)

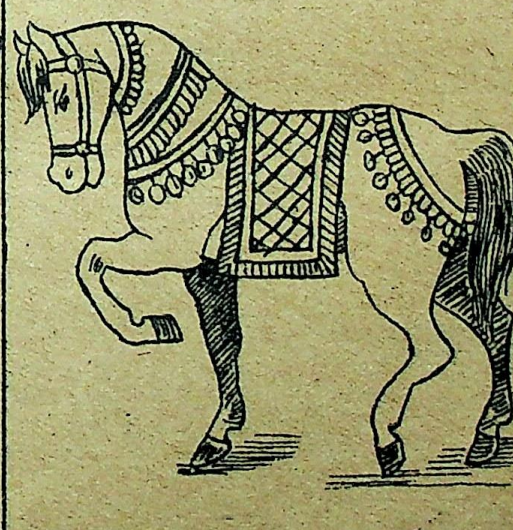

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मकसीरंग घोड़ा नंबर १७ (देखो पृष्ठ ४१)

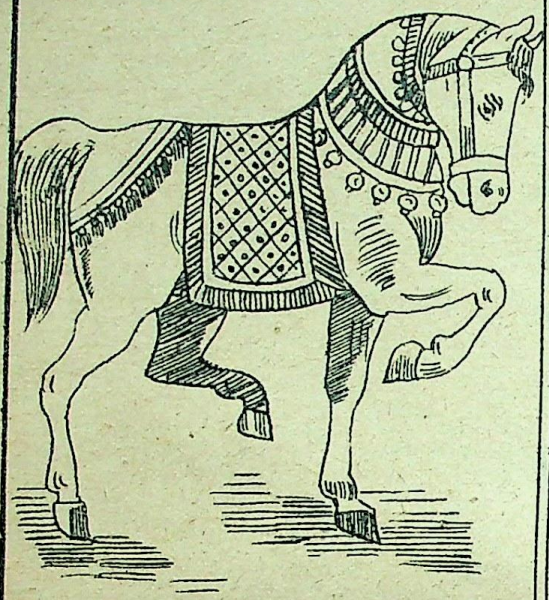

तामड़ा रंग घोड़ा नंबर १९ (देखो पृष्ठ ४१)

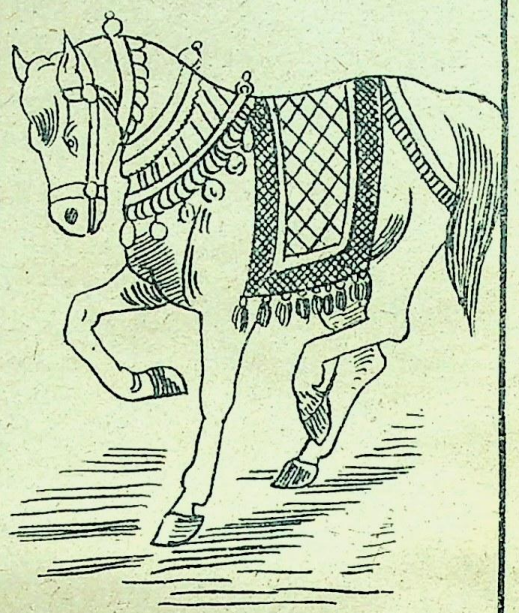

इखलरंग घोड़ा नंबर १८ (देखो पृष्ठ ४१)

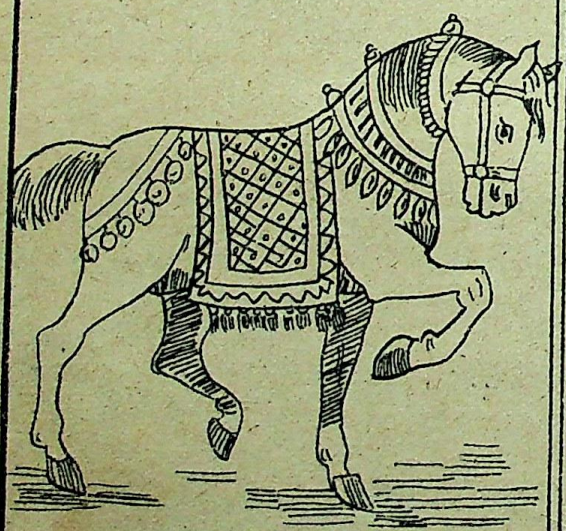

अरुण गर्स घोड़ा नंबर २० (देखो पृष्ठ ४१)

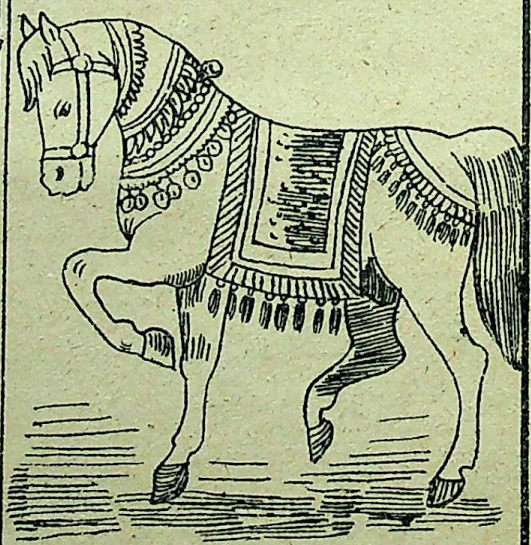

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्याम गर्रा घोड़ा नंबर २१ (देखो पृष्ठ ४२)

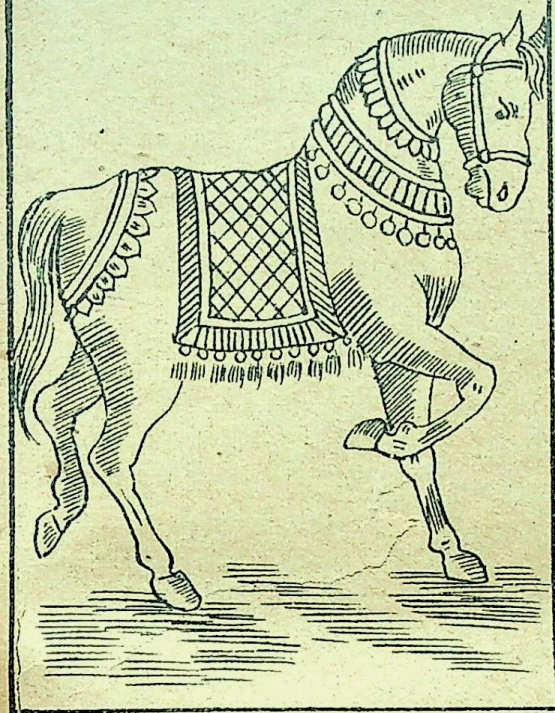

मोमिया रंग घोड़ा नंबर २३ (देखो पृष्ठ ४२)

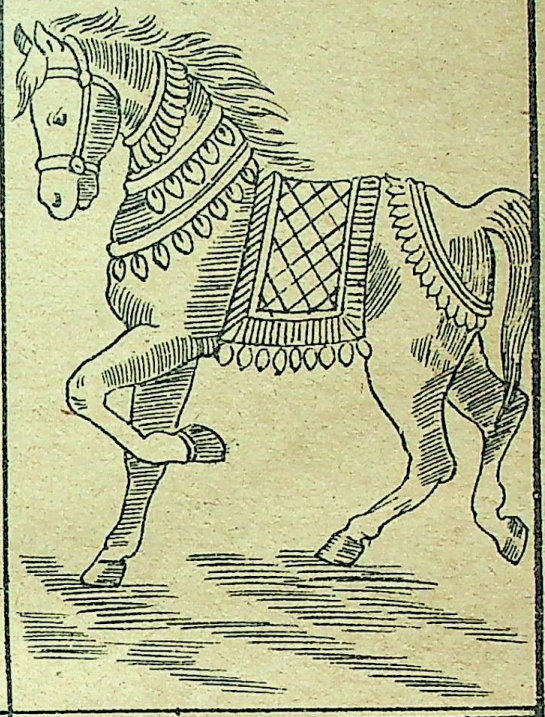

अबलख रंग घोड़ा नंबर २२ (देखो पृष्ठ ४२)

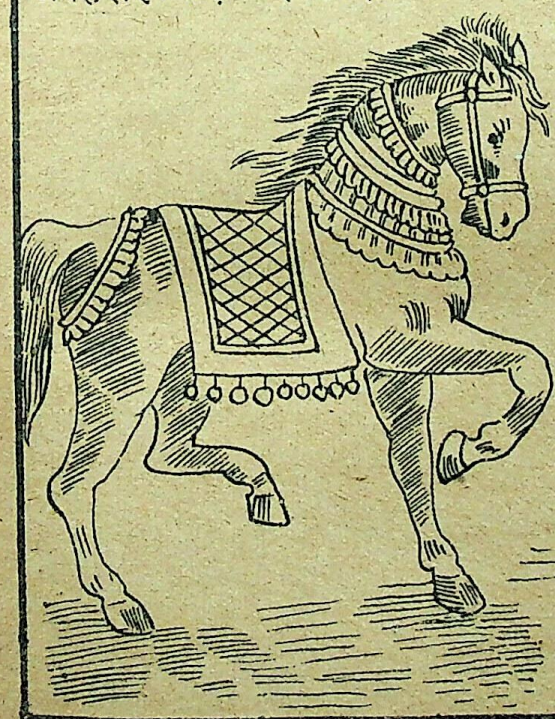

मटिहा रंग घोड़ा नंबर २४ (देखो पृष्ठ ४२)

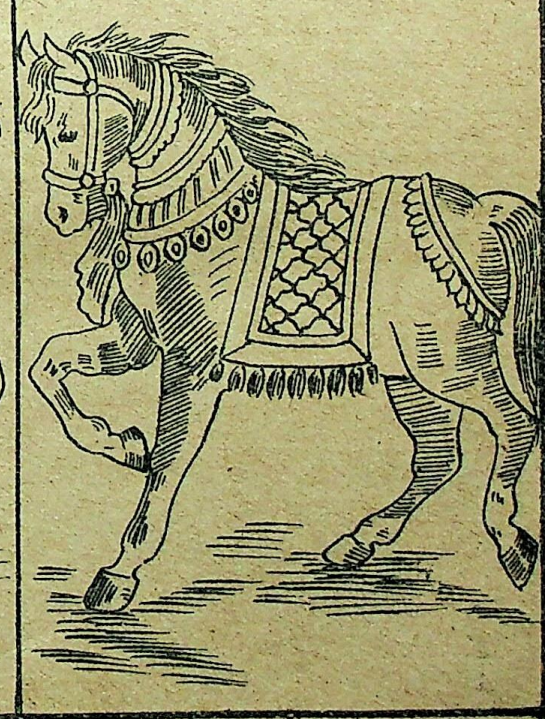

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महुवा रंग घोड़ा नंबर २५ (दे० पृ० ४२)

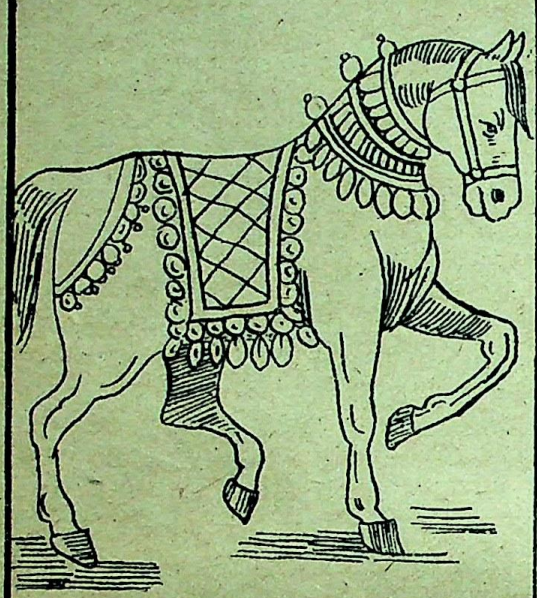

फुलवारी रंग घोड़ा नंबर २७ (दे० पृ० ४२)

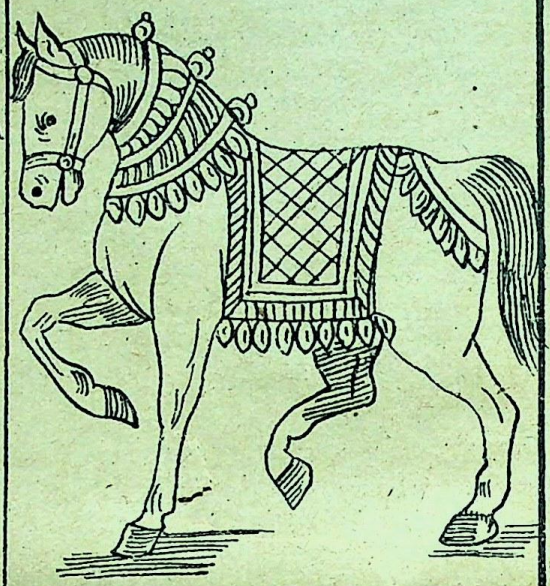

कुल्ला रंग घोड़ा नं० २६ (दे० पृ० ४२)

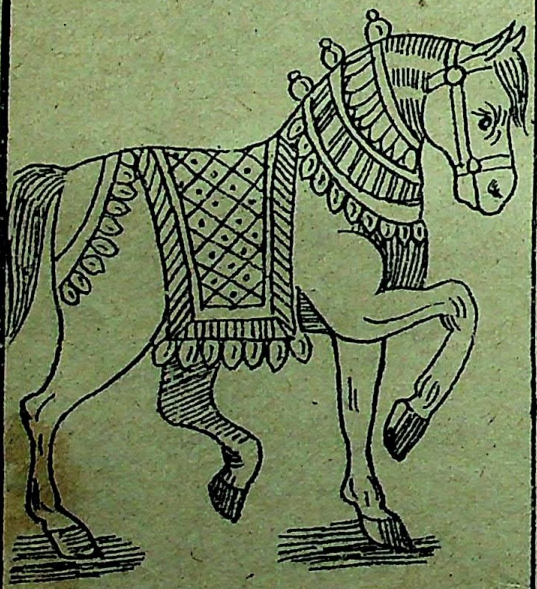

कुमईत रंग घोड़ा नंबर २८ (देखो पृष्ठ ४३)

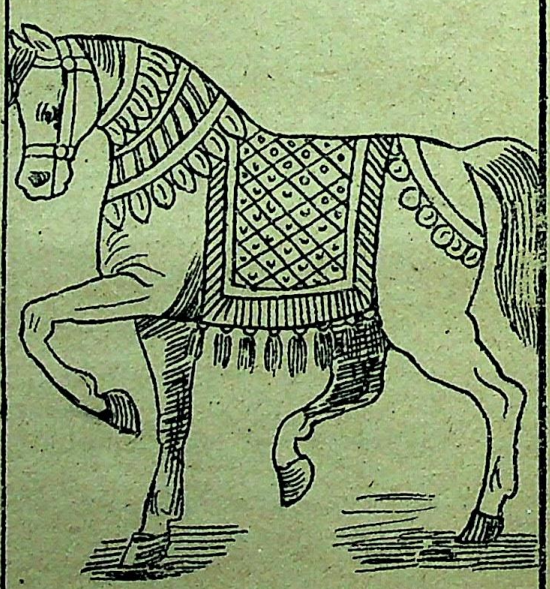

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेलिया कुंमयत रंग घोड़ा नं० २९ (दे० पृ० ४३)

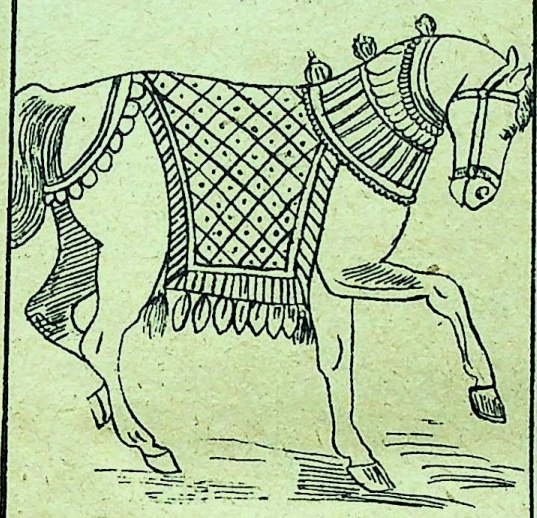

सुरकी रंग घोड़ा नंबर ३१ (देखोपृष्ठ ४३)

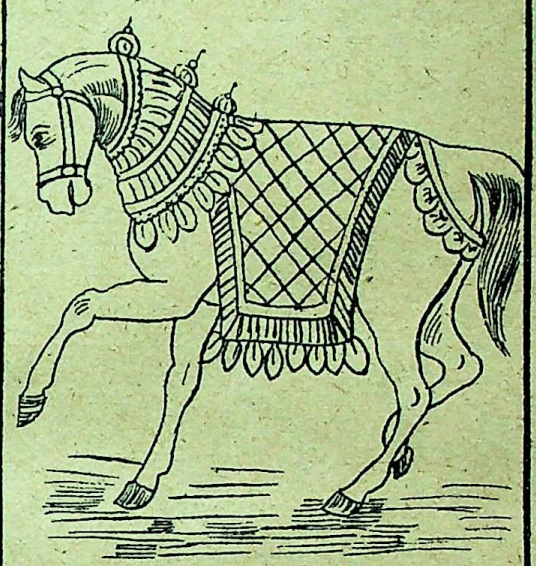

टोपरा रंग घोड़ा नंबर ३० (दे० पृ० ४३)

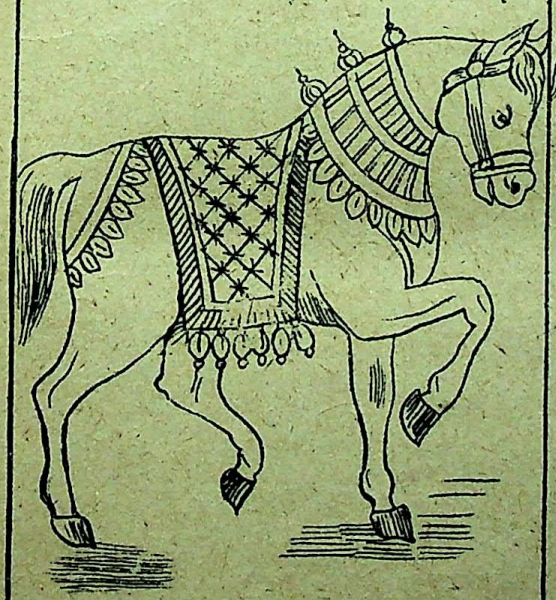

नोकरा रंग घोड़ा नंबर ३२ (दे० पृ० ४३)

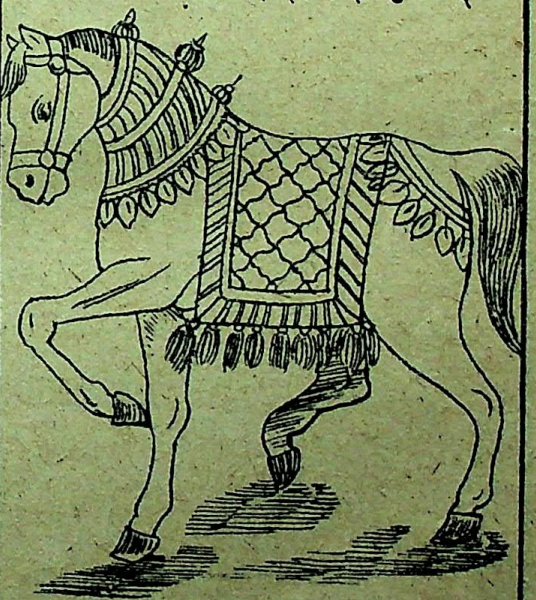

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिरगा रंग घोड़ा नंबर ३३ (देखो पृष्ठ ४३)

सब्जा सारो रंग घोड़ा नंबर ३५ (देखो पृ० ४४)

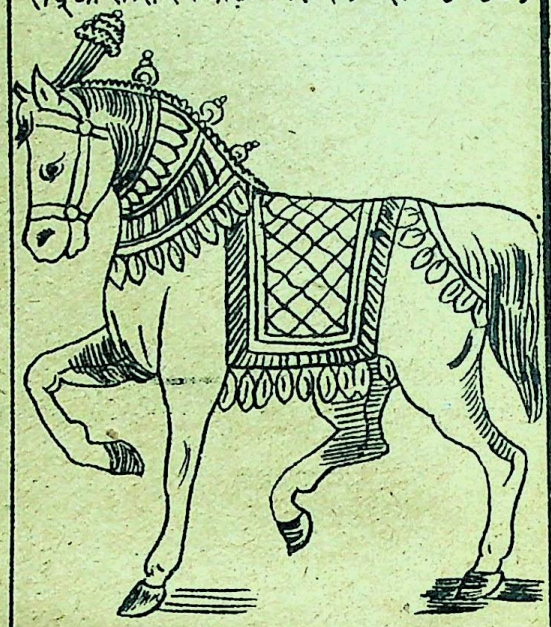

द्विविध सब्ज रंग घोड़ा नंबर ३४ (दे० पृ० ४३)

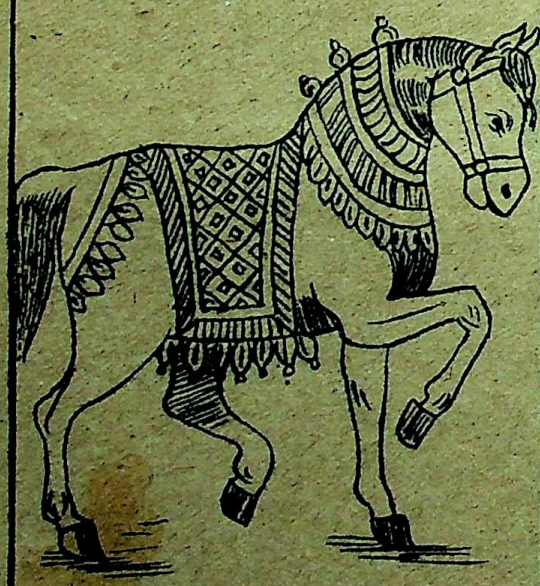

सब्जा घोड़ा नंबर ३६ (देखो पृष्ठ ४४)

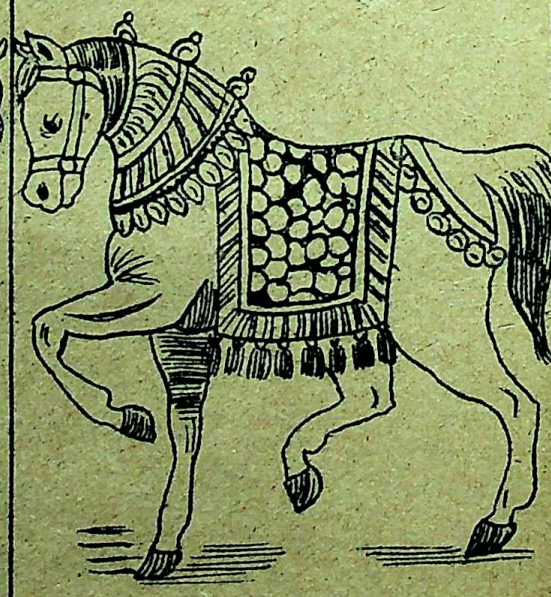

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केहरी रंग घोड़ा नंबर ३७ (देखो पृष्ठ ४५)

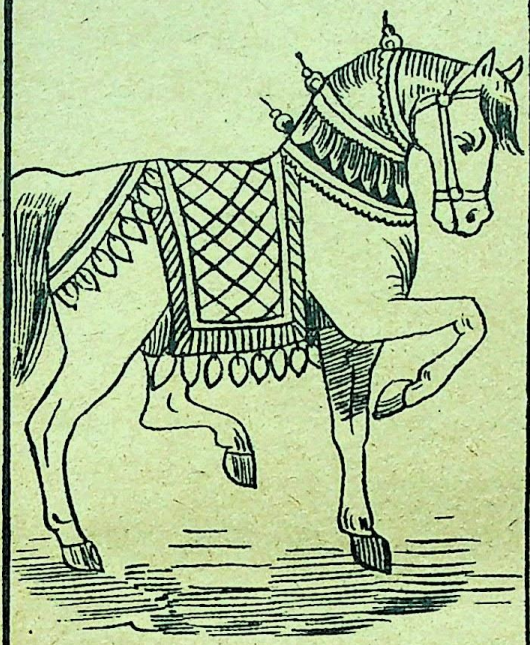

बदामी रंग घोड़ा नंबर ३९ (देखो पृष्ठ ४५)

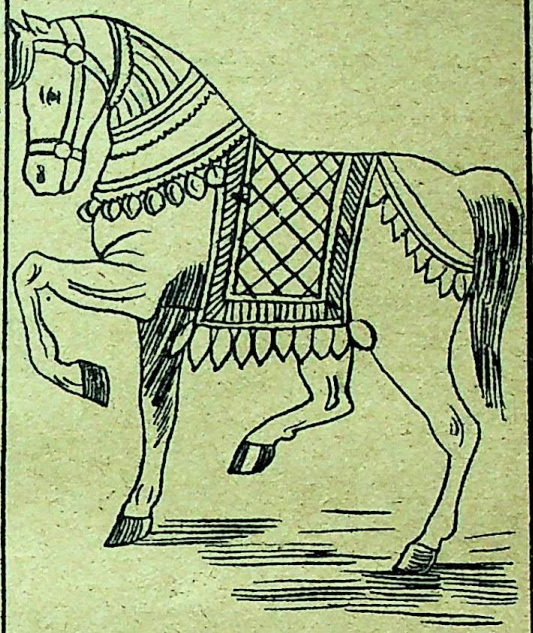

सिराजी रंग घोड़ा नंबर ३८ (दे० पृ० ४५)

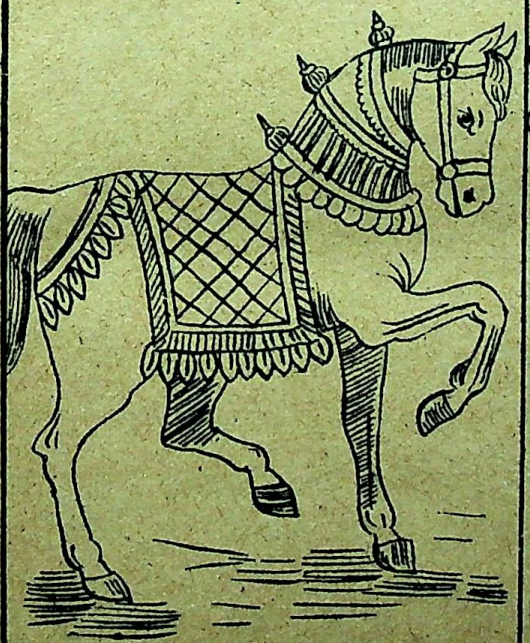

बोस्ता रंग घोड़ा नंबर ४० (देखो पृष्ठ ४५)

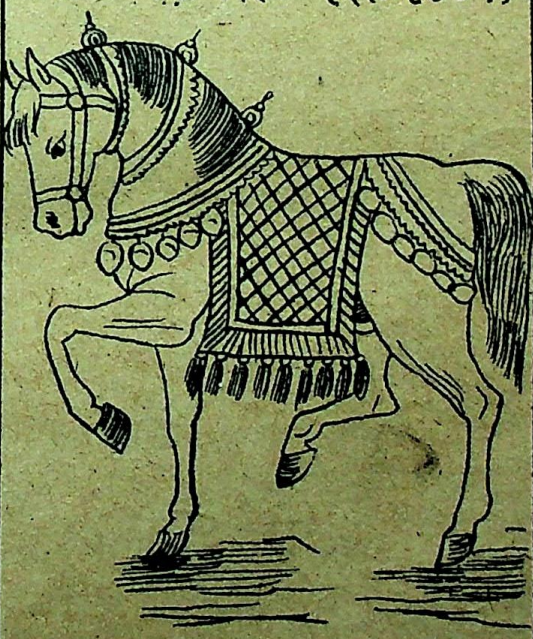

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खंजरेट रंग घोड़ा नंबर ४१ (देखो पृष्ठ ४६)

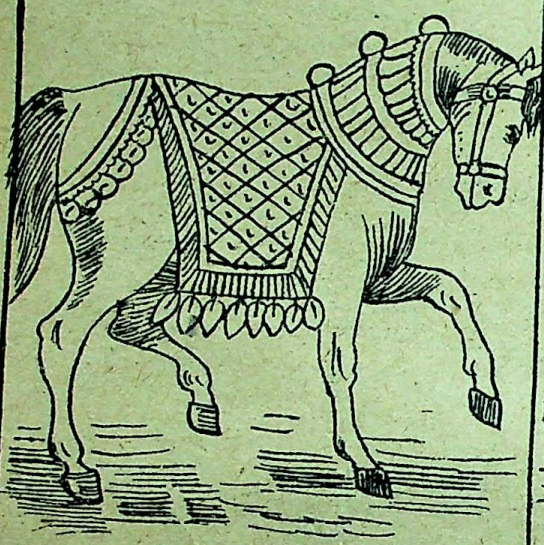

बिल्लौर रंग घोड़ा नंबर ४३ (देखो पृष्ठ ४६)

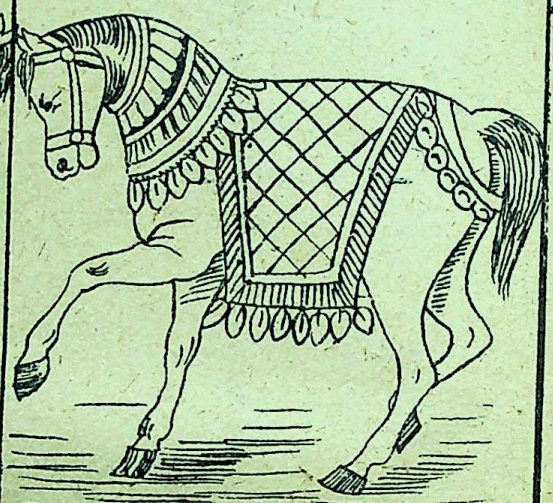

कागजी रंग घोड़ा नंबर ४२ (देखो पृष्ठ ४६)

कपूरी रंग घोड़ा नंबर ४४ (देखो पृष्ठ ४६)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुसी रंग घोड़ा नंबर ४५ (देखो पृष्ठ ४६)

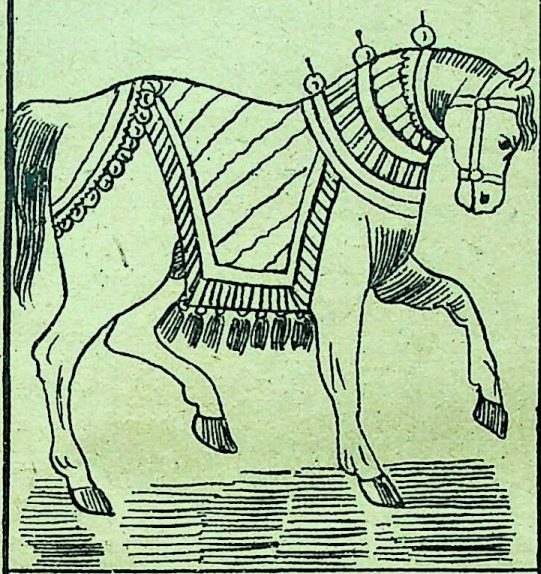

षिंग रंग घोड़ा नंबर ४७ (देखो पृष्ठ ४६)

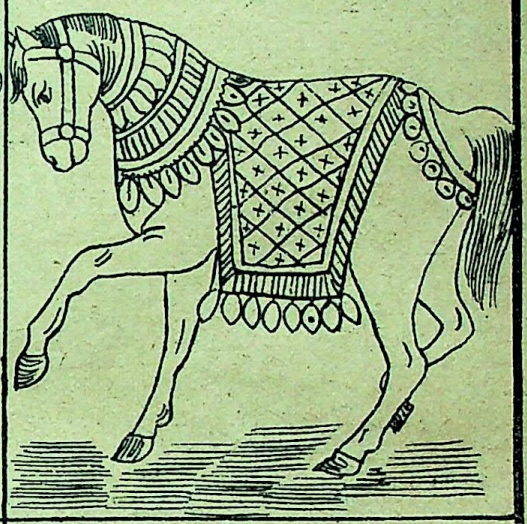

धूरिया रंग घोड़ा नंबर ४६ (देखो पृष्ठ४६)

कबूत रंग घोड़ा नंबर ४८ (देखो पृष्ठ ४६)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रमनी रंग घोड़ा नंबर४९ (देखो पृष्ठ ४७)

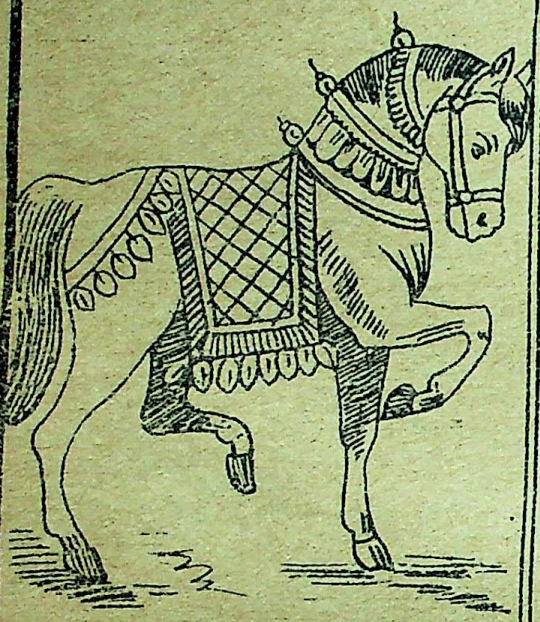

चाल घार रंग घोड़ा नंबर ५१(देखो पृष्ठ ४७)

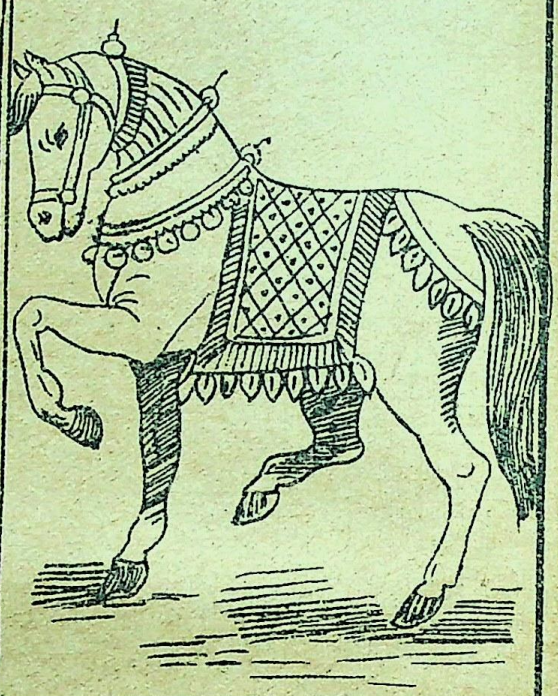

कल्याणी रंग घोड़ा नंबर ५० (देखो पृष्ठ ४७)

चंभा रंग घोड़ा नंबर ५२ (देखो पृष्ठ ४७)

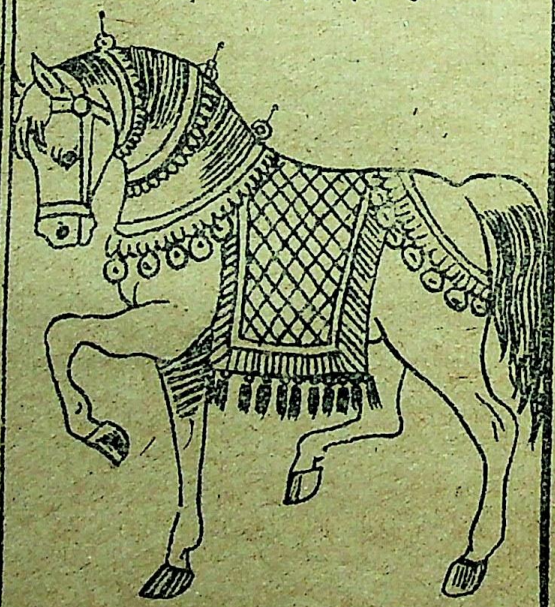

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लरखी रंग घोड़ा नंबर ५३ (देखो पृष्ठ ४७)

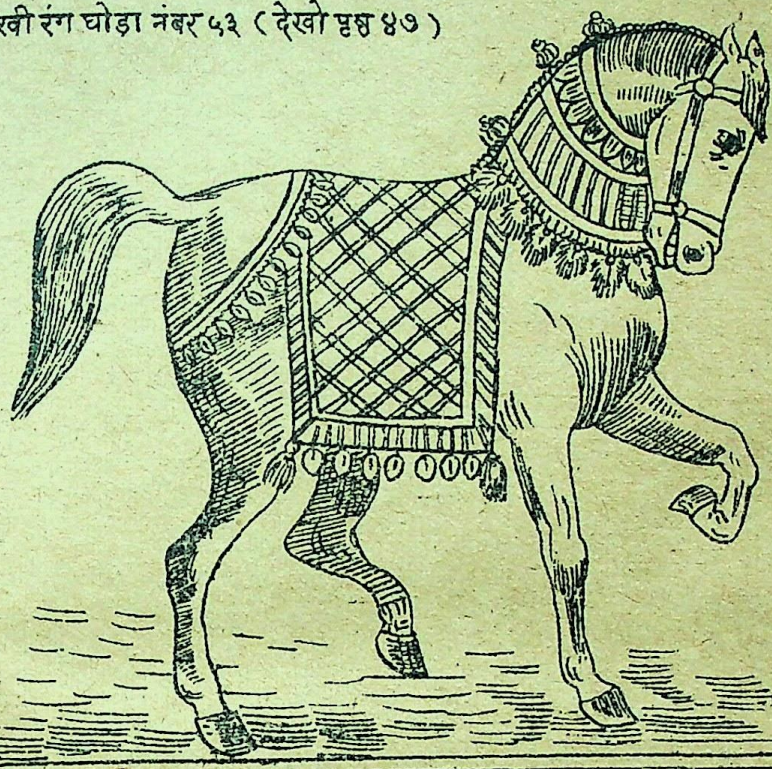

घूसरा रंग घोड़ा नंबर ५४ (देखो पृष्ठ ४७)

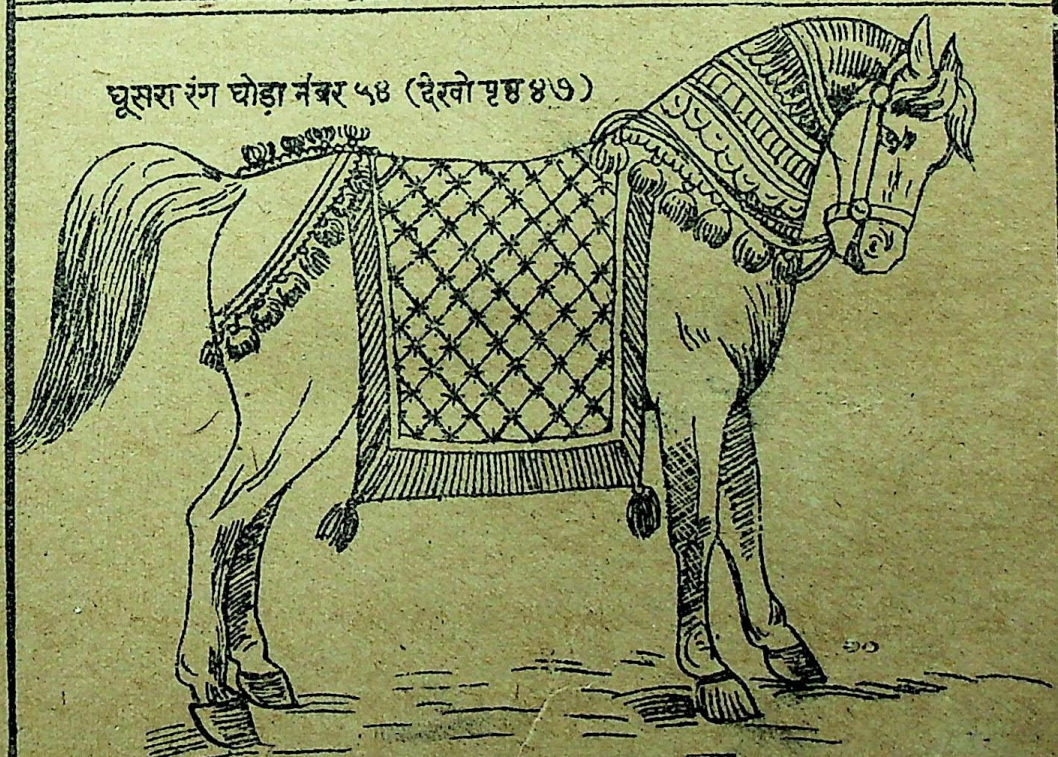

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

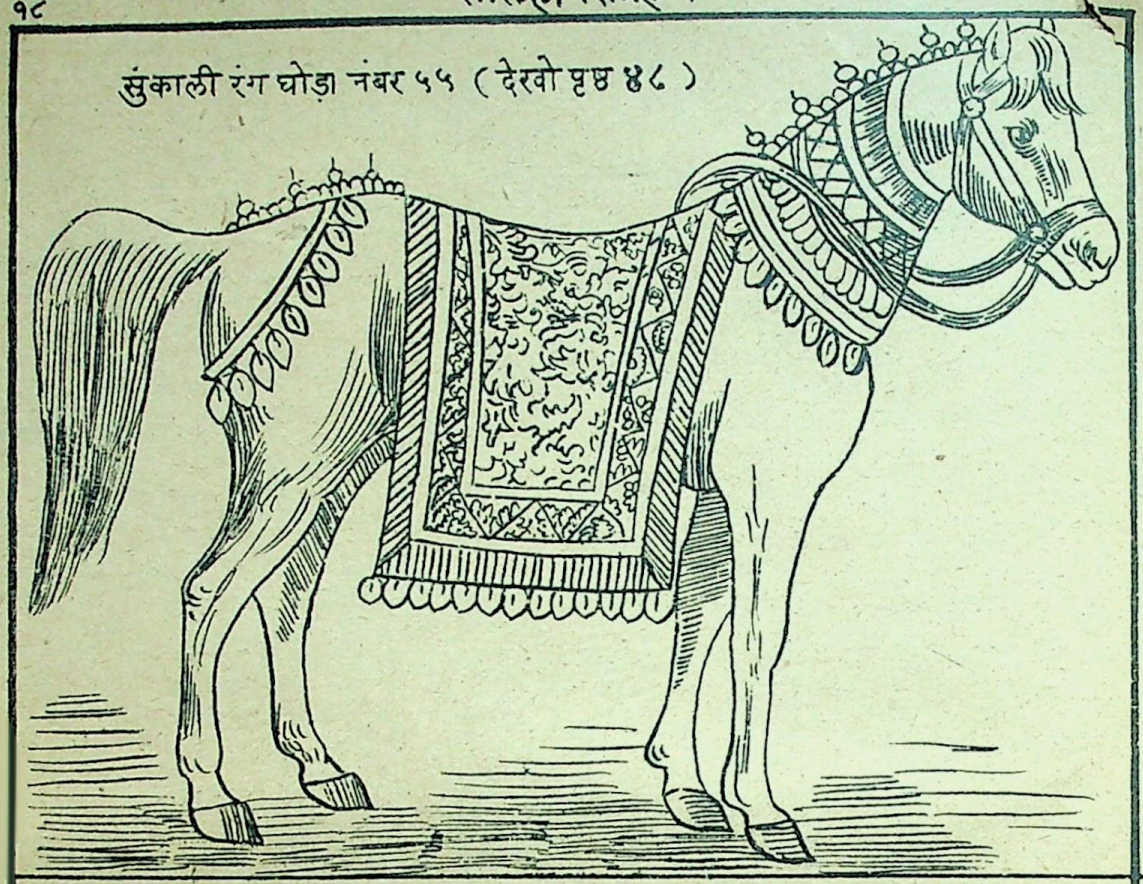

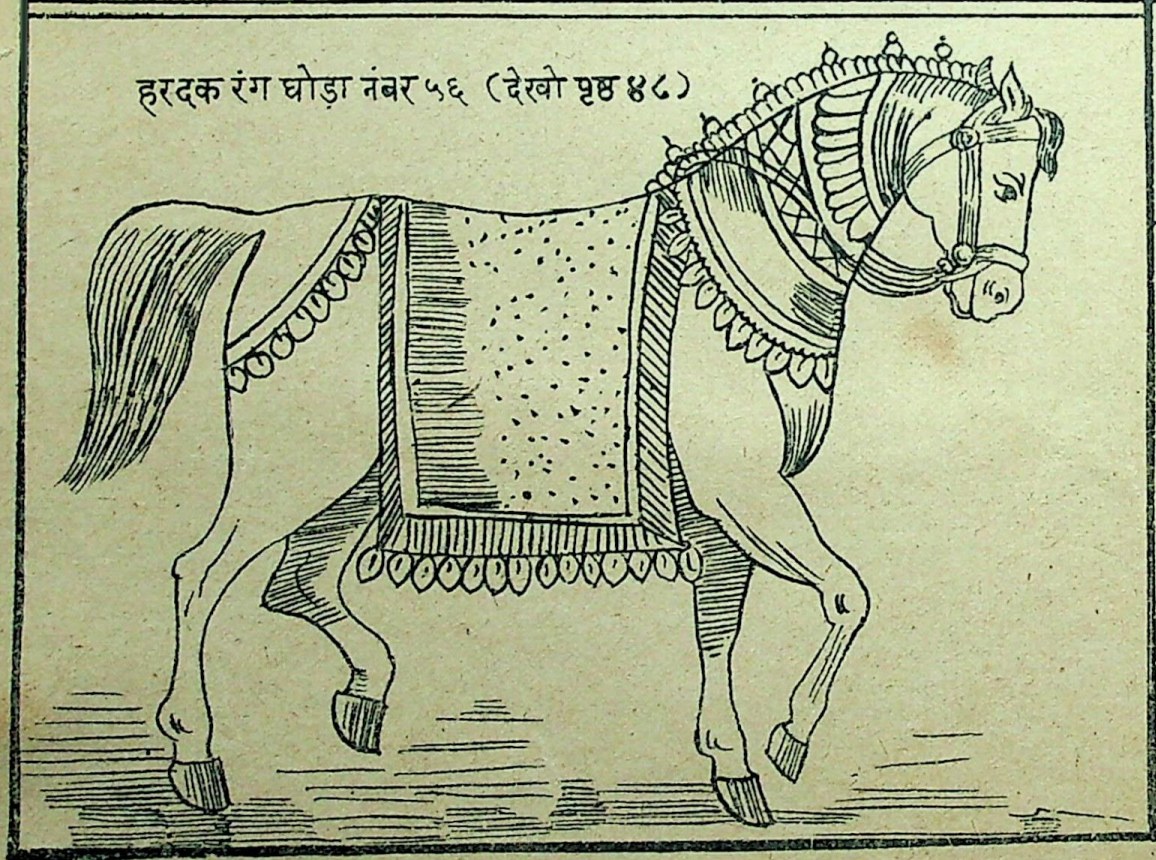

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूसली रंग घोड़ा नंबर ५७ (देखो पृष्ठ ४८)

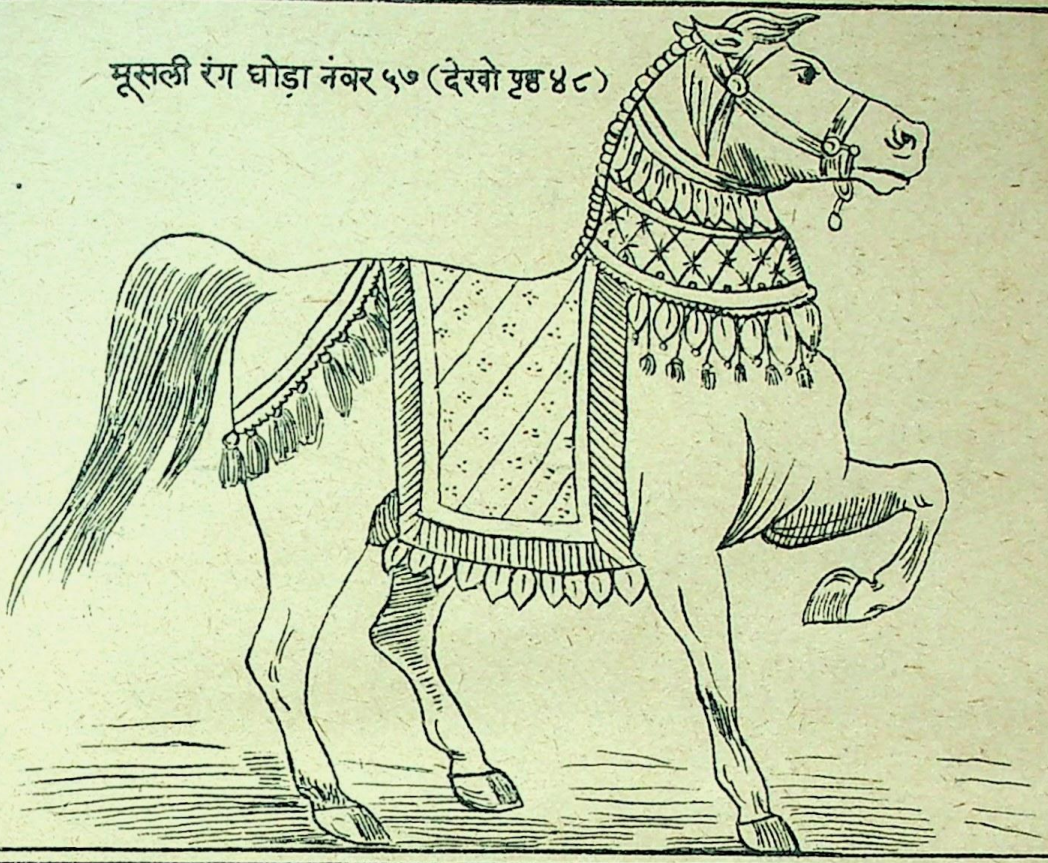

अहि मूसली रंग घोड़ा नंबर ५८ (देखो पृष्ठ ४८)

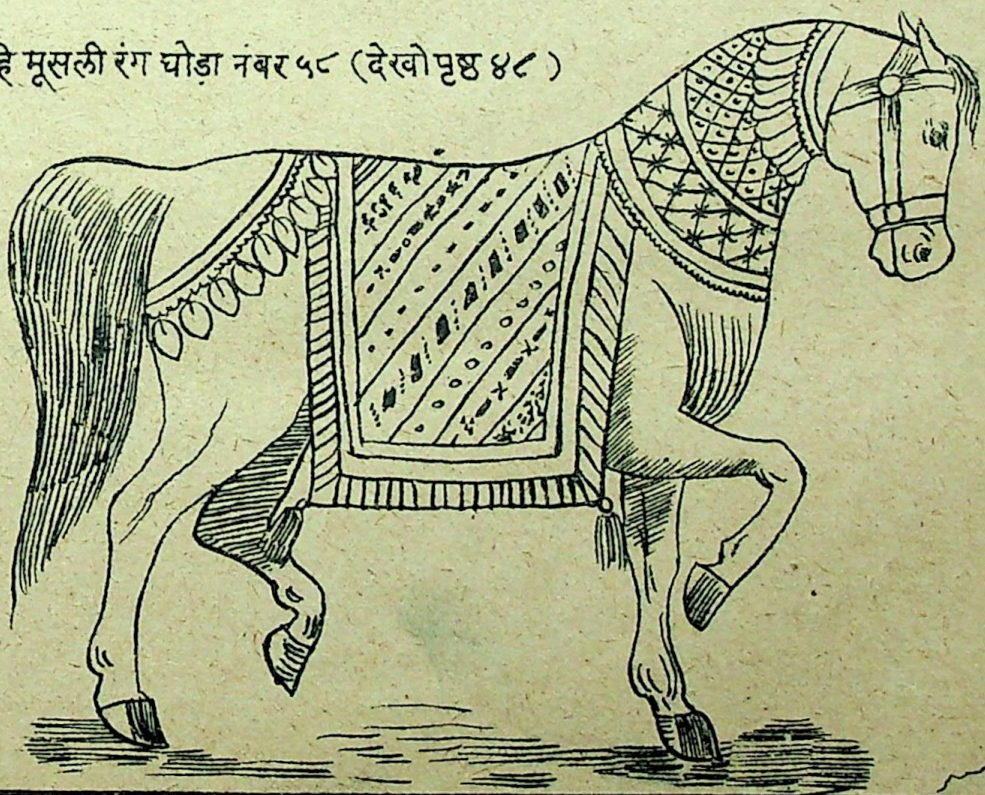

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

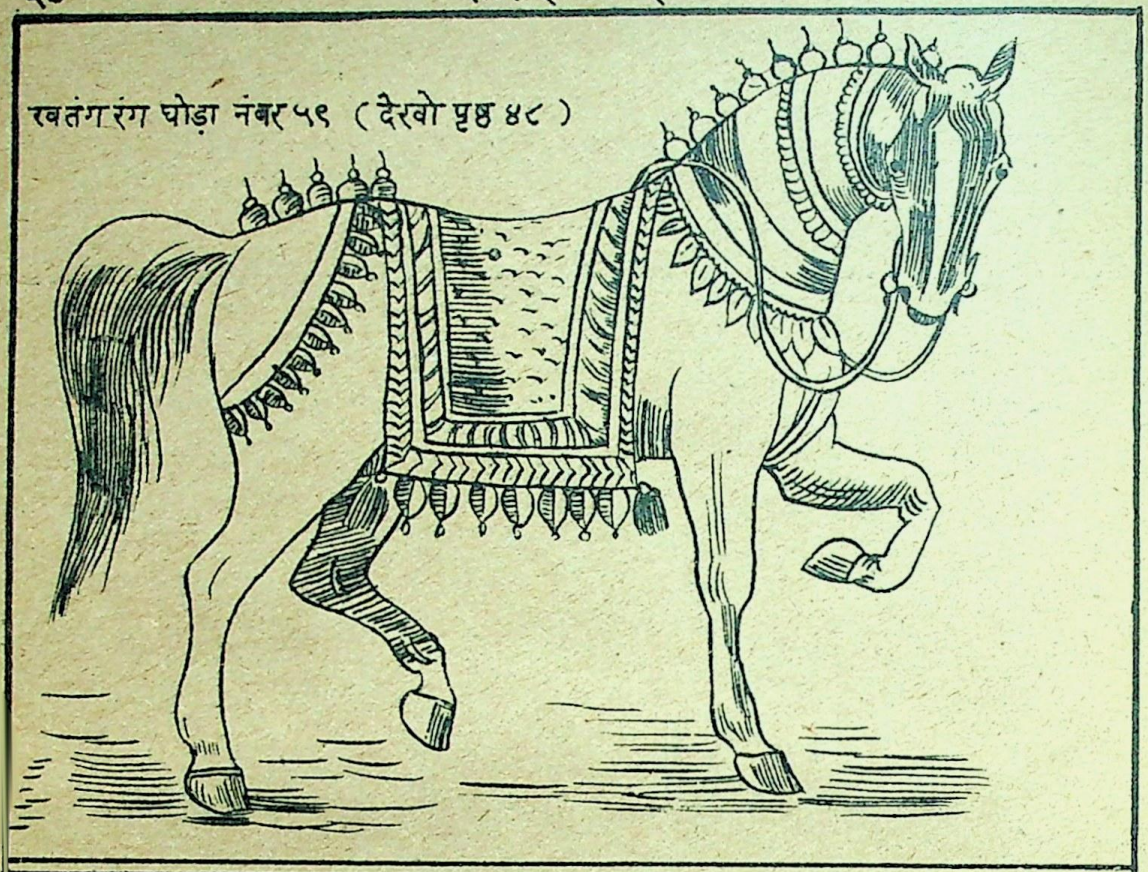

खतंग रंग घोड़ा नंबर ५९ (देखो पृष्ठ ४८)

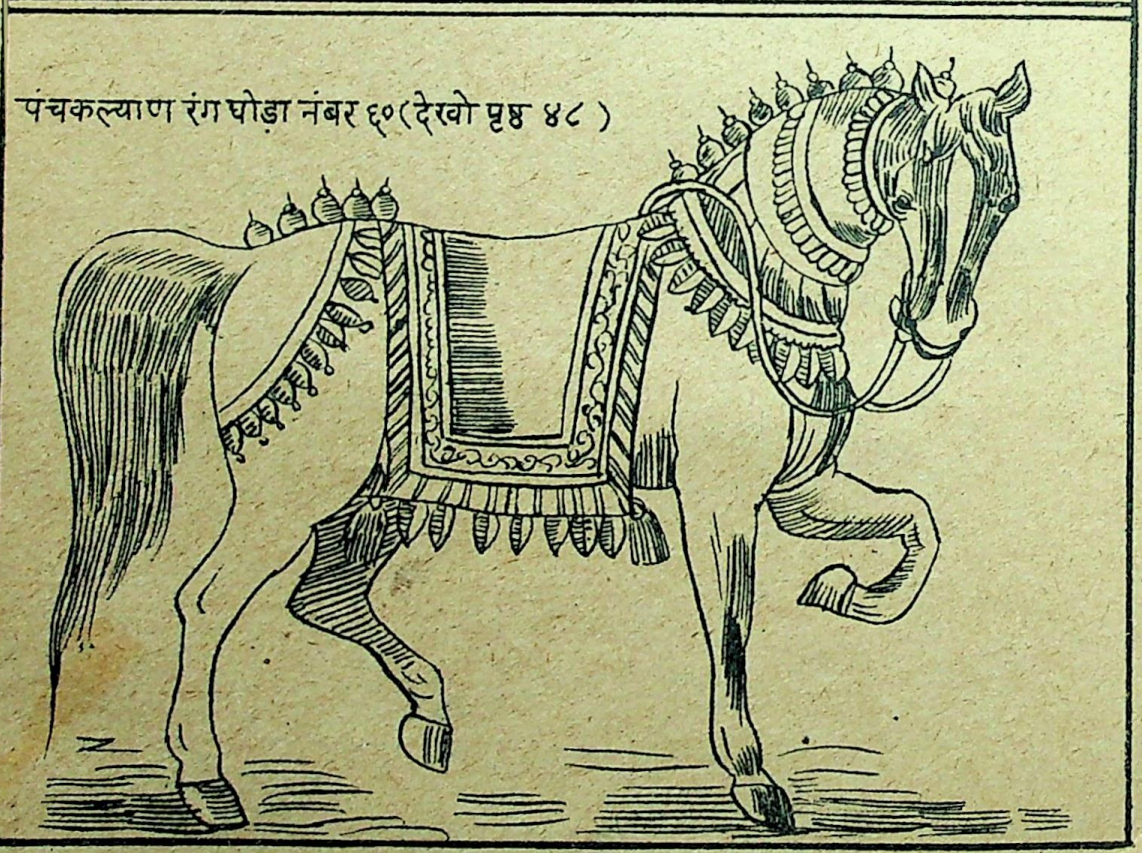

पंचकल्याण रंग घोड़ा नंबर ६०(देखो पृष्ठ ४८)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

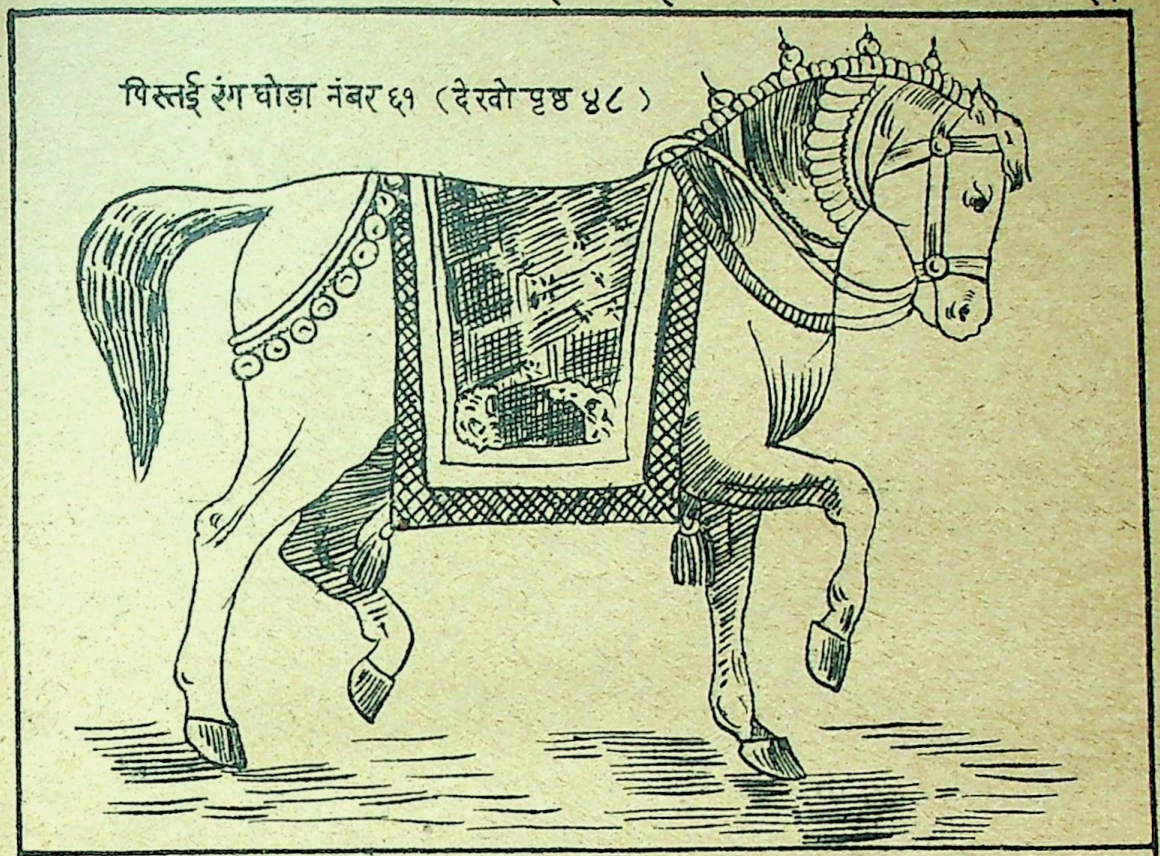

पिस्तई रंग घोड़ा नंबर ६१ (देखो पृष्ठ ४८)

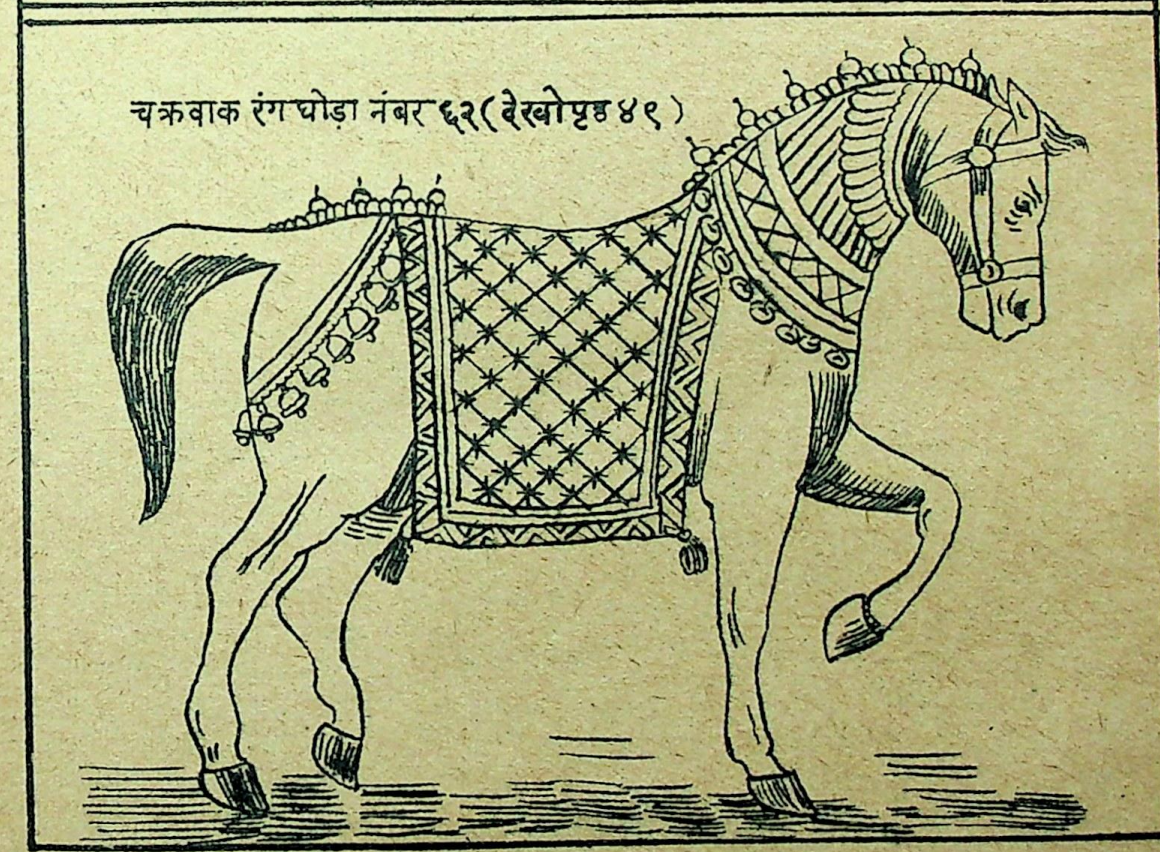

चक्रवाक रंग घोड़ा नंबर ६२ (देखो पृष्ठ ४९)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

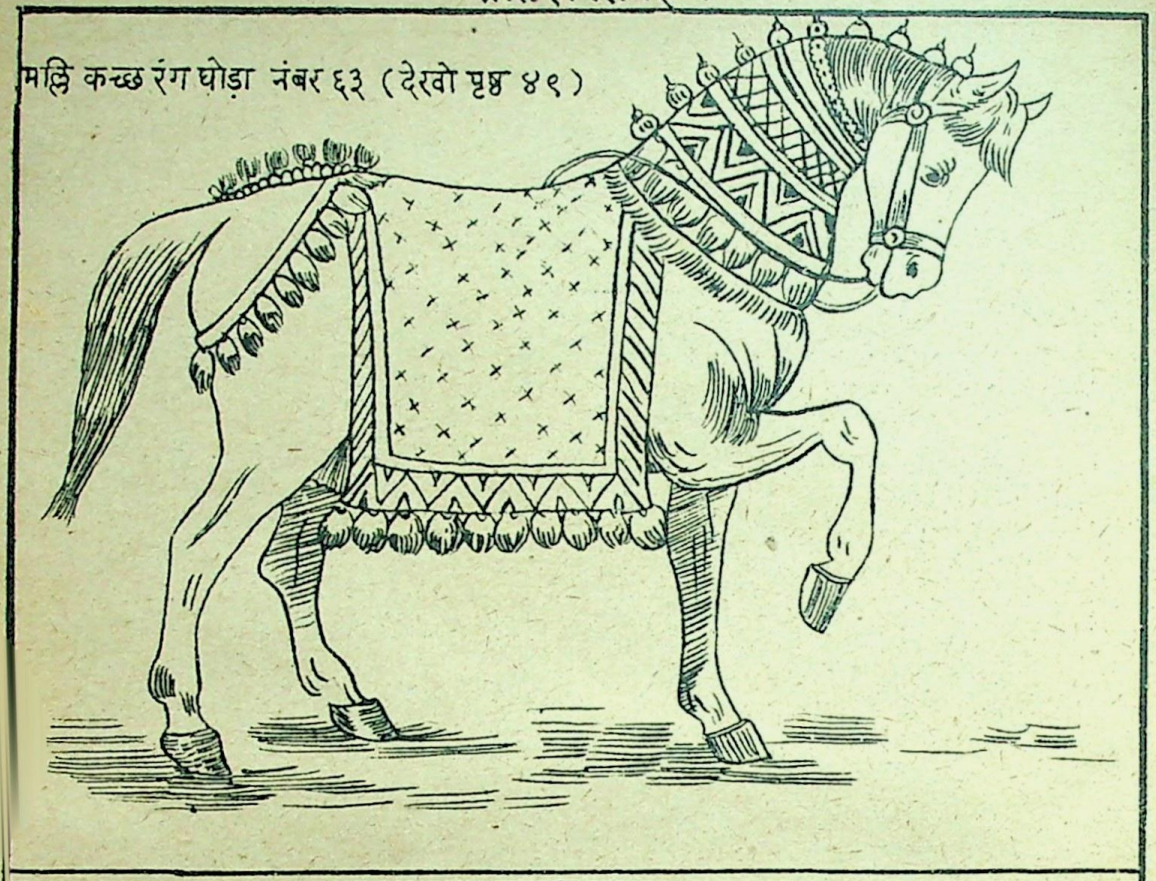

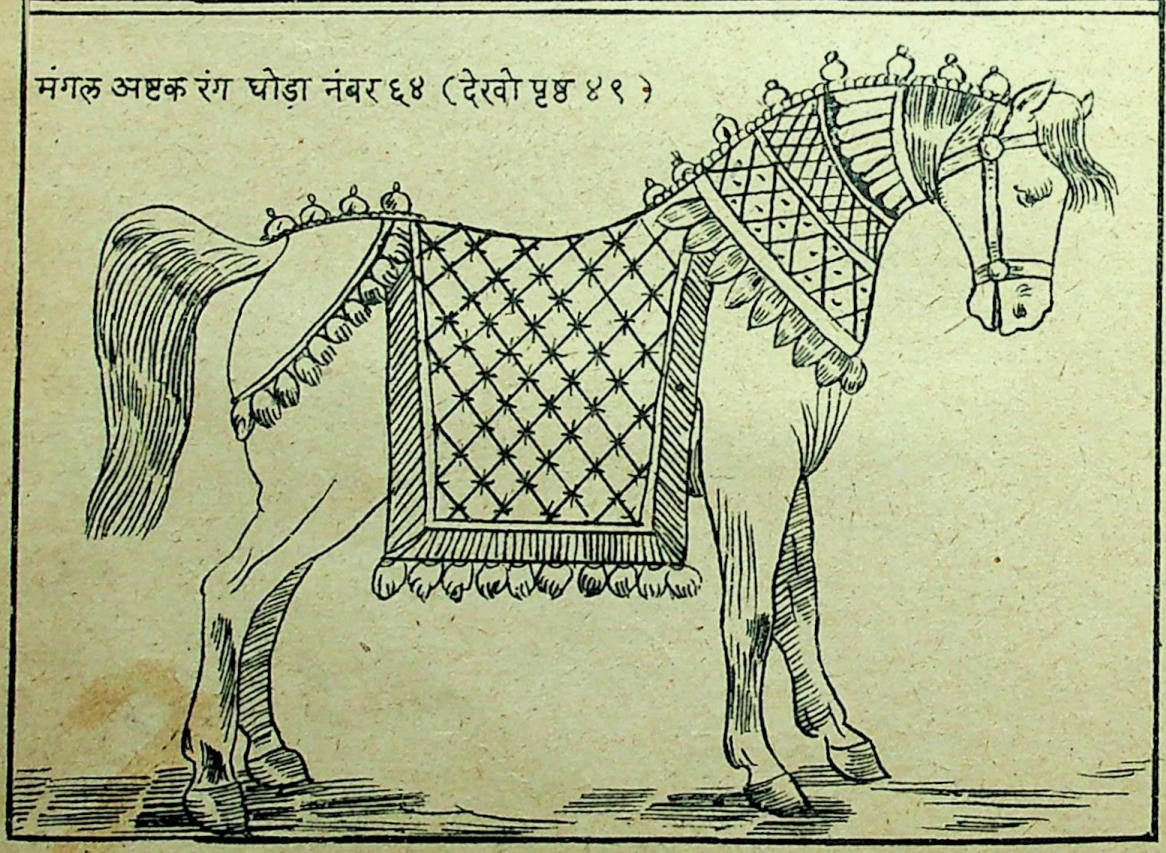

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

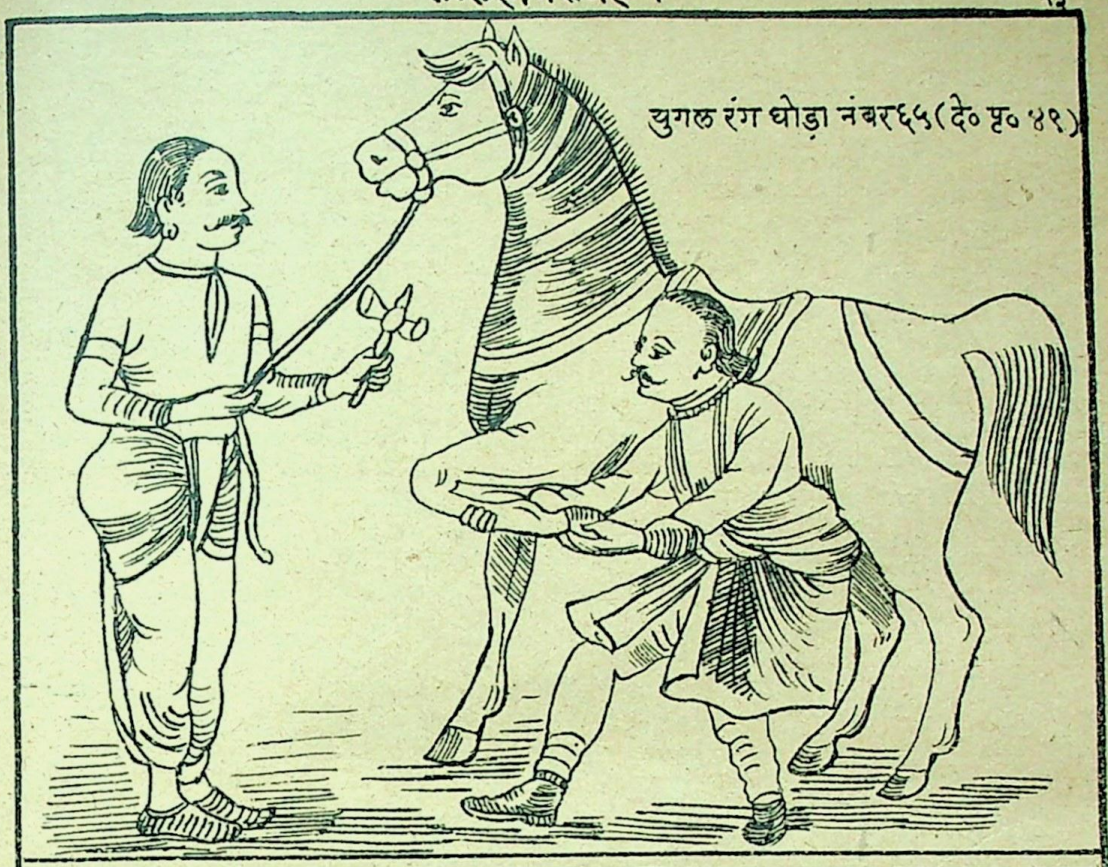

युगल रंग घोड़ा नंबर६५(दे० पृ० ४९)

वधिक रंग घोड़ा नंबर६६(दे० पृ० ४९)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

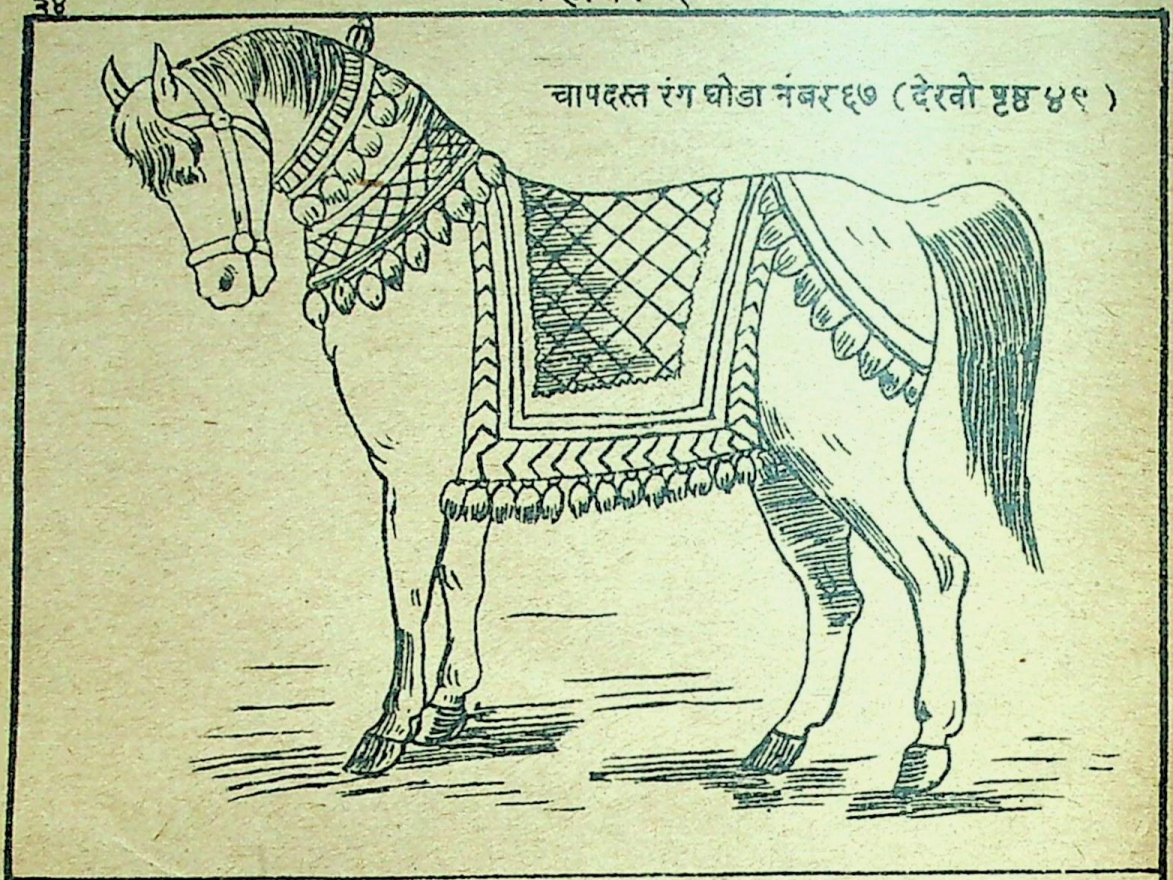

चापदस्त रंग घोडा नंबर ६७ (देखो पृष्ठ ४९)

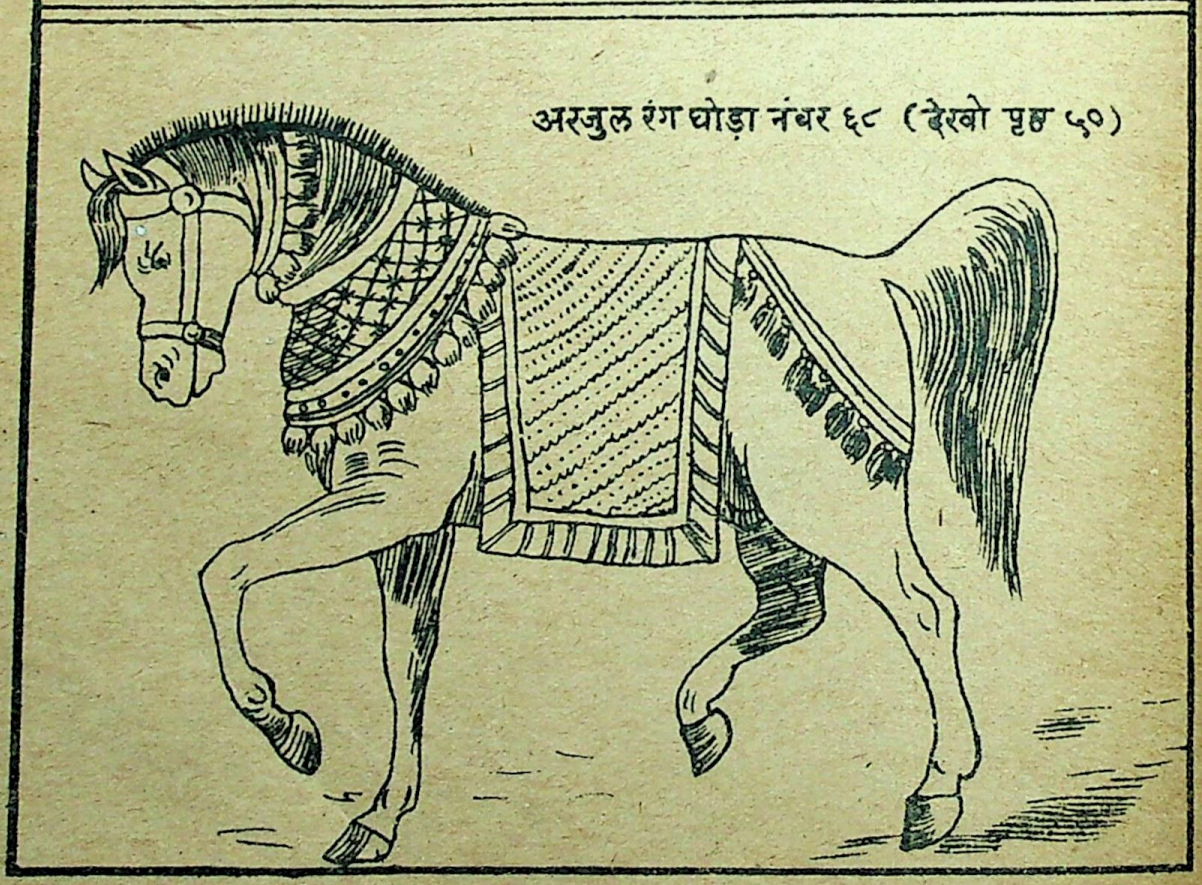

अरजुल रंग घोड़ा नंबर ६८ (देखो पृष्ठ ५०)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबुज पांयरंग घोड़ा नंबर ६९ (दे॰ पृ॰ ५०)

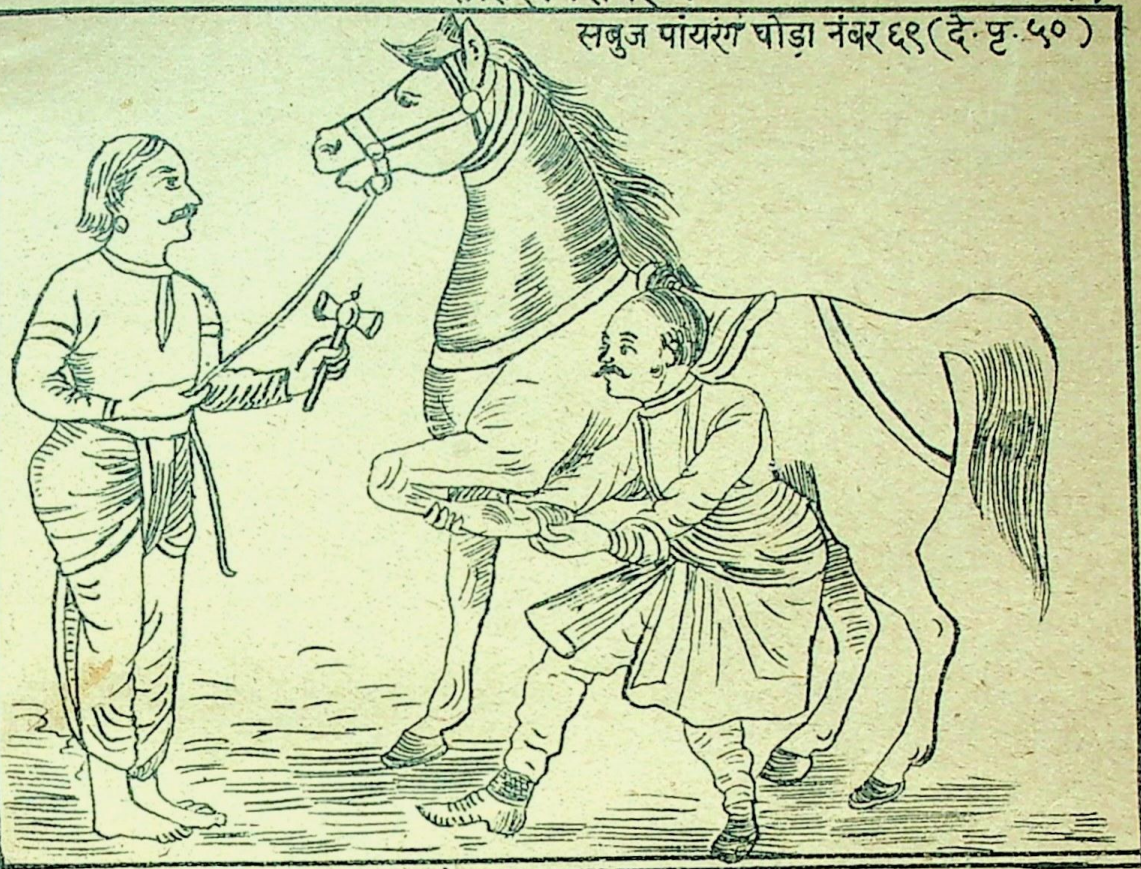

श्वेत-चरण घोड़ा नं॰ ७० (दे॰ पृ॰ ५०)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपट रंग घोड़ा नंबर ७१ (देखो पृष्ठ ५०)

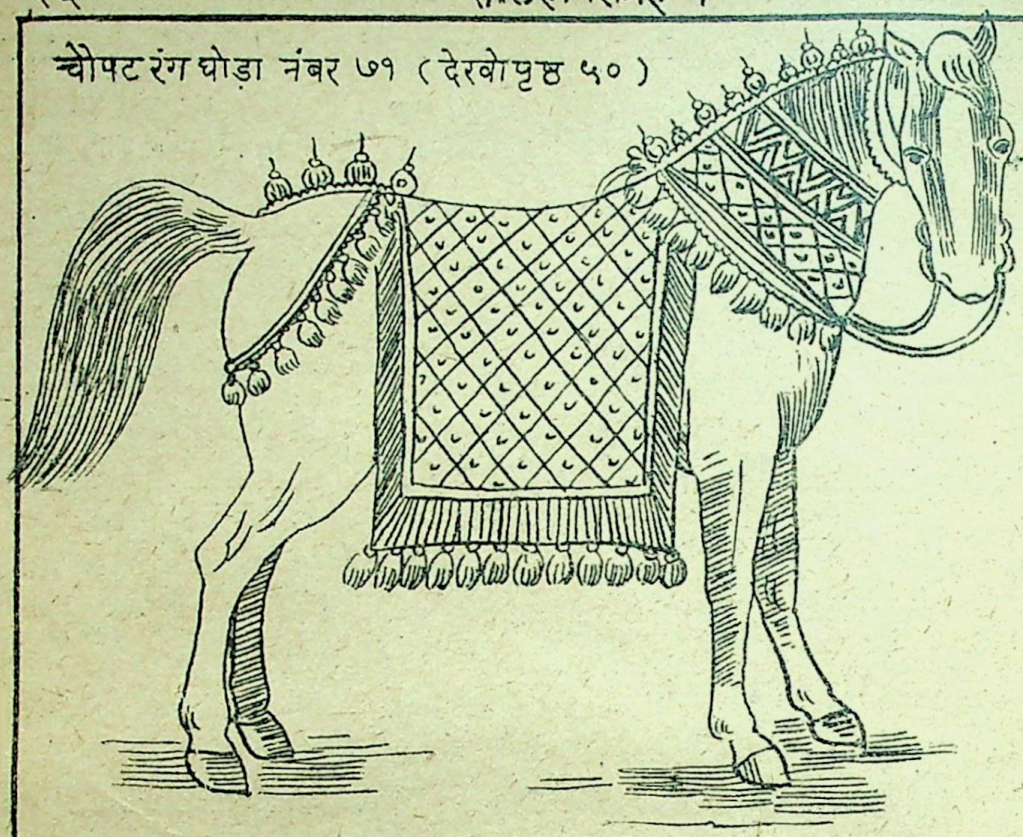

यमदूत रंग घोड़ा नंबर ७२ (दे. पृ. ५०)

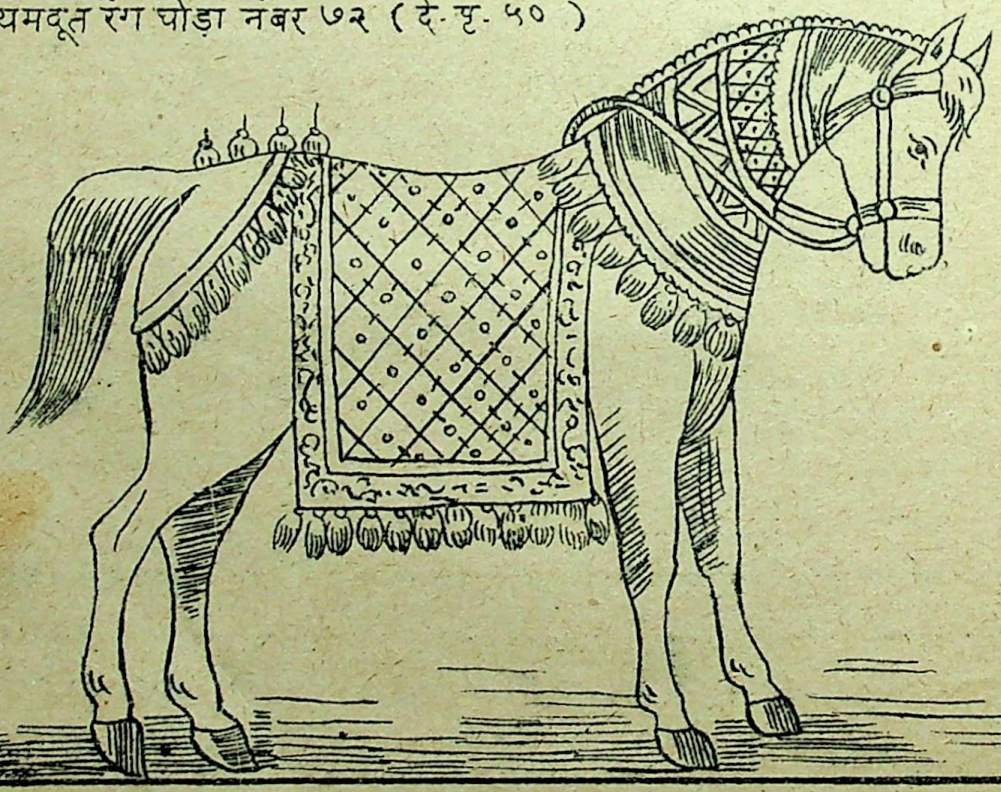

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

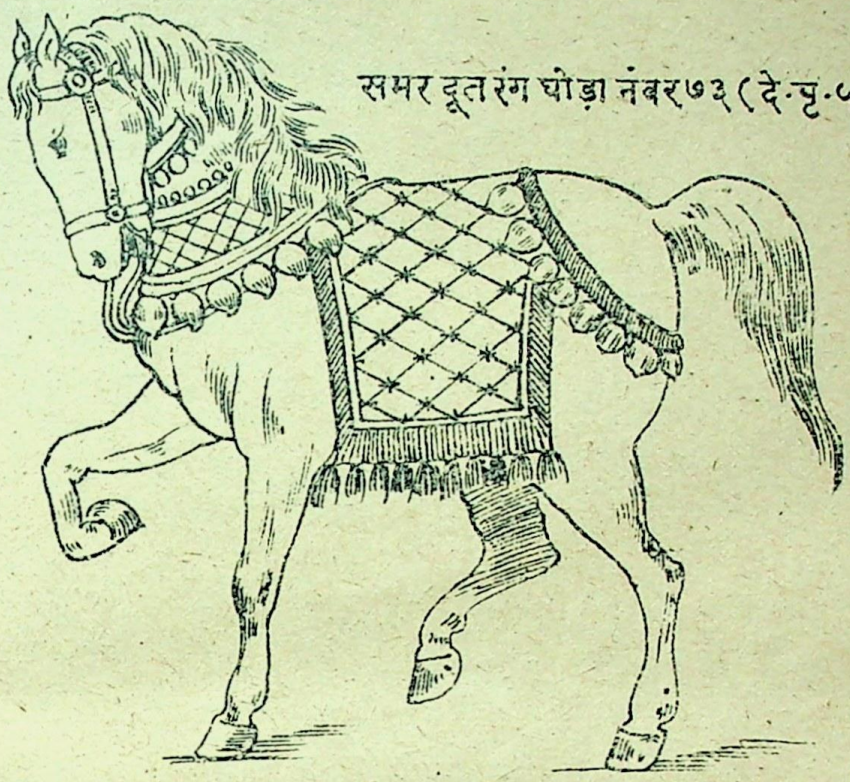

समर दूतरंग घोड़ा नंबर ७३ (दे·पृ·५०)

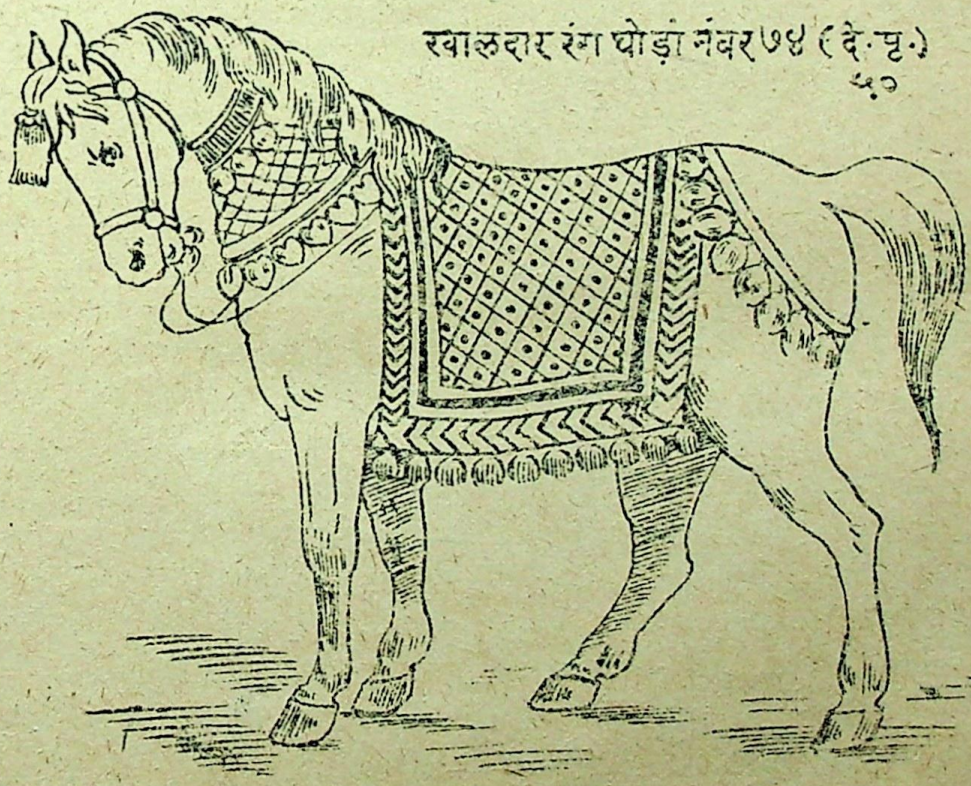

खालदार रंग घोड़ा नंबर ७४ (दे·पृ·) ५०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

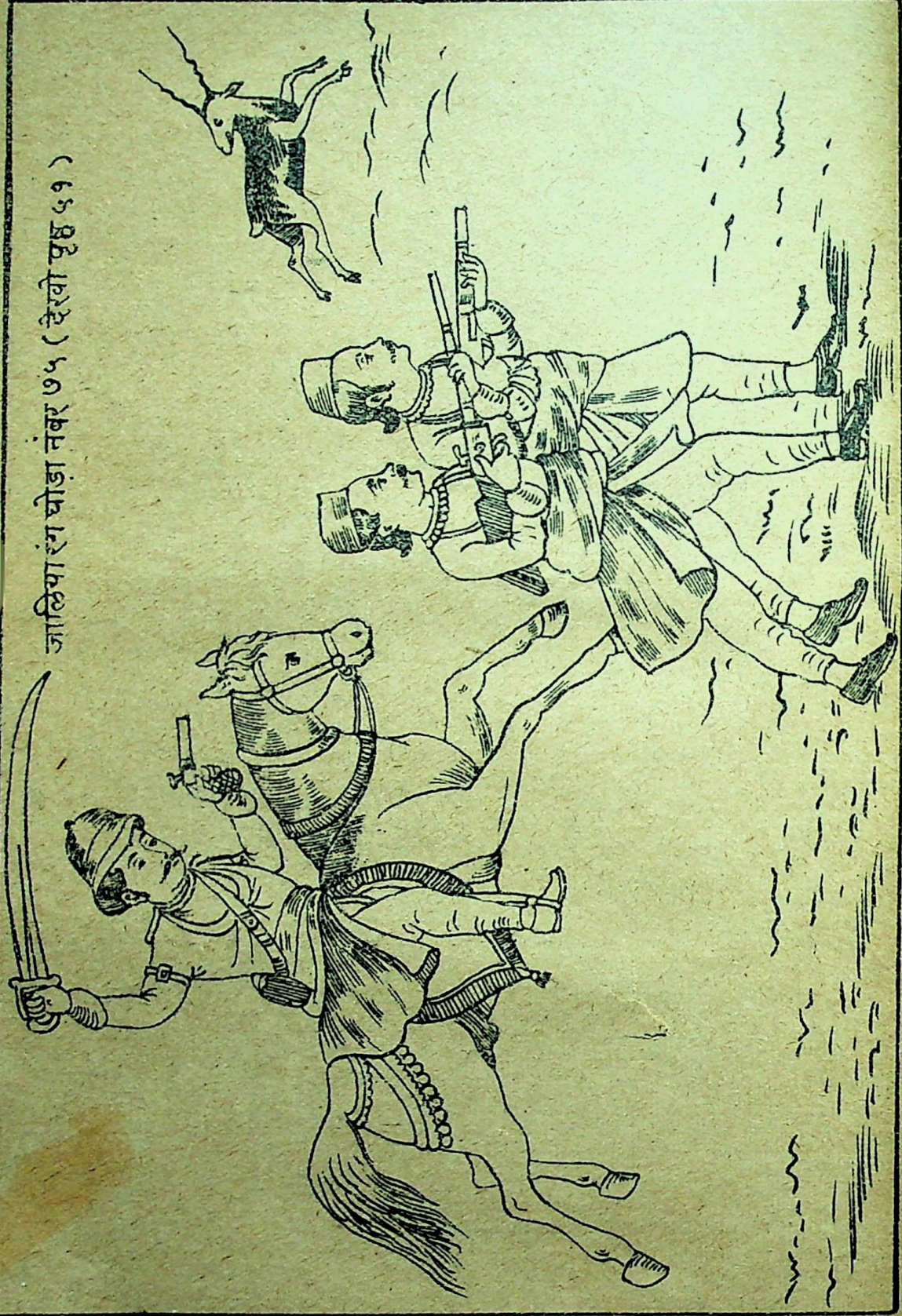

जालिया रंग घोड़ा नंबर ७५ (देखो पृष्ठ ५१)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

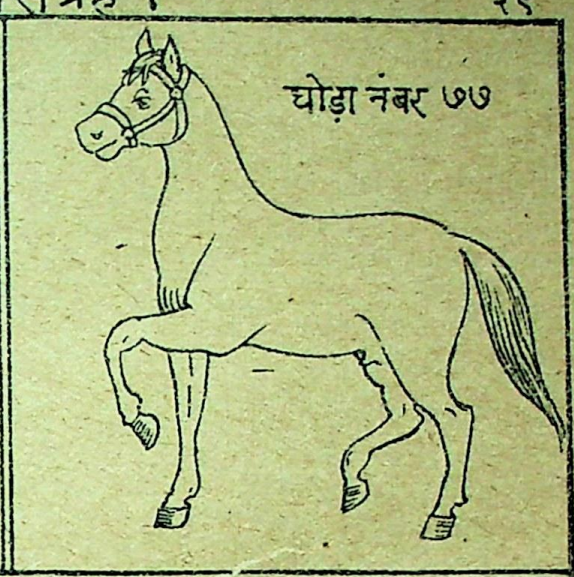

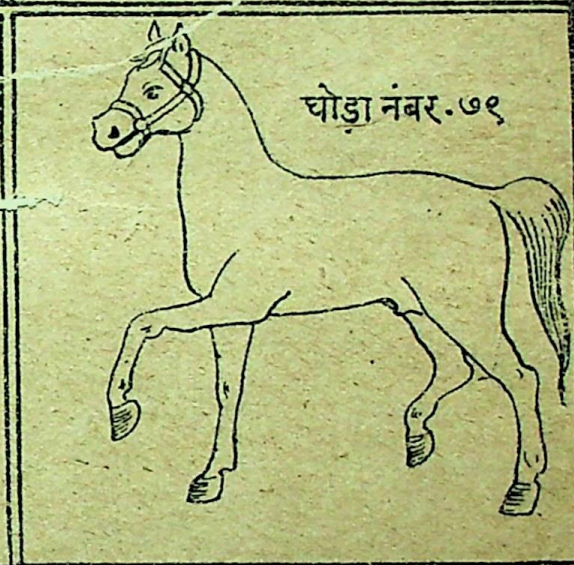

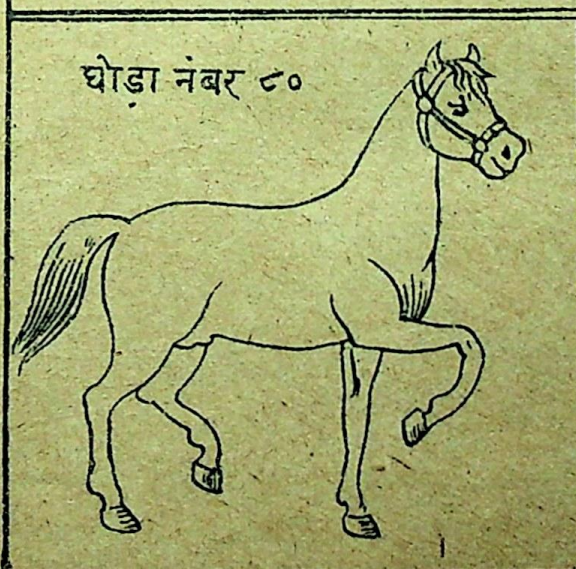

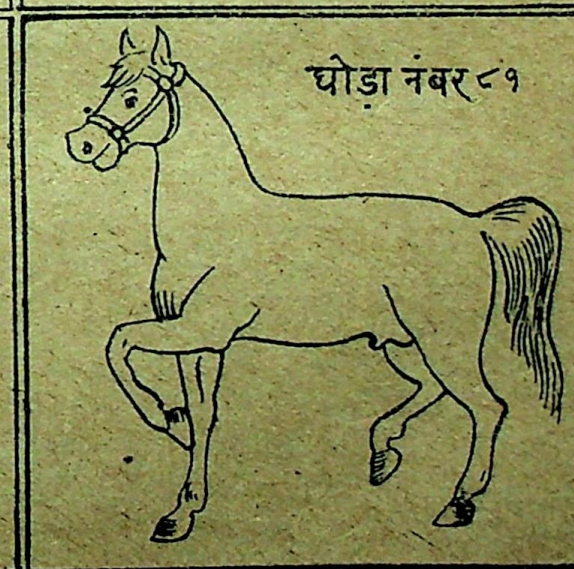

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

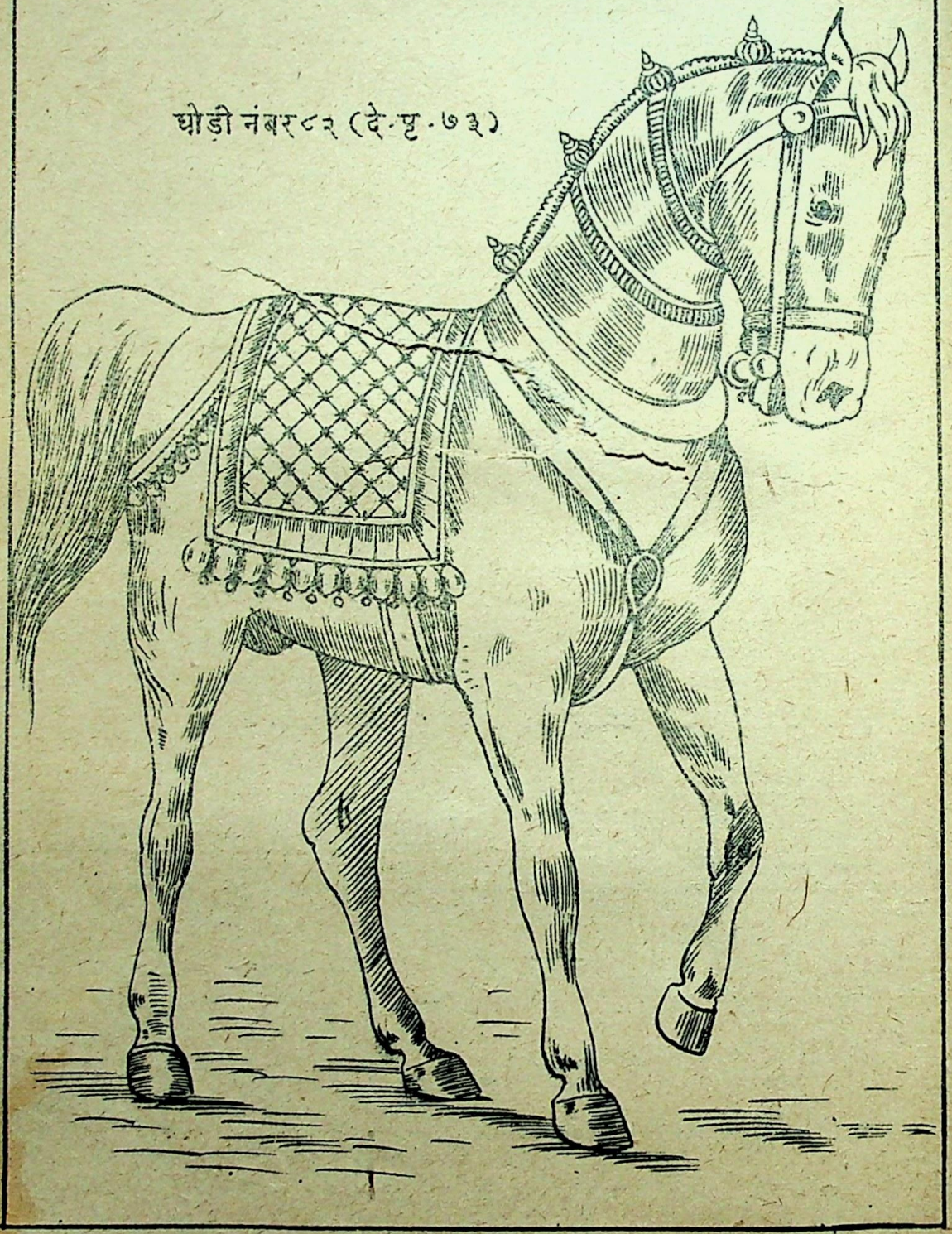

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

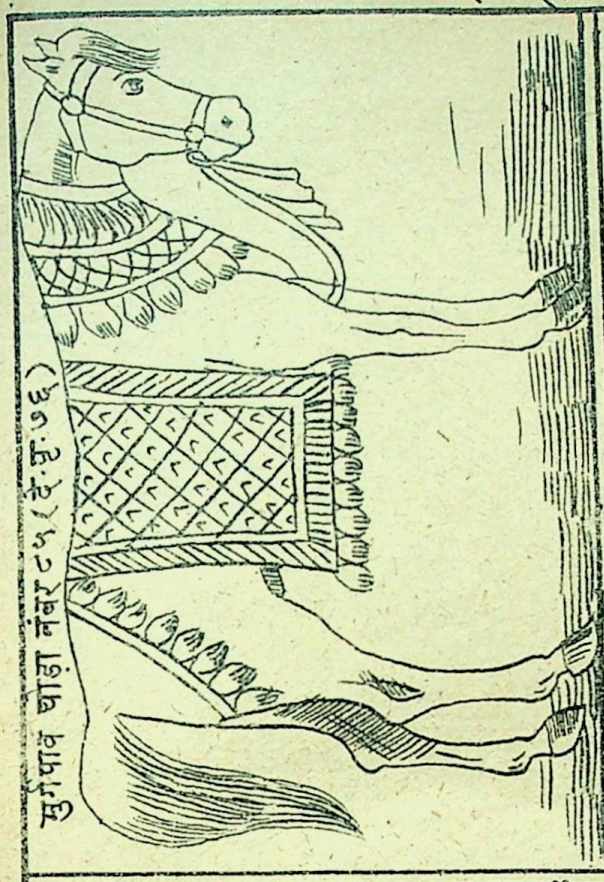

मुगपाव घोड़ा नंबर ८५ (देखो पृष्ठ ७६)

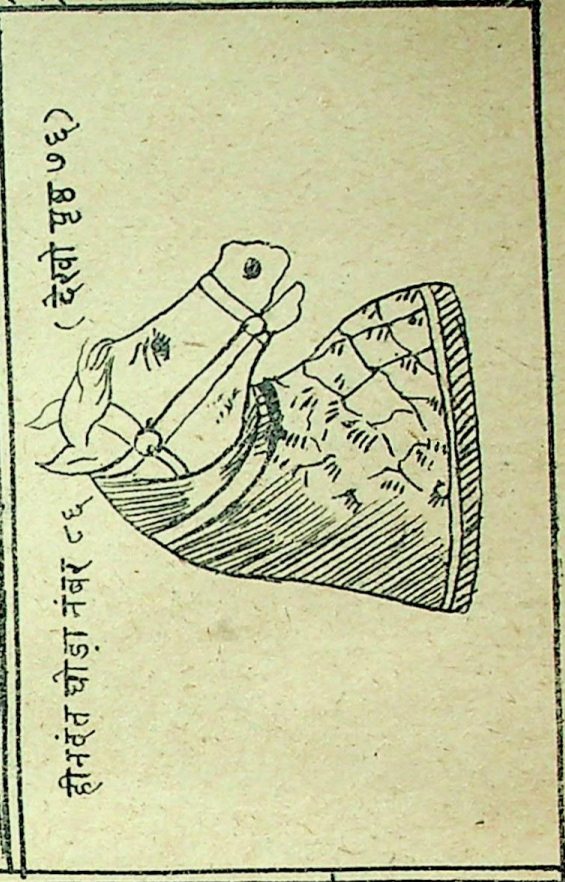

हीनदंत घोड़ा नंबर ८५ (देखो पृष्ठ ७३)

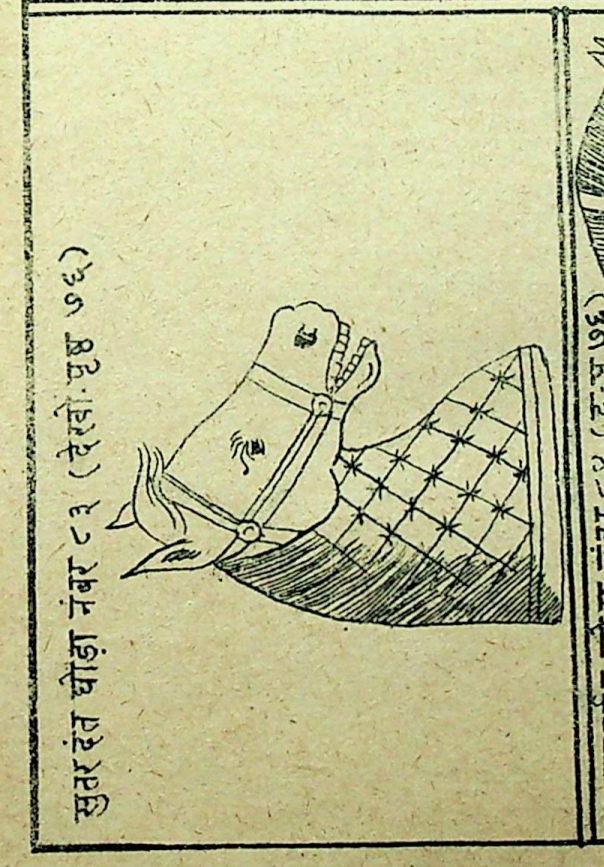

सुंदरदंत घोड़ा नंबर ८३ (देखो पृष्ठ ७६)

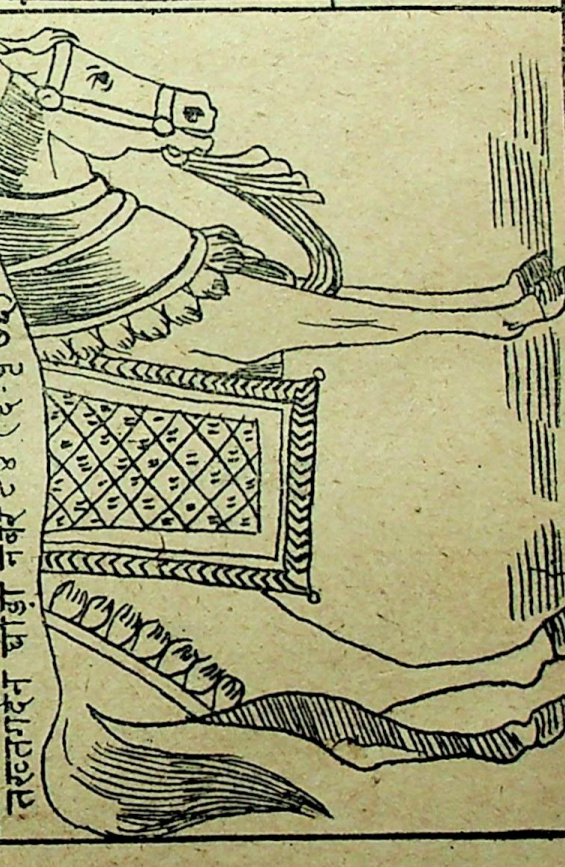

नरतगर्दन घोड़ा नंबर ८४ (देखो पृष्ठ ७६)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

अहिमुखी घोड़ा नं. ८७ (दे. पृ. ७७)

ऊपरका वोठ उठातै घोड़ा नं. ८८ (दे. पृ. ७७)

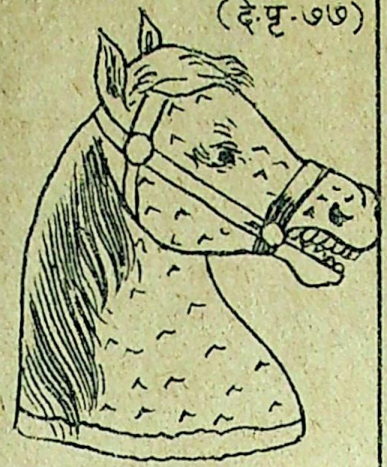

कराली दोष घोड़ा नंबर ८९ (दे. पृ. ७७

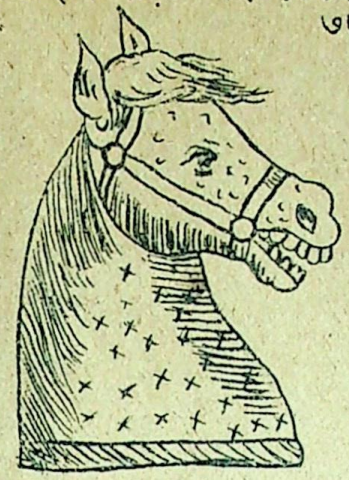

मूसली घोड़ा नं. ९० (दे. पृ. ७८)

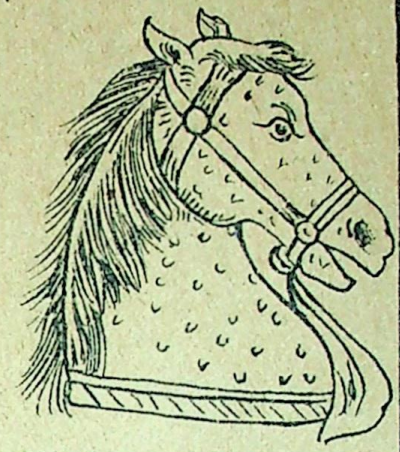

ससा करण घोड़ा नं. ९१ (दे. पृ. ७८)

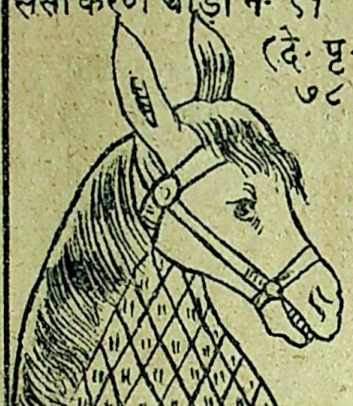

गज करण घोड़ा नं. ९२ (दे. पृ. ७८)

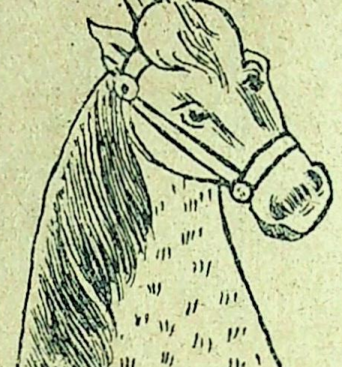

एक छोटा कान एक बड़ा कान घोड़ा नं. ९३ (देखो पृष्ठ ७८)

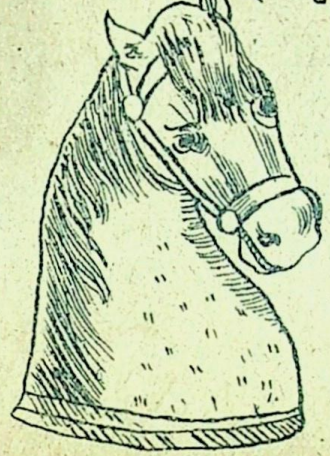

ताषी घोड़ा नं. ९४ (देखो पृष्ठ ७८)

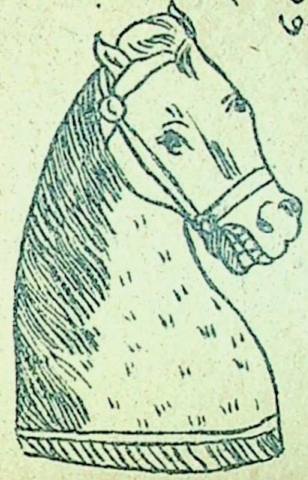

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

चक्रदोष घोड़ा नंबर ९५ (देखो पृष्ठ ७८)

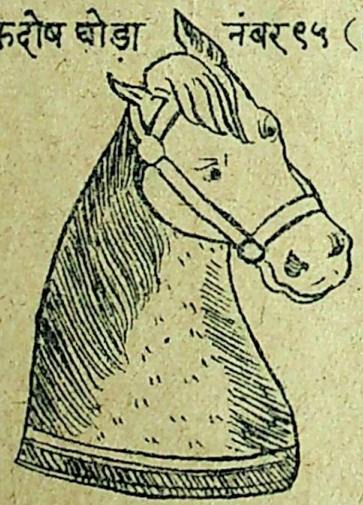

महिषागदोषघोड़ा नंबर ९६ (देखो पृष्ठ ७८)

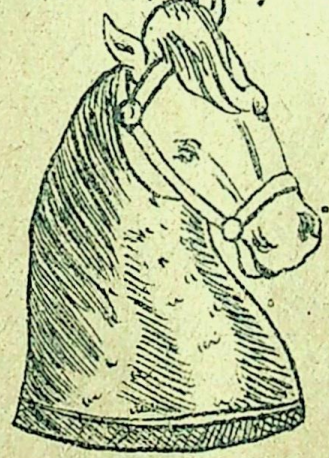

बिल्लीनेत्र वर्णदोष घोड़ा नं० ९७ (दे॰पृ॰ ७८)

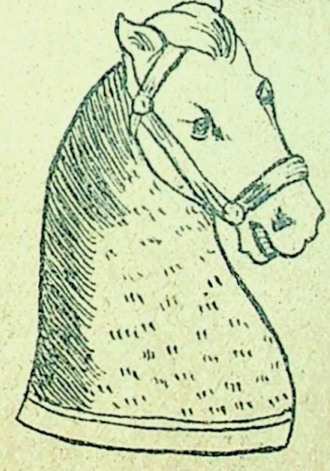

कामाली बैलग्रीव मनीदोष घोड़ा नंबर ९८ (दे॰पृ॰ ७८)

कालिंजलिंगपरटीका मोदुमी खुरसुम्मी घोड़ा नं॰ ९९ (दे॰पृ॰ ७८)

पूछकी डंडी श्वेत झारू दुमकंठघाटी घोड़ा नं० १०० (देखो पृष्ठ ७९)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

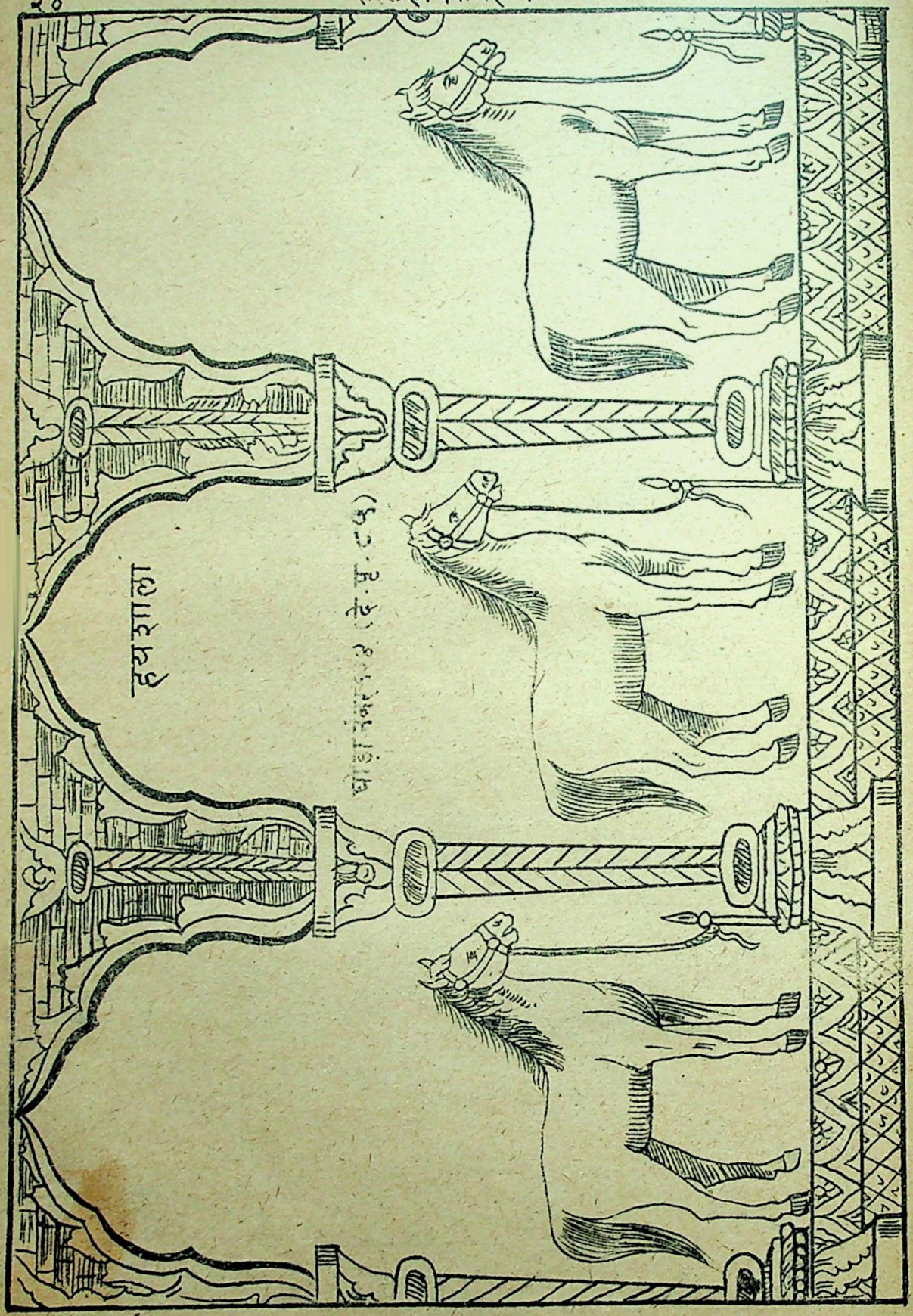

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विभत्स ज्वर नंबर १०५ (दे. पृ. १३०)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

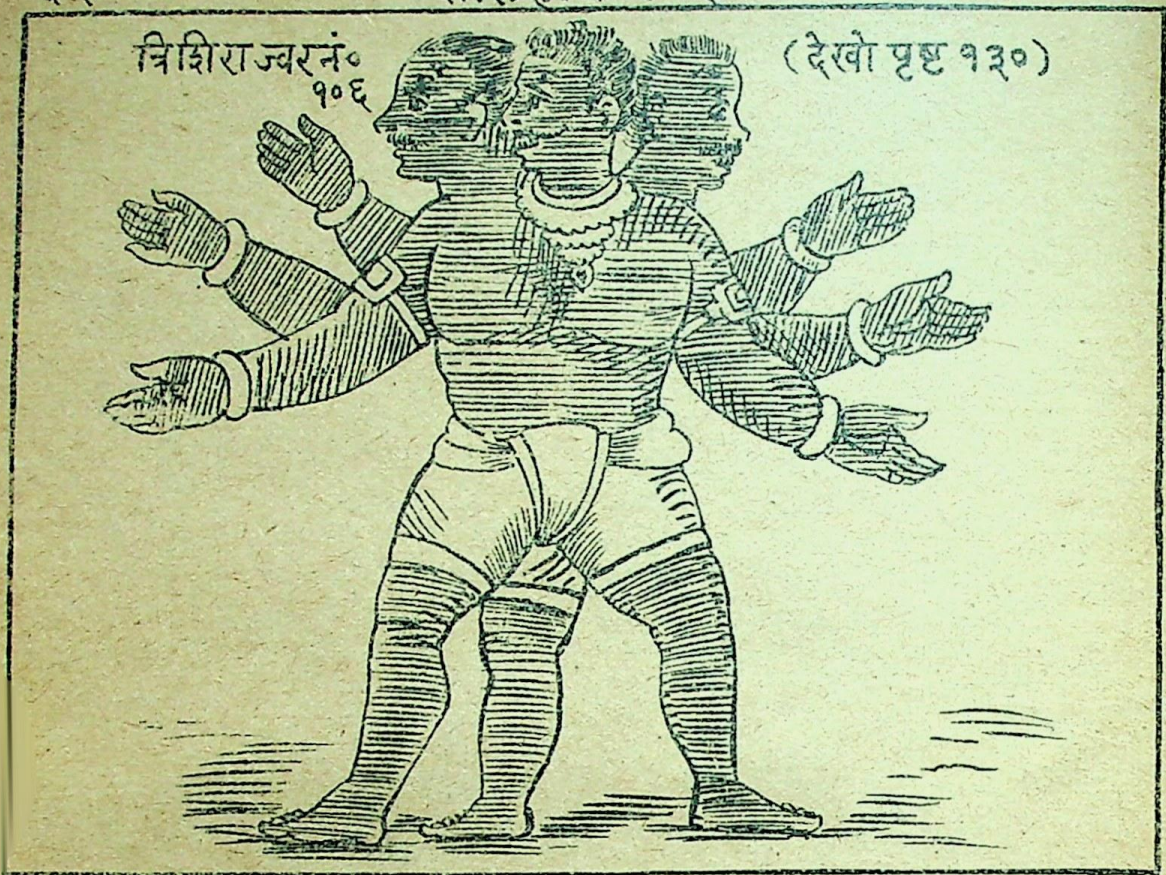

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भस्मप्रहार ज्वर नंबर १०८
(देखो पृष्ठ १३१)

विषादज्वर नं० १०९ (दे० पृ० १३२)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिंगाक्ष ज्वर नं. ११०
(दे. पृ. १३२)

लंबोदर ज्वर नंबर १११
(दे. पृ. १३२)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भैरो ज्वर नंबर ११२. (दे. पृ. १३२)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

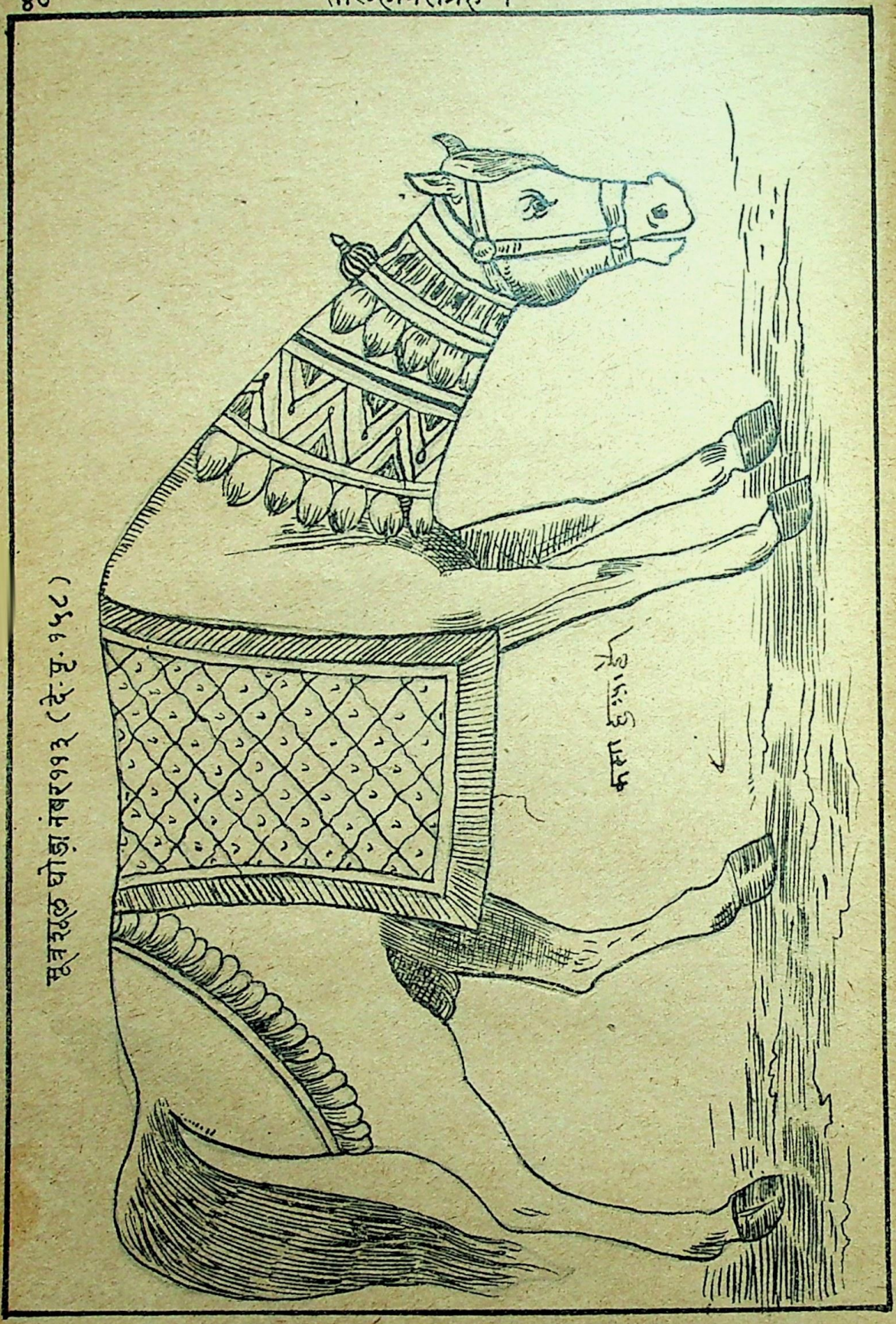

सूत्रस्थल घोड़ा नंबर ११३ (दे. पृ. १५८)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूत्र प्रवर्तकशूल घोड़ा नंबर ११४ (देखो पृष्ठ १६०)

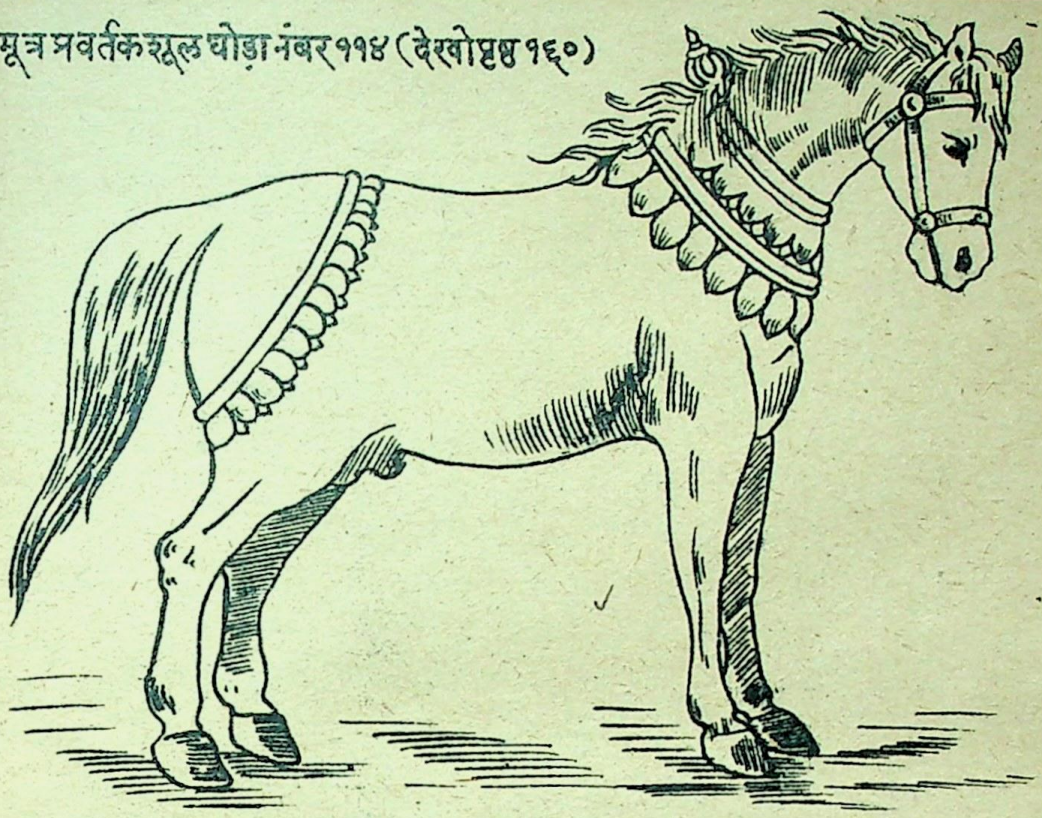

लीदिबंदशूल घोड़ा नंबर ११५ (देखो पृष्ठ १६१)

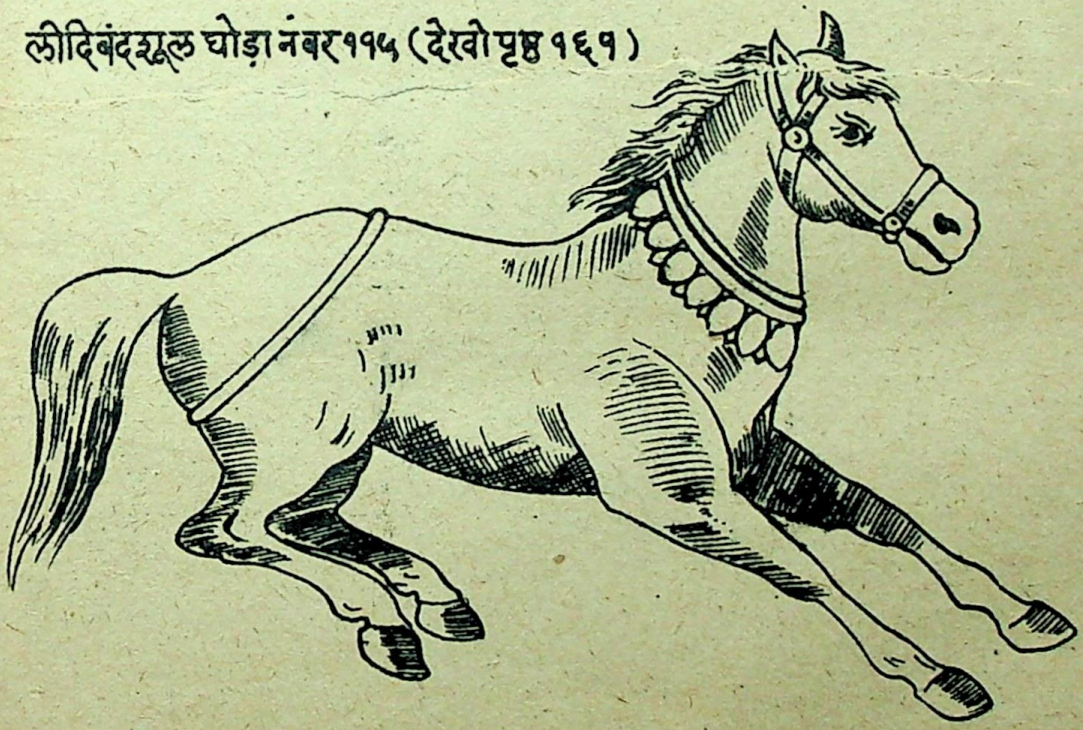

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वायशूल घोड़ा नंबर ११६ (देखो पृष्ठ १६१)

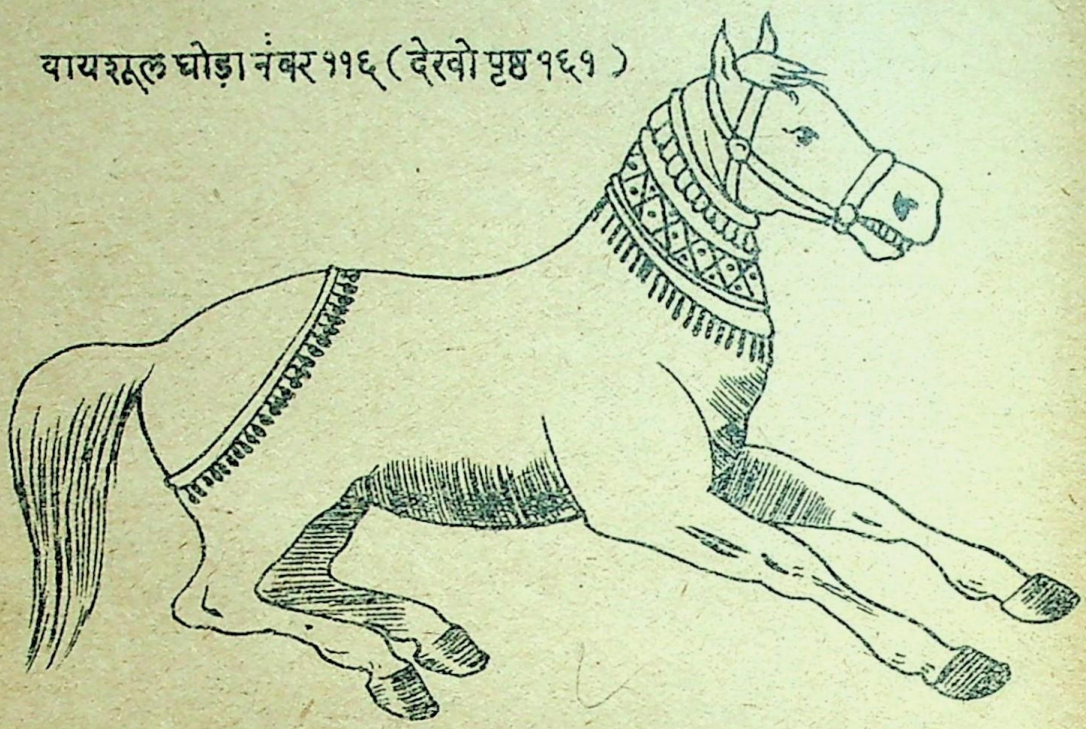

दूसरा वायशूल घोड़ा नंबर ११७ (देखो पृष्ठ १६१)

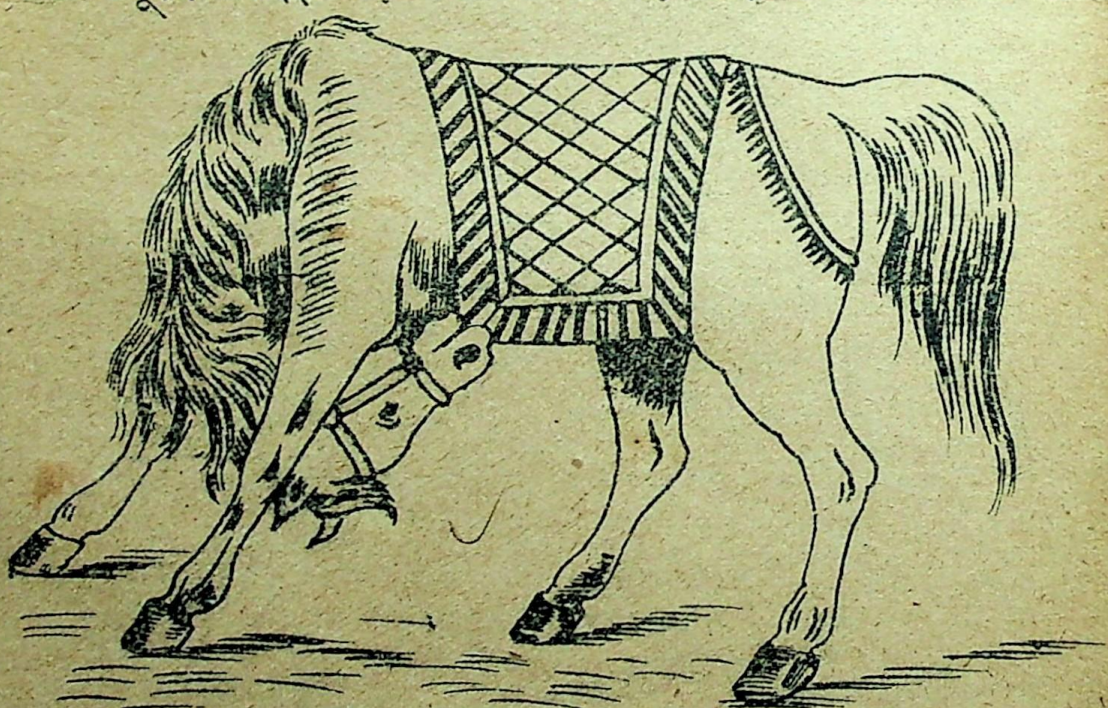

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुम मिरोर शूल घोड़ा नंबर ११८ (देखो पृष्ठ १६२)

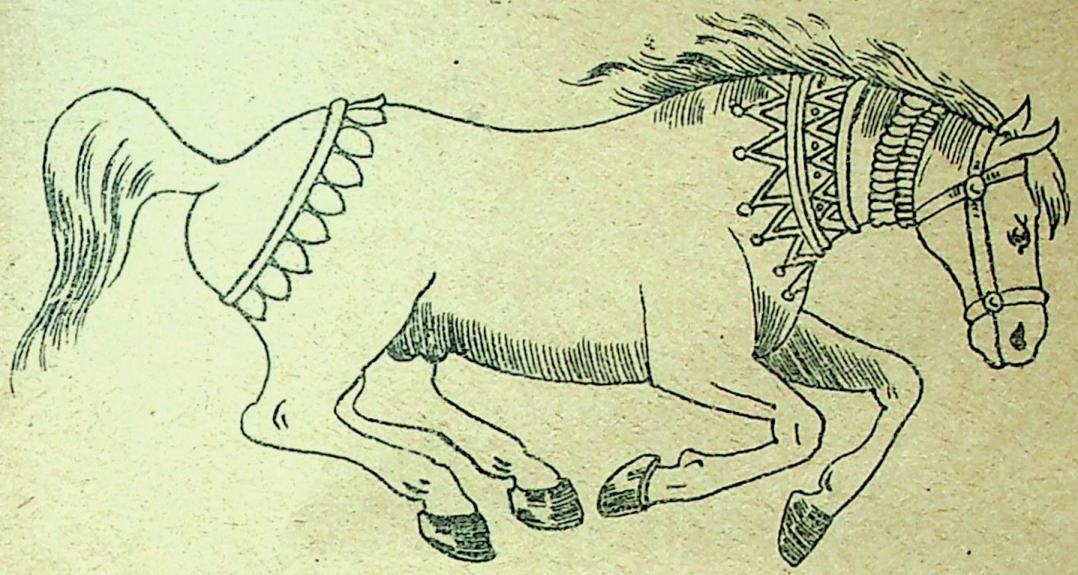

वायु भक्षशूल घोड़ा नंबर [illegible] देखो पृष्ठ १६२)

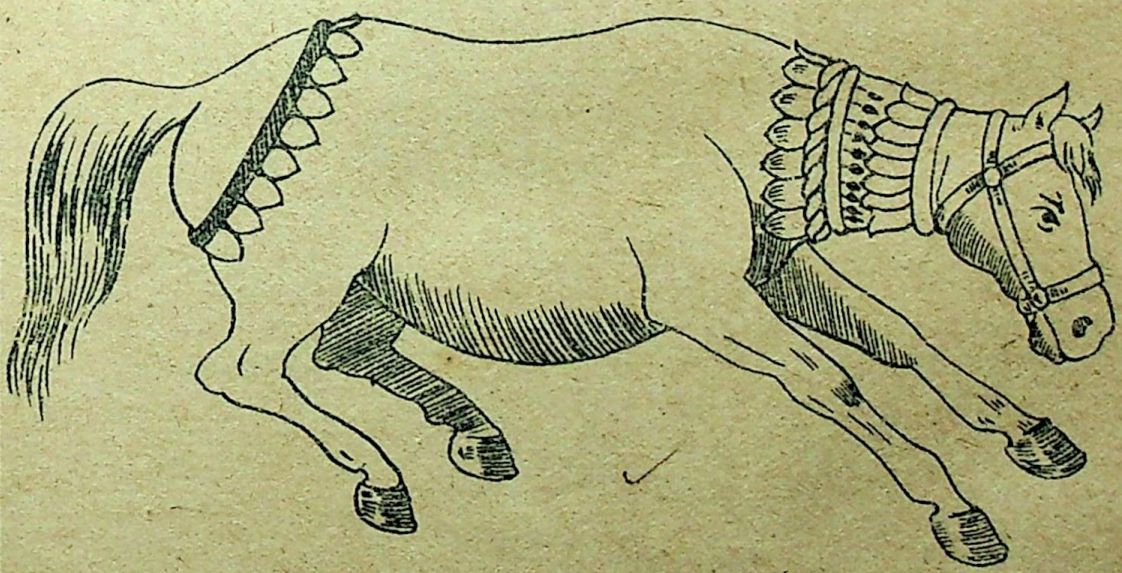

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अँतावरिशूल घोड़ा नंबर १२० (देखो पृष्ठ १६३)

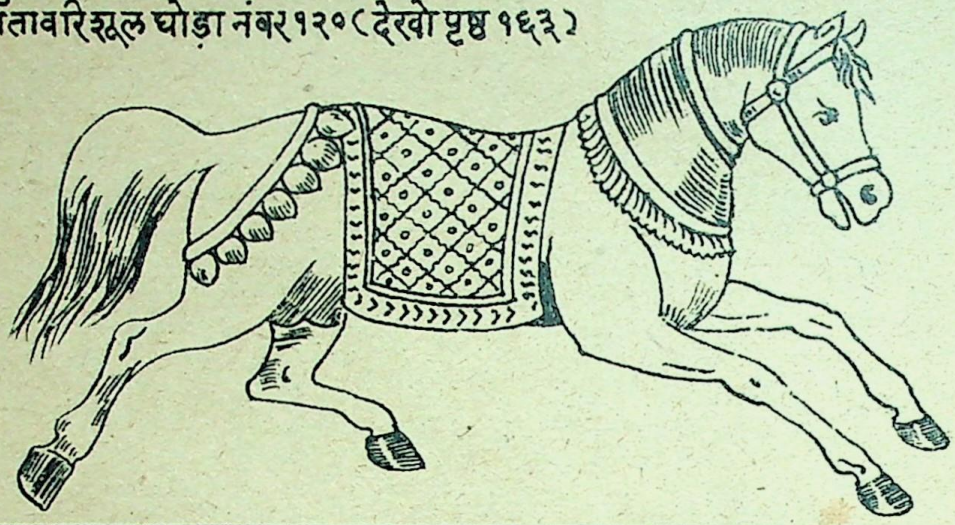

जीमारशूल घोड़ा नंबर १२१ (देखो पृष्ठ १६३)

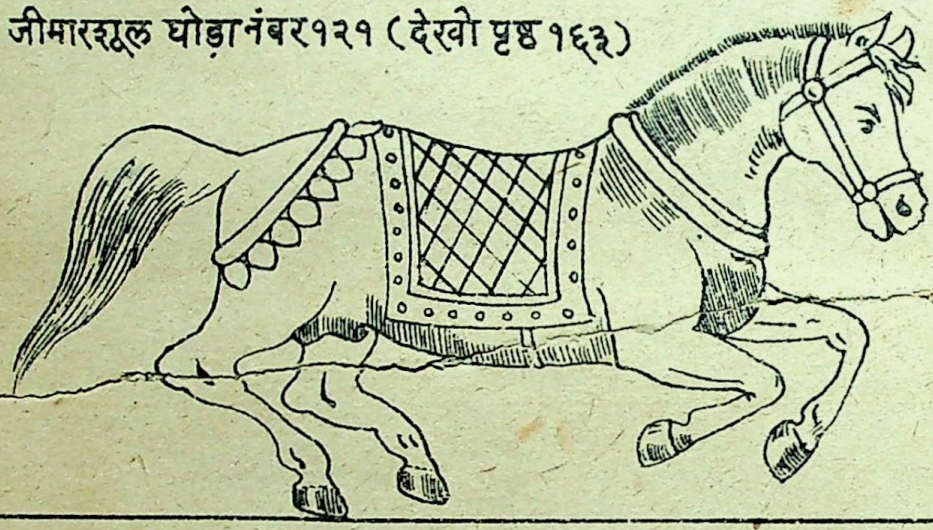

कुलिंजशूल घोड़ा नंबर १२२ (देखो पृष्ठ १६३)

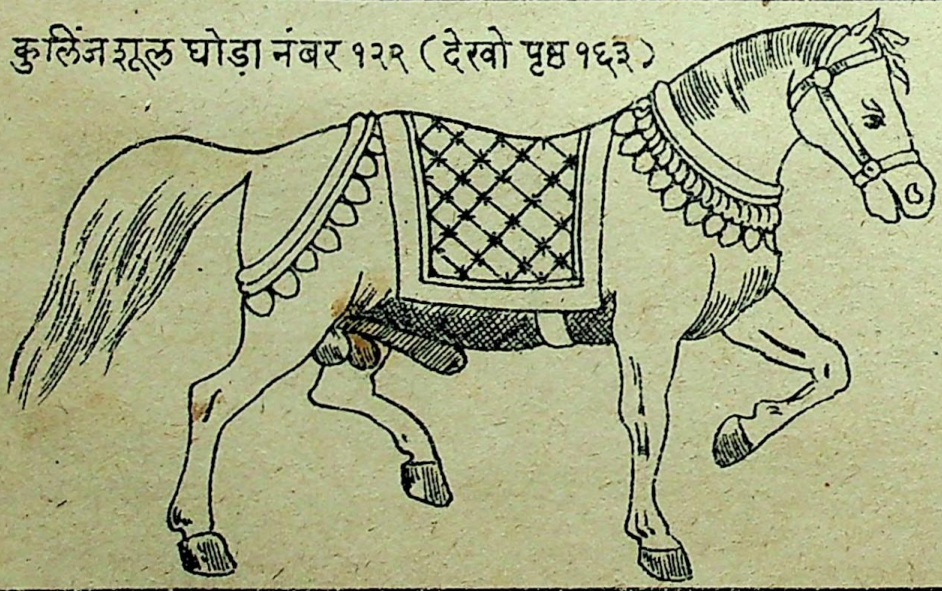

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

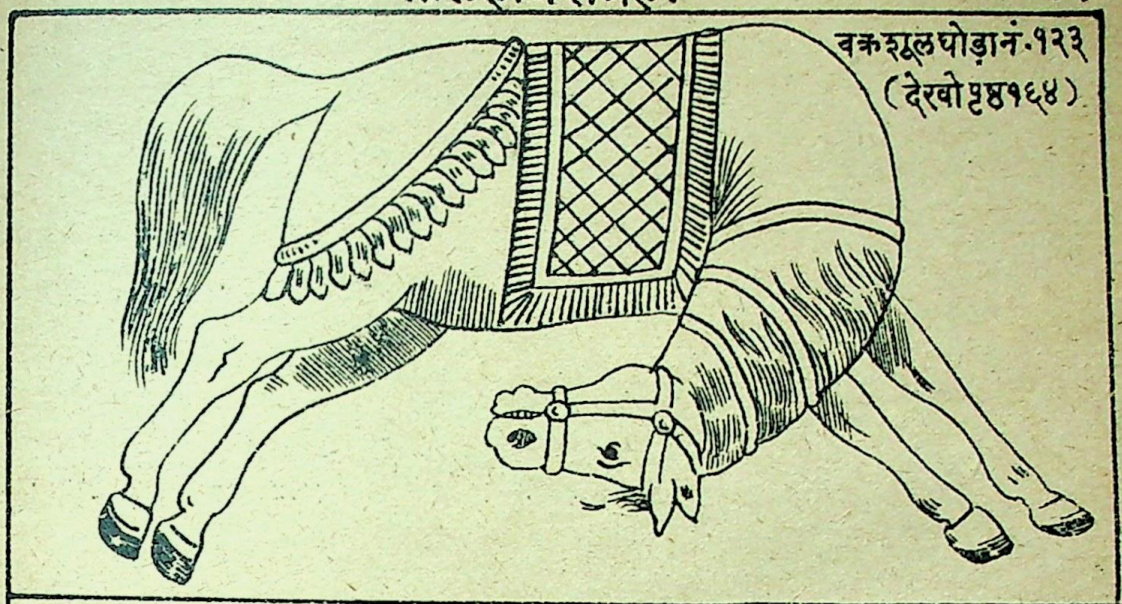

वक्रशूलघोड़ा नं. १२३
(देखो पृष्ठ १६४)

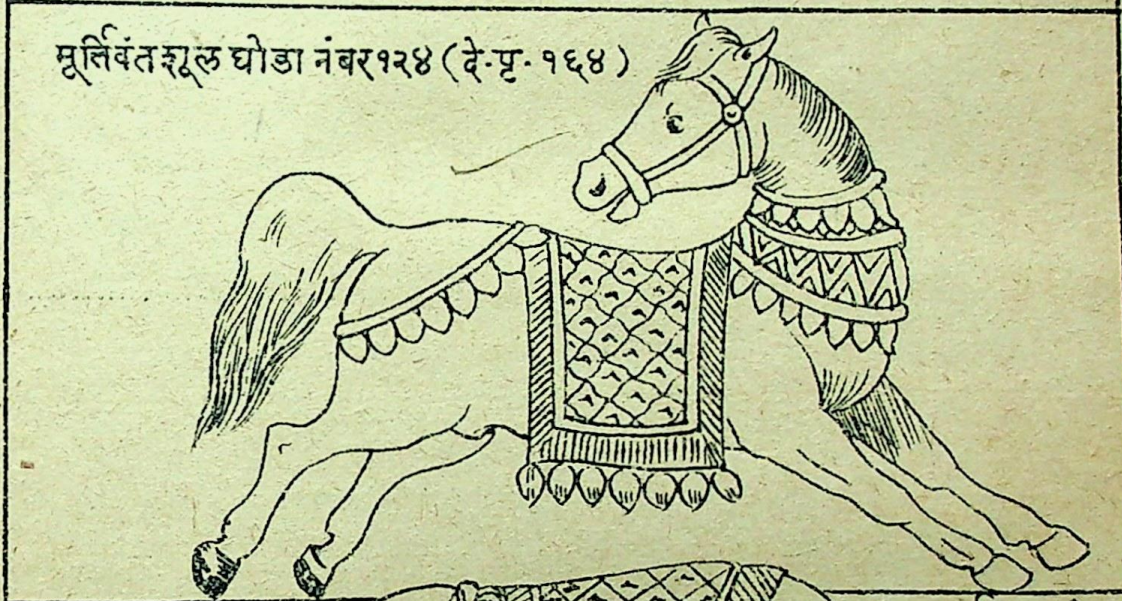

मूर्तिवंतशूल घोडा नंबर १२४ (दे. पृ. १६४)

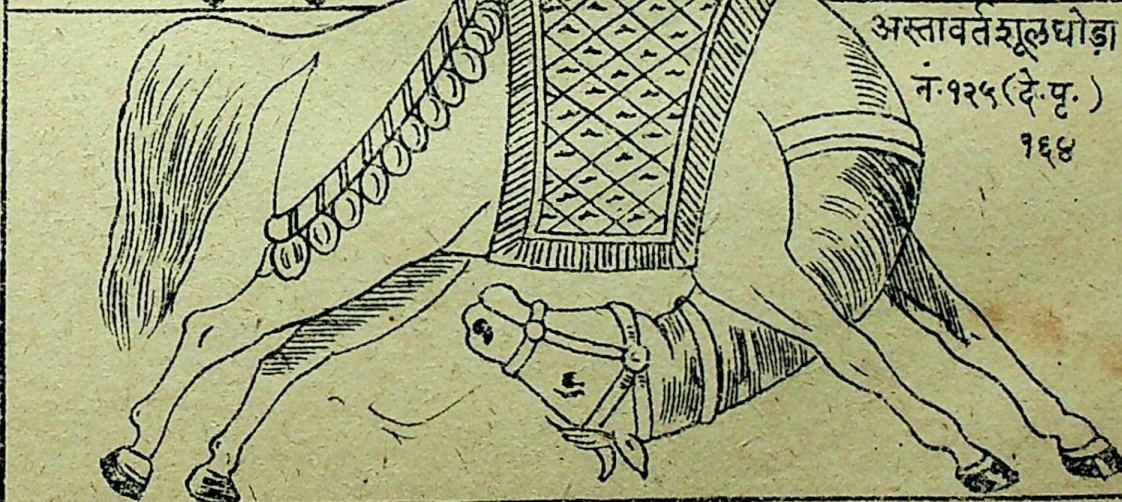

अस्तावर्तशूलघोड़ा
नं. १२५ (दे. पृ.)
१६४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वातशूल घोड़ा नंबर १२६ (देखो पृष्ठ १६४)

शुद्ध वातशूल घोड़ा नंबर १२७ (देखो पृष्ठ १६६)

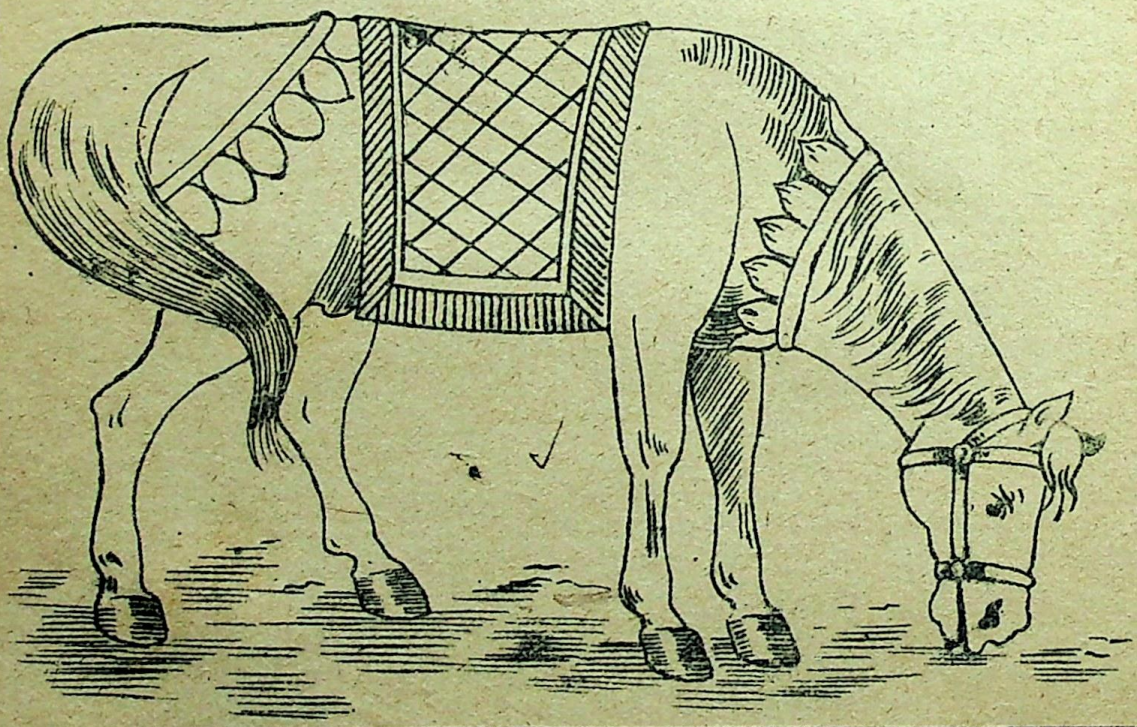

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

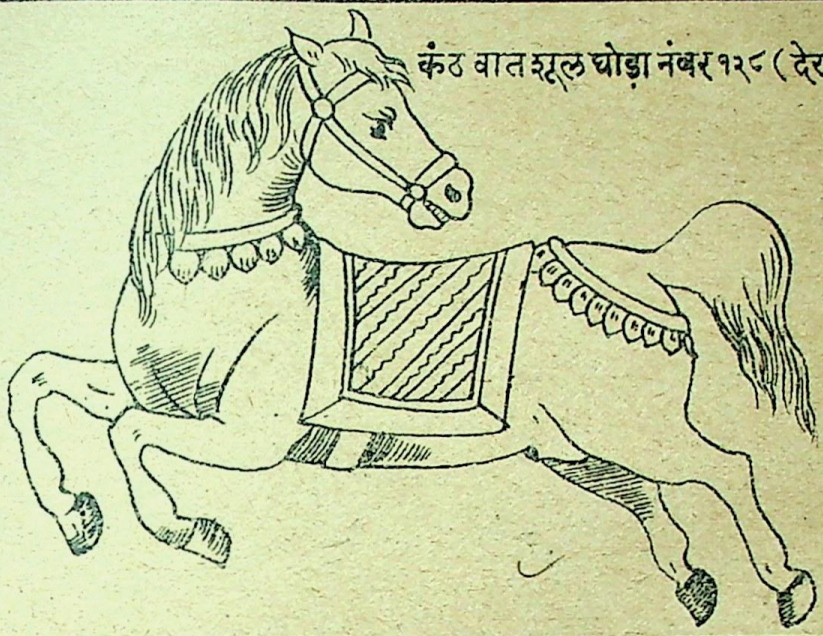

कंठ वातशूल घोड़ा नंबर १२८ (देखो पृष्ठ १६६)

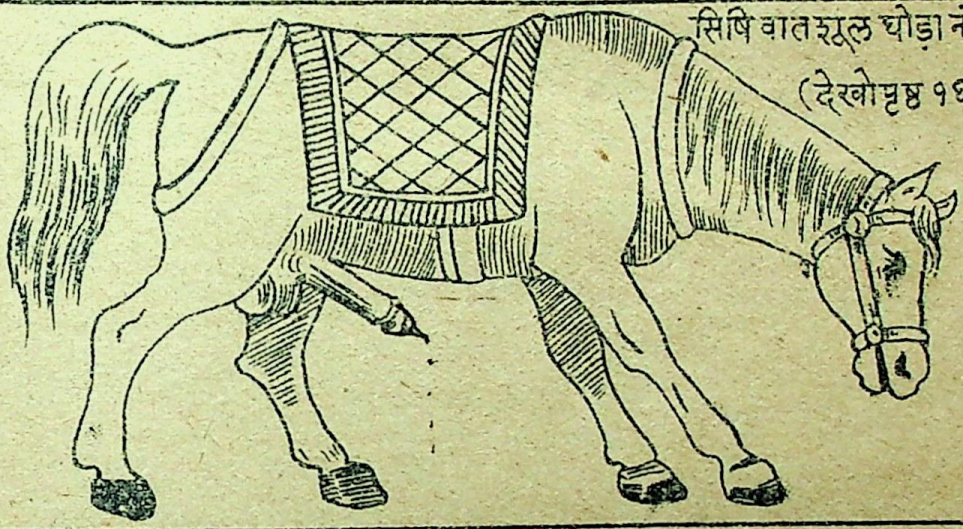

सिषि वातशूल घोड़ा नं० १२९ (देखो पृष्ठ १६६)

अपरशूल घोड़ा नंबर १३० (देखो पृष्ठ १६६)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृमिशूल घोड़ा नंबर १३१ (देखो पृष्ठ १६६)

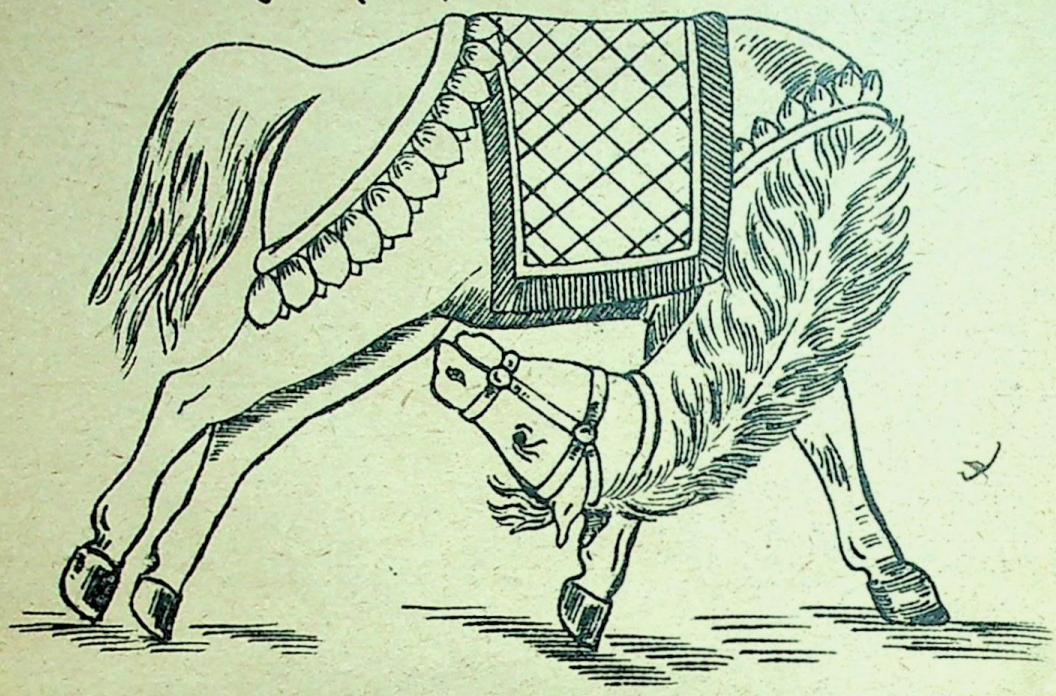

सर्व कृमिशूल घोड़ा नंबर १३२ (देखो पृष्ठ १६७)

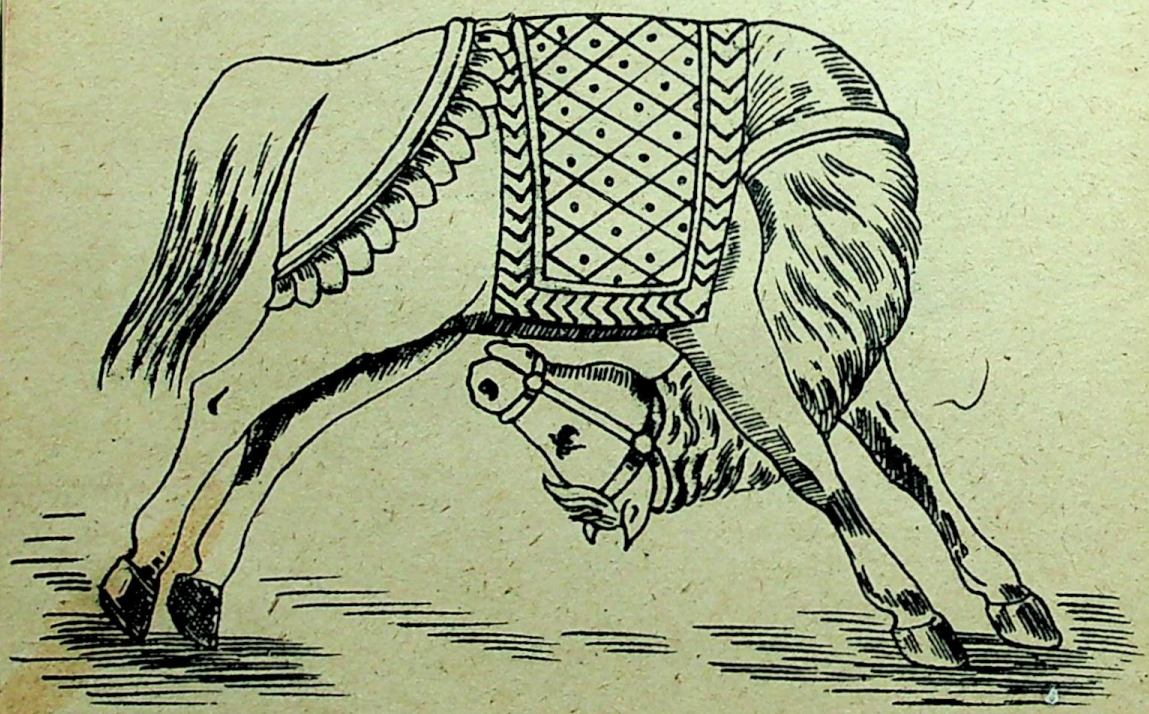

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समवर्त शूल घोड़ा नंबर १३३ (देखो पृष्ठ १६८)

वैवर्त शूल घोड़ा नंबर १३४ (देखो पृष्ठ १६८)

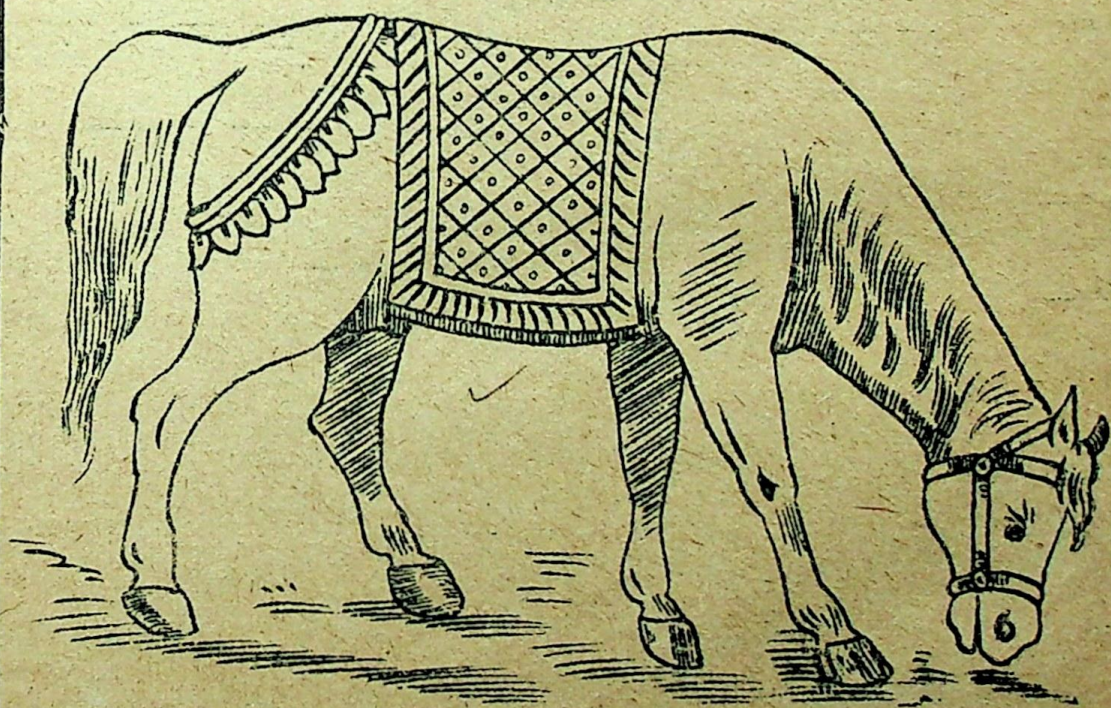

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विभ्रम झूल घोड़ा नंबर १३५ (देखो पृष्ठ १६८)

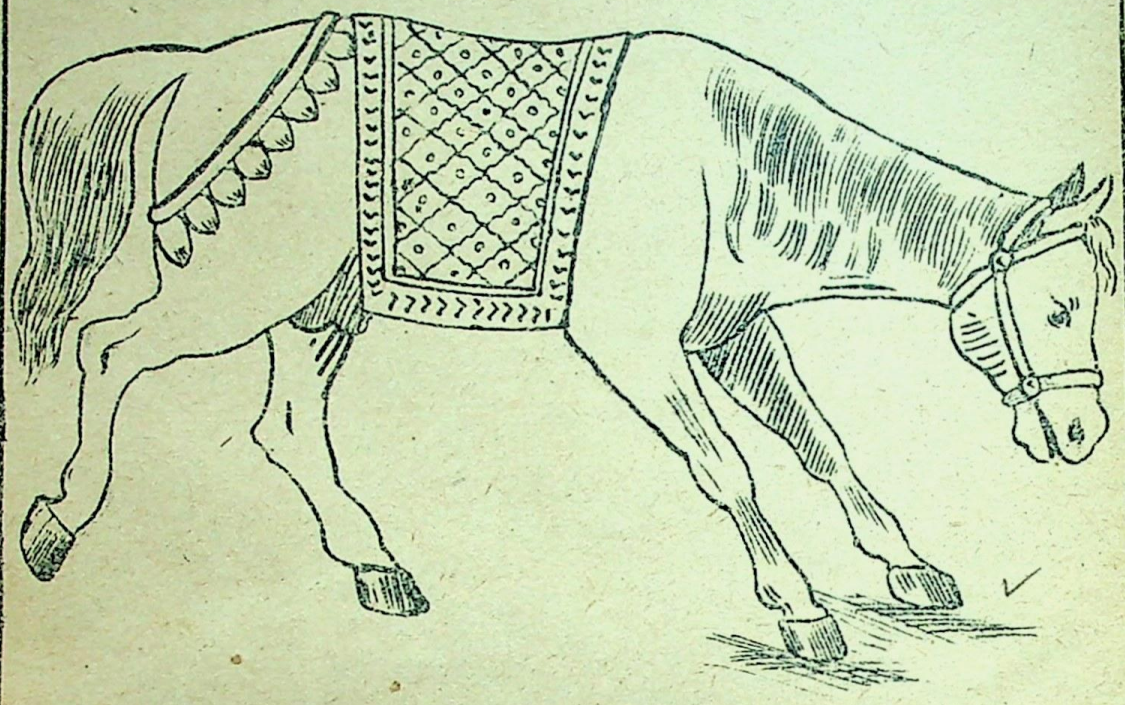

सनंद झूल घोड़ा नंबर १३६ (देखो पृष्ठ १६९)

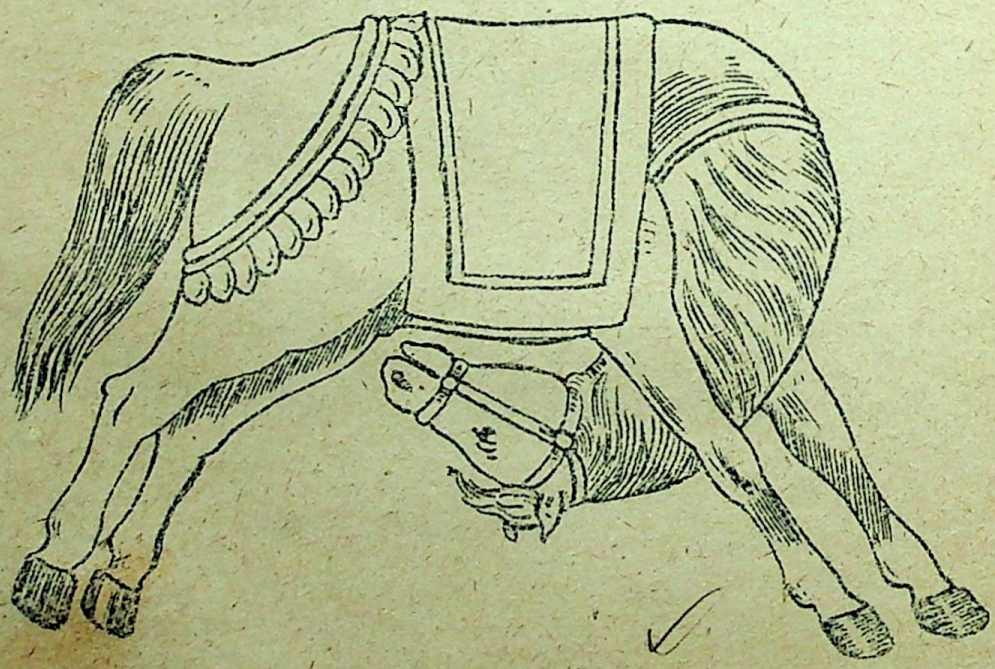

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिंब शूल घोड़ा नंबर १३७ (देखो पृष्ठ १६९)

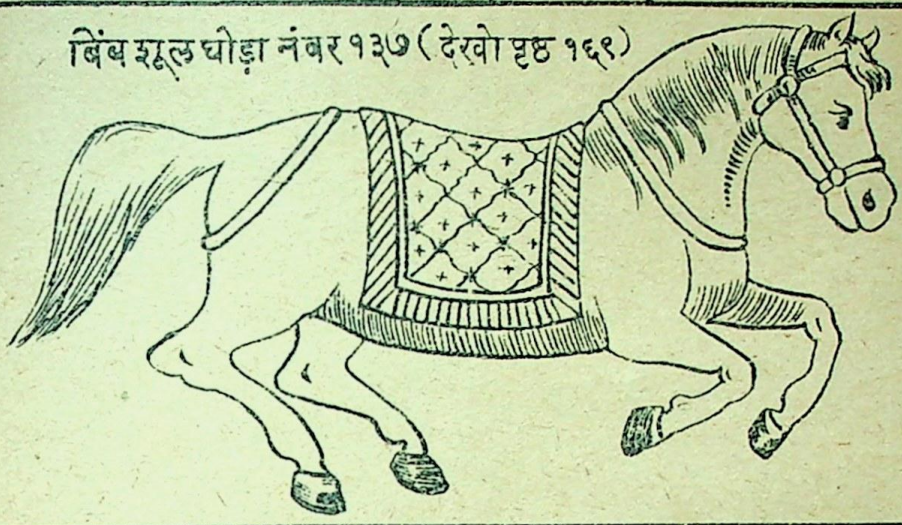

झलद शूल घोड़ा नंबर १३८ (देखो पृष्ठ १७०)

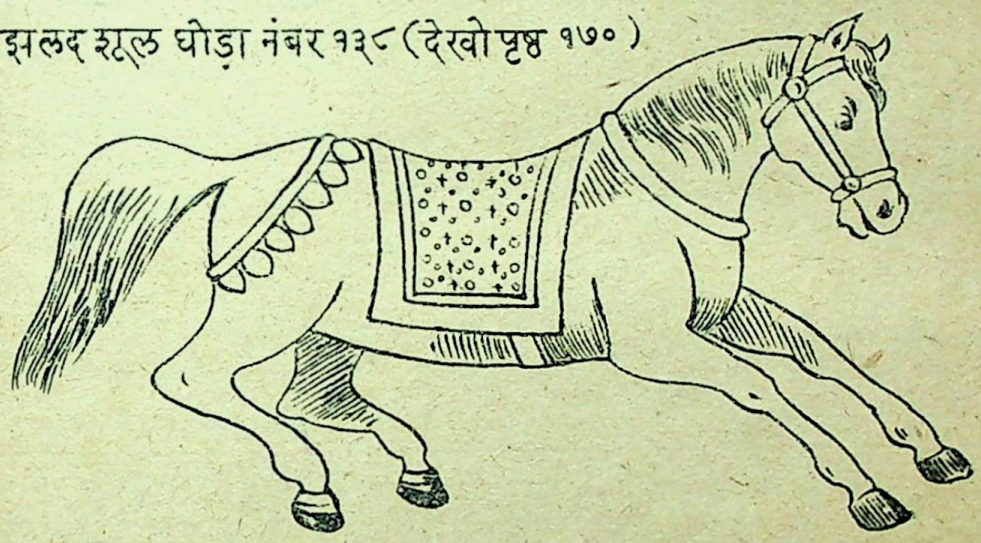

गज शूल घोड़ा नंबर १३९ (देखो पृष्ठ १७०)

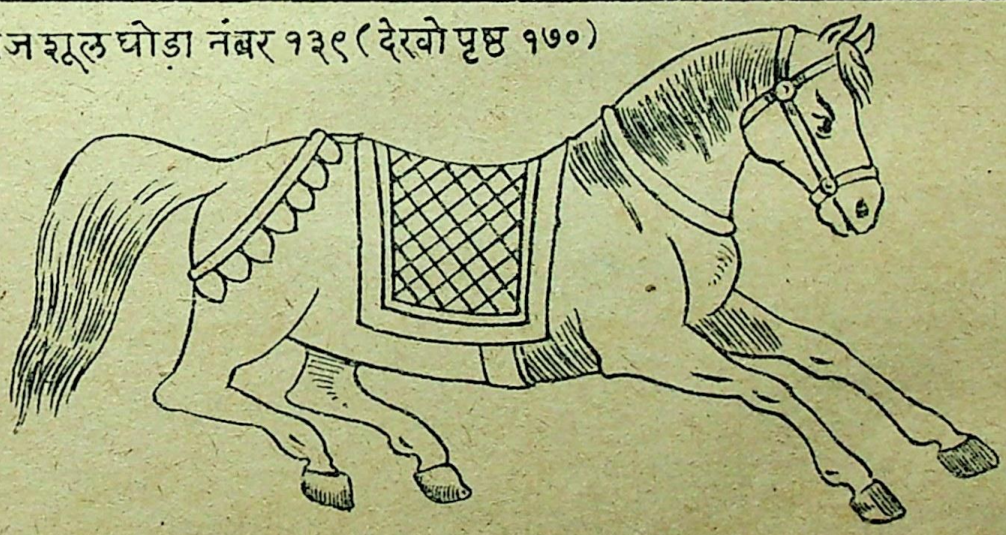

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राकस झूल घोड़ा नंबर १४० (देखो पृ. १७०)

शील प्रवर्ति झूल घोड़ा नंबर १४१ (दे. पृ. १७०)

श्रवत झूल घोड़ा नंबर १४२ (दे. पृ. १७१)

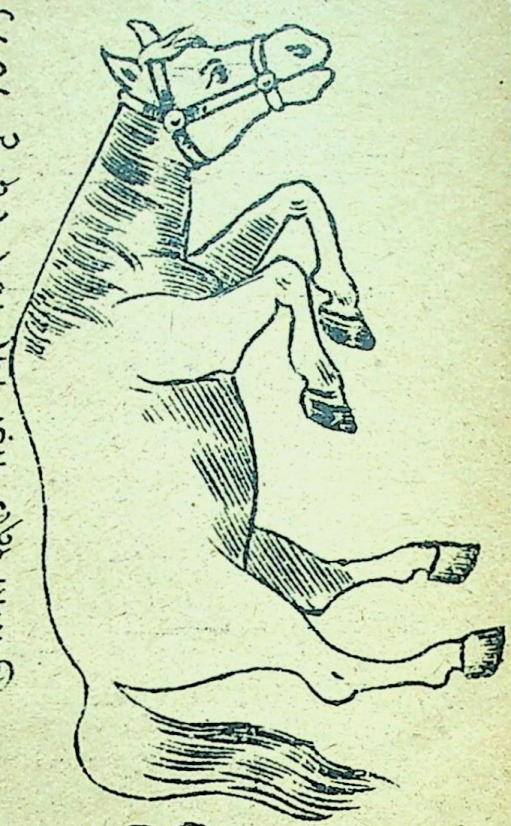

सुधावत झूल घोड़ा नंबर १४३ (दे. पृ. १७१)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खंड शूल घोड़ा नंबर १४४ (देखो पृष्ठ १७१)

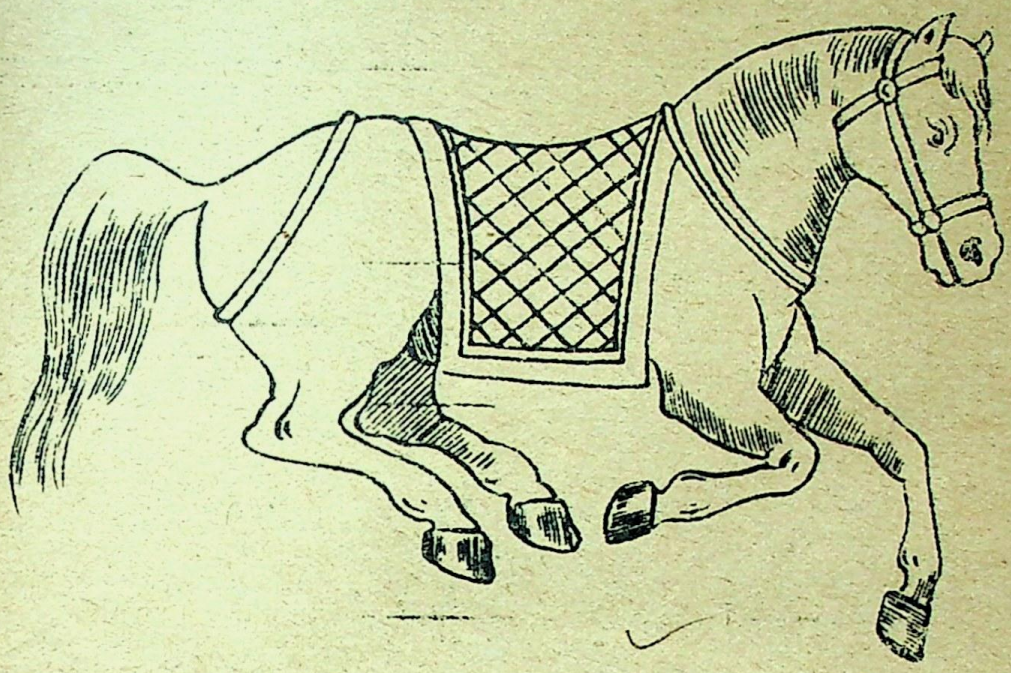

सखंत शूल घोड़ा नंबर १४५ (देखो पृष्ठ १७२)

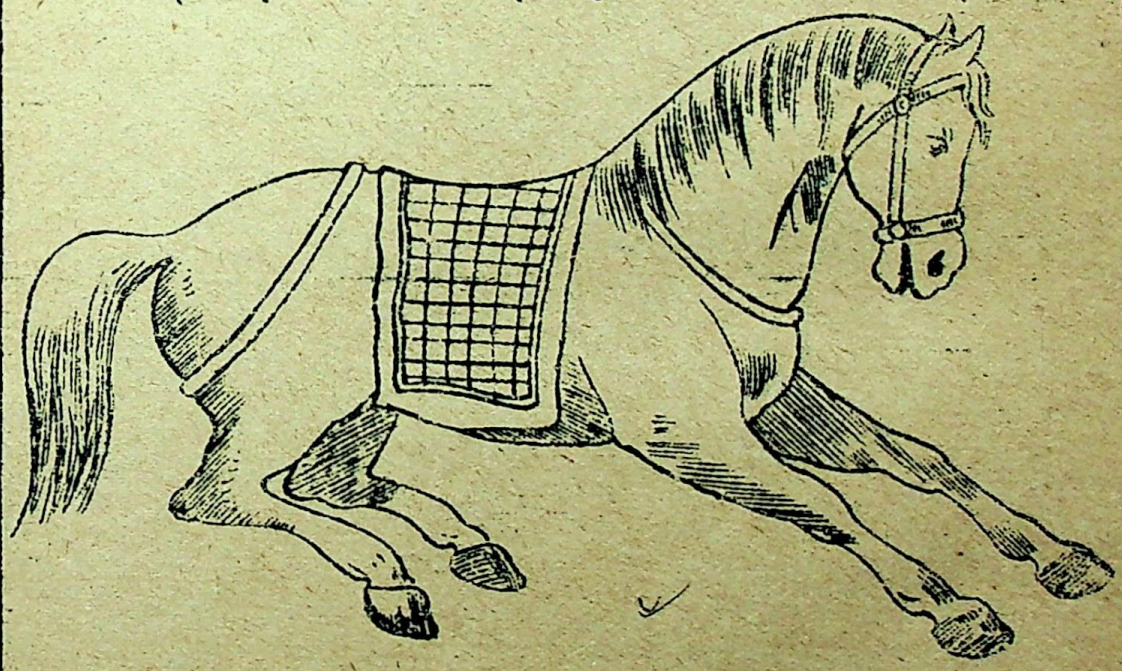

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वातोदर शूल घोड़ा नंबर १४६ (देखो पृष्ठ १७२)

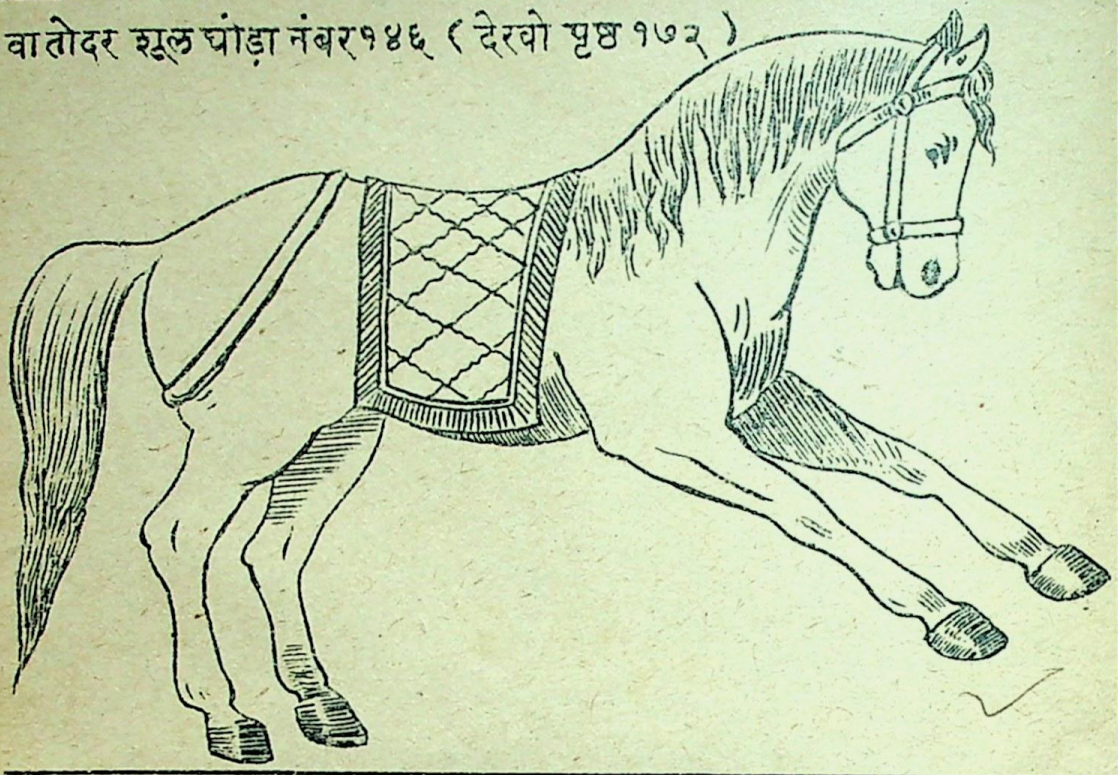

प्रवर्त्ती शूल घोड़ा नंबर १४७ (देखो पृष्ठ १७२)

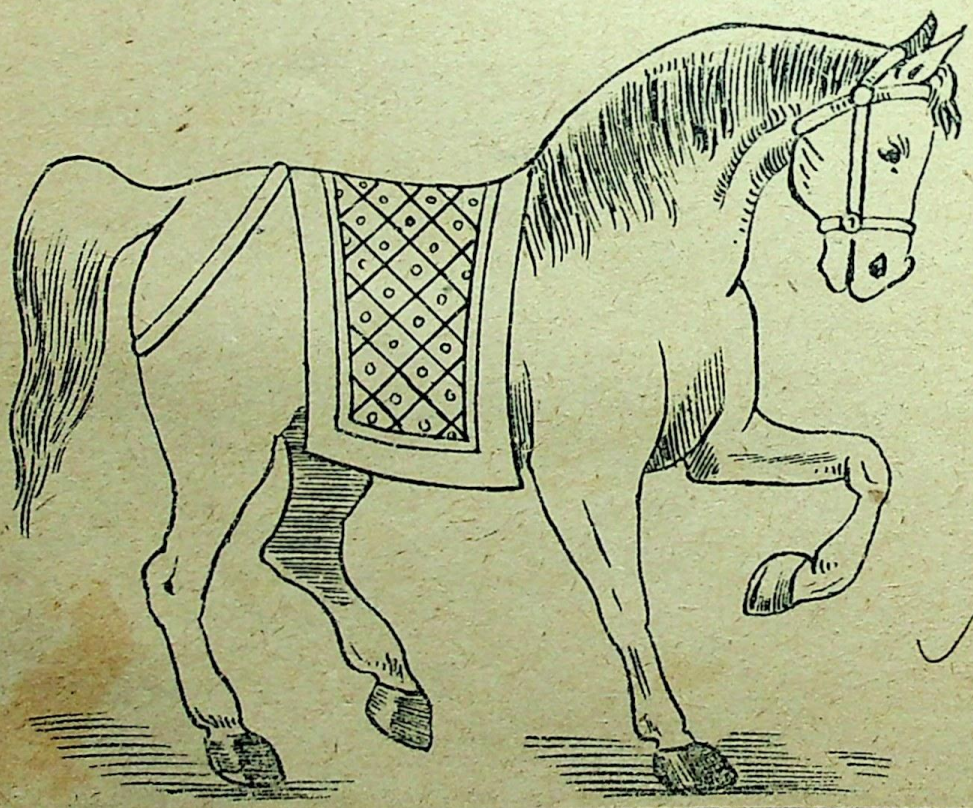

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हड्डा घोड़ा नंबर १४८ (देखो पृष्ठ २८०)

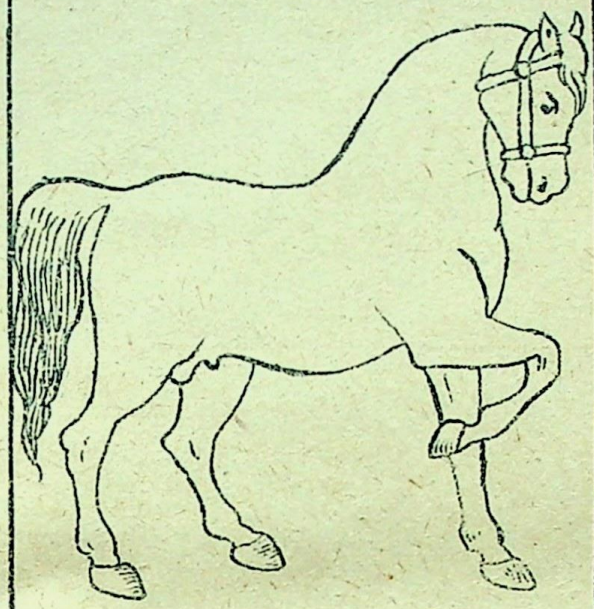

मोतरा घोड़ा नंबर १४९ (देखो पृष्ठ २८३)

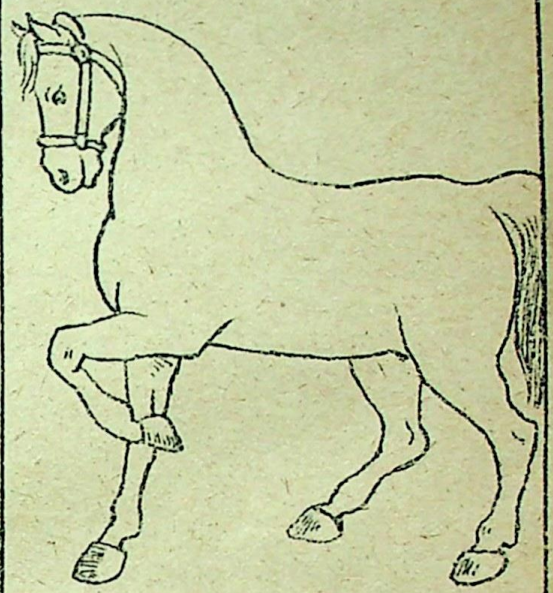

वैजा मोतरा घोड़ा नंबर १५० (दे-पृ २८८)

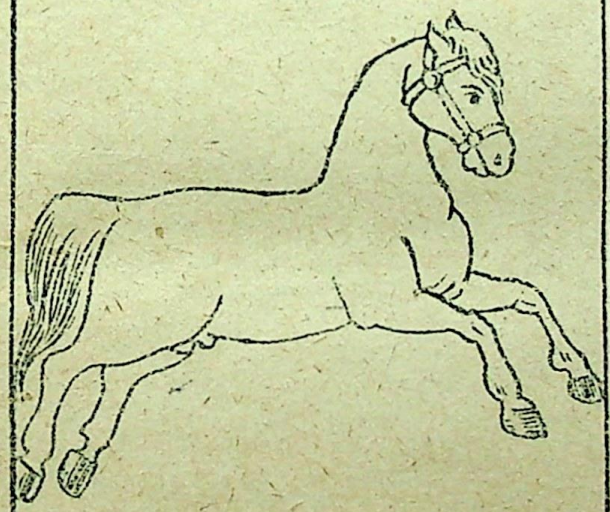

गज पैर घोड़ा नं-१५१ (देखो पृष्ठ २८९)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानुआ घोड़ा नंबर १५२ (देखो पृष्ठ २९०)

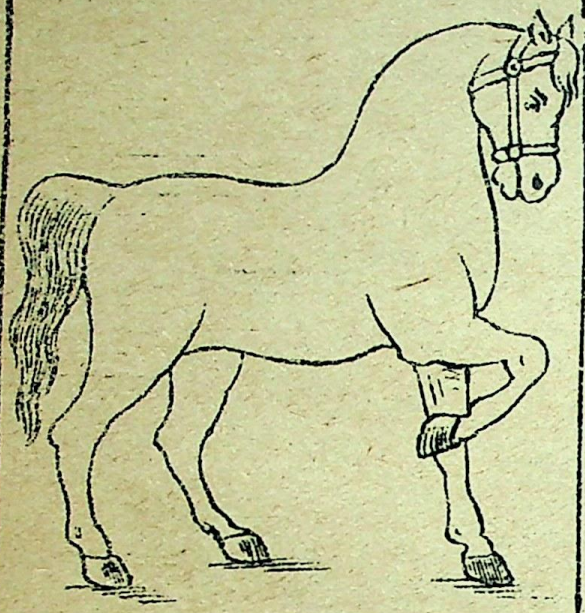

बेरहड्डी घोड़ा नंबर १५३ (देखो पृष्ठ २९३)

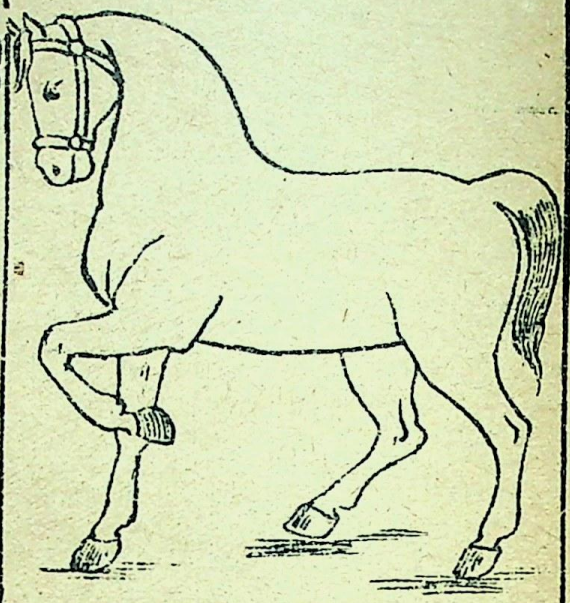

जेरवाई घोड़ा नं. १५४ (दे. पृ. २९५)

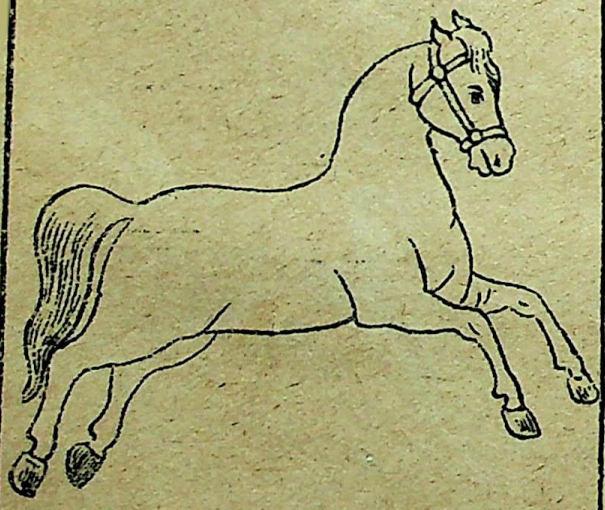

चकावरी घोड़ा नंबर १५५ (देखो पृष्ठ २९६)

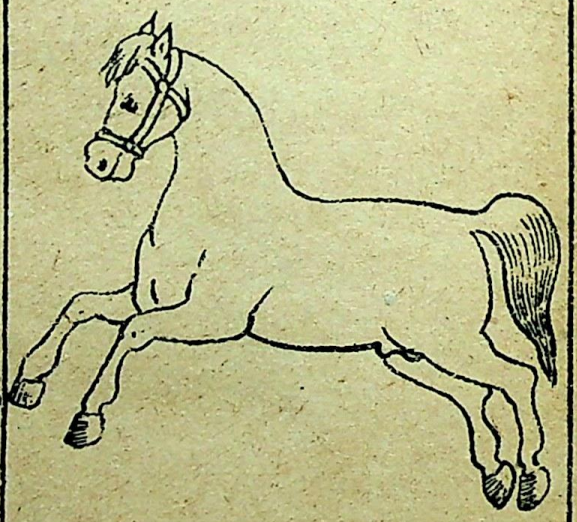

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुस्तक घोड़ा नंबर १५६ (दे. पृ. २९७)

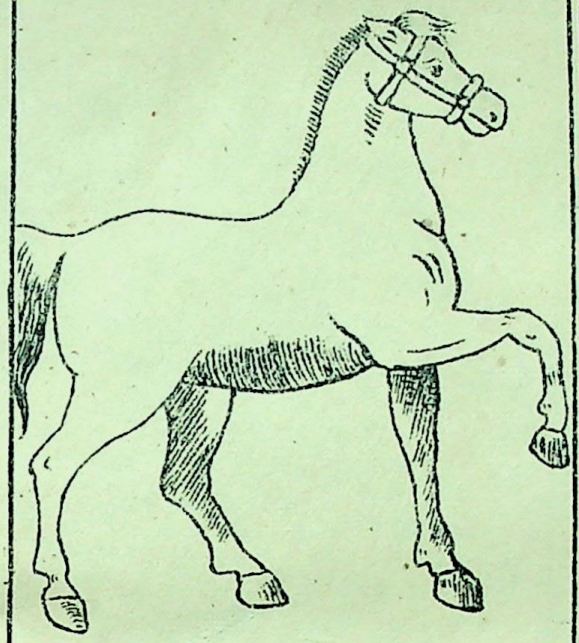

गाना रोग घोड़ा नंबर १५७ (दे. पृ. २९८)

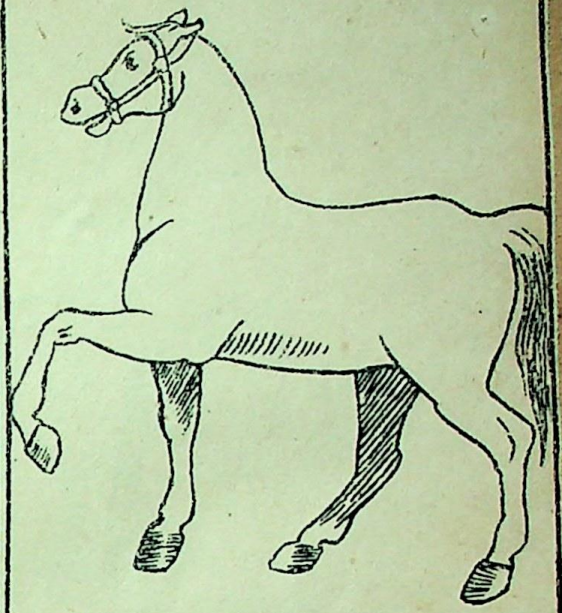

सुम फाटै घोड़ा नंबर १५८ (दे. पृ. २९८)

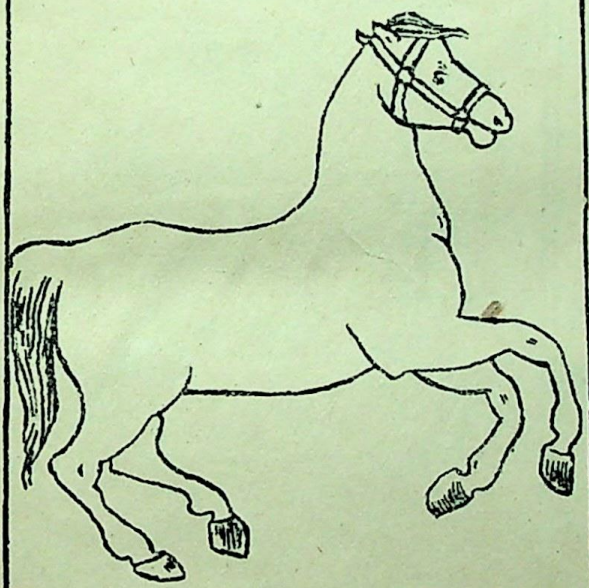

छाला सुम भीतर घोड़ा नंबर १५९ (दे. पृ. २९९)

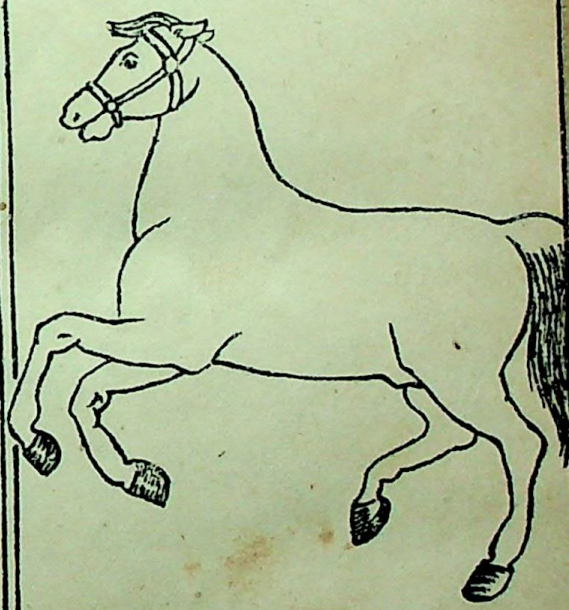

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छी बालरोग घोड़ा नं. १६० (दे. पृ. २९९)

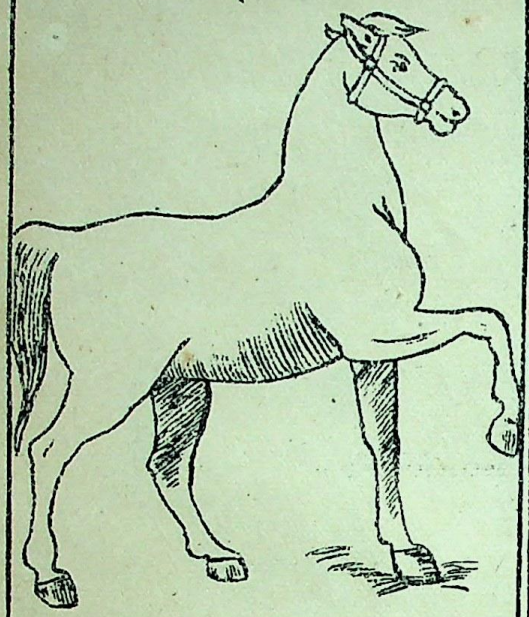

मांसवृद्धि घोड़ा नं. १६१ (दे. पृ. २९९)

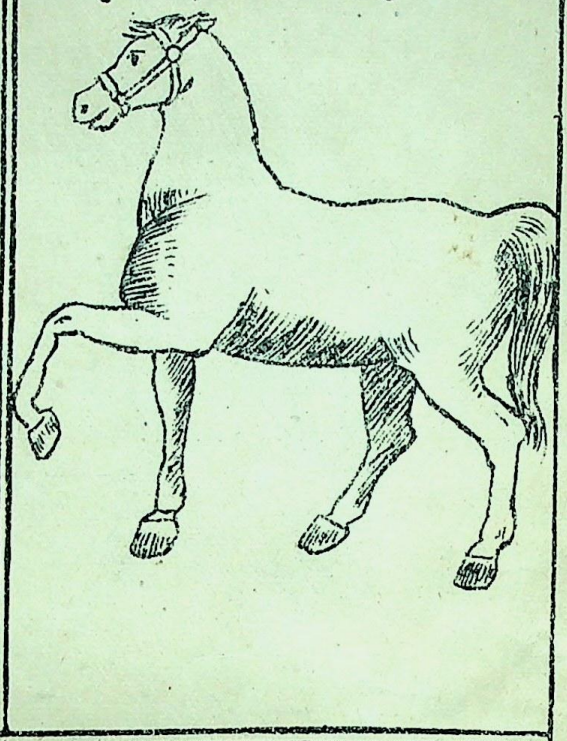

कफमीरा घोड़ा नं. १६२ (दे. पृ. ३००)

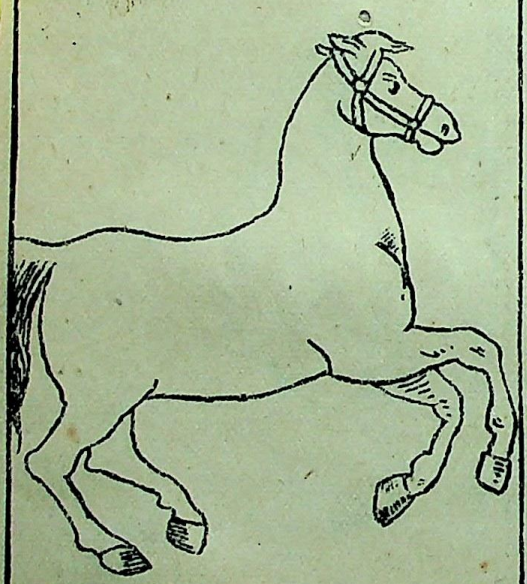

मधुपंकजरस घोड़ा नं. १६३ (दे. पृ. ३०३)

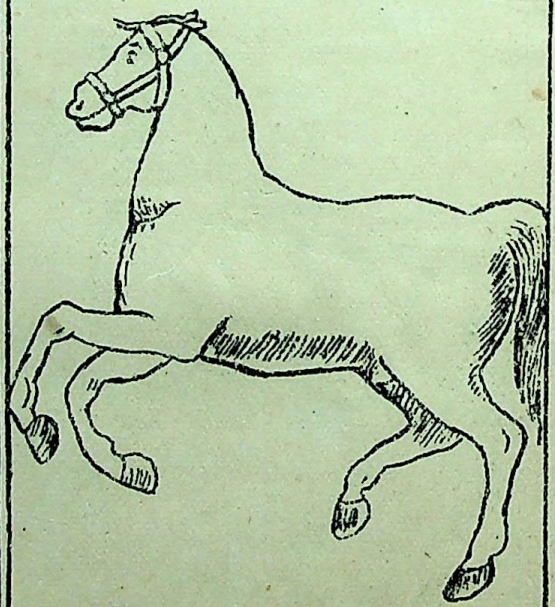

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ
शालहोत्रसंग्रह प्रारम्भ ।

मंगलाचरण ।

दोहा—सिद्धिकरन अरु दुखदलन, गिरिजातनय गणेश ।
हयचरित्र वर्णन करौं, दाया धरौ हमेश ॥ १ ॥
दुर्गा दुर्गति दुखदलन, भक्तनके सुखहेत ।
दुष्टजननको नाश करि, रचो धर्मश्रुतिसेत ॥ २ ॥
मार्तण्ड ब्रह्मांड यहि, तव प्रताप अधिकार ।
कृपा करो जन जानि मुहिं, सुमिरौं चरण तुम्हार ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीन्ह रजोगुण सृष्टि सब, रचना रची अपार ।
चतुराननकी बन्दना, हृदय चरण धरि सार ॥ ४ ॥
तमोगुणी अवतार है, महादेव जगदीश ।
तव चरणनकी बन्दना, नाइ धरणि धरि शीश ॥ ५ ॥
सतोगुणी जो रूप हरि, पालन करन अनन्द ।
तिहि चरणनको ध्यान धरि, वर्णत चेतन चन्द ॥ ६ ॥

कवित्त गंगाजीका ।

निकासि कमंडलुसों नभ सोर लोकनमें, धारा बाँधि छूटीं शिवजटनमें हितै हितै ॥ जाके गुण गावत हैं शारद रु सिद्धि सबै, महिमा अपार सुर ध्यावत नितै नितै ॥ भनत (कवि) निधान गंग तेरही तरंगनसों, भाजत मतंग पाप हेरत हैं इतै इतै ॥ यम आगे दूत रोवैं दूत आगे यम रोवैं, चित्र औ गुपित्त रोवैं कागज चितै चितै ॥ १ ॥

दोहा—सकल सुरनपद वंदिकै, वरणौं अश्वचरित्र ।
कृपा करो जन जानि मुहिं, भाषौं ग्रंथ विचित्र ॥ १ ॥
अवध राजधानी जहाँ, शहर लखनऊ जान ।
ताके पश्चिम जानियो, सोरह कोश प्रमान ॥ २ ॥
जिला लिखौं उन्नावँको, मियागंजके पास ।
आसीवनको परगना, ताहीमें मम बास ॥ ३ ॥

छंद—वैश्य वर्ण गोपनको ग्रामा तीयारि नाम कहायो ।
केशवसिंह तहाँके बासी जिन यह ग्रन्थ बनायो ॥
शालहोत्रसंग्रह करि बहुमत अश्वनको सुखदाई ।
देव पितृ सुरगुरु भूसुर जो सबके चरण मनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संवत उनइससै पैंतीसा (१९३५) नौमी तिथि मधुमासा ।
जो यह ग्रंथ लिखी विधि करिहै अश्वनको दुख नासा ॥

दोहा—पाण्डवसुत कुलकमलरवि, धर्मात्मा धर्मज्ञ ।
सत्यसिंधु धीरज धुरी, राज युधिष्ठिर सज्ञ ॥ १ ॥
भीमसेन अर्जुन अनुज, सहदेव सर्व सुजान ।
नकुल सकुल भूषण सकल, तुरँग तत्त्व गुरुज्ञान ॥ २ ॥
ग्रन्थ देखि बहु मुनिनके, कीन्हों नकुल विचार ।
शालहोत्र मत समझिके, रचना रची अपार ॥ ३ ॥
शालहोत्र पांडवसुवन, प्रथमे रचि सुखकंद ।
ताहीके अनुसारते, ग्रन्थ बने बहु वृंद ॥ ४ ॥
सतयुग त्रेता द्वापरे, कलियुग युग सब योग ।
ताहीमें भाषा रची, जो पहिंचानैं लोग ॥ ५ ॥
विजयकरण आनँदभरण, गावत चारो वेद ।
नकुल कहैं सहदेवसों, रविवाहनको भेद ॥ ६ ॥
विविधग्रंथ अवलोकिके, और कविन मत जानि ।
केशव यह संग्रह रची, जो तुरँगन सुखदानि ॥ ७ ॥

अथ अश्वोत्पत्तिवर्णन ।

अश्वाऋषिके सुवन इक, शालहोत्र तिहि नाम ।
तिनके चरणकमल द्युति, कविजन करैं प्रणाम ॥ १ ॥
ऋषि कीन्हों आरंभ मख, होमधूम रह छाय ।
लागो लोचन ऋषिहिके, सलिलबुंद परे आय ॥ २ ॥
वामनेत्रते अश्विनी, दहिने भयो तुरंग ।
भाष्यो ऋषि तब सुवनसों, इयको करो प्रसंग ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ यज्ञशाला । देखो चित्र नंबर १.

दोहा—शालहोत्र कह तातसों, अश्वपति करौं विचार ।
बाजीके गुण दोष कछु, भाषौं मति अनुसार ॥ १ ॥
नमो निरंजन देवगुरु, मार्तंड ब्रह्मंड ।
रोगहरण आनँदकरण, सुखदायक जगपिंड ॥ २ ॥

छंद—बाजी समक्ष मनहरन वेश । श्रीजयकरता राजै हमेश ।
लखिके भाष्यो यह देवराइ । किहि विधि ये बाहन होइँ आइ ॥
यह दिगिशनसों भाष्यो सुरेश । याको उपाइ कहिये सुवेश ।
सब दिगिईशन यह विनय कीन । ऋषि शालहोत्र यामें प्रवीन ॥

दोहा—शालहोत्रके पास चलि, विनय करौ बहुभाव ।
शालहोत्रकी विन कृपा, नाहिंन और उपाव ॥ १ ॥
सब विधि जीमों ठीक दै, लै दिगीश सब साथ ।
शालहोत्रके आश्रमहि, गये सबै सुरनाथ ॥ २ ॥

अथ आश्रमवर्णन । देखो चित्र नंबर २.

छंद—जहँ वेद घोष निज पाप हरैं । शुक सारिकादि मुख कहत रैं ।
पिक हंस सारसन वाद परै । मतद्वैत भेद निर्वेद करै ॥

सवैया ।

बाघ बछानिको गाय जियावत, बाघिनियें सुरभी सुत चोषै ।
न्योरनको सहरावत सांप, अहारनि देवै उन्हैं प्रतिपोषै ॥
व्याधके थानहिमें सुनिये, अपलोकवसै जलकुण्डनि चोषै ।
नैननि रागमई पिकके अब, विग्रह वैर शरीरके धोषै ॥

दोहा—एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ।
शालहोत्र मुनि तिन विषे, जनु दूजो करतार ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेदी वृक्ष अशोकतर, कुशको आसन चारु ।
शालहोत्र मुनि ताहिपर, बैठे तप अवतारु ॥ २ ॥
चारों ओर ऋषीश सब, दंड कमण्डलु चार ।
आनि सतोगुणको बस्यो, सुख पावत परिवार ॥ ३ ॥
अतिदुबल तनुहू बढो, झलक पुंज परकास ।
सेवन हित जनु ब्रतन मिलि, करचो शरीर निवास ॥४॥

त्रिभंगीछन्द ।

सन्मुख तब आयो क्षिति शिर नायो टेर सुनायो करजोरे ।
मुनि सुरपति जान्यो उठि सन्मान्यो गुणन बखान्यो मनभोरे॥
सादर उर लायो आसन आयो बैठायो सुखमानि सही ।
हँसिकै मुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल सूझी कुशल कही॥

दोहा—सकल सुरन शिर मुकुटमणि, मिलत वो सरसाति ।
चरणकमल मुकुतावली, लखत नखनकी पाँति ॥१॥
मुनि भाष्यो मैं धन्यभो, त्रिभुवनमें यशवंत ।
आये मो गृह देवपति, करिकै कृपा अनंत ॥ २ ॥

हरिगीतिकाछन्द ।

भाष्यो ऋषीश सुरेशसों तुमतौ सदा सुखसों रहौ ।
केहिहेतु आयो इहांको अभिलाष सब जियकी कहौ ॥
अति कुल तुरंगनको उडै बहु पवनते किहि विधि धरौं ।
अब आप करैं उपाइ जातें पकारि मैं बाहन करौं ॥

दोहा—यहि उपायके करनको, और न आप समान ।
ताते मुनिवर करि कृपा, देहु यहै वरदान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोमरछंद ।

मुनि शक्र ओर निहारि । दियैं मन्त्र शास्त्र विचारि ।
हिय काजुभो अवगक्ष । काटिहौं तुरंगन पक्ष ॥
मनको मनोरथ पाइ । चलिकै शचीपति राइ ।
सगरे तुरंगम डाटि । सब पक्ष डारे काटि ॥

छंदरोला ।

कटे पक्ष व्याकुल अतिबाजी पीडित वचन पुकारैं ।
चलै पगनते शोणितधारा लखिलखि धीर न धारैं ॥
सुन्यो ऋषीश्वर शालहोत्रके मत मघवा पर खोये ।
तब तुरंग घायल मुनिके द्वार जाइकै रोये ॥
नहिं कीन्हा अपराध कछू हम निशिदिन दूब अहारी ।
बास करैं निरजन जंगलमें विहरैं व्योम बिहारी ॥
तुम सर्वज्ञ सदा सम देखो सबहीको हरषायो ।
अय मुनि करुणाकर किहि कारण हमैं विपक्ष करायो ॥
किहि कारण यह दशा कराई हम सगरे निर्दोषी ।
दयासिंधु मुनि सुनिये अरजी को हमको अब पोषी ॥
काँपै तनु घायनकी पीडा व्याकुलता सरसाई ।
तुम गुणसागर बिन त्रिभुवनमें को अब हमै जिआई ॥

तोमरछंद ।

अरजी सुनिकै मुनि बात कही । सब वाजिनके हिय चित्तचही ।
तुम्हरे तनुके क्षत नीक करौं । अरु औरहु रोग अनेक हरौं ॥

दोहा—देव अदेव नृदेव अरु, धनी त्रिलोकी माहि ।
तिनके बाहन होहुगे, रहियो सुखसों चाहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जे तुमपर करिहैं सदा, अतिसनेह महिपाल ।
तिनके लक्ष्मी गृह बसे, होइ शत्रु उरशाल ॥ २ ॥
जो पोषै तव गातको, सुरसमाज चितचाहि ।
ताहि डरैं दिगपाल सब, अपर शत्रु को आहि ॥ ३ ॥
दै वरदान तुरीनको, बिदा कियो मुनिराइ ।
किहि विधि ये सुखसों रहैं, करो सुतासु उपाइ ॥ ४ ॥
जिहि प्रकार बाजी सबै, निशिदिन रहैं अरोग ।
करो चिकित्सा याहि विधि, करैं सदा सुखभोग ॥ ५ ॥

पद्धटिकाछन्द ।

तब शालहोत्र संकल्प कीन । सोरहसहस्र अरु काण्ड तीन ।
सोई लखिकै श्रीधर सुपंथ । भाषा भाष्यो सो रुचिर ग्रन्थ ॥

दोहा—शालहोत्रकी प्रतिज्ञा, हरिकुलको सुखदानि ।
शालहोत्रकी कृपाते, श्रीधर कह्यो बखानि ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पंचदेववन्दना अश्वाकृषि यज्ञ अश्वधरा अवतरणकथनं नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अथ उत्तरायण वा दक्षिणायन फल ।

दोहा—उतरायण शुभ फल कहौं, दक्षिण मध्यम जानि ।
ताहूमें श्रावण विषे, महानिषिद्ध बखानि ॥ १ ॥
उतरायणमों रातिको, वाजी जन्म जु होय ।
रातिकेर जस फल अहै, ताते दूनो जोय ॥ २ ॥
उतरायणमें दिन विषे, बडवा जासु बियानि ।
जैस दोष दिनको कहो, ताते थोरा जानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताकी शांति ।

दोहा–आहुति दीजै व्याहृतिन, सुतौ एकसौ आठ ।
अरु कीजै दश बार फिरि, सहस्रशीर्षा पाठ ॥

अथ दक्षिणायन विचार ।

दोहा–दछिनायनमें दिन विषे, जन्मै घोडी जासु ।
निशिमा जैसा फल कहा, आधा जानौ तासु ॥ १ ॥
दिनमें दूनो दोष है, जैसा दिनको आहि ।
शांती कीजिय तासुकी, दिनकी जैसि कहाहि ॥ २ ॥
फिरि व्याहृतिको होमकरि, करै एक गोदान ।
दोष मिटै सब ताहिते, जानौ बात प्रमान ॥ ३ ॥

अथ अमावशको दोष ।

दोहा–जौन अमावस तिथि विषे, निशिमो घोडि बिआइ ।
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मत आइ ॥ १ ॥
उतरायण मावस विषे, निशि में घोडि बिआय ।
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मतआय ॥ २ ॥

चौपाई ।

तिथि मावस उतरायन होई । दिनमें जन्मी घोडी सोई ॥
दिनमें शांति कही है जैसी । शांती कीजिये ताकी तैसी ॥

अथ दक्षिणायन अमावसको दोष ।

सोरठा–बडवा होइ बियानि, तिथि मावसकी रातिमें ।
पुनि दछिनायन जानि, दोष होय दिनके समय ॥

दोहा–शांति कीजिये तासुकी, जैसी दिनकी जानि ।
ऐसो योगहि दिन विषे, बडवा होइ बियानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताकी शांति ।

दोहा—यम कुबेरको मंत्र जपि, होम करै सुखदाइ ।
और कही जस शांति है, दिनकी देहु कराइ ॥

अथ श्रावणको फल ।

दोहा—श्रावणके महिना विषे, घोडी होइ बिआनि ।
निधन करै निजस्वामिको, धनकी हानि बखानि ॥

ताकी शांति ।

दोहा—श्रावणमें जो रातिको, जन्म घोडिका होइ ।
सहित बछेरा विप्रको, घोडी दीजे सोइ ॥ १ ॥
श्रावण महिना दिन विषे, कोइ पहर जो होइ ।
सबै दिगीशनकोपसों, जानि लेहु जिय सोइ ॥ २ ॥

ताकी शांति ।

दोहा—दिगपालनके मंत्र जे, पृथक् पृथक् जपवाइ ।
अरु व्याहृतियुत होम करि, दुइ गोदान कराइ ॥ १ ॥
और शांति दिनकी कही, जैसी दिनकी आइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, सबै दोष मिटिजाइ ॥ २ ॥
शांति करैकी स्वामिको, जो सामर्थ्य न होइ ।
यथाशक्ति करि दीजिए, दान विप्रको सोइ ॥ ३ ॥
घोडी देवेको लिखी, तहां बछेरा युक्त ।
होय नहीं सामर्थ्य जो, तौ कीजे यह युक्ति ॥ ४ ॥
करै एक गोदान सो, उत्तम विप्र बुलाय ।
यथाशक्ति कछु दीजिये, अन्नदान करवाय ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रावण महिना माहिमें, सूर्य कर्कके होय ।
तिथिहि अमावस जो अहै, ऐसो दिन है जोय ॥ ६ ॥
यही योगमें दिन विषे, पहर तीसरो होइ ।
घोडी जन्मै पुत्रको, तासु शांति नहिं कोइ ॥ ७ ॥
जाकी घोडी होइ वह, दोष ताहि अस होइ ।
धन दारायुत पुत्रको, नाश करैगो सोइ ॥ ८ ॥

अथ रात्रिजन्मफल ।

दोहा—निशा माहि पहिले पहर, बडवाजासुबिआइ ।
शत्रु न जीवे ताहिको, फल यह ताको आइ ॥ १ ॥
ताके होत तुरंग बहु, नितप्रति सुख अधिकाइ ।
निश्चय जानो बात यह, कृपा शक्रकी आइ ॥ २ ॥
पहर दूसरे रात्रिको, घोडी बच्चा देइ ।
घोडी है जेहि पुरुषकी, जीति शत्रु सो लेइ ॥ ३ ॥
धन अति बाढै ताहिके, जाकी घोडी होइ ।
संवतसरके भीतरै, पुत्र तासुके होइ ॥ ४ ॥
सोरठा—पहर तीसरे माहिं, बडवा जन्मै पुत्रको ।
जाकी घोडी आहि, होइ तासुके धान्य बहु ॥
दोहा—जानो चौथे यामको, घोडी जासु बिआइ ।
गो अरु महिषी ताहिके, नितप्रति अति अधिकाँइ ॥

अथ दिवसको फल ।

दोहा—दिनके पहिले पहरमें, बडवा होइ बिआनि ।
ताको मध्यम दोष है, कहत सबै गुणखानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ ताकी शांति ।

दोहा–सुरभी एक मँगाइकै, बोलि विप्रको देइ ।
दोष जाइ मिटि ताहिको, जो यह विधि करिलेइ ॥ १ ॥
घोडी पहिले याममें, जन्मै बच्चा जौन ।
काटै दहिने कानको, कछुक थोर बुधिभौन ॥ २ ॥
होइ बछेरी तौन जो, बायें कानहि माहिं ।
कछु थोरोसो चीरिये, तहूं दोष मिटिजाहिं ॥ ३ ॥
पहर दूसरे जाहिके, बडवा होइ बिआनि ।
जानौ ताके भ्रातृकी, मृत्यु पहूंची आनि ॥ ४ ॥

अथ ताकी शांति ।

दोहा–निरतदेवके कोपते, ऐस उपद्रव होइ ।
निरतिऋचाको होम जप, दशहजार करिदेइ ॥

चौपाई–सहसमूर्ति शिवकी पुजवावे । देइ दक्षिणा विप्र जिमावे ॥
और करै दुइ गाइन दाना । तबतौ दोष मिटै विधि नाना ॥

सोरठा–घोडी जासु बिआइ, पहर तीसरे दिवसके ।
ताको फल अस आइ, निश्चय जानौ बात यह ॥

दोहा–घोडी है जिहि पुरुषकी, नाश तासु जिय होइ ।
कीतौ ताके पुत्रको, नाश सहीते जोइ ॥

ताकी शांति ।

दोहा–पहर तीसरे माहिमें, घोडी जासु बिआनि ।
तापर जानौ कोप यम, अरु सूरजको मानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यम अरु सूरजमंत्रको, अयुत अयुत जपवाइ ।
फेरि पूजि यमदेवको, दीजे होम कराइ ॥ २ ॥
अरु सूरजको पूजिये, ब्राह्मण देइ जेंवाइ ।
यथाशक्ति सो दानकरि, सकल दोष नाशिजाइ ॥ ३ ॥

चौपाई—वेदपात्र विप्रहि बुलवावे । दशहजार पारथी पुजावे ॥
ताहि सुवर्ण दाक्षिणा देई । शांति पढाइ तासुते लेई ॥

अन्य शांति विधि ।

दोहा—मृत्युंजयको होम जप, शिव मूरति पुजवाइ ।
देइ जेंवाइ विप्र बहु, औरौ यह विधि आइ ॥ १ ॥
घोडीबच्चा सहित वह, नहिं देखै निजनैन ।
दीजे काहू विप्रको, कहिके केवल बैन ॥ २ ॥
दिनके चौथे याममें, बडवा जासु बिआय ।
त्रिया मरै ताकी सही, धन स्वाहा ह्वैजाय ॥ ३ ॥

ताकी शांति ।

दोहा—जानौ कोप जलेशको, तासु ऋचा जपवाइ ।
पूजा कीजे बरुणकी, ब्राह्मण देइ खवाइ ॥ १ ॥
घोडी जौन बियानि है, ता बच्चा युत खोलि ।
और कछू धन धान्य युत, दीजे ब्राह्मण बोलि ॥ २ ॥
और करै गोदान यक, सबै दोष मिटिजाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कह्यो, या बिन कुशल न आइ ॥ ३ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजिजन्मशुभाऽशुभशांति-
कथनं नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ घोडीके प्रसव समयमें बछेराके राखेकी विधि ।

दोहा-घोडीकरे प्रसवको, समय आनि जब होइ ।
तबहीं याविधिसों करै, वर्णतहौं अब सोइ ॥ १ ॥
बच्चा निकसै पेटसों, कम्मर पर लेलेइ ।
लिये ताहि ठाढो रहै, भूमि न आवन देइ ॥ २ ॥
घोडी ताके तनुहिको, लेट चाटि सब लेइ ।
लिये रहै तेहि ऊपरै, तौलौं भुइँ नहिं देइ ॥ ३ ॥
होइ बछेरा जलद अति, पवन समान उडाइ ।
रोग होइ नहिं देह तेहि, ऐसी विधि यह आइ ॥ ४ ॥
यहि विधि में यक खौफ है, देइ बछेरा छोडि ।
तेहि विधि दूसरि कहौं, जानि लेहु मतिजोडि ॥ ५ ॥
जो यह विधि नहिं ह्वैसकै, तौ यह यत्न करेइ ।
धरामाहिं नहिं आवई, थाँभि ऊपरै लेइ ॥ ६ ॥
की कमरी की घासपर, बच्चाको धरिदेइ ।
लेट ताहिकी देहको, चाटि घोडिका लेइ ॥ ७ ॥
देहमाहिं रहिजाय जो, पोंछिलेइ निज हाथ ।
लेट रहन नहिं दीजिये, यह भाष्यो मुनिनाथ ॥ ८ ॥
ठाढो बच्चा होय जब, धरामाहिं निज पाँय ।
तब तौ ताको दोष नहिं, भूमि विषे जो जाय ॥ ९ ॥
तबहूँ होय चलाक यह, पै तासम नहिं होय ।
ये दुइ विधिको छोंडिकै, नीकी विधि नहिं कोय ॥ १० ॥
बच्चा निकसत पेटसों, जब आधा दरशाय ।
अक्सर की उठिकै तबै, घोडि ठाढि होजाय ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरत बछेरा भूमिपर, तासु ऐसि गति होय ।
झटका लागत कमरमें, यातो कमरी जोइ ॥ १२ ॥
बच्चा ओदो लेटसों, भूमि परश तेहि होय ।
घीम होत है ताहि ते, कहत सयाने लोय ॥ १३ ॥
यासे औरो कहत हौं, यत्न एक परमान ।
बच्चा जननेके समय, कीजै यहै विधान ॥ १४ ॥
कमरी एक मँगाइकै, चारो कोन पसारि ।
बच्चा जब निकरन लगै, उपरै लेवै धारि ॥ १५ ॥

अथ खूझा निकारैकी विधि ।

दोहा—घोडी केरे पेटसों, बच्चा बाहर होइ ।
खूझा ताके सुमनसों, काढि डारिये सोइ ॥ १ ॥
खूझा ताको कहत हैं, नीचे सुमके होइ ।
सुममें लागो होत है, सुम समान है सोइ ॥ २ ॥
श्वेतरूप सुमके तरे, प्रकट देखाई देत ।
सुमके टेढे होनको, ताहि जानिये हेत ॥ ॥ ३ ॥
जो खूझा नहिं काढिये, औरो दोष लखाय ।
रस गंधादिक रोग, जे होत तुरीके आय ॥ ४ ॥

इति श्रीशालिहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोडीके प्रसवसमय बछेराकी विधिकथनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ बच्चाके दूध पियावैकी विधि ।

दोहा—प्रथमे घूंटी देइ करि, पीछे दूध पिआइ ।
दोष करत नहिं दूध तब, जानो सत्य उपाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घूँटीविधि।

दोहा—करुव तेल अतिही खरो, पैसाभारि मँगवाइ।
नीबपातको अर्क सम, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
तप्त कीजिये अग्निपर, चौथभाग जरिजाइ।
तेहि उतारि ठंढो करो, बच्चहि देउ पिआइ ॥ २ ॥

अन्यविधि।

दोहा—पैसाभरिके नीबको, रँगनु लेउ मँगवाइ।
तिहिको आधो लेउ गुड, तामें देउ मिलाइ।

अन्य विधि।

चौ०—केवल करुवा तेल मँगाव। तुरी बछेरहि आनि पिआवे॥
पीवे दूध रोग नहिं होई। घूँटी तीनि कहीये सोई॥

अथ बछेराके अन्हवावेकी विधि।

दोहा—लेट रहाति है देहमें, बाजि बडो जब होइ।
होत खारिस्ति सु ताहिके, सही जानियो सोइ ॥ १ ॥
जबहिं बछेराके बदन, लेट सूखि सब जाइ।
तप्त जलहि करवाइके, देहु ताहि अन्हवाइ ॥ २ ॥

जो घोडी बच्चाको छोडि देइ ताको लैलेनेकी विधि।

दोहा—लोनु लहोरी लेइकरि, ता सम खैरु मिलाइ।
बच्चाकेरी पीठिपर, दीजे ताहि मलाइ ॥ १ ॥
ताहि चटावे घोडि वह, बच्चाको लैलेइ।
जो याहिविधि ते लेइ नहिं, तो यह विधि करिदेइ ॥ २ ॥

अन्य विधि।

दोहा—घोडीको ठाढी करे, बंधन देइ छँडाइ।
ताके समुहे दूरि कछु, बच्चाको ठडिहाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—श्वान एक मँगवाइ, बच्चाकेरी पीठिपर ।
दाज ताह छँडाइ, भाजि चलैं नर होंइ जे ॥
दोहा—श्वानहिं काटनको तबै, दौरत घोडी आहि ।
लेत बछेराको सही, उपजत ममता ताहि ॥ १ ॥
होइ दूध नहिं घोडिके, की तौ नहीं बिआइ ।
रोग औषधी जहँ कही, तहँ है तासु उपाइ ॥ २ ॥

अथ दूधको अजीर्ण होइ ताकी औषधि ।

दोहा—आधापैसा तौलभरि, अजवाइनिको लाइ ।
ताते दूनो लेउ गुड, दूनौ पीसि मिलाइ ॥ १ ॥
होय बछेरा छोट जो, दोइ बखतमहँ सोइ ॥
नाहिंन यक मौताज है, देत अजीरण खोइ ॥ २ ॥
और अजीरन औषधी, जेती वर्णी आइ ।
कदहि देखि सो दीजिये, तहूं अजीरन जाइ ॥ ३ ॥

अथ दूध पिआवैकी विधि ।

दोहा—मास एकको होइ जब, घोडीकेर बछेर ।
तबै पिआवै दूधको, नाहिं कीजे अतिदेर ॥ १ ॥
उत्तम अजया दूध है, मध्यम गऊक जानि ।
और दूध नहिं दीजिये, करत रोग यह मानि ॥ २ ॥
चौपाई—बरतन एक लीजिये ताता । तामैं यह विधि कीजै प्राता ।
सैंधवलोनु धरै बरतनमें । ऊपर दूध डारिये तामें ॥
वही दूधको देइ पिआई । लोनु बछेराहि देइ चटाई ।
सोरठा—खील सोहागा लाइ, दूध धार सँग छोंडिये ॥
पियत बछेरा जाइ, करत बहुत गुणको अहै ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घेला भरिसे लाइ, पैसा भरितक दीजिये ।
डमिरि देखिकै ताइ, खील सोहगा देहु तेहि ॥ २ ॥

दोहा—दूध पियेते अश्वतनु, होत वात अधिकार ।
दिये सोहागा होत नहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
प्रथमहिं दीजै दूधको, पावसेरसों लाइ ।
फिरि जितना वहु पीजिये, वतना देहु पिआइ ॥ २ ॥
जो यतना नहिं दीजिये, जबते दाना खाइ ।
दाना दूध भिगोइ करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥
चनाको दाना दूधमें, दीजै ताहि भिगोइ ।
दिनामानु भीजा करै, अश्वहि दीजै सोइ ॥ ४ ॥

अथ मक्खन देइकी विधि ।

दोहा—दोइ टकाभरि दीजिये, प्रथमहिं माखन लाइ ।
दिनदिन ताहि बढाइये, एक सेर लगुजाइ ॥ १ ॥
मक्खन दीजै अश्वको, सैंधव लोन मिलाइ ।
देइ टकाभरि लोनको, मक्खन सेरहि माइ ॥ २ ॥
एक सालभरि अश्वको, माखन देइ खवाइ ।
ताको बल औ पौरुषौ, घटत कबहुँ नहिं आइ ॥ ३ ॥
तुरी दूध जबलौं पियै, कीतौ माखन खाइ ।
पैसाभरि अजवाइनिहि, देत नितहि प्रति जाइ ॥ ४ ॥

बछेराको मुसव्वर देइकी विधि ।

दोहा—अलुआ मासे दोइलै, दूधमाहिं पकवाइ ।
कद अरु बेस विचारिके, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिये मुसव्वर अश्वको, सगरे रोग नशाइँ ।
शरदी बलगम वातते, जनित रोग सब जाइँ ॥ २ ॥
मक्खन पयके दियेसे, जो अवगुण कछु होइ ।
दिये मुसव्वर अश्वको, पचत सकल है सोइ ॥ ३ ॥
कद अरु बेस विचारिकै, देइ मुसव्वर ताहि ।
कम ज्यादा मौताजसे, करदीजै सो वाहि ॥ ४ ॥
दूध परत जहँ होइ नहिं, शरद मुलुक अतिहोइ ।
दूनिदेइ मौताज यह, मूसव्वरकी सोइ ॥ ५ ॥
होत जानुवाँ नहीं तिहि, सो जानौ मतिवान ।
शालहोत्रमत देखिकै, कह्यो सुतौन विधान ॥ ६ ॥

अथ बछेराकी चौबंदी दागैकी विधि ।

दोहा—मास ग्यारहें ऊपरै, दागिय बाजी सोइ ।
तब चौबंदी दागिये, मौसम जाडा होइ ॥ १ ॥
दोइ साल पर्यंतलौं, दागत हय सबकोइ ।
ताते बढिकै वैसमहँ, दागे गुण नहिं होइ ॥ २ ॥
ऊपर आंगुर चारिसों, चारिउ गांठिन माहिं ।
रगैं देखाई देतिहैं, तरफ भीतरी आहिं ॥ ३ ॥
तहां दागिये अश्वको, ताते बहु गुण होइ ।
दुइदुइ लीकै कीजिये, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
और रगैंहैं अश्वके, तेऊ दागी जाइ ।
ते अब वर्णन करत हौं, ताको गुण दरशाइ ॥ ५ ॥
दाढ पिछारी शिराहितर, गर्दनिको जहँ जोर ।
रगैं दोइ तहँ होतिहैं, तहाँ दागिये घोर ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिरके जेते रोग हैं, सो हयके नहिं होइ।
दागी जाकी रगैं वे, विरले जानत कोइ ॥ ७ ॥

दोऊ तर फन दागिये, पारा करिये चारि।
आँगुर तीनिके होय सो, याही भांति विचारि ॥ ८ ॥

दोऊ अगिले भुजनपर, बंदहोइ तहँ दोइ।
जहाँ हाडको जोर है, तहाँ दागिये सोइ ॥ ९ ॥

ताकी छाती भरति नहिं, ये बंद दागे जाहि।
दागे पारा—चारिकरि, शालहोत्र मत आहि ॥ १० ॥

दोइबंद कोखिन विषे, वाजीके सो होइ।
जहँ भौंरी है कोखिकी, ताके पीछे सोइ ॥ ११ ॥

तहाँ दागिये अश्वको, ताको फल अस आइ ॥
होत कुरकुरी ताहि नहिं, उदररोग नशि जाइ ॥ १२ ॥

रगैं चारि औरौ अहैं, बाजी पाँइन माहि।
होत मुजम्मा ऊपरे, तरफ भीतरी आहि ॥ १३ ॥

मोजाको जो जोर है, तापर जानौं सोइ।
तहाँ दागिये अश्व जो, यतने रोग न होइ ॥ १४ ॥

पुस्तक और चकावरी, ता हयके नहिं होइ।
बन्द एक है औरऊ, भाषतहौं अब सोइ ॥ १५ ॥

लिंग अगारी पेट तर, नसैं जौन दरशाइ।
तहाँ दागिये अश्वको, ताको गुण यह आइ ॥ १६ ॥

अंडकोश ता वाजिके, कबहूं नहिं घटि जाइ ॥
उतरत नाहिन आँत है, ता बाजीकी आइ ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दागेते इन वदनको, गुणतौ येते आहिं ।
याते दागत हैं नहीं, अवगुण कुछ दरशाहिं ॥ १८ ॥
रोग होत है वाजिके, कोउ यक ऐसो आइ ।
फस्त खोलना परतिहै, विना फस्त नहिं जाइ ॥ १९ ॥
जेती दागी नसै हैं, ते नहिं खोली जाहिं ।
हठ करिकै जो खोलिये, लोहू निकसत नाहिं ॥ २० ॥
दागत नहिं सो ताहिते, वाजीको सबकोइ ।
जो कदाचि कोइ दागि है, अवगुण और न सोइ ॥२१॥
चौवंदी जो दाग है, दागो ताहि जरूर ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेउ जारूर ॥ २२ ॥

अथ बछेराकी परीक्षा जानै कि कैसा घोडा होगा ।

दोहा—कर्ण जासुके लघु लसैं, छाती चौंडी होइ ।
बीचु जाहिके अधिक है, दुहूँ कानते सोइ ॥ १ ॥
गर्दन लंबी होइ अरु, चौंडे सुमहैं जाहि ।
कर्ण होंइ ढीले नहीं, लंबो मुख है ताहि ॥ २ ॥
पातर मुखको वा सुछम, आँखि बडी जब होइ ।
थुथुनी होइ नुकीलि अरु, बाँसा ऊँच न सोइ ॥ ३ ॥
पूँछ पातरी अश्वकी, गुदा चाकली होइ ।
चढिकै जामैं पूँछ अरु, चौंडे पुट्ठन सोइ ॥ ४ ॥
ये लक्षण जामें अहैं, नीक तुरी सो होइ ।
इनते होइ विरुद्ध जो, मध्यम जानौ सोइ ॥ ५ ॥
जा वाजीकी देहमें, ये लक्षण नहिं आहिं ।
होय नहीं सो नीक बहु, ऐसो जानौ ताहि ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होय गामची छोटि बहु, यहू सुलक्षण होय ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेहु तुम सोय ॥ ७ ॥

अथ बेचढे अश्वकी परीक्षा कदम चलैगा कि नहीं ।

दोहा—अगिलो जाको पग जहाँ, परत धरणिमें सोइ ।
ताते पछिलो बढि परै, कदमबाज सो होइ ॥ १ ॥
पछिले पुट्ठा जाहिके, अतिही उतरे जानि ।
सेर कूंच सो होइ हय, कदमबाज सो मानि ॥ २ ॥

बछेराकी उँचाई यानी कितना ऊँचा होयगा ।

दोहा—सुम ऊपरकी टाँकते, चौगुण ताको जान ।
तुरी उँचाई होति है, ताको मनमें मान ॥ १ ॥
यातो कान प्रमाणको, नव गुण कीजै तात ।
अश्व उँचाई जानिये, सही सही यह बात ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोडेके स . ल उपचार कथनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ बाजी वर्ण वर्णन ।

दोहा—हय अपार बल सहजही, जानत सकल जहान ।
तिनमें चारिउ वर्ण हैं, तिनको करौं बयान ॥ १ ॥
अश्व सबे समरत्थ हैं, एके रूप लखात ।
तिनके लक्षण कहतिहौं, जाते जानें जात ॥ २ ॥
वर्ण वर्णके भेदसों, भिन्न भिन्न हय होत ।
कितने पाले देह हैं, कितने रण उद्योत ॥ ३ ॥
तिन अश्वनको जानिके, वर्ण भेदसों कर्म ।
देश प्रभावहि लखि कछू, कहत यथामति मर्म ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु, शूद्र वर्ण हय जानि ।
तिनके लक्षण कहतहौं, शालहोत्र मतमानि ॥

ब्राह्मण वर्ण लक्षण ।

दोहा–स्वच्छ स्वभाव अनूप छबि, जासु तेज अधिकार ।
जाको देखत मोहिकै, नमित होत संसार ॥ १ ॥
भोजनकी रुचि जासुकी, जलसों नहीं सकाइ ।
अग्निपुंज सम ज्वलित अति, रण देखत ह्वैजाइ ॥ २ ॥
अरु प्रतिभटको देखिकै, नहिं भय मानै सोइ ।
सरल सुभाव विवेक अति, जलपीवै मुख धोइ ॥ ३ ॥
पुष्पसमान प्रस्वेद तनु, आवै बासु सुबासु ।
श्वेत रंग है तासुको, ऐन नैन सम जासु ॥ ४ ॥
ताते बार गरीब अति, बडो जासुको बोल ।
सूरति प्यारी होय अति, ऐसो अश्व अमोल ॥ ५ ॥
रणमें दगा करै नहीं, क्षतते नहिं अकुलाइ ।
बिह्वलभे असवार को, घरहि देहि पहुँचाइ ॥ ६ ॥
हठ पकरे छोडै नहीं, डरै न त्रासे त्रास ।
विप्रवर्ण पहिंचानिये, रससों आवै रास ॥ ७ ॥
ते दरियाई बाजि वा, नीलसरो के पार ।
श्वेत रंगके जानिये, होत विशेष अपार ॥ ८ ॥

अथ क्षत्रियवर्णन लक्षण ।

दोहा–मानै हारि न नेकहूं, करै विरोध जु कोइ ।
संगरमें लखि शत्रुको, अतिशय क्रोधित होइ ॥ १ ॥
युद्ध समय असवारके, मनके साथ उडाइ ।
शत्रु शस्त्र निज स्वामिपर, लागत देइ बचाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारबार मुख शब्दको, ललकारे जनु वीर ।
एकीएका शत्रुको, आवै देइ न तीर ॥ ३ ॥
टापे हींसे बल करै, युद्ध समय उत्साह ।
ऐसो बाजी भाग्य सों, पावत हैं नरनाह ॥ ४ ॥
असवारी प्यारी लगै, निशि बासरमो ताहि ।
बंधन तोरत तासुते, ताको दोष न आहि ॥ ५ ॥
रण देखत परचंड ह्वै, पवन समान उडाइ ।
अस्त्रचोट माने नहीं, सन्मुखगोल मझाइ ॥ ६ ॥
अगर समान प्रस्वेद तनु, आवत जाके बासु ।
अथवा और सुगन्धको, तनुते होत प्रकासु ॥ ७ ॥
सहजै चौंकत है नहीं, चहुँदिशि चितवत जाइ ।
गनै नहीं उपवासको, सघन तेज सरसाइ ॥ ८ ॥
सदा क्रोध राखै बहुत, जलदी करै अहार ।
पानी पीवै टापिकै, ऐसो तासु विचार ॥ ९ ॥
वेग तासुके तेज बहु, कदम चलै सुखदाइ ।
बोलत बोल सुलगै इमि, मानो बाघे आइ ॥ १० ॥
अग्नि पवन अरु तोपसों, नेको नहीं सकाइ ।
ऋच्छ बाघ गज देखिकै, सन्मुख ताके जाइ ॥ ११ ॥
मरदानो क्रोधी बडो, क्षत्रिय वर्ण जु होइ ।
ताके बल अरु पौरुषै, बाजि न दूजो कोइ ॥ १२ ॥
घोडी लखि बोलै नहीं, नाहिंन करै सरार ।
दुइपद ठाढो होइ नाहिं, करै न पाँय प्रहार ॥ १३ ॥
अडै न काटै भूलिहू, अति गरीब सो होइ ।
रससों रस राखे रहै, क्षत्रिय वाजी सोइ ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रंग कुमैतसो होत है, जानौ ताहि प्रमान ॥
व्योषा ईरानी थवा, ईराकी हय जान ॥ १९ ॥

अथ वैश्यवर्ण वाजी वर्णन ।

दोहा—सुरत होइ सिमिटै बहुत, मनमलीन बेजात ॥
तंग कसाति तरसाति अहै, कांपि उठै सब गात ॥ १ ॥
रहै अधीन सवारके, क्रोध करे डरिजाइ ।
भीर देखि झझकै बहुत, डरु मानै अधिकाइ ॥ २ ॥
चाबुक मारे क्रोध करि, तबहिं शीघ्रगति होइ ।
मन कपटी अरु मन्दगति, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
जलदी चलत न दूरिलौं, कितनौ करे उपाइ ।
अरगा अविआ कदम है, जाको जाति सुभाइ ॥ ४ ॥
दाना नीको होइ जो, तौतौ खाइ अघाइ ।
भोंडो छाँडै तुरतही, की थोरो सो खाइ ॥ ५ ॥
रण काचो नाचो फिरै, कीतो जाइ पराय ।
तेजस है नहिं तोपको, भयते अति सकुचाइ ॥ ६ ॥
चाह करे घोडीनकी, बारबार हिहनाइ ।
मारेते सीधो चलै, मोटी खाल लखाइ ॥ ७ ॥
बासु प्रस्वेदहि घीवसम, कै अजया सम होय ।
कीतो आवै बासु नहिं, जानिलेहु जिय सोय ॥ ८ ॥
जल पीवत है ओंठसों, मोटो होइ शरीर ।
ए लक्षण सब जानियो, वैश्यवर्ण तासीर ॥ ९ ॥
सिरगारंग विशेषकै, वैश्यअश्वको होय ।
तेपरतीके जानिये, निश्चय करिकै सोय ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ शूद्र वर्ण वाजी वर्णनम् ।

सोरठा—मलिन रंग है जासु, शूद्र वर्ण सो जानिये ।
तासु प्रस्वेदहि वासु, आवत है सम मीनके ।

दोहा—खाल जासु मोटी अहै, मोटेहैं सब बार ।
लीदि मूत्र युत थानमें, लोटत बारहिं बार ॥ १ ॥
मंदमंद भोजन करत, झझके पानी देखि ।
पलके मोटी होंइ अरु, मुखमें गंधि विशेषि ॥ २ ॥
निपटहि धीमो होइ सो, बोलत बारहि बार ।
बोल न प्यारो तासुको, बहुतै करै सरार ॥ ३ ॥
कहा न करै सवारकों, मोटो होइ शरीर ।
लडै बहुत घोडेनसों, आवन देइ न तीर ॥ ४ ॥
काटै मारै लात अरु, दुइ पग ठाढो होइ ॥
करै हरामी बहुत भेधि, शूद्र वर्ण हय सोइ ॥ ५ ॥

सोरठा—मारे सीधो होय, करै हरामी फेरि बहु ।
फिरि मारै जो कोय, तो तो फिरि सीधो चलै ॥

दोहा—कोई रंग जो देहमें, होइ मलीन विशेषि ।
तेखडहर मडवारके, जान्यो मनमें देखि ॥

अथ संकरवर्ण वर्णनम् ।

दोहा—मिल लक्षण जहँ होतिहैं, दोइ वर्णके आनि ।
तिन अश्वनको कहति हौं, संकरवर्ण बखानि ॥

चोपाई—शकर वर्ण होहिं बहुतेरे । ते नहिं वर्णे यामधि घोरे ॥
तिनके लक्षण बहुविधि जानौं । तासों कछु संक्षेप बखानौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ उचित अश्व कथन ।

दोहा—विप्र योग ये चारिहैं, तीनि नराधिप चाहि ।
वैश्य सुखद दोई अहैं, शूद्रहि एकहि आहि ॥ १ ॥
कोऊ पंडित कहत हैं, भूपयोग ए चारि ।
वर्ण वर्णके काज सब, भिन्नै भिन्न विचारि ॥ २ ॥

चौपाई ।

मंगलकाज सिद्धि द्विज देई । क्षत्रिय जाति विजय रण लेई ॥
धनके काज वैश्य चढि जाई । औरे काज शूद्र सुखदाई ॥
चारो वर्ण रहैं ये जाके । संपति भवन तजति नहिं ताके ॥
बहुतक सुख आवै तिहि पाहीं । देखत शत्रु नाश ह्वै जाहीं ॥
दोहा—सब बाजिनमें होत नहिं, सब ए लक्षण आनि ।
एक दोइ जो होइ कछु, लेहु वर्ण पहिचानि ॥ १ ॥
सब देशनमें होतहैं, चारि वर्ण जो आनि ।
जौन देशमें जो कहे, ते विशेष करि मानि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीवर्ण कथनं
नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ गणविचार ।

दोहा—शुभवाजी अशुभै करै, अशुभ करै शुभ आनि ।
ताको कारण गण अहै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
सब वाजी हैं तीनि गण, सो अब कहौं बखानि ।
देवतागण मानुष्यगण, अरु राक्षसगण जानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ देवतागण वाजी ।

दोहा—देखतही मनको हरै, ऐसो रूप ललाम ।
देह धरेहै वाजिकी, सोहत मानौ काम ॥ १ ॥
नमित होहिं सब देखि नर, जानौ सरल सुभाउ ।
अंग सुपुष्टित होइ सम, देवजात परभाउ ॥ २ ॥
भौंरी कही अनिष्ट जो, होंइ नहीं ते कोइ ।
जे शुभ लक्षण हैं कहे, तिनयुत वाजी होइ ॥ ३ ॥
दहिने नासा भीतरै, परै भँवरि अरु आनि ।
मिलत भाग्यसों वाजि अस, देव जाति सो जानि ॥४॥
वौंधे हाथी युत्थसो, अस हय जाके होय ।
होनहार निज स्वामिसों, कहत सयाने लोय ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यगण वाजी ।

दोहा—भौंरी दुष्ट अनिष्ट जो, होंय नहीं ते कोइ ।
देखत होय सुहावनो, मानुषगण हय सोइ ॥

अथ राक्षसगण वाजी ।

दोहा—भौंरी परै अनिष्ट कोइ, जा वाजीके आनि ।
और चिह्न सब शुद्ध हैं, रौद्र रूप पुनि जानि ॥ १ ॥
टेढो होइ सुभाव सब, पुष्ट बहुत सो आहि ।
क्षुधा तृषा अधिकार बहु, राक्षसगण कहि ताहि ॥

अथ द्वितीयप्रकार गणविचार ।

दोहा—मनुज राक्षस देवगण, सकल नरनको जानि ॥
जाते जाने जाहिं गण, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदि वर्ण जो नामको, जौन ऋक्षको होय ।
तौन ऋक्ष जोहि गण विषे, गण है नरको सोइ ॥ २ ॥

अथ राक्षसगण ऋक्षकथनं ।

दोहा—चित्रा शतभिष ज्येष्ठा, मघा विशाषा जानि ।
अरु अश्लेषा कृत्तिका, मूल धनिष्ठा मानि ॥ १ ॥
ये नक्षत्र सब जानिये, गण राक्षसके आहि ।
मुनिवर वरणो चाउ करि, जानिलेहु मन माहि ॥ २ ॥

अथ मनुष्यगण ।

दोहा—तीनौं पूर्वा रोहिणी, भरणी आर्द्रा मानि ।
और उत्तरा तीनि जे, ये मनुष्यगण जानि ॥

अथ देवतागण ।

दोहा—पुष्य पुनर्वसु मृगशिरा, अश्विनि श्रवण बखानि ।
अनुराधा स्वाती सहित, हस्त रेवती जानि ॥ १ ॥
कहे देवगणके विषे, ये नव नखत बखानि ।
ताहि प्रयोजन अब कहौं, शालहोत्रमतजानि ॥ २ ॥

अथ नर देवतागण, घोडा नरगण ताको फल ।

सोरठा—नरगण बाजी होइ, मोललेइ सो देवगण ।
ताको फल अस जोइ, तुरी रहे आधीन तेहि ॥

अथ नर देवगण, वाजी राक्षसगण ।

सोरठा—देवगणहि नर जानि, बाजी राक्षस गण अहे ।
ताको फल यह मानि, करै उपद्रव स्वामि घर ॥

अथ नर बाजी दोनौ देवता गण ।

दोहा—बांजी जानो देवगण, नरो देवगण होइ ।
देत अहे निजस्वामिको, पूरण सुखको सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ नर राक्षसगण, बाजी देवतागण ताको फल ।

दोहा—घोडा जानौ देवगण, नर राक्षसगण होइ ।
यद्यपि भौंरी शुभ सहित, हानि करै यह सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, घोडा मनुष्यगण ताको फल ।

दोहा—राक्षसगण नर होइ सो, नरगण बाजी आइ ॥
ताहि खरीदे फल यहै, तुरी सही मरिजाइ ।

अथ नर राक्षस गण, बाजी राक्षसगण ताको फल ।

बाजी राक्षसगण अहै, नर राक्षसगण जानि ॥
यद्यपि भौंरी अशुभ युत, तदपि होइ सुखदानि ।

अथ नर नरगण, बाजी देवतागण ताको फल ।

दोहा—अश्वजानि सो देवगण, नरगणको नर लेइ ॥
ताहि खरीदै सुख लहै, नितप्रति उत्सव देइ ।

अथ नर नरगण बाजी राक्षसगण ताको फल ।

सोरठा—हय राक्षसगण होइ, खरीदार मानुष्यगण ।
स्वामी नाशै सोइ, धन दारा अरु कुल सहित ॥

अथ नर बाजी दोनौ नरगण ताको फल ।

सोरठा—मोललेइ नर जोइ, मानुषगणको होइ सो ।
बाजी नरगण होइ, तासु फलाफल कछु नहीं ॥

दोहा—शुभचेष्टा बाजी करै, शुभ भौंरी युत सोइ ।
नहिं दूषितगण भेदसो, तब पूरण फल होइ ॥ १ ॥
बाजी मिश्रित गण अहै, ताहि खरीदै कोइ ।
तहाँ विचारै गण नहीं, शालहोत्र कहि सोइ ॥ २ ॥
भौंरी जे शुभ अशुभ हैं, त्यों गण चेष्टा जानि ।
एक एक ये फलद नहिं, द्वै त्रिय मिलि सुखदानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहुँ चेष्टा भौंरी फलद, कहुँ चेष्टा गण मानि ।
कहुँ गण भौंरी फलद है, कहुँ तीनों ते जानि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीगणविचारकथनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ वाजी आयुप्रमाण दंतपरीक्षा ।

दोहा—आयु अश्वकी होति है, बत्तिस वर्ष कि जानि ।
याते नाहिन बाढि है, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
कितनी बीती ताहिमें, तासु कहौ पहिचानि ।
देखि रदन जान्यो परत, ताते रदन बखानि ॥ २ ॥
कितने दिनमें होत कस, सो अब कहौ बखानि ।
जाते सब वाजीनके, साल पराति हैं जानि ॥ ३ ॥

अथ दंत वर्णनम् ।

दोहा—प्रथम दिवसके अश्वके, चारि मसूढा होइ ॥
आठ रोजको होइ जब, दाँत जमाति हैं दोइ ॥ १ ॥
चारि महीना होयँ जब, दोइ दोइ अरु मानि ।
चारिदाँत तरके लसै, ऊपर चारिय जानि ॥ २ ॥
दोइ ओर तरके कढै, दोइ उपरके जानि ।
षट तर षट ऊपर लसै, एक सालको मानि ॥ ३ ॥
ताहि कहत आषंड है, जे जानत हैं कोइ ।
दशमहिनाके ऊपरै, बारह लगु तेहि होइ ॥ ४ ॥
एक सालको अश्व जो, श्वेत रदन तेहि आहि ।
षटदश मास प्रयंतलौं, ताही सम दरशाहि ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जौन सफेदी रहति है, षोडशमास प्रमान ।
ता ऊपर जे मास हैं, कीजे तासु बखान ॥ ६ ॥
लागत सत्रह मासते, हीन सफेदी होइ ।
जरदी बाढति जाति है, दोइसाल लगु सोइ ॥ ७ ॥
जरदी दशनन माहिं जो, दोइ साल लगु जानि ।
ताहि कहत नाकंद है, शालहोत्र मत मानि ॥ ८ ॥
दुइ दांतनमें मैलु जो, मास पचीसै होइ ।
मैलु दियो है दोकको, ताहि कहत सब कोइ ॥ ९ ॥
तीसमास लगु रदनमें, रहत मैलु यह जोइ ।
ता ऊपर जो बाजि है, दोक जानिये सोइ ॥ १० ॥
तसिमासके ऊपरै, छत्तिस मास प्रमान ।
दोइ दाँत तरके गिरैं, दुइ ऊपरके जान ॥ ११ ॥
छतिस मासके ऊपरै, जामि बरोबरि होइ ।
तीनि साल षट मासलै, दोक कहावै सोइ ॥ १२ ॥
संवत साढे तीनिके, जब ऊपर हय होइ ।
दोइ रदन तरके गिरैं, दुइ ऊपरके सोइ ॥ १३ ॥
चारि वर्ष पर्यंतमें, जामि बराबरि होइ ।
ताहि तुरीको कहतिहैं, चारि साल सब कोइ ॥ १४ ॥

सोरठा—तब निकसातिहै नेस, बैस कुमारहि जानिये ।
चढिबे लायक वेश, इच्छा सम मेहनति करै ॥

दोहा—चारिसालके ऊपरै, पाँचसाल लगु मानि ।
दुइ दुइ रद औरौ गिरैं, तर ऊपरके जानि ॥ १ ॥
पांचवर्ष पर्यंतमें, जामि बरोबरि होइ ।
युवा अवस्था वाजि है, पंज कहावै सोइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांच वर्षके ऊपरै, षष्ठ वर्षमें जानि ।
स्याही सब दांतन विषे, रेख समान बखानि ॥ ३ ॥
षट संवतके ऊपरै, सात वर्ष लगु जानि ।
सब दांतनके बीचमें, छिद्र परति हैं आनि ॥ ४ ॥
मलै पंज सो जानिये, शालहोत्र कहि सोइ ।
युवा अवस्था वाजिकी, तहां लगे सो होइ ॥ ५ ॥
सातवर्षके ऊपरै, जहँ लगु अठई वर्ष ।
सब दांतनके शिरविषे, पहुँचत स्याही सर्ष ॥ ६ ॥
बीतत अठई वर्षके, नव वर्षन परयंत ।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ ७ ॥
सो वह जरदी यों लगै, जिमि मैलो हटतार ।
और दांत सब स्याह हैं, यह कीन्हों निरधार ॥ ८ ॥
नव वर्षनके ऊपरै, दशवर्षन लगु जानि ।
सब दांतनमें होति है, जरद रेखसी मानि ॥ ९ ॥
जरद होति है दांत सब, वर्ष ग्यारहीं माहिं ॥
नेसनकी जो नोक हैं, ते मोटी ह्वै जाहिं ॥ १० ॥
ग्यारहवर्षन बीतते, वर्ष बारहीं माहि ।
जरदी दांतन शीश जो, कछुक श्वेत दरशाहि ॥ ११ ॥
सोरठा—बीते बारह वर्ष, वर्ष चौदहीलों कहो ।
होत सफेदीसर्स, हयके दशनन माहि सो ॥
दोहा—तौन सफेदी होइ यों, दही रूप ज्यों आहि ।
याहि उमरके ऊपरै, और परीक्षा नाहि ॥ १ ॥
बीतत चौदह वर्षके, वर्ष सत्रहीं जानि ।
बाजीरदनन परत हैं, जरद बिन्दुसे आनि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानौ यकइस वर्षते, बीते तेइस वर्ष ।
दशननमें जे विन्दु हैं, ते वे बाढत सर्स ॥ ३ ॥
बीते तेइस वर्षके, वर्ष पचीस समाप्त ।
रदन जातिहैं बढति आति, अरु सीधे ह्वैजात ॥ ४ ॥
दांतनकेरी जर विषे, लीक समान देखात ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेहु अवदात ॥ ५ ॥
बढे पचीसहिते उमिरि, तीस वर्षलौं जानि ।
दाँत जातिहैं हालि सब, वाजीके यह मानि ॥ ६ ॥
कटत घास नाहिं दशनसों, करत कूचिका तात ।
ता ऊपर बत्तीसलौं, वाजी रदन निपात ॥ ७ ॥
अरबी और इराकके, बहुरो जानि इरान ।
इन्हैं आदि जे हैं तुरी, दीरघ आयु प्रमान ॥ ८ ॥
तिनके दांतन भेद कछु, कहति अहों अब सोइ ।
तीसमास पर्यन्तलौं, वाजि अखेडे होइ ॥ ९ ॥
तीनि वर्ष षट मासलौं, सोन कंद कहि जात ।
चारिवर्षको होय जब, तब तोरै दुइ दांत ॥ १० ॥
दोक कहतहैं ताहिको, शालहोत्र कहि सोइ ।
चारिदांत जबहीं गिरैं, आठ वर्षको होइ ॥ ११ ॥
नव वर्षनके ऊपरै, ग्यारहलौं यह मानि ।
होत पंच तब वाजिहै, श्रीधर कहो बखानि ॥ १२ ॥
ग्यारहते बारह लगे, दशनन रेख लखाइ ।
बारहते तेरह लगे, छिद्र परतिहैं ताइ ॥ १३ ॥
बीतत तेरह वर्षके, जहँलगि चौदह वर्ष ।
सब दांतनके ऊपरै, बाढत स्याही सर्स ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीतत सोरह वर्षके, अष्टादश पर्यंत ।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ १५ ॥
जरद रेख दशनन विषे, बीसवर्षमें होइ ।
एकबीस वर्षहिं विषे, जरदी व्यापति सोइ ॥ १६ ॥
दोइ औरके बीतते, जरदी कछुक सफेद ।
होत आइ दशनन विषे, जानि लेउ बिन खेद ॥ १७ ॥
बढति सफेदी सो अहै, वर्ष पचीस प्रमान ।
जरद बिंदु दशनन परैं, बत्तिस वर्ष बखान ॥ १८ ॥
दोइ और बीते वरष, बिंदुस्याह वै होइ ।
सो वह स्याही अति बढै, पैंतिस वर्षन सोइ ॥ १९ ॥
बीते छत्तिस वर्षके, दांत बाढि सब जाहिं ।
हालि जाति सब दांत हैं, अतिंस वर्षन माहिं ॥ २० ॥
फिरि चालिस वर्षन विषे, वाजी रदन निपात ।
और तुरिनके रदनते, यतनो भेद लखात ॥ २१ ॥
येती आयु तुरीनकी, रदन भेदसों जानि ।
शालहोत्र लिखि देखिकै, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ २२ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीआयुप्रमाण रदनपरीक्षा वर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ वाजी उत्पत्ति देशकथनम् ।

दोहा—वाजी चारि प्रकारके, औरो होत सुजान ।
देश प्रकृतिके भेदसों, तिनको करौं बखान ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम अधम अरु, नीच जानिये और ।
तिन वाजिनके कहातिहौं, शालहोत्र मत ठौर ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देश प्रभावहिं होतिहैं, वाजी प्रकृति सुभाउ ।
देश देशके हय कहौं, करि करि चितमें चाउ ॥ ३ ॥
सब देशनमें होतिहैं, वाजी उत्पाति आइ ।
ए जे देश विशेष हैं, तेई कहत बनाइ ॥ ४ ॥

अथ वाजी उत्पत्ति उत्तम देशकथनं ।

दोहा—नीलरोदके पारके, दरियाई पुनि जानि ।
अरबी जाति सुठार है, और इराकी मानि ॥
सोरठा—इनसम जानि इरान, बलख बुखारो द्वै कहौं ।
भक्खर तुरकिस्तान, देश कुरंग तुरंग हैं ॥
दोहा—चक्रवार पुठवार अरु, बहुरि कहौं कंधार ।
सिंधुदेश तिब्बत सहित, जानिलेहु चिन्हार ॥ १ ॥
पुनि ये सौंरो जानिये, धन्नीसो हय मानि ।
अरु पंजाबो देशको, श्रीधर कहत बखानि ॥ २ ॥
कच्छभुज्ज अरु जानिये, बहुरि काठिआवार ।
फेरि भीमनाथली कहि, इनके हरि सुखसार ॥ ३ ॥
इन देशनके वाजि जो, उत्तम लीजो जानि ।
शालहोत्र मत जानिकै, दीन्हें इहां बखानि ॥

अथ मध्यदेश वाजीवर्णनम् ।

दोहा—सतलजके यहि ओरके, जे जंगलके खेत ।
वाजी होत बिशाल हैं, ये मध्यम कहिदेत ॥ १ ॥
पूना रजहरिया बहुरि, ग्वालिआरिया मानि ।
एते देशन बाजि जे, पौरुषहीन बखानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और कही करनाट है, जानो पुनि गुजरात ।
इन वाजिनमों बल बडो, अधिक तेज सरसात ॥ ३ ॥

सोरठा—एक देश कूरंग, इनमें वाजी होत जे ।
तिनके पुष्टित अंग, शालहोत्र मुनिको मतो ॥ १ ॥
बहुत दूरि चलि जाहिं, मानत नाहिन हारिको ।
अतिहि बली सो आहि, पै वे टर्रा होति हैं ॥ २ ॥

दोहा—रंगपुरी जुमिला सहित, और भुटानी जानि ।
इनमें जे टांघन अहैं, ते मध्यम करि मानि ॥ १ ॥
सनीपूर जैता सहित, कनकाई अरु मानि ।
इन देशनके वाजि लघु, तेऊ मध्यम जानि ॥

अथ अधमवाजीवर्णनम् ।

दोहा—अधम खेत अब कहतहौं, वाजिनके जे आहिं ।
माडवार खडहर सहित, अति बलहीन कहाहिं ॥ १ ॥
रंगपुरी जुमिला सहित, और भुटानी जानि ।
इनमें बडे तुरंग जे, तेऊ अधम बखानि ॥ २ ॥

अथ नीचतरवाजीवर्णनम् ।

दोहा—महानीच तिरहुति विषे, वाजी उत्पाति होइ ।
औरो जे पर्वत अहैं, तिनमें नीचे जोइ ॥ १ ॥
और सुदेश कहे नहीं, वाजी सब जग होइ ।
जेते देश विशेष हैं, या माधि वर्णे सोइ ॥ २ ॥

सोरठा—नीच देशमें नीच, उत्तम देश न नीच कहुँ ।
यह करि जियके बीच, वाजी लेहु विचारि यों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अन्यमत।

चौपाई—उरकर साकर खुरकर मोटा। लंबी गर्दन कमरक छोटा॥
सो अरबी सोई ईरानी। पथरी थोबरी खुंदाकानी॥
चौंडो माथ थोबरी पतरी। रोम महीन कनौटी सुथरी॥
थाने सूध चढे बहु तलषी। धन्नीखेत सो हय इमि परषी॥
अधिक असाल तलासिक भारी। कूदफांदमें आतुरकारी॥
छवोबंद अति शुद्ध बनो है। सोई भक्खर खेत गनो है॥
ठट्टर भक्खर औ कंधारा। जंगल और काठियावारा॥
सुमको हलुक रोमको मोटा। ना अति सुन्दर ना बहु खोटा॥
तिनके नीचे काबुल भाष्यो। दशमें एक बिलाती राख्यो॥
सोइ जाटिआला रजपूताने। गर्दन बडी बडोई काने॥
कमर गामची श्रुतिको छोटा। दुम सुम भारी पुखको मोटा॥
आगे पाछ बराबरि देखे। ताको सब कोइ तुरकी रेखे॥
तुरकी टांघन घुटकन काई। चारिहुको वँ एकै ठाई॥
कहूँ कहूँ तसवीरन देख्यो। सो तुरंग दरिआई लेख्यो॥
दोहा—जा घोडेकी पीठि बुध, अतिखाली अवरेखि।
ताको कच्छी कहत सब, अति स्वरूपको देखि॥
चौ०—उत्तम बाजी देश बखानो। चारु बुखारु महामन मानो॥
खुरासानके होत हैं नीके। राजत साजत काजनहीके॥
करनाटक गुजरात बखानो। अति अहार सो मध्यम जानो॥
दोहा—माडवार कसमीरके, उत्तर दिशिके अश्व।
नीच कहे हैं नकुल मत, शालहोत्र सर्वस्व॥ १॥
कहे वाजि जे विपिनके, सिंधनदीके तीर।
और देशके जानियो, हैं कनिष्ठ मतिधीर॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ देश आयु वर्णन ।

दोहा—काशीपूरब दशबरष, हरद्वार लगु बीस ।
कहुँ कहुँ जंगलके तुरँग, जियत तीस चालीस ॥ १ ॥
जे असील हैं ठौरके, खुरासान मुलतान ।
और इरानी अरबके, कच्छी दीरघ जान ॥ २ ॥
तिनकी तैसी आयु है, दीरघ वर्ष प्रमान ।
चंदनसदनते जानियो, रदन बदन पहिचान ॥ ३ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीदेशउत्पत्ति
कथनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ रंग नाम पहिंचान छब्बिश रंग वर्णनम् ।

कवित्त—श्यामकरण संदली समुंद शूर सूरखा सुरंग, चीनी चौधर संजाफ नीलमकसी प्रमानिये ॥ तामरा हरयल गर्रा मोमिआ अबलख मटिहा, महुआ फुलवारी कुल्ला एते रंगन बिधानिये ॥ भाषौं कुंमैत मुसकी टोपरा सो युद्ध धीर, नोकरा अरु सिगरा सारो सबुजा बखानिये ॥ रंग ये भने हैं षटविंशति प्रसिद्ध करि, अतिही प्रवीन जो तुरंग कला जानिये ॥

अथ प्रथम श्यामकर्ण रंग स्वरूप वर्णनम् । देखो घोडा नंबर १.

यह घोडा रामाश्वेमेधमें छोडागया था ।

दोहा—श्रवण श्याम बिंबा अधर, शशि समान सब गात ।
पति पूँछ नख अरुण जिहि, वेगवंत जिमि वात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—शीश केश बहु पीत सुहायो। मुनिवसिष्ठके सो मन भायो ॥
सुरँग रत्न मणि माल गुहाये । तुरँग कंठ बहु विधि पहिराये ॥
कंचनपत्र कीन्ह यक सुंदर । वाजिभाल बांध्यो लिखि ऊपर ॥
तब प्रभु कह्यो बोलि रिपुदमनू । तात तुरंग संग करु गमनू ॥

अथ द्वितीय श्यामकर्ण रंग । देखो घोडा नंबर २.

इस रंगका घोडा युधिष्ठिरकी अश्वमेधमें छोडागया था ।

व्यासमुनि राजा युधिष्ठिरसे कहते भये ।

चौपाई ।

पुनि यह वाजि मेधहित भूपा । चहिय तुरँग वर सुभग स्वरूपा ॥

दोहा—जो वेसो हय ना मिलै, प्रथम चिह्नके रूप ।
तो यहि विधिको छांडिकै, यज्ञ कीजिये भूप ॥

चौपाई ।

श्रवणहु पूँछ श्याम शिर केशा । होय जासु वपु वर्ण नरेशा ॥

संदली रंग । देखो घोडा नंबर ३.

दोहा—रंग बदामी संदली, वरणैं सुकवि विधान ।
फीको हय सब रँगनमें, भाषैं तिहि गुणवान ॥

समुँदरंग तीनि तहरके । प्रथम समुँद रंग । देखो घोडा नंबर ४.

दोहा—रोमावलि जो अश्वकी, उदर फेन सम होइ ।
चरण आल दुम श्याम है, समुँद कहावै सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वितीय समुँद रंग । देखो घोडा नंबर ५.

दोहा—रंग होइ सब समुँदको, कर्णश्याम कछु जान ।
समुँदकर्ण तेहि नाम है, जानो चतुर सुजान ॥

तृतीय समुँद रंग स्याह जानू । देखो घोडा नंबर ६.

दोहा—समुँद स्याह जानू कहौं, जाके जंघा श्याम ।
बडो रंग मजबूत है, याको राखो धाम ॥

सूर रंग अशुभ । देखो घोडा नंबर ७.

दोहा—धूम्रवर्ण जनु भस्म है, देखत दूरि कराहि ।
शूर कहावत नकुलमत, सेंति न लीजे ताहि ॥

सुरखा रंग शुभ । देखो घोडा नंबर ८.

दोहा—होइ सफेदी गात सब, दूधफेन अनुहारि ।
सुघर पूँछरी कंध कच, सुरखा कहेउ विचारि ॥

सुरंग गुंजारंग । देखो घोडा नंबर ९.

दोहा—अरुणगात जिहि अश्वको, जिमि गुंजाको रंग ।
अरुण पूँछरी कंध कच, जानब ताहि सुरंग ॥

श्वान सुरंग । देखो घोडा नंबर १०.

दोहा—अरुणगात जिहि वाजिको, जिमि हाटकको रंग ।
तेसे पूँछरी कंध कच, कहिये श्वान सुरंग ॥

तैल सुरंग । देखो घोडा नंबर ११.

दोहा—होय अरुणता आलदुम, मिलै श्यामता जाहि ।
कह्यो नाम है कोविदन, तैल सुरंगी ताहि ॥

केहरी सुरंग । देखो घोडा नंबर १२.

दोहा—आलचरण दुम श्वेत है, अरुण गात सब होत ।
सो केहरी सुरंग लखि, शालहोत्र कहि देत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चीनी रंग । देखो घोडा नंबर १३.

दोहा—कहुँ कहुँ श्वेतरु नील कहुँ, त्वचा कहौं कहुँ श्याम ।
सो चीनीरँग कहति हैं, नकुल मते अभिराम ॥

संजाफ रंग । देखो घोडा नंबर १४.

दोहा—पूँछ चरणलगु जानिये, दूजी रंग लकीर ।
जो संजाफी नाम कहि, सब रँगकेर वजीर ॥

चौधर रंग । देखो घोडा नंबर १५.

दोहा—गज समान जिहि अश्वको, रंग होइ सब गात ।
चौधर चोकस अशुभ अति, करौ न याकी बात ॥

नीला रंग । देखो घोडा नंबर १६.

दोहा—नील वर्ण जा अश्वको, रोमावली शरीर ।
नीलारंग बखानु तिहि, बडो जोर गंभीर ॥

मकसी रंग । देखो घोडा नंबर १७.

दोहा—श्याम श्वेत फुटकी परैं, सकल शरीर प्रमान ।
मकसीरंग बखानिये, नकुल कहैं पहिंचान ॥

हरयल रंग । देखो घोडा नंबर १८.

दोहा—असित हरित मिश्रित हवै, रोमावली शरीर ।
हरयलरँग जगछिप्र है, नकुल कहैं मतिधीर ॥

तामडा रंग । देखो घोडा नंबर १९.

दोहा—चमकै ताँबेकी झलक, रंग तामरा नाम ।
युद्धविषे स्वामी सहित, करै आपु संग्राम ॥

अरुण गर्रा । देखो घोडा नंबर २०.

दोहा—अरुण गात जिहि अश्वको, मिलै सफेदी जाहि ।
अरुण पूंछरी कंध कच, गर्रा जानव ताहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्याम गर्रा । देखो घोडा नंबर २१.

दोहा—अरुण श्वेत रोमावली, अश्वाके तनु माहि ।
श्याम पूंछरी कंधकच, गर्रा श्याम कहाहि ॥

अबलख रंग । देखो घोडा नंबर २२.

दोहा—अश्वा केरे गातमें, अर्द्ध उर्द्ध द्वै रंग ।
अबलख नीको रंग है, कीजै ताहि प्रसंग ॥

चौपाई ।

नील श्वेत यक अबलख भाषो । अरुण श्वेत दूजीविधि राषो॥

मोमियां रंग । देखो घोडा नंबर २३.

दोहा—मोमरंगको मोमियाँ, अश्वाके तनु होइ ।
ताहूमें जो गुल परैं, गुली मोमियां सोइ ॥

मटिहा रंग । देखो घोडा नंबर २४.

दोहा—मटिहा रंग पतंग सम, तनुको वोचा होइ ।
सुस्त चुस्त सब काममें, याहि लेउ मति कोइ ॥

महुआ रंग । देखो घोडा नंबर २५.

दोहा—मधु समान रोमावली, महुआ रंग बखान ।
अरुण चमक कछु गातमें, ताहि सुनहुला जान ॥

कुल्ला रंग । देखो घोडा नम्बर २६.

दोहा—जरद रंग सबगातमें, सेली पीठिमें होइ ॥
पैरनमें पंजा परै, कुल्ला कहिये सोइ ॥

फुलवारी रंग । देखो घोडा नंबर २७.

दोहा—जगह जगह तनु होतहैं, बहु रंगनके फूल ।
अति शुभ ताहि बखानिये, कहैं नकुल प्रतिकूल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुम्मैत रंग । देखो घोडा नंबर २८.

दोहा–गात होइ जो अरुणता, आल चरण दुम श्याम ।
सो कुंमैता कहत हैं, नकुल मते अभिराम ॥

तेलिया कुंमयत रंग । देखो घोडा नंबर २९.

दोहा–लाखरंगसो रंग है, श्यामचरण दुम आल ।
तैल कुमयता नाम तिहि, नीको रंग विशाल ॥

टोपरा रंग । देखो घोडा नंबर ३०.

दोहा–जिहि वाजीके शीश पर, श्वेतटोप दरशाइ ।
कहेउ टोपरा नाम ऋषि, युद्ध धीर सो आइ ॥

मुसकी रंग । देखो घोडा नंबर ३१.

दोहा–श्याम वर्ण रँग अश्वको, महिषी रूप शरीर ।
पाक फँरेंदेसों चमक, मुसकी रंग सुधीर ॥

नोकरा रंग । देखो घोडा नंबर ३२.

दोहा–चरण आल दुम गात सब, श्वेतवर्ण जो होइ ।
नयन नासिका शीशलौं, कपिला नुकरा सोइ ॥

सिरगा रंग । देखो घोडा नंबर ३३.

दोहा–होय सफेदी गात सब, जेस रुकुमको रंग ।
कहो रंग है नाम ऋषि, सिरगा चपल तुरंग ॥

द्विविध सबुजा । देखो घोडा नंबर ३४.

दोहा–श्याम श्वेत मिलि अरुणता, रोमावली शरीर ।
सबुजा द्विविध बखानिये, नकुल कहैं मतिधीर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबुजा सारोरंग । देखो घोडा नंबर ३५.

दोहा–पीठ लीक है अरुणता, सबुजा हय सब अंग ।
श्वेत शीश आनन सकल, सबुजा सारो रंग ॥

सबुजा । देखो घोडा नम्बर ३६.

दोहा–सबुजा होवे श्याम सित, कहैं रंग परवीन ।
श्यामलीक हय आलदुम, महासुफल सुखदीन ॥
चौ०–कहुँ कहुँ श्याम श्याम गुल देखै । गुलेदार सबुजा अवरेखै॥

अथ सत्रह रंग मिश्रित ।

कवित्त–केहरी बदामी औ सिराजी बोस्ता खँजरेट, विल्लोरी कागजी कपूरी तूसी रोषिये ॥ षिंग रंग धूरिया कबूतई रमनी-त्यौंचालधार, कल्यानी चंभालखी सुमाति विशोषिये ॥ प्रथम कवित्त षटविंशाति गनाये रंग, यामें सप्तदश ठीक तेतालिस लेखिये ॥ येते रँग प्रगट तुरंगनके युद्धधीर, इनहीमें केवल अरु मिश्रित परोषिये ॥

पुनः भिन्न भिन्न रंगकी पहिंचान ।

छंद पद्धरी ।

मुख उदर जानु सेतीनिहारि । सुरखा तजि सब केहरि विचारि ॥
फुटती बदाम सम श्वेत माहि । लखिरंग बदामी कहि सो ताहि ॥
मिलि श्वेत रंगमें पीत रोम । कहि नकुल सिराजी तुरी कोम ॥
नहिं समुँद न सुरखा रंग पाय । तिनको बुध वस्ता रँग बताय ॥
तल नेन ग्रीव अध असित रेष । खंजरेट कहौं तिनको विशेष ॥
विल्लोर अरुण तुच जहँ लखाय । तुच अतिमहीन कागजी पाय ॥
जहँ तनुकपूररंग भासमान । तहँ कहत कपूरी नकुलजान ॥
समफूल तीसिया तूसरंग । लखि वागरोम सेली जु षिंग ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेलो सफेद जिमि धूपरंग । कहि नकुल प्रगट धूरी तुरंग ॥
लखि दादुरके रँग तुरंग वेष । तिनको कबूत कहिये विशेष ॥
रमनी विलोकि रँग मारजार । बहु रंग रोम मिलि चाल धार ॥
लखि क्षेमकरी समतनु विचित्र । कल्यानी है सो कहिये मित्र ॥
चंभा रँगा मुख सित अरुण जान।तनुकहूँ श्वेत कहुँ श्याम आन॥
अतिही गहिरो कुम्मयत जान । सोरँग लक्खी कहिये सुजान ॥
दोहा—वर्ण वर्ण मिश्रित भये, शुद्ध अशुद्ध अनेक ।
लक्षण सबके कहत हौं, युद्धधीर साविवेक ॥ १ ॥
चोखरु मंद विभेद करि, नहिं भाष्यो यहि हेत ।
हयगति कला प्रवीन जो, चढि फिराय लखिलेत ॥ २ ॥

अथ सत्रह रंगके घोडोंकी पहिंचान वा लक्षण ।

केहरी रंग । देखो घोडा नंबर ३७.

दोहा—उदर जानु मुख श्वेत है, सुरखा ताजि कहि सोइ ।
कह्यो केहरी नाम ऋषि, रंग असीलो सोइ ॥

सिराजी रंग । देखो घोडा नंबर ३८.

दोहा—श्वेतरंग सब गात हैं, पीतरोम मिलिजाय ।
ताहि सिराजी कौमियति, मध्यम रंग कहाय ॥

बदामी रंग । देखो घोडा नंबर ३९.

दोहा—फुटकी होंय बदाम सम, श्वेतरंग तनु माहिं ।
ताहि बदामी कहत हैं, नकुल मतो सो आहि ॥

बोस्ता रंग । देखो घोडा नंबर ४०.

दोहा—नहिं समुदा नहिं सूरखा, रंग लेहु पाहिचानि ।
ताको बोस्ता कहत हैं, मध्यम कहौं बखानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खंजरेट रंग । देखो घोडा नंबर ४१.

दोहा—तालु नयन ग्रीवा अधर, रेखा असित सुजान ।
खंजरेट ताको कहैं, मध्यमरंग प्रमान ॥

कागजी रंग । देखो घोडा नंबर ४२.

दोहा—त्वच महीन रँग श्वेत लखि, जा वाजीको होत ।
कह्यो कागजी नाम शुभ, राजनको सुखदेत ॥

बिल्लौर रंग । देखो घोडा नंबर ४३.

दोहा—श्वेतरंग सब अंगमें, अरुण त्वचा दरशाय ।
बिल्लौरी सो जानिये, उत्तम महा कहाय ॥

कपूरी रंग । देखो घोडा नंबर ४४.

दोहा—जा हयकी रोमावली, रँग कपूर सम होय ।
ताहि कपूरी जानियो, उत्तम भाषों सोय ॥

तूसी रंग । देखो घोडा नंबर ४५.

दोहा—फूल बराबरि बदनमें, रंग तीसिया तूस ।
महाअशुभ ताको कहैं, करै वित्तको खीस ॥

अथ धूरिया रंग । देखो घोडा नंबर ४६.

दोहा—मैल सफेदी बदन सब, धूपरंग सम रंग ।
कह्यो धूरिया तुरंगको, मध्यम है सब अंग ॥

षिंग रंग । देखो घोडा नंबर ४७.

दोहा—आलरोम दूनौं तरफ, सेलीसी दरशाय ।
कहेउ षिंग रंग सुभग बहु, शालहोत्रमत आय ॥

कबूत रंग । देखो घोडा नंबर ४८.

दोहा—दादुरके रँग तनु सबै, वेष वाजिको होइ ।
ताको नाम कबूतई, शालहोत्रमत सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रमनी रंग । देखो घोडा नंबर ४९.

दोहा—रमनीरंग मँजारसम, देखि चिह्न पहिंचान ।
कहेउँ नाम हयको बिदित, शालहोत्र परमान ॥

कल्याणी रंग । देखो घोडा नंबर ५०.

दोहा—क्षेमकरी सम रँग कहो, कल्याणी रँग तात ।
सो कल्याण बढावई, जानो उत्तम बात ॥

चालधार रंग । देखो घोडा नंबर ५१.

दोहा—बहुतरंग मिलि रोममें, चालधार तिहि नाम ।
उत्तमरंग बखानिये, याको राखो धाम ॥

चंभारंग । देखो घोडा नंबर ५२.

दोहा—चंभा मुख सित अरुणमें, तनु कहु सित कहुँ श्याम ।
मध्यम ताहि बखानिये, कह्यो रंगको नाम ॥

लक्खी रंग । देखो घोडा नंबर ५३.

दोहा—अति गहिरो कुंमैत जहँ, लक्खी कहत ललाम ।
नीकेरँग सो जानिये, अति बलिष्ठ अभिराम ॥

अथ बाइसरंगके घोडोंके नाम ।

कवित्त—धुसरा सुकाली हरदक मूसली अहिमूसली षतंग रंग जानिये ॥ पँचकल्यान पिस्तई चक्रवाक मल्यकच्छ मंगल-अष्टकसो बखानिये ॥ युगल वधिक चामदस्त अर्जुल औ सबुज-पाँय श्वेत चरण मानिये ॥ चौपट यमदूत समरदूत खालदार जालिया द्वैविंशति प्रमानिये ॥

अथ धुसरा रंग । देखो घोडा नंबर ५४.

दोहा—भूरी दुम अरु आलकच, धुमिलेहैं सब गात ।
धुसरा कहिये नाम तिहि, शालहोत्रकी बात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई ।

उत्तम अरु निकृष्ट नहिं जानो । मध्यम याको रंग बखानो ॥

मकाला रंग । देखो घोडा नंबर ५५.

दोहा—श्यामगात जो अश्वको, श्यामआल दुम केश ।
ताहि सुकाली कहत हैं, नकुल मते नहिं बेश ॥

हरदक रंग । देखो घोडा नंबर ५६.

दोहा—जरदगात जिहि अश्वको, भूरि आल दुम केश ।
हरदक कहिये रंग तिहि, उत्तम जानो वश ॥

मूसली रंग । देखो घोडा नंबर ५७.

दोहा—एक चरण है श्वेत जो, फूल सकल तनु माहिं ।
नाम मूसली दोष यह, भूलि न लीजे ताहि ॥

अहिमूसली रंग । देखो घोडा नंबर ५८.

दोहा—आवरग मुख ऊपर, अहिफणकी आकार ।
अहिमुसली तिहि जानिये, कलह करै बिकरार ॥

षतंग रंग । देखो घोडा नंबर ५९.

दोहा—श्वेतवर्ण हयको निरखि, रंग षतंग बखानि ।
हृदय आल अरु ग्रीव लग, पुट्ठा अरुण सुजानि ॥
चौ०—मध्यभाग यह रँग है नीको। बहुत तेजाई नहिं बहु फीको॥

पंचकल्याण रंग । देखो घोडा नंबर ६०.

दोहा—श्वेतचरण चारो निरखि, टीका भाल समान ।
पँचकल्यानी रंग सोइ, सदा करै कल्यान ॥

पिस्तई रंग । देखो घोडा नंबर ६१.

दोहा—पीतगात जिहि अश्वको, पीतआल दुम होय ।
नाम पिस्तई रंग है, उत्तम कहियो सोय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चक्रवाक रंग । देखो घोडा नंबर ६२.

दोहा—श्वेत चरण तनु पीत है, अक्षु श्वेत मुख जान ।
चक्रवाक सो रंग है, लीजो सुमति सुजान ॥

चौ०—उत्तम महापुनीत कहावे । पूरण भाग जासु गृह आवे ॥

मल्लिकच्छ रंग । देखो घोडा नंबर ६३.

दोहा—श्याम वर्ण सब अंग है, चरण चारि सित होइ ।
माथे टीका श्वेत लखि, मल्लिकच्छरँग सोइ ॥

चौ०—अतिशुभ वृद्धि करै सब काहू । पूरण पुण्य जो राखै वाहू॥

मंगलअष्टक रंग । देखो घोडा नंबर ६४.

दोहा—आल पूँछ मुख चरण उर, जा तुरंगके श्वेत ।
मंगलअष्टक नाम है, नकुल मते कहि देत ॥

चौ.-बहुत वृद्धि बहु सुख दिखरावे । दिन दिन मंगल मोद बढावे॥
दहिने अंग जरद चट होई । सो मंगल जय करत सदाई ॥

युगल रंग । देखो घोडा नंबर ६५.

दोहा—बहुत रंग मिश्रित भये, युगल अशुभ अवरेषि ।
शालहोत्र मत जानिके, हरै सकल धन लेषि ॥
(खडी आल होइ तिसको भी युगलदोष कहते हैं) ।

वाधिकरंग अशुभ । देखो घोडा नंबर ६६.

दोहा—कृष्ण नीलरँग कलि तजो, महाअलक्षण जानि ।
लोपि भलोरँग गहत बद, वाधिक नाम दुखदानि ॥

चापदस्त रंग । देखो घोडा नम्बर ६७.

दोहा—आगिलकर बाईं तरफ, श्वेतरंग दरशाय ।
चापदस्त तिहि नाम है, महादोष सो आय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरजुल रंग । देखो घोडा नम्बर ६८.

दोहा—पछिलो पग जो एक सित, अर्जुल ताहि कहाय ।
दोष विशेषिनमो गनो, नकुलमते सो आय ॥

सबुज पाँय रंग । देखो घोडा नम्बर ६९.

दोहा—एक चरण तन रंग है, श्वेत होंय पग तीन ।
सबुज पाँय सो दोष वर, रहे संपदा हीन ॥
तीनि पाँव यक रंग हैं, एक पाँव तनुरंग ।
शालहोत्र मुनिके मते, करे राज्यको भंग ॥

श्वेत चरण । देखो घोडा नम्बर ७०.

दोहा—श्वेत चरण दूनो निरखि, रंग द्वितीय शरीर ।
शालहोत्र तिहि अशुभ कहि, महादोष गंभीर ॥

चौपट रंग । देखो घोडा नम्बर ७१.

दोहा—चारों चरण जु श्वेत लखि, माथे तिलक विहीन ।
नाम चौपटादोष तिहि, राजनको दुखदीन ॥

यमदूत रंग । देखो घोडा नम्बर ७२.

दोहा—श्वेत चरण चारौ निरखि, श्याम शरीर प्रमान ।
ता वाजीको परिहरौ, है यमदूत समान ॥

समरदूत रंग । देखो घोडा नम्बर ७३.

दोहा—श्वेत वर्ण सब देह लखि, चरण चारि जिहि श्याम ।
युद्धधीर सो अशुभ अति, समरदूत तिहि नाम ॥

खालदार रंग । देखो घोडा नम्बर ७४.

सोरठा—कोई रँग तनु होय, तोमें खत नीले परैं ।
खालदार है सोइ, याहूको मध्यम कहो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जालिया रंग । देखो घोडा नम्बर ७५.

दोहा—पुट्ठा पछिलो आगिले, औरो अंगम होइ ।
जारीसम रँग श्वेत है, महादोष कहि सोइ ॥

सोरठा—जालपरे तनुमाहिं, कछुक अवस्थाके गये ।
भूलि न राखो ताहि, याको त्यागन कीजिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीरंगकथनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ पद्म रंग शुभ ।

दोहा—हाथ सफेदी माहि जो, किंचित तिल पारेजाय ।
पद्मनाम ताको कहै, अति शुभ लक्षणराय ॥

अथ दाग अंजनीदोष वर्णनम् ।

दोहा—दाग निशानी चारिविधि, ताहि अंजनी नाम ।
भिन्न भिन्न सो कहतहौं, दोष सहित अरु नाम ॥ १ ॥
दाग अंजनी कहत हौं, दूसर नाम बखान ।
कोऊ कोऊ कहतिहैं, लहसुन नाम सुआनि ॥ २ ॥
दाग होइ जो अश्वके, धूम्रवर्णको आनि ।
की कस्तूरी रंगको, की असमानी जानि ॥ ३ ॥
लाल अंजनी कहतहौं, ताकर नाम बखानि ।
तैसो दाग जु श्वेत है, श्वेत अंजनी जानि ॥ ४ ॥
जरद दाग जो अश्वके, अंजनि पद्म कहाइ ।
वाम अंग जो अश्वके, होत अंजनी आइ ॥ ५ ॥
ताकर फल अस कहतिहैं, सकल सयाने लोइ ।
स्वामीघातक अश्व है, तजो ताहिको जोइ ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वेत अंजनी बगलमों, जो वाजीके होय ।
त्रिया मरै ताकी सही, जाके अस हय होय ॥ ७ ॥
यह फल जो वर्णन कियो, श्वेत अरुणको जान ।
दहिने अंग जु अंजनी, ताको दोष न मान ॥ ८ ॥

अथ पद्मअंजनी दोष ।

दोहा—दहिने बाँये अंगमो, पद्मअंजनी होइ ।
सम्वत्सरके भीतरै, दोषहि लीजो जोइ ॥ १ ॥
अश्व अहै घर जाहिके, ताहि परै अस दुःख ।
भाईको बेटा मरै, लहै न सपने सुःख ॥ २ ॥
सोरठा—जेई अंजनि माहि, बिंदु होइ रँग देहको ।
बालअंजनी आहि, स्वामीको नाशै सही ॥
दोहा—केहरि फुलवारी सहित, अरु सबजा गुलदार ।
इनमें अंजनि दोष नाहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
औरो दोषी रंग जे, ते अब कहौं बखानि ।
चापदस्त हय येक पुनि, दूजो अरजल मानि ॥ २ ॥
सब देहीको एक रँग, कोई रँग किन होय ।
तामें ये लक्षण परैं, कहत अहौं अब सोय ॥ ३ ॥
और सफेदी अंग नहिं, आगिल पांउ सफेद ।
चापदस्त सो जानिये, उपजत लीन्हें खेद ॥ ४ ॥
यही प्रकारहि अंग सब, पाछिल पांव सफेद ।
अरजल ताको नाम है, बहुत करै सो खेद ॥ ५ ॥
सोरठा—जाके हय यह होय, तासु त्रिया रोगिनि रहै ।
भूलि न लीजो कोइ, जाको ऐसो रंग है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—प्रथम सितार पेसानी जानौ । दूजो अकबर नाम बखानौ ॥
इनयुत वाजी दोषी होइ । शालहोत्र मुनिको मत सोइ ॥

अथ सितारे पेसानी वर्णनम् ।

चौपाई—भाल जासुके टीका होई । नखत बरोबरि जानौ सोई ॥
और देह सब एकै रंगा । नाहिं सफेदीकर परसंगा ॥
जाके तनु ए लक्षण अहैं । सितार पेसानी ताको कहैं ॥
सो वहु मध्यम दोष बखानौ । जहँ वह हय तहँ चिंता मानौ ॥

अथ अकरब दोष वर्णनं ।

दोहा—भाल जासु टीका अहै, और कहूँ नहिं सेत ॥
ता मधि देही रंग है, अकरब सो कहिदेत ॥ १ ॥
जाके वाजी यहु रहै, ताके सुख नाहिं होत ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, दिन दिन दुख उद्योत ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

दोहा—ऐब दोइ औरौ अहैं, ते अब कहौं बखान ।
कसका जानौ टेढ यक, अधर बिंदु यक जान ॥ १ ॥
कसका जाके भालको, टेढो होइ बनाय ।
और सफेदी अंग नाहिं, सोऊ ऐब कहाय ॥ २ ॥

अथ अधरबिंदुदोष ।

दोहा—श्वेत अधर जा वाजिके, तामें भँवर समान ।
श्यामबिंदु जाके परै, सोऊ अधम बखान ॥
चौ०—की वाजी आपुहि यहु मरै । की कछु और हानिको करै ॥
दोहा—कहूँ सफेदी अंग नाहिं, ऐसो वाजी होइ ॥
श्वेत होइ जो नाकपर, ऐबी वाजी सोइ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ दागरंग गोमै ।

दोहा—होय रंग जो बाघको, बरगोले महँ होय ॥
गोमै काहिये नाम तिहि, बडो दोष है सोय ॥ १ ॥
गोमय होय जु पेट तर, कटि आनन पर सोइ ।
वाम दाहिने होइ जो, कहौ नीक नाहिं कोइ ॥

स्तुति मंगलदाग शुभ ।

दोहा—जिहि घोडेकी पूँछपर, खायलकेर नगीच ॥
हृदय चरण अरु शीशपर, दाढीकेरे बीच ॥ १ ॥
होइ सफेदी ठौर इन, तौ है वाहर रंग ।
अस्तुतिमंगल नाम तिहि, लक्षण भले तुरंग ॥ २ ॥

अथ पुष्परंग अशुभ ।

दोहा—लोप करै निज बरन जो, प्रगट करै वियरंग ।
पुष्पाहय ताको कहैं, भूलि न करौ प्रसंग ॥

अथ अशुभरंग दाग ।

छप्पय—अतिलघु टीका श्वेत सितारा कहि दुखदायक ।
शिरको टीका कढो आसु स्वामी सुखनाशक ॥
शिरशित टीका माहि परै तनु रंग अकरबगाति ।
श्याम अरुण के टीक भालकरि दोष फहस आति ॥
जहँ टीका ऊपर नोक बाढि दलभंजन अति दोषकर ।
काकटोंट पद श्वेत विषम अति प्रबल दोषबर ॥
कै एक सफेदी भाल लखि मन न इन्हैं लेबो करै ।
सप्तदोष विचारिकै तब भूप अश्व चढि रण करै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ पीठिदाग अशुभ ।

दोहा—अश्वाकरी पीठिपर, दीरघ होय सफेद ।
लीन होइ तौ फेरिये, दूरिहि दूरि खरेद ॥

अथ तिलकतोरदोष ।

दोहा—जिहि घोडेके बदनपर, बढी सफेदी होइ ॥
बचि बीच खंडित परै, तिलक तोर हय सोइ ॥ १ ॥
याको कबहुँ न लीजिये, महादोष गंभीर ।
राज्य विनाशै सुख हरै, रोगी रहै शरीर ॥ २ ॥

अथ शहर भूकरंग दागदोष ।

दोहा—होइ सफेदी नासिका, शहर भूक तेहि नाम ।
पेट भरै नाहिं ताहिको, जो याहि खरचै दाम ॥

अथ कंचुकी दागरंग अशुभ ।

दोहा—जानु पाछिले बाहु युग, काँधो अंड जु सेत ।
नाम कंचुकी अशुभ अति, नाशै कुल धन खेत ॥

अथ चौरंगीरंग दागदोष ।

दोहा—नासाकेरे भीतरै, फुटकी श्वेत देखाय ।
सो चौरंगी दोष वर, करै अलक्षण आय ॥

अथ श्रुतिहतरंग दागदोष ।

दोहा—श्रवण श्वेत यक कछु निरखि, श्रुतिहत दोष कहाइ ।
रोग करै सब सुख हरै, नकुल मतो सो आइ ॥

अथ श्यामतालू ।

दोहा—टीका तालू मधि लखै, श्यामवर्ण रँग होय ।
महानिषिद्ध बखानिये, शालहोत्र कह सोय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ पंचस्थलशुभ ।

दोहा—गर्दन पोता पीठि दुम, चरण श्वेत जो होइ ।
पंचस्थल सित तुरंगके, महासुलक्षण सोइ ॥ १ ॥
की थल चारौ तीनकी, की दुइ जानौं मीत ।
गुलदस्ती शुभ नाम हैं, शालहोत्र परतीत ॥ २ ॥

अथ मिश्रित रंग ।

स०—श्वेततुरंगम है हिमरूप, सो भूपतिको सुखदायक नीको ।
रक्ततुरंगसो औ पुनिपीत, लसै सबभाँति गौरंगुल फीको ॥
नील तुरंगम पन्नगके हत, श्यामनिधानसो नीलम नीको ।
भाग्यबडे घर आवत जासुके, सुंदर रूप सो भावत जीको ॥

चौ०—सबते अधिक श्वेत जियजानो । राजतिलककेयोग्यबखानो
सो न होइ तो क्रमके लीजे । श्यामरंगको दूरि करीजे ॥

दोहा—रंग न जाको समुझिये, बाजी होय विशाल ।
और अश्वको भय करै, ताहि तजो ततकाल ॥ १ ॥
बाल अवस्था नील है, दिन दिन बढै जु श्याम ।
सो बाजी निज परिहरौ, भूलि न राखौ धाम ॥ २ ॥
अधिकरंग जाकी सुरति, घटै सो नितप्रति मान ।
होय वृद्ध बहु लघु बरन, ताहि न लावै जान ॥ ३ ॥
नुकरा हंस स्वरूप है, राजत सित यक रंग ।
सुरखा सुरंग कुमैत कहि, मुसकी सफल प्रसंग ॥ ४ ॥
ए पांचौरँग अतिहिं दृढ, महा बलिष्ट बखानु ।
पंचदेवकी सकल माहि, शालहोत्र मत जानु ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ रंग प्रकृति शरद गरम ।

दोहा—शीतल गरम स्वभाव कहि, और दुंद जो होय ।
शालहोत्र या विधि कहै, जो पहिचानै कोय ॥

चौ०—मुसकी ओ कुम्मयत समुंदा । गरम प्रकीर्ति होय सुनुचंदा ॥
सुरखा सुरंग सु हरयल जानौ । अश्वाद्विज कहिये लखवानौ ॥
नीला ओ चीनी सबुजारा । शरद प्रकीर्ति होय बेतारा ॥
बाकी रंग अश्वके जितने । अरुणे पीत उदै हैं तितने ॥
है प्रधान सबके अँगपित्ता । वातपित्त मिलि होय विचित्ता ॥
पहिचाने अँग अँगकी रीती । करि औषध आवे परतीती ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत वाजीदागरंग व प्रकृति शुभाशुभवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ भौंरी शुभाशुभ वर्णनम् ।

दोहा—भौंरी रूप सु तीनि विधि, एक अवर्त्तक जानि ।
खनखजूर सम दूसरी, लीकरूप सो मानि ॥ १ ॥
तीसरि है सम सीपके, येते रूपहि होइ ।
गात स्थानके भेदसों, भिन्न २ फल जोइ ॥ २ ॥
ते वे भौंरी पंचदश, सब बाजिनके होइ ।
ताते घटि बढि जो परै, तासु फलाफल जोइ ॥ ३ ॥
ऊपर ओंठहि एक है, चोटी तर है एक ।
दोइ होंइ छातीविषे, दूहूँ दिशि यक एक ॥ ४ ॥
दुइ अरमनिकी होति है, तेतो बाग कहाहि ।
दहिने बायें दुइ अहैं, वाजिन कोखिन माहि ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोखिनकेरी भ्रमरि जो, पुठनजोरके पास ।
मिली होइ तो अशुभ नहिं, टरी ऐब है खास ॥ ६ ॥
दुइ तोंदीके पास हैं, दुहुँदिशि पेटी माहिं ।
कवि श्रीधर वर्णन करैं, शालहोत्र मत चाहि ॥ ७ ॥
दुइ भौंरी तर दाढके, भौंरी एक लिलार ।
दुइ मेजाके ऊपरे, पछिले पगन सुढार ॥ ८ ॥
ये जो भौंरी पंचदश, ताते घटि जो होइ ।
तौ शुभदायक होइ नाहिं, शालहोत्र मत जोइ ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा—भौंरी बारह वाजिक, सदा सुभगकारि जानि ।
सोऊ अब वर्णन करौं, क्रमते ताहि बखानि ॥

चौ० भौंरी शीश कनपटी दोई । मस्तक एक चोटितर होई ॥
एक भृंग भाल पर जानौ । एक नासिका आगे मानौ ॥
पेसबंदतर युगल लखावै । कुच्छा भौंरी दुइ देखरावै ॥
एक होइ नाभी अस्थाना । जंघमूल युग करौं बखाना ॥
ए सब उत्तम थान बखानौ । सून होय ते मध्यम जानौ ॥

अथ अशुभ भौंरी वर्णनम् ।

दोहा—प्रथमै भौंरी शीशमें, अशुभ कही जे आहिं ।
तिनको वर्णन करतहौं, दोष तासु दरशाहिं ॥

अथ मेढाशृंगी भौंरी अशुभ ।

दोहा—दोऊ शृंगके थानमें, जो भौंरी दुइ होइ ।
मेढाशृंगी नाम तेहि, दोष कहै सबकोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ दूसरी सिंगिनि ।

दोहा—औरो सिंगिनि एक है, कहत अहौं अब सोइ ।
सहसपाद समलीक है, बीच भालमें होइ ॥
सोरठा—येकै लीक जु होय, ताहूको सिंगिनि कहैं ।
ऊरध कह हय सोइ, शालहोत्र मत जानियो ॥
दोहा—औरो सिंगिनि रूप यक, सोऊ कहौं बखानि ।
तासु रूप वर्णन करौं, महादोषकी खानि ॥
भौंरी हैं बिच भालके, ताके ऊपर सोइ ।
काननके तर जानियो, या मधि गुच्छा होइ ॥ २ ॥
बार बडे सब भालते, ता गुच्छाके आहि ।
तामें घूमे होइ कछु, शृंगरूप दरशाहि ॥ ३ ॥

सिंगिनिको फल ।

दोहा—धनको नाश करै सही, कोई सिंगिनि होइ ।
नाश करै निज स्वामिको, समर पराजय होइ ॥

अथ दोकरा भौंरी ।

दोहा—भौंरी चोटीतर अहै, ताके पाँजर होइ ।
चोटीतरकी भौंरि युत, दुइ भौंरी हैं सोइ ॥ १ ॥
कहत बिलाइतमें अहैं, ताको खोसा जानि ।
मध्यम दोषी सो अहै, भँवरि दोकरा मानि ॥ २ ॥

अथ गंजनी भौंरी ।

दोहा—भौंरी जो बिच भालके, ताके ऊपर होइ ।
कीतौ ताके तर लसै, भौंरी तीसरि सोइ ॥ १ ॥
भौंरी जो बिच भालके, तायुत जानौ होइ ।
दोइ दोइकी तीनि पुनि, ताहि गंजनी सोइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताको नाम प्रसिद्ध यह, कहत भडेहरि लोग ।
शालहोत्र मुनिके मते, अशुभ तासु संयोग ॥
सो वह होत विशेषसों, तर ऊपर यह जानि ।
पाँजर पाँजर होति नहिं, यहौ भेद पहिचानि ॥

तिसका फल ।

दोहा—नाशै स्वामीकुलसहित, जाहि भडेहरि होइ ।
ताहि तुरी असवार जो, रणमें हारै सोइ ॥ १ ॥
नाम भडेहरि भ्रमरि जे, तिनको कहौं बखानि ।
भाँति दुई अरु तीनिकी, होती है यह जानि ॥ २ ॥
थोरी पाँजर तरफ दबि, सोउ भडेहरि आइ ।
तर ऊपर पय होय जो, दोष विशेष कहाइ ॥ ३ ॥
चोटी केरी भ्रमरि जो, तातर भौंरी और ।
नाम भडेहरि तेहुको, कहत मुनिन शिरमोर ॥ ४ ॥

अथ भौंहावर्त्ती भौंरी ।

सोरठा—भौंरी जाके होइ, एक भौंह वा दुहुँनमें ॥
भौंहावर्त्ती सोइ, बुद्धि स्वामिकी हराति है ॥

अथ आँसूढार भौंरी ।

चौपाई—आँखिनतर भौंरी जो होई । आँसूढार नाम है सोई ॥
एकै आँखि तरे जो अहई । आँसूढार तेहुको कहई ।
नाशै वहि घोडा है जाको । आँसूढार नाम है ताको ॥

अथ कर्णमूल भौंरी ।

दोहा—वामकर्णके तर भँवरि, होइ कनपटी माह ।
कर्णमूल ताको कहै, दोषनको नरनाह ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कपोलावर्ती भौंरी ।

चौपाई—बामकपोल भँवारि जो होई । आपु मरै स्वामीको खोई ॥
ताहूको जनि संग्रह करो । ऐसो हय देखत परिहरो ।

अथ श्रुत्याहत भौंरी ।

दोहा—भौंरी दोनों कान तर, महादोष सो जानि ॥
शालहोत्रको यह मतो, तजो याहि पहिचानि ।

अथ नासापुटवर्ती भौंरी ।

दोहा—बायें नासापुट विषे, द्वै आवर्तक होय ॥
स्वामीको नाशित करै, सहित पुत्रके सोय ।
सोरठा—एकै भँवरि जु होय, ताहूको ऐबी कहै ॥
तासम जानो सोइ, निधन करै निज स्वामिको ।

अथ अधरावर्ती भौंरी ।

दोहा—जा वाजीके अधरमों, भौंरी होइ सुजान ॥
एक होय की युगल पुनि, अधरावर्ति बखान ।

अथ प्रेतावर्त्ती भौंरी ।

दोहा—द्वो नासापुट बीचमें, जो आवर्त्तक होइ ॥
प्रेतावर्ती जानियो, कहत सयाने लोइ ।

प्रेतावर्ती अधरावर्ती दोनोंका फल ।

दोहा—कुल धन युत निज स्वामिको, करै नाश यह जान ।
प्रेतावर्ती दोष सम, अधरावर्ती मान ॥

अथ ग्रीवऐब भौंरी ।

दोहा—अब ग्रीवहिके कहत हौं, अशुभ चिह्न जे आहि ।
नाम सहित पहिचानि पुनि, फल ताको दरशाहि ॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाईकेती बल विषे, जो द्वै भौंरी होइ ।
मोक्षवर्ति गलवर्तिते, अशुभ जानिये सोइ ॥ २ ॥
स्वामिहि नाशैं द्वै भँवारि, शालहोत्र कहि सोइ ।
स्वामी धन नाशित करै, इनमें एकौ होइ ॥

अथ साँपिनि भौंरी दूसरानाम कीर युद्धमें शुभ और सब काममें अशुभ ।

दोहा—प्रथम बामको कहत हौं, तासु हेतु है याहि ।
तासु ज्ञानते लखिपरै, व्याली रूप जु आहि ।
अरमनि भौंरी जो कही, एक तरफसो होइ ।
तरफ दूसरी होइ नाहिं, जानो व्याली सोइ ॥ २ ॥
एक तरफ अरमनि अहै, तरफ दूसरी सोइ ।
दुइ भौंरी की तीनि हैं, सोऊ साँपिनि होइ ॥ ३ ॥
दुहूँतरफ यक एक हैं, आगे पीछे सोइ ।
सोऊ व्याली जानिये, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
दुहूँ तरफ बिच आलतर, भँवारि बरोबारि होइ ।
ताहूको व्याली कहैं, मध्यमरूपहि जोइ ॥ ५ ॥
एक तरफ आवर्त्त है, तरफ दूसरी लीक ।
सोऊ व्याली जानिये, जानौ तासु नजीक ॥ ६ ॥
डेढबाग अरु बाग बिन, जेती भौंरी होइ ।
तरे आलके जानिये, साँपिनि कहिये सोइ ॥ ७ ॥

फल ।

सोरठा—साँपिनि जाके होय, स्वामीको नाशित करै ।
रोगी करि करि सोइ, ताते जनि संग्रह करो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ बाग भौंरी ।

दोहा—भौंरी अरमानिकी कही, आलअंतलौं होइ ।
होइ बरोबरि दुहूँदिशि, बाग कहावै सोइ ॥ १ ॥
आल कानके बीचमें, अरमनि भौंरी होइ ।
कमजाफातिनि पुच्छ है, डेढ बाग है सोइ ॥ २ ॥

अथ केशावर्ती भौंरी ।

दोहा—चोटी पाछे आल बिच, भौंरी जाके होइ ।
केशावर्ती जानियो, हनै स्वामिको सोइ ॥

अथ शोकावर्ती भौंरी ।

दोहा—आलअंतलौं जे भँवरि, शोकावर्ती सोय ।
शालहोत्रमुनिके मते, नाम सदृश फल होय ॥

अथ गिद्धिनि भौंरी ।

दोहा—दाहिने बायें ककुदके, भौंरी निकटै होइ ।
मृत्यु देइ निज स्वामिको, गिद्धिनि जानो सोइ ॥

अथ छत्रभंग भौंरी ।

सोरठा—तीनि भँवरि जो होइ, जा वाजीकी पीठिपर ।
छत्रभंग है सोइ, स्वामीको नाशित करै ॥

अथ धूमकेतु भौंरी ।

सोरठा—जाके भौंरी होइ, जीन पिछारी पीठिपर ।
धूमकेतु है सोय, अतिदोषी सो वाजि है ॥
दोहा—धूमकेतुयुत वाजिको, घरमें आनै कोइ ।
पुत्र त्रिया हय स्वामिकी, नाश सहीते होइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ त्रिकालवर्त्त भौंरी ।

दोहा—भौंरी जाके कटि विषे, एक होइ की दोइ ।
नाश करै संग्राममें, त्रिकालवर्त्ती सोइ ॥

अथ मूलघातिनी भौंरी ।

दोहा—पूँछमूलमें जो भँवरि, तीनहोंइकी दोइ ।
अथवा एकै होय जो, मूलघातिनी सोइ ॥ १ ॥
ताहि चढै असवार जो, ताकी असि गति होय ।
पुत्र त्रियायुत जाइहै, यमके घरको सोइ ॥ २ ॥

अथ स्वामिघातिनी भौंरी ।

दोहा—गुच्छ पुच्छमें भँवारि जिहि, ऐसो तुरी जु होइ ।
ताको जनि संग्रह करो, यमदूते है सोइ ॥ १ ॥
ऐसो वाजी जाहिके, घरमें आयो होइ ।
प्राणहरणको दूत है, यमको जानौ सोइ ॥ २ ॥

अथ दुष्पावर्ती ।

दोहा—भँवरि होइ या बार जो, मूलद्वार जिहि वाजि ।
दुष्पावर्ती तिहि कहैं, भरो दुःखकी राजि ॥

अथ बिंदुक भौंरी ।

दोहा—गले हृदयके जोरपर, जो आवर्तक होइ ।
बिंदुक ताको कहत हैं, पुत्र नाशकर सोइ ॥

अथ भुजउट भौंरी ।

दोहा—जाके दोऊ भुजनपर, या एकैपर होइ ।
भौंरीकी सी लीक हैं, भुजआउटहै सोइ ॥ १ ॥
षट महिनाके भीतरे, दोष जनावै सोइ ।
स्वामीको भाई मरै, नाश पुत्रको होइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ हृदयावली भौंरी ।

दोहा—हृदय माह जो द्वै भँवरि, तिनके बीचहि होइ ।
आवर्तककी लीकहै, हृदावली है सोइ ॥

चौ०—हृदयमाह भौंरी जो होई । सो डारै स्वामीको खोई ॥
ऐसो वाजी भूलि न लीजै । जानि दोष तेहि त्यागन कीजै ॥

अथ तंगतोर भौंरी ।

दोहा—जा वाजीके उरविषे, भौंरी तँगतर होइ ।
वंशहरै निज स्वामिको, तंगतोर है सोइ ॥

अथ गोम भौंरी ।

दोहा—षट अंगुल लगु तंगके, होइ भृंगको वास ।
गोमनाम कहि ताहिको, करती वित्त बिनास ॥

अथ शैल भौंरी ।

दोहा—गोमपिछारी भँवरि जो, शैल नामसो आहि ।
ता वाजीके स्वामिको, विपति सही पारि जाहि ॥

अथ कच्छावर्ती भौंरी ।

दोहा—कही भँवरि जो बगलकी, कच्छावर्ती होइ ।
पंच बगल करि प्रगट हैं, दुखदायक है सोइ ॥

अथ पार्श्वावर्ती भौंरी ।

दोहा—भँवरि होइ पसुरीन पर, पार्श्वावर्ति बखानि ।
धन मेटै निज स्वामिको, अहै अमंगलखानि ॥

अथ क्रोडावर्ती भौंरी ।

दोहा—भौंरी जो दुइ होति हैं, वाजीकोखिनमाहि ।
अधिक होइ तिन दुहुँनते, क्रोडावर्त्ती आहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—भौंरी कोखिनमाहिं, एक तरफमें होइ जो ।
एक तरफमें नाहिं, सोऊ क्रोडावर्ति है ॥

दोहा—उदर तरे जो वाजिके, तोंदी पाँजर जोइ ।
भौंरी जोहैं दुहूँदिशि, दक्षिण वामहि सोइ ॥ १ ॥
जैसी भौंरी कोखिकी, दीन्हों रूप बताइ ।
तैसीये येडाँलसे, क्रोडावर्ती आइ ॥
जा वाजीके पेटमें, क्रोडावर्ती होय ।
रावणकीसी संपदा, क्षणमें डारैं खोय ॥

अथ आस्फिकंदावर्ती भौंरी ।

दोहा—पाछिले पुट्ठन माहिं जो, जो आवर्त्तक होइ ।
नाम आस्फिकंदा कहै, स्वामी वधिहै सोइ ॥

अथ लोटावर्ती भौंरी ।

दोहा—तिन भौंरिनके ऊपरे, भँवरि और जो होय ।
लोटावर्ती जानियो, ऋणै बढावै सोय ॥

अथ कुक्षावर्ती भौंरी ।

दोहा—भीतर दोऊ रानके, भँवरि होय जो आनि ।
कुक्षावर्ती जानियो, अहै अमंगल खानि ॥

अथ वज्री भौंरी ।

दोहा—जा वाजीके लिंगमें, भँवरि होयकी बार ।
वज्री ताको कहत हैं, भरो दुःख भंडार ॥

अथ द्विमुखावर्त्ती भौंरी ।

दोहा—बेजापर हैं जाहिके, भौंरी कीतो लोम ।
द्विमुखावर्ती जानिये, मेटै स्वामी कोम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ छुरिकावर्ती भौंरी ।

दोहा—जाके अगिले जानुमें, भँवरि ग्रन्थि पर होय ।
हनै स्वामिको पुत्र धन, छुरिकावर्ती सोइ ॥

अथ पीडावर्ती भौंरी ।

चौपाई—अगिले पगन भँवरि जो होई । पगमें परै कहूँ पर सोई ॥
पीडावर्ति भँवरि सो जानौ । खुट उखार जाहिर जग मानौ ॥
सो वह होत मुजम्मा ऊपर । एकै पगपर की पग दूसर ॥
ताहूमें यह भेद विचारौ । जंघमाहि दुख देइ अपारौ ॥
दोहा—भौंरी जाके जानुमें, ऐसो अश्व जु होय ।
स्वामीको निधनी करै, वंशहि डारै खोय ॥

अथ जान्वावर्ती भौंरी ।

दोहा—जाके पछिले जानुमें, भँवरि होय जो आनि ।
डंष उजारि प्रसिद्ध है, जान्वावर्तीजानि ॥ १ ॥
जान्वावर्तीभँवरियुत, जाके हय यहु होय ।
सदा रहै परदेशमें, चिंता व्याकुल सोय ॥ २ ॥
जा घोडेकी गुदामें, भँवरि होयकी वार ।
दुखदायक सो वाजि है, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

अथ मस्तककी भौंरी ।

दोहा—भौंरी जो बिचभालके, जानौ अंग प्रभाव ।
ताको कछु दोषौ नहीं, गुणो नहीं कविराव ॥

अथ चंद्रकोष भौंरी ।

दोहा—तीनि भँवरि हय भालमें, ऊरध मुखहि बखानि ।
तासम लक्षण और नहिं, चंद्रकोश सो जानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा– दोइ बरोबरि होइँ, तातर भौंरी भालकी ।
चंद्रकोश है सोय, ताहि निश्रेनी कहतिहै ॥ १ ॥
जो द्वै भौंरीहोंइ, तासु पुच्छ तरको लसै ।
पै अवगुंठित होइ, चंद्रकोश सोऊ अहै ॥ २ ॥

दोहा–चंद्रकोश है जाहिके, अस हय पावै कोइ ॥
पुत्र पौत्र दारा सहित, चिरंजीव जग सोइ ॥ १ ॥
देय विजय संग्राममें, चंद्रकोश है जाहि ।
देश कोष महिपालके, सदा बढावति आहि ॥ २ ॥

त्रिकूट भौंरी ।

दोहा–जाके भँवारि ललाटमें, तीनि अधोमुख देषि ।
ताहि त्रिकूट बखानिये, संपति करै बिशेषि ॥ १ ॥
भँवारि होय जो ऊर्द्धमुख, चंद्रकोश सो जानि ।
ताहि त्रिकूट बखानिये, होइ अधोमुख आनि ॥ २ ॥
भौंरी होइ त्रिकूट जिहि, सो हय जाके होय ।
धन दारा अरु पुत्रसुख, देइ स्वामिको सोय ॥ ३ ॥

अथ चंद्रार्क भौंरी ।

दोहा–बीचभालमें भँवारि जो, दूसरि ताके पास ।
होइ बरोबरि ताहिके, सो वह करिके खास ॥ १ ॥
सो तर ऊपर होय नहिं, नहीं लीकसम आहि ।
तासु नाम चंद्रार्क है, लक्षण नीक कहाहि ॥ २ ॥
जाके होय लिलाटमें, भँवारि युगल रविचंद ।
देइ स्वामिको भ्रातसुख, दिन दिन करै अनंद ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ शिव भौंरी ।

दोहा–भौंरी होइ कपोलमें, दाक्षिण अंक सुजान ।
ता भौंरीको शिव कहत, नितप्रति कर कल्यान ॥

चौ०–दुओ कपोल भवँरि जो होई । जानो शुभ लक्षण है सोई ॥
बाजी रहै सदा अस जाके । दिन दिन बाढै संपति वाके ॥

अथ इंद्राक्ष भौंरी ।

दोहा–कान पिछारी मूलमें, दाक्षिण अंक बखानि ।
भँवरि होय जा वाजिके, इंद्रअक्ष सो जानि ॥ १ ॥
इंद्राक्षी जो बाजि है, होय सुजाके आनि ।
वासव सम सुख देत है, कहँलौं कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ यशोदा भौंरी ।

दोहा–वामकर्णके मूलमें, भँवरि पिछारी होइ ।
नाम यशोदा जानियो, सुखकारी हय सोइ ॥

अथ चक्रवर्ती भौंरी ।

दोहा–ये दोनौं लक्षण परैं, तामधि लक्षण येइ ॥
भौंरी कानन कोशमें, चक्रवर्ति कहि देइ ॥ १ ॥
राजनके वह योग है, सकल सिद्धिकहँ लेइ ।
तापर जो कोई चढै, विजय युद्धमहँ लेइ ॥ २ ॥

अथ वृषभाण्ड भौंरी ।

दोहा–कर्ण मूलको छाँडिकै, नेत्रप्रांतलौं जानि ।
भौंरी दाहिने अंगमें, सो वृषभांड बखानि ॥ १ ॥
पुत्र पौत्र निजनाथको, देति अहै वृषभांड ।
राज्य अभूषण धन सहित, संपूरणफल भांड ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसादतारन भौंरी ।

सोरठा—दहिने बायें तात, चोटीतरके भँवरिके ।
चारि पांच षट सात, सो प्रसादतारन अहै ॥ १ ॥
जाके अस हय होइ, उत्सव ताके नित रहै ।
देत अहै धन सोय, संपूरण आभिलाष मन ॥ २ ॥

अथ विजय भौंरी ।

चौ०—दहिने नासा भौंरी होई । विजय नाम लक्षण शुभ सोई ॥
जाके घर वाजी अस आवै । विजय सहित कीरतिको पावै ॥

अथ सग्विनी भौंरी ।

दोहा—नासापुटके ऊपरै, दहिने अंगहि जानि ।
धनवर्द्धक है स्वामिको, ताहि सग्विनी मानि ॥

अथ ग्रीवकी भौंरी शुभ ।

दोहा—भौंरी चारि गरेतरे, शुभ हैं सुखको धाम ।
तिनके कहि अस्थान अब, अरु लक्षणयुत नाम ॥ १ ॥
चिंतामणि अरु गुणमणि, होत कंठमणि नाम ।
चौथी द्योमणि जानिये, करै सुःख अभिराम ॥ २ ॥

अथ चिंतामणि भौंरी ।

दोहा—जा वाजीके कंठमें, भँवरि तीनि सुखदानि ।
ताको चिंतामणि कहौं, जयकारी हय जानि ॥

अथ कण्ठमणि भौंरी ।

दोहा—कंठमाहिं भौंरी सुभग, जाके एकै होइ ।
ताहि कंठमणि कहत हैं, जयकारी हय सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ गुणमणि भौंरी ।

दोहा—भौंरी ऊपर कंठके, दहिने अंगहि होय ।
एक दोय की तीनि पुनि, गुणमणि जानो सोय ॥

देवमणि भौंरी ।

दोहा—बीच गलेके होति है, कंठहिके कछु दूरि ।
द्यौमणि जानौ ताहिको, देत अहै सुख भूरि ॥

चारौ भौंरिनको फल ।

दोहा—पुत्र पौत्र धन राज्य सुख, विजय कीर्ति अरु जानि ।
इन चारोमें एक जो, मनइच्छित फलदानि ॥

अथ गरुडमणि भौंरी ।

दोहा—दोउ भुजनके बीचमें, आवर्त्तक जो होइ ।
नाम गरुडमणि ताहिको, सकल दुःख हरिलेइ ॥

अथ क्षेमकरी भौंरी ।

दोहा—द्वै भौंरी बिच कंठके, ते तर ऊपर होय ।
नितप्रति जानौ सुखद बहु, क्षेमकरी है सोय ॥

श्रीवत्साक भौंरी ।

दोहा—भौंरी छाती माहिंकी, प्रथमहि वरणी जोइ ।
बामअंग सो होइ नहिं, दहिने अंगहि होइ ॥

सोरठा—तायुत वाजी सोइ, श्रीवत्साकसुचिह्न है ।
जा घर अस हय होय, देहधरे लक्ष्मी बसैं ॥

दोहा—तिन दोनोंके मध्यमें, एक भँवारि की दोइ ।
सोऊ वह वत्साक है, शालहोत्र मत सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ शुभाकर भौंरी ।

दोहा—भौंरी गामचिके तरे, सुमके ऊपर होइ ।
ताहि शुभाकर जानिये, शुभकी आकर सोइ ॥ १ ॥
अगिले बायें पाँइपर, जो यह भौंरी होइ ।
ऐसो वाजी जहँ रहै, नितप्रति उत्सव होइ ॥ २ ॥
ताहि चढे असवार जो, लक्ष्मी ताके हाथ ।
अधिप होय सो भूमिको, शत्रु नवावैं माथ ॥ ३ ॥

अथ विजयकर्ण भौंरी ।

दोहा—जाके पछिले पाँवमें, भँवरि गामची माहिं ।
विजय करण है नाम तिहि, शुभगुण जानौ ताहि ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, रहै जासुके साथ ।
युद्ध विजय यह जानियो, विजय तासुके हाथ ॥ २ ॥

अथ चक्रीनामहय ।

दोहा—होय तुहिन सम श्वेत हय, श्वेत नेत्र अरु होय ।
चक्रपरै तालूविषे, चक्री वाजी सोय ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, सकल मिटावै दोष ।
कीरति बाढै तासुकी, दिन दिन बाढै कोश ॥ २ ॥

अथ काम बिगारी भौंरी ।

दोहा—अश्वाकेरे जीभतर, होय जु अलि यहि ठोर ।
कामबिगारी नाम तिहि, काज बिगारे और ॥

अथ बनियाँ भौंरी ।

दोहा—भौंरी होय जो पेटतट, अंगुल युगल प्रमान ।
कचदीरघ वा ठौरमें, बनियां ताहि बखान ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसो तुरंग जो लीजिये, महादोष गंभीर ।
राजपाट सुख संपदा, नाशै और शरीर ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीभौंरीशुभाशुभवर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ विशेषदोष ।

दोहा—हिरदावलि अरजल सहित, अरु मुख कारो जासु ।
इन्हैं विहाय कुंतिसुत, कारक विविध विनासु ॥

चौ० हिरदावलि सिंहिनि बनियारी। अरजल अहिमुख अकरबभारी
यते दोष प्रथिराज विहाई । और दोष कम करत बुराई ॥
सीताराशिर अरु तँगतोडा । विक्रम त्याग कीन दुइ घोडा ॥
थनी गोम अरु नैन जु ताषी । सबल साहि तीने तजि राषी ॥

दोहा—घर घोडीकी पैद जो, दान मिलै दैजोर ।
ताको दोष न मानिये, मंगल मूरति घोर ॥

अथ घोडीके दोष । देखो घोडी नंबर ८२.

दोहा—हिरदावलि सिंहिन सहित, अरजल अकरब नेस ।
खरसुंमी अरु गोदुमी, यह अश्वानि कृतखेस ॥

अथ आलदोष ।

सोरठा—दुहूं तरफ जो आल, खडी रहै कैधौं चिकुर ।
युगल दोष करि ख्याल, ऐसो तुरंग न लीजिये ॥

अथ चिंतामणिवारशुभ ।

दोहा—जिहि घोडेके बदनपर, कच दीरघ अति होय ।
चिंतामणि तिहि तुरंगको, नाम कहै सब कोय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिहिवाजी गुण सुभग अति, जस पूरणिमाचंद ।
सुखी करै निज प्रभुनको, दिन दिन बढै अनंद ॥ २ ॥

अथ बत्तिस लक्षण अंगकी पहिचान शुभ ।

छप्पयछंद—दीरघ जानो चारि चारि उन्नत अनूप धर ।
चारि अरुण हैं अंग चारि सूक्षम अनंदधर ॥
चारि होंय लघु जासु चारि आयुत प्रबीन कहि ।
चारि होंय अध ठौर चारि बिन मास जासु लहि ॥
यहि भाँति वरणि वाजी कहे बत्तिस लक्षण जासु तन ।
गनि निदान ग्रंथन मते सो कर्महि साहित विचारि मन ॥

पुनःनाम अंग ।

छंदतोमर—मुख केश दीरघ जानु । भुज ग्रीव सो परमानु ।
पग नासिका पुट थान । अरु भाल उन्नतकान ॥
गनि ओंठ अरुणो तालु । पुनि लिंग जीभ रसालु ।
लहि कोषि मोजा तुच्छ । गहिपुंज सूक्षम पुच्छ ॥
लघु कान नाक सुवेह । कटिवंशटीसो येह ।
युगपुट्ठआयुतभाल । मणिकंध उर करु ख्याल ॥
उदर चिबुक अधजानि । कटिजानि सो परमानि ।
बिन मास मुख ओ तालु । पसुरी कलाइको हालु ॥

दोहा—शालहोत्र ओ नकुलमत, लक्षण वरणि बतीस ।
ऐसे वाजी सुभगवर, चाहत तिन्हैं महीस ॥

अंगस्वरूप लक्षणवर्णनम् ।

चौ०—अँगके लक्षणमैंकछुभाषौं । जोकछु शालहोत्र गुणिराषौं ॥
कलसूं ढार नयन बहुभारे । थुथुनी छोटी अधर कठोरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कटिसमूल ग्रीवा अस्थूला । छाती चौंडी उदर समूला ॥
सूधे सूक्षम मास न होई । करपद मृगसमान है सोई ॥
ग्रीवा पूंछ ऊँच सब आवै । कटि लघु चौंडी पीठि लखावै ॥
छोटे कर्ण श्याम शुभभारे । लंबोदर कोषा फुलवारे ॥
चारौ चौका आठौ बंदा ॥ जो पावे या मनको चंदा ॥
भूरि भाग्य तिहि नरको गावे । जो घोडा या विधिको पावे ॥
छप्पय—ग्रीवा दीरघ नैन भाल जाके विशाल अति ।
पीन उरस्थल भीर नटी सूगम सूधे अति ॥
अरुण अधरमणितालु अरुणरसना निधानधनि ।
स्वच्छकेशशुभ चारुचरणलघुपुच्छअधरमानि ॥
अतिगोल जंघ अरु जानु गीन सम श्वेत दशन बखानिये ।
इमि अंग शुद्ध वाजी सुभग सब भूपनके मनमानिये ॥
छंद—दृग दीरघ अश्वापीनमाहि ।अरु ठनत कंध सो ग्रीवताहि ॥
चामरके सम केश लसै । पुच्छनिसुच्छ सो वारत्रसे ॥
अति चीकन रोम कठोर कटी । उर उन्नत उर्ध सुबीच अटी ॥
थूल भुजा दृग ग्रंथि गहीं । हैं पग सोतन पीन तही ॥
सोरठा—ऐसो वाजी पाय, सुखी होत भूपति महा ॥
समर सुधारो जाय, शत्रुनको शालै सदा ।

अंगनकी नाप वर्णन ।

छंद मनहरन—अंगुल सत्ताइसलों आनन प्रमानको,
करण प्रमान रसअंगुल बखानिये ॥
अंगुल नषतके प्रमाण कटिपुच्छ तट,
लघु अति पुच्छ हाथ युगल प्रमानिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तारू चारि अंगुल विदित कंध सैंतालिस,
पीठि पीन चौबिसई अंगुल सो जानिये ॥
ग्रीवाको प्रमाण अब अंगुल चालीस लगु,
जानु चारु चौबिसई अंगुल सो ठानिये ।

दोहा—लिंग सु हस्त प्रमाण है, अंड चारि शुभजान ।
मोजा अंगुल चारिके, कहत ग्रंथ परमान ॥ १ ॥
पुच्छनते गनि ग्रीव लगु, लीजै वहै प्रमान ।
अंगुल असी विचारिये, वर्णत सुकवि निधान ॥ २ ॥
दुइ अंगुल बत्तिस समुझि, ऊँचो वाजि प्रमान ।
सो भावै भूपतिनको, ताते करौ सुमान ॥ ३ ॥
इनते अंगुल जो अधिक, जा वाजीको होय ।
शालहोत्र मुनिके मते, यह प्रमाण है सोय ॥ ४ ॥

मध्यम ।

कवित्त—काहिये सुतुंरदंत रदन बडोहै जासु, ढील श्रवण चौडी श्रीपरे सागोस भाषेहै ॥ छोटी पेस जासुकी कहत तरुत-गेंदनहै, ऊंचो बाहु जाको गावसाना नामराषेहै ॥ सीधोपांव जाहि कोमुरुंग पाँवताको कहै, लागै घूट चलत कचल कहि लेखिहै ॥ सूक्षम उदर पीठि लपट्यो न ताजा होत, सोई आहूशिकम अशन कम चाषे है ॥

अथ हीनदंत दोष । देखो घोडा नंबर ८६.

दोहा—अश्वाकेरे वदनमों, एक दंत नहिं होइ ।
हीनदंत है नाम तिहि, वाहि लेइ मति कोइ ॥

---

१ देखो घोडा नंबर ८३. २ देखो घोडा नंबर, ८४, ३ देखो घोडा नंबर ८५.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवित्त—पद छिटको है ताहि कहत कुसादेख, पतले सुमनको चपाती सुम रेषियो॥ अतिहि फिरायेते पिछानोजातलंगपद, लंगकोहनाशो अतिनीठि करि पेषियो ॥ कमखोर जानो जात छोटी लेडी हीतै, करत रदन घाव बंदागिरि लेखियो ॥ निशिमें न देखै सब खोर ताकी पहिचान कमल देखायते अँधेरेमें न देखियो ॥

सोरठा—अधिक हीन रद जासु, बिररे बिररे जो लहैं ।
करै वित्तको नासु, धनी धाम नाहिं रहि सकै ॥

दोहा—अश्वाकेरे बदनमें, उभै होइ बडदंत ।
जठरदंत दूषित बडे, स्वामीको बहु चिंत ॥ १ ॥
सात दशन जो देखिये, वाजि सदन सो मानि ।
महादोष त्यागौ तुरत, घरमें राखे हानि २ ॥
दंत अधिक जिहि अश्वके, सघन जानिये जोइ ।
गनि कराल दूषणमहा, नकुलमतेहै सोइ ॥

सोरठा—आधा रदन जु एक, इक विहीन जो देखिये ।
दूषण महा विशेष, नकुल कहैं सहदेवसों ॥

अथ अशुभलक्षण—छंद पद्धरी ।

तजुनेसदंत मुनि अधिक जानि । लखिपाँचदंत दोउ दुखदखानि॥
बिनु कारण रसना लफलफाय । अहिमुखीदोष तेहि नकुल गाय॥
मुख अर्द्ध उर्द्ध संपुट कराहि । नृप देखतही परिहरौ ताहि ॥
जो अधरै दोउ राखै बगारि । सो दोष कराली अशुभकारि ॥

---

१ देखो घोडा नंबर ८७. २ देखो घोडा नंबर ८८. ३ देखो घोडा नंबर ८९.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड छोट होत जेहि अधर दोय । अतिदोष मूसली भनत सोय ॥
नित अधर बुलावैं जो तुरंग । कहि वायभक्ष सुख करत भंग ॥
जो शशाकरन[2] सम अश्वजानि । सो शशाकरन दोषै बखानि ॥
त्रयकरन जासु लखिये तुरंग । गजकरन[3] नाम नहिं करु प्रसंग ॥
अति अशुभ ताहि भाष्यो सुजान।यक छोट बडो यक तुरै कान॥
यक कंजनैन अरु श्याम एक । अतिदोष गनो तापी विवेक ॥
जब दुवौ नैन कंजा लखाय । तेहि चक्रदोष[4] कहि नकुल गाय ॥
दृग कंज दोष इनमें विहाय । दुइरंग दुखद अतिही कहाय ॥
महिषां दृग सम लखि नैन जासु।भुज्जायुतताजि कृत विविध नासु
जो तुरै नेत्र बिल्ली समान । तेहि सेंति न लीजो बुधिनिधान ॥
कामाली लखि हय बैल ग्रीव । दृग ढरत रहत युग दोषशीव ॥
ना जावैं वाके बीच माहि । पैसदनथनी अतिदोष चाहि ॥
लघु देखि मनी कहिये सु दोष । तुचने जाके ढिग उपर चोष ॥
मुतनापर टीका श्याम होरि । कालिंजनीय[10] अस दोष टेरि ॥
काहे शालहोत्र मत जो प्रवीन । ऐसो तुरंग सो त्याग कीन ॥
लखि एक अंडकी तीनि होरि । कैसून अंड मत नकुल केरि ॥
जहँ बार जम्यो लखितुरै अंड । इनको तजिये जहँ दुअन झुंड ॥
जहँ पूँछ दंडि सेती तिहारि । कहि दोष अन्नहत दारिद कारि ॥
खर सरिस सुंम खरसुमी भाषि । सो दोषनमें बहु गनित राषि ॥

---

१ देखो घोडा नंबर ९०. २ देखो घोडा नंबर ९१. ३ देखो घोडा नंबर ९२.
४ देखो घोडा नंबर ९३. ५ देखो घोडा नंबर ९४. ६ देखो घोडा नंबर ९५.
७ देखो घोडा नंबर ९६. ८ देखो घोडा नंबर ९७. ९ देखो घोडा नंबर ९८.
१० देखो घोडा नंबर ९९.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले तुरंग निशि बार बार । निज स्वामि गवन परदेश कार ॥
दुम अंग सबै निशि चमक जासु । चिलकै चिलगी कच करत नासु
जब मादवान सम तुरय हेरि । तिनको नहिं लीजै कहत टेरि ॥
दुम परसे जो महिमें तुरंग । कहि झारू दुम साउदोष अंग ॥
बहु शीश हलावै तुरँग जौन । सो थान त्याग करि सकै भौन ॥
जब लीदि करै आँसू ढराइ । बहु टेरै सो रणमें पराइ ॥
जिहि तुरँग घाँटि है कंठमाहि । तिहि स्वामि भारजा रुज कराहि ॥

अथ श्वेततालू ।

दोहा—तालू जाको श्वेत सब, नाहिं ललाई आहि ।
तामहँ शंख समान सो, चिह्न कछू दरशाहि ॥

चौ०—ऐसो वाजी जोकोइ होई । निंदित भँवरि सहित शुभ सोई ॥
जो कोउ आपन जीवन चहै । भूलिहु ताको जनि संग्रहै ॥

अथ श्यामजिह्वावाजी ।

दोहा—जाकी जिह्वा श्याम सब, की बिंदुक कोउश्याम ।
जिह्वा श्याम बखानहीं, वाको सब बुधिधाम ॥

उद्दालक ऐब ।

दोहा—ऊपरको रद बाढिकै, अधरहि लेइ दबाय ।
सो उद्दालक नाम है, स्वामीको दुखदाय ॥ १ ॥
बाढि जाहि अधको रदन, ओंठहिं लेइ दबाइ ।
सो उद्दालक हय अहै, करै अमंगल आइ ॥ २ ॥

---

१ देखो घोडा नंबर १००

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ भल्लूकास्य हय ।

सोरठा—दुँहू तरफको होइ, आल गिरे जा वाजिके ।
भल्लुकास्य है सोइ, हरै स्वामिके वंशको ॥

दोहा—नेस निकासे होय जो, ऐसी घोडी होय ।
ऐबी जानौ ताहिको, भूलि न लीजो कोय ॥

अथ मेषदंतवाजी ।

दोहा—बिररे जाके दंत हैं, मेषदंत कहि ताहि ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, भूलि न लीजौ वाहि ॥ १ ॥
तिहिकी आदिक जे कहे, ऐसे ऐब बखानि ।
करत स्वामिको घात अरु, समर पराजय जानि ॥ २ ॥

अथ अंगविकार ।

सोरठा—गुलरीफल आकार, गूंथी कोवा माहिं जेहि ।
कीजौ तहाँ विचार, मासाते अतिरिक्त है ॥

दोहा—ऐसी गूंथी देहमें, होइ कहूँ पर आय ।
जानौ अंगविकार सो, महादोष दरशाय ॥

अथ शृंगीवाजी ।

दोहा—दोउ काननके बीचमें, होत शृंग यह जानि ।
मासा सम है रूप तेहि, कहौं तासु पहिचानि ॥ १ ॥
अजयासुतकेशृंग ज्यों, प्रथमहि निकसति आय ।
खालके भीतर ऊँच कछु, टोयेते दरशाय ॥ २ ॥
शृंगीवाजी होय जो, महिपालौके आय ।
नाशै धन कुल स्वामियुत, अपर पुरुषको आय ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ दृष्टांतमाह विशेष दोष ।

हरिश्चंद्र त्रयकर्णते, वेणु दुसफते जानि ।
रावण शृंगीअश्वले, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
कृष्णक्षीणरँग वाजिते, सहस्त्रार्जुन नास ।
हरितरंगके वाजिते, रामचंद्र वनवास ॥ २ ॥
शंखाक्षी हय त्रिशँकुको, कर्णश्वेतरँग छीन ।
अधिक रदन दुर्योधनै, पांडव दंतन हीन ॥ ३ ॥
सोकावर्ती वाजिते, भयो परीक्षित काल ।
ऐबी वाजी संग्रहै, ऐसो होय हवाल ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीविशेषादिदोषकथनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ अश्वलेबेको मुहूर्तचक्र ।

ति.	वा	नक्षत्र
१	र.	पु.पु.
२		
३	चं.	
५		रे.मृ.
६	बु.	
७		
८		अ.श.
१०	बृ.	
११		स्वा.
१२	शु.	
१३		ह.
१५	श.	
३०		

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—अश्वाकाराहि चक्र लिखि, अभिजित सहित नक्षत्र ।
न्यास कीजिये तासुमें, या क्रमसों सर्वत्र ॥ १ ॥
कंध पाँच रवि नषतते, दश पीठीपर धारि ।
फेरि देइ धरि पूंछमें, द्वैचरणनमें चारि ॥ २ ॥
पाँच नषत पुनि उदरमें, द्वयमुखमें पुनि जानि ।
अर्थलाभ मुखमें परै, उदर वाजिकी हानि ॥ ३ ॥
भागे रणते पगनमें, पूंछहि त्रिया विनासु ।
पीठिमाहिं सुख देइ बहु, कंधमाहिं सुख जासु ॥ ४ ॥

मुहूर्त ।

दोहा—पुष्य पुनर्बसु रेवती, मृगशिर अश्विनि होइ ।
शतभिष स्वाती जानियो, हस्त सहित शुभसोइ ॥
सोरठा—इन नषतनमें कोइ, रिक्तातिथि कुजबार बिन ।
वाजिकर्म शुभ सोइ, शुद्ध परै जब चक्रमें ॥

अथ खरीद समयकी चेष्टा ।

दोहा—शुभ वाजी नहिं शुभ करै, अशुभ करै नहिं हानि ।
सो फल चेष्टा देखिकै, ताको कहौं बखानि ॥ १ ॥
प्रथम ऐब देखै नहीं, चेष्टा लेइ विचारि ।
बदचेष्टा जो हय करै, ताको तजो निहारि ॥ २ ॥
नीकी चेष्टा हय करै, ताहि जरूरौ लेइ ।
घरमें पहुँचै वाजि बहु, तुरतै सुखको देइ ॥ ३ ॥

अथ शुभचेष्टा ।

सोरठा—अश्व खरीदन जाइ, देखि खरीदारै तुरी ।
फुरकै अति सुख पाइ, ताहि खरीदै सुख लहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—याहीविधिसों देखिये, शाँक साधि हय लेइ ।
ताहि खरीदै सुख लहै, नफा बहुत कछु होइ ॥
सोरठा—वाजी देखन जाइ, लीदिकरै तब वाजि जो ।
सो सुख पतिको देइ, ताहि जरूरो लीजिये ॥
चौ०—हँसै वाजी नृत्याहि ठानै । घरै पगन हर्षित मन मानै ॥
लेनहारको यहै बतावै । संपति घरमें बहुत बढावै ॥

अथ अशुभचेष्टा ।

दोहा—लेनहारको देखि हय, पीठीहि देइ खलाइ ।
मोहि खरीदे नाहिं नफा, वाजी देइ बताइ ॥ १ ॥
कितनौ मद्दा होइ जो, तहूँ न लीजै वाहि ।
हठकरि कोऊ लेइ जो, घटी सही परिजाहि ॥ २ ॥
जाइ खरीदन अश्वको, खरीदार जो कोइ ।
काढै अपनो लिंग हय, कीतो सूतै सोइ ॥ ३ ॥
कितनो लक्षण शुभ अहैं, वाजी होय विशाल ।
शालहोत्र अस कहत हैं, ताहि तजौ ततकाल ॥ ४ ॥
लेनहारको देखि हय, सभय डुलावै पाँइ ।
ताहि खरीदेते तुरत, अवशि बाम नाशि जाइ ॥ ५ ॥
पूँछ हलावै करनहू, कीतो तानै देह ।
नाश करै निज स्वामिको, वाजी बिन संदेह ॥ ६ ॥
शुभ मौंरी जाके परै, बदचेष्टित हय होइ ।
सो शुभ ताको नहिं करै, जानिलेहु सब कोइ ॥ ७ ॥
चेष्टा नीकी जो करै, भँवरि अशुभ युत जानि ।
ता वाजीको जानियो, करत नहीं सो हानि ॥ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुभचेष्टा बाजी करै, शुभ भौंरीयुत होइ ।
देत अहै निज स्वामिको, पूरणसुखको सोइ ॥ ९ ॥
भौंरी जाके अशुभ है, बदचेष्टित हय होइ ।
करती पूरण दोषको, श्रीधर वरणो सोइ ॥ १० ॥
घोडा लेने जाइ जो, पीठि डुलावति दोषि ।
महा अशुभ नहिं लीजियो, करि है नाश विशेष ॥ ११ ॥
दूर्व भक्षते तुरँग जो, निकट श्रवणके जाहि ।
देखत छाँडै घासको, सोंति न लीजो ताहि ॥ १२ ॥

अथ शिक्षा वर्णन ।

दोहा—कइ यक ऐसे रोग हैं, प्रथम परत नहिं जानि ।
फिरि बीते कछु कालके, ते उघरत हैं आनि ॥ १ ॥
लीजै वाजी मोल जब, तिन रोगनको जानि ।
जहां चिकित्सा है कहीं, कहो तहां पहिंचानि ॥ २ ॥
बडी नजरबीनी किये, परैं रोग वे जानि ।
तजौवाजितिनरोगयुत, ते अब कहौं बखानि ॥ ३ ॥
हड्डा पुस्तक मोंतरा, पछिले पगमें होइ ।
लँगरा वाजी होइगो, इन रोगनको जोइ ॥ ४ ॥
होत आगिले दांउमें, रोग चकावारि एक ।
दूजो जानो जानुआँ, करिकै बहुत विवेक ॥ ५ ॥
दाग परैं जाहिके, जालदारकी आहि ।
इन रोगन युत वाजिको, देखत छाँडो ताहि ॥ ६ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीमुहूर्त्तचक्रखरीदसमयचेष्टादि शिक्षाकथनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ हयशाला रचना विधि । देखो हयशाला नंबर १०४.

दोहा—निज मंदिरते बाजिको, शाला पूरब होय ।
की उत्तरदिशि चाहिये, कहत सयाने लोय ॥ १ ॥
तहां भूमिको कीजिये, प्रथम प्रशस्तहि जानि ।
पूँछि ज्योतिषी विप्रसों, दीजै नीवहि आनि ॥ २ ॥
जितनो ऊंचो कीजिये, तितनो चौंडो होइ ।
लंबा कीजै नापसों, आयत नीको सोइ ॥ ३ ॥
गज आयतको कीजिये, वृष आयतको होइ ।
हयको आयत होइ जो, तौ अति नीको सोइ ॥ ४ ॥
जितने थान तुरीनके, तितने मोहरा होइ ।
कीजे दुहुँ पाखन विषे, दुइ दरवाजा सोइ ॥ ५ ॥
प्रति थानहिके अग्रमें, कीजै लघु दरवाज ।
हयशाला चारिउ तरफ, कीजै छज्जा साज ॥ ६ ॥
सो छज्जा या विधि करे, नहिं भावे बौछार ।
ता सायाको जानियो, सोहै सुखको सार ॥ ७ ॥
सब दरवाजन माहिंमों, देहु केंवार लगाइ ।
जिन्हैं कीजिये बंद जो, आवै नाहिन बाइ ॥ ८ ॥
कुरसी कीजै ताहिकी, शालहोत्र मत मानि ।
एक हाथसों नीच नहिं, दोइ हाथ लगु जानि ॥ ९ ॥
शालाकी पूरब दिशा, की उत्तरदिशि जानि ।
तहाँ जलाशय होइ जो, तौ अति सुभग बखानि ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोहमई बनवाइये, खाँचे यह जिय जानि ।
जितने वाजी बाँधिये, उतने खांचे आनि ॥ ११ ॥
वाजि अगारी माहिमें, छतिमो देइ टँगाइ ।
तामें डारे घासको, झरति धूरि सब जाइ ॥ १२ ॥
होइ नहीं सामार्थि जो, यतनी मालिक माहि ।
तौ छपरा डरवाइये, अश्वथानपर आहि ॥ १३ ॥
बाँस एक चिरवाइकै, खांची लेइ बनाइ ।
अश्व अगारी बांधिये, घास वहीमें खाइ ॥ १४ ॥
अथवा चरनि बनाइये, माटी पोढि मँगाइ ।
होइ ऊंचि दो हाथकी, घास वहीमें खाइ ॥ १५ ॥

अथ हयशाला प्रवेशन वा निःसारन मुहूर्त—मुहूर्त्तचिंतामणिमतेन ।

घनाक्षरी—राशी शुभ खगनकी अठवों सदन शुद्ध,
जौन जाकी योनि औ नषत चर गाये हैं ॥
ऐसे समय सदनमें पशुनको राख्यो जिन,
दिन दिन तिनहीं अशेष सुख पाये हैं ॥
रिकता दरश आठैं मंगल श्रवण ध्रुव,
चित्रामें सदनते जिन बाहर पठाये हैं ॥
पाये सब सुख तिन इनहीमें राखे जिन,
तिन निज जीको भूरि शोक उपजाये हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुहूर्त हयशाला प्रवेशन शुभलग्न अष्टम शुद्ध होय.					
ति.	वा.	नक्षत्र	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	अ.	१	र.	
२			२		अ. भ.
३	चं.	ध.	३	चं.	कृ. मृ.
५	बु.	श.	५	बु.	आ. पु.
६			६		पु. श्ले.
७	बृ.	पुन.	७	बृ.	म. पू. फा.
१०			१०		ह. वि.
११	शु.		११	शु.	ऽनु. ज्ये. मू.
१२			१२		पू. षा. ध.
१३	श.		१३	श.	श. पूभा.
१५			१५		रे.

मुहूर्त अश्वकृत्य मुहूर्त्त गजकृत्य.					
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	ह. अ.	१	र.	मृ. र.
२			२		
३	चं.	पु. पु.	३	चं.	चि. ऽनु.
५			५		
५	बु.	मृ. स्वा.	६	बु.	ह. अ.
६			७		
७	बृ.	ध. आ.	८	बृ.	पुष्य.
८			१०		
१०	शु.	श. रे.	११	शु.	ऽभि.
११			१२		
१२	श.		१३	श.	स्वा. पु.
१३			१५		श्र. ध.
१५			३०		
३०					श.

अथ अश्वगजादि कर्म ।

नरेन्द्र छन्द—हस्त अश्विनी पुष्य पुनर्वसु मृग स्वाती वसु लीजै॥
शिव शतभिषा रेवती इनमें वाजि कर्म सब कीजै ॥
रिक्ता मंगल बिना कहत अब गजराजनके कर्म ॥
मृदु चर छिप्र नषत लै भाषत जे जानत हैं मर्म ॥

अथ हयशालाप्रवेशनविधि ।

दोहा—शाला विधि हय सब कही, शालहोत्र मत जानि ।
तामें वाजि प्रवेश विधि, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥
प्रथम पूँछिये विप्रसों, दिन नीको जब होइ ।
ताके पहिले एक दिन, तासम नीको सोइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तादिन कीजै ताहिमें, सो अब कहौं बखानि ।
उच्चश्रवाको कीजिये, अस्थापन जिय जानि ॥ ३ ॥
पूजा कीजै तासुकी, सो षोडश उपचार ।
फिरि लक्ष्मीको पूजिये, करिकै सब विस्तार ॥ ४ ॥
लक्ष्मीजीको दीप तहँ, दीजै एक बराय ।
बरत रहै सो राति दिन, ताकी विधि यह आइ ॥ ५ ॥
पूजै तहाँ कुबेरको, और वरुणको जानि ।
तादिन राखै ताहिमें, सात धेनु यह मानि ॥ ६ ॥
दोइ वृषभ अरु जानिये, थनवारहि युत मानि ।
दीपहि रक्षक होइ जो, तिनते अधिक बखानि ॥ ७ ॥
प्रात भये सब लीजिये, गाई वृषभ खुलाइ ।
बंदनवारी बाँधिये, भूमि सबै लिपवाइ ॥ ८ ॥
वास्तु विधानहिं कीजिये, नवग्रह देउ पुजाइ ।
पूजा कीजै वायुकी, दीजै होम कराइ ॥ ९ ॥
फेरि खवावै विप्र बहु, तिन्हैं दक्षिणा देइ ।
चारि विप्रको दीजिये, वस्त्र गहन युत सोइ ॥ १० ॥
या विधिको जब करि चुकै, वाजी लेइ मँगाइ ।
विधि पूजनकी कीजिये, तिन वाजिनकी जाइ ॥ ११ ॥
तिन विप्रनको बोलिये, अति आदर करवाइ ।
अलंकार अरु वस्त्र जो, जिन्हको दीन्हें आइ ॥ १२ ॥
तितहीते पठवाइये, इन मंत्रनको जानि ।
शत शत बारहि मंत्रप्रति, शालहोत्र मत मानि ॥ १३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंत्र—श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥ श्रीसरस्वतीभ्यो नमः ॥ श्रीवायुपुत्राय नमः ॥

दोहा—द्विजवर तहँ मंगल पढहिं, और शांतिको जान।
शाला महँ तहँ बांधिये, वाजिनको सुख मानि ॥ १ ॥
यहि प्रकार वाजीनको, जे राखैं महिपाल।
तिनको विघ्न न होइ कछु, भाषत बुद्धि विशाल ॥ २ ॥
यहि प्रकार वाजीनको, जे पालत महिपाल।
तिनके शत्रुन माँझ हिय, बनी रहति है शाल ॥ ३ ॥
यह बिधि राजनको कही, और नरनको नाहिं ॥
राजनके तर नर अउर, यथा शक्ति तिन आहि ॥ ४ ॥
लालवर्ण कपि बांधिये, शालाद्वारे माहिं।
हयबलाय जो होइ कछु, ताके शिरपर जाहिं ॥ ५ ॥

अथ हयशालामें गिरदान आये अशुभ।

दोहा—सरटाको हयशालमें, आवन देहु न मीत।
जो आवै तौ सकल हय, कछू होयँ भयभीत ॥

अथ हयशाला उपद्रव कथन।

छन्दतोटक—मधु मक्षिका हयसार। जिन कीन्ह आनि अगार।
यह कहत पण्डित बात। ता अश्वनहिं कुशलात ॥
जब यहै अवगुण जानु। तब शांतिकी विधि ठानु।
द्विज पूजि हवन कराइ। बहु दक्षिणा देजाइ ॥

दोहा—शत प्रकार रुद्री बनै, पूजै विधिवत सोय।
अश्वक्षेम मधु मक्षिका, शांति करावै कोय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यशांति ।

दोहा—द्विजवर बोलै मान करि, तिनके पूजै पाँइ ।
ता पछि जो कीजिये, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
पुजवावै तिहि विप्रसों, शत पार्थिव यह जानि ।
मृत्युंजयको जप करै, दश हजार सो मानि ॥ २ ॥
तासु दशांशहि होम करि, द्विजवर देइ खवाइ ।
शांति पढावै द्विजनसों, सबै दोष मिटिजाइ ॥ ३ ॥
फिरि दीजै व्याहृतिनसों, आहुति एक हजार ।
गाइनको घृत छानिकै, कीजै बुद्धि उदार ॥ ४ ॥
देइ दक्षिणा भाँति बहु, विप्रनको यह जानि ।
मधुमाखी जो वास किय, शांति तासुकी मानि ॥ ५ ॥

अथ युद्धसमय घोडा साजैके शुभाऽशुभ शकुन ।

दोहा—इन चिह्ननत कहाति हौं, शुभ अरु अशुभ तुरंग ।
शालहोत्र मत जानिकै, भाषत बुद्धि उतंग ॥ १ ॥
सजत वाजिको होइ जब, उग्र वक्र हिहनाइ ।
भूमि उखारै टापसे, हारि बतावत आइ ॥ २ ॥
समर सामने जो करै, ऐसि चेष्टा वाजि ।
वाको स्वामी जीतिकै, घरको आवै गाजि ॥ ३ ॥
युद्धमाहिं चलबे लिये, सजत वाजिको होइ ।
करै जो लीदि पेशाबको, ताकी यह गति जोइ ॥ ४ ॥
आपु मरै स्वामी सहित, रणैमाहिं यह जानि ।
शालहोत्र मत देखिकै, श्रीधर कहो बखानि ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युद्ध कार्यको चलतमें, वाजि सजावे कोइ ।
बिना व्याधि यह आँखिमों, आँसू निकसाति होइ ॥ ६ ॥
जाको हय वह होय जो, ताको नीक न आहि ।
रोवत हय निज स्वामिहित, देत बतायो ताहि ॥ ७ ॥
जा वाजीकी पूँछते, झरन लगे चिनगारि ।
रणको चढि तापर चले, ताको काल विचारि ॥ ८ ॥
रणको निकसत होइ कोइ, वाजीपर असवार ।
सो वाजी निज पूँछके, थिरकावे जो बार ॥ ९ ॥
निज स्वामीको रणविषे, मारि डरावे सोइ ।
शालहोत्र यों कहत है, ताहि सवार न होइ ॥ १० ॥
बिन कामहि अधरातको, घोडा हर्षित होइ ।
जाको वह घोडा अहै, तासु पयाना सोइ ॥ ११ ॥
बार बार निज पूँछके, थिरकावे जो बार ।
जाको वह घोडा अहै, ताको यह निरधार ॥ १२ ॥
कितनो स्वामी होइ थिर, भूप होइकी राइ ।
ताकी थिरता नाहिं रहै, सही कहूँको जाइ ॥ १३ ॥
हयके शकुन अनेक हैं, कहँलौं कहौं बखानि ।
येते श्रीधर हैं कहे, शालहोत्र मत जानि ॥ १४ ॥

अश्व वेग वर्णन ।

दोहा—सब तुरनिके कहत हौं, क्रमते वेग बखानि ।
जानि जाहिं जाते सबे, सो वर्णत सुखदानि ॥ १ ॥
रूप वही क्रम देह बल, गति आवर्त्तक जानि ।
वेग रहत सब वाजिके, लक्षण यही बखानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लज्जा भूषण त्रियनको, क्षत्रिय भूषण तेग ।
द्विजको भूषण वेद है, वाजी भूषण वेग ॥ ३ ॥
मातृदोषते होति है, लघुता बाजी माहि ।
करत सरारी अश्व जो, पितादोष सो आहि ॥ ४ ॥
स्वामिदोषते दूबरो, और पातरो होइ ।
नाहीं दोष तुरीनको, जानि लेउ जिय सोइ ॥ ५ ॥

अथ शीघ्रतावर्णन ।

छंदचौपैया—खैंचत लीकसी भूमिहिये । मानौं अंबर लेत पिये ॥
अमरादि समीर सुभूमि भरे । अरु पक्षिनकी गति लेत हरे ॥
जिनके तनु तागति जानि परै । नवला दृग जैसहि सैन करै ॥
मानो मन हय यह रूप धरे । क्षणमें फिरि शीतल होत खरे ॥

अथ गतिवर्णन ।

दोहा—हलति देह नहिं नेकहू, चलति ऐसि गति जाहि ।
अभरनगनते तनाविषे, ते नहिं बाजत आहि ॥ १ ॥
साह गाम यक जानियो, तेज गाम अरु मानि ।
मंद गाम यक होति है, और दुगामा जानि ॥ २ ॥
यरगा अविया दोइये, औरहिं बाल बखानि ।
येते भेदनगति तुरी, निजमति लेहु पिछानि ॥ ३ ॥

अथ आवर्त्तक वर्णन ।

दोहा—आवर्त्तक ताको कहत, सोइ कोडरी आइ ।
दावा कारि परसिद्ध है, वाजीको सुखदाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करति मंडली वाजि है, तिनकी गति आसि होति ।
घूमतिमें नाहिं जानिये, ज्यों दीपककी ज्योति ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतहयशाला रचनाप्रवेश-
नादिकथनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सवारवर्णन ।

दोहा– अब आरोहण गुण कहौं, शालहोत्र मत मानि ।
लक्षण जाहि तुरीनके, प्रगट परत हैं जानि ॥ १ ॥
शिला समानहि जानु जेहि, वज्रहि सों काटिदेश ।
अरु क्रोधी है नाहिनो, शास्त्र पढो है वेश ॥ २ ॥
होइ चलाक सवार जो, बुद्धिमान अति होइ ।
जाने जो गति भेद सब, शालहोत्र मत जोइ ॥ ३ ॥
शीत तोय अरु धूपते, नेकौ नाहिं अकुलाइ ।
समर माह उत्साह अरु, जासु हिये सरसाइ ॥ ४ ॥
आवत नाहिं प्रस्वेद तनु, थोरी मेहनति माहि ।
समय जानि ताडन करै, और दक्ष सो आहि ॥ ५ ॥
येते गुण हैं जाहिमें, दृढ असवार सुजानि ।
श्रीधर वरणो चावसो, शालहोत्रमत मानि ॥ ६ ॥

अथ अश्व ताडन विधि ।

दोहा–प्रात समयमो मंद जो, तुरी चलत जो होइ ।
ताको चाबुक मारिये, पिछिले पुट्ठन सोइ ॥ १ ॥
वाजी नीको नाहिं चलै, प्रातसमय जो आहि ।
कोखिन पुट्ठा माहिं लगु, मारै चाबुक ताहि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसो चाबुक मारई, जाय तुरी अकुलाइ ।
भागे पूँछ उठाइकै, जलदी नहिं ठहराइ ॥ ३ ॥
काँधी करि पुस्तक करै, पूँछ दाबिकी लेइ ।
तबलौं वाको मारिये, बदी छोडि सो देइ ॥ ४ ॥
बिन जाने स्थानके, जे ताडन कहँ देहिं ।
तासों हय वैरहि गहै, जानि हिये महँ लेहि ॥ ५ ॥

अथ स्थानवर्णन ।

कोखि गलहरी काटिविषे, पाछिल पुट्ठा जानि ।
कंध माहिं अरु जानिये, ये स्थान बखानि ॥ १ ॥
तंग पाँजरै मारिये, दूनौ एँडी जानि ।
जो ममरेजे बाँधिये, तौ अति मारु बखानि ॥ २ ॥
जो कदाचि धीमो चलै, येंड मारि तेहि देइ ।
आसन मसकै जोरसों, जलद ताहि करिलेइ ॥ ३ ॥
मारो चाहै हाथसों, छपकातो करिदेइ ।
जस चाहै तस वाजिको, जल्द तुरत करिलेइ ॥ ४ ॥
बदी जोन हय करत है, परत नाहिं सो तेज ।
ता वाजीके कारणै, बाँधिलेत ममरेज ॥ ५ ॥
जाहि चलै अति जोरसों, दौराये जिय माहिं ।
ताडन कीजै तासुको, कोखिन पुट्ठन माहिं ॥ ६ ॥
कियो चहत जब फैल हय, शिरहि हलावति जाहि ।
ताडन कीज कंधमहँ, शुद्ध तबै ह्वै जाहि ॥ ७ ॥
जब हरामजदगी करै, ताहि समयमें ताहि ।
मारो चाहै ठोर तेहि, दोष नहीं सो आहि ॥ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ फेरन विधि ।

दोहा—अब फेरन विधि अश्वकी, वरणों जेती आइ ।
जाहि जानि असवार सब, वाजी लेइ बनाइ ॥ १ ॥
प्रथमै बच्चा विधि कहौं, जैसो फेरो जाइ ।
ता पाछे सब ऋतुनको, फेरब देत बताइ ॥ २ ॥
दोइ दाँत जब होइ हय, फेरो तबते ताहि ।
कीतो देखौ गातको, फेरन लायक आहि ॥ ३ ॥
प्रथम रासिको डारिकै, राह देखावत ताहि ।
जब कायम भो राह पर, कावा फेरै वाहि ॥ ४ ॥
रासि डारिकै दीजिये, ताको कावा आहि ।
ठीक होइ दुहुँ बागपर, या हित कावा ताहि ॥ ५ ॥
जब कावा पर ठीकभो, हलुक सवार चढाइ ।
मंद मंद तेहि राह पर, नितप्रति फेरत जाइ ॥ ६ ॥
कावा फेरतके समय, मनुज एक बुलवाइ ।
ताहि पिछारी कीजिये, ओगी मारति जाइ ॥ ७ ॥
अरु कावा पर फेरिये, हलुक सवार चढाइ ।
रासै डारै निज रहै, बाग सवार बढाइ ॥ ८ ॥
जबै ठीक ह्वैजाय वह, रासदेइ कढवाइं ।
मंदमंद मेहनति लिये, हय दुरस्त ह्वैजाइ ॥ ९ ॥

अन्यमतं ।

स०—जाँघ जमाय दुहूँ घुटुवानलौं, पेडुरी ढीली दुहूँ करिचाले ॥
कानन मध्यम दृष्टि रहै, थिरता करिकै काटि नेक न हाले ॥
बाग बरोबरि राखै सुजान, सो धोख कियेपर चाबुक घाले ॥
सोइ सवार सवारी सराहिये, राखै बचाय खतानिको जाले ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ वाहभूमि ।

श्लोक—शतहस्तादिक भूम्यां सप्तहस्तावसानकम् ॥
भ्रामयेद्वाजिनं सादी सव्यासव्येन वाजिनम् ॥ १ ॥
मण्डलं चतुरस्रं वा गोमूत्रं वार्द्धचद्रकम् ।
नागपाशे क्रमेणैव भ्रामयेत्कटपंचकम् ॥ २ ॥

दोहा—शत हस्तादिक भूम्यमित, सप्तहस्त अवसानु ।
भ्रमण करै वाजी सुघर, सव्यासव्य प्रमानु ॥ १ ॥
मंडल तिमि चतुरस्रगति, गोमूत्राभ निबेर ।
नाशपाश चंद्रार्धविधि, पांच रीति है फेर ॥ २ ॥

चौ०—काकर ठोकर साँकर तालै । ऊंच खालि तृणकाष्ठनघालै ॥
समसो भूमि अश्व दौरावै । तजि कठोर जहँ धूरि देखावै ॥
वर्षाऋतुमें महिजल भारी । बगधर चढै सो होइ अनारी ॥
शरदऋतुहिमें उष्ण बिहाई । हिमऋतुमें मिल दोष बराई ॥

दोहा—अर्धमाघते चैतभरि, राति दिवस दौराय ॥
मेष रु वृष आषाढलौं, थाने पानि पिआय ॥ १ ॥
ऋतुवसंत ग्रीषम तलक, असवारी कारि चाहि ।
तौ याही विधिते सुघर, करै जतन निर्बाहि ॥ २ ॥

चौ०—निंबपत्र अरु लोनु मँगावै । दूनौ टका चारि भरिलावै ॥
याहि बनाय वाजिकहँ देई । बहुत भूँख बल रोग न होई ॥
हरीघास ग्रीषममें पावै । घिव दानामें रांधि खवावै ॥
छाहीं सूखे हयको बाँधे । होय बली जो या विधि साधै ॥

दोहा—छोटे मोटे वृद्ध अरु, रुजी सुपारी सोय ।
कुष्ठी तिमिर सवार है, डारत है हय खोय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आरोहण विधि ।

दोहा—अब आरोहणविधि कहौं, जा हित बाजी आहि ।
शालहोत्र मत देखिके, वर्णत हौं अब ताहि ॥ १ ॥
आरोहणमें जानिये, एक बाग है सार ।
ताहि बिना जाने अहै, वृथा सकल व्योहार ॥ २ ॥
गुणी पुरुष बिन जो सभा, बिन दिनेश दिन जानि ।
बिना बागके ज्ञान त्यों, वृथा सकल गुण मानि ॥ ३ ॥
असवारीमें हय रहै, केवल बाग अधीन ।
ताते प्रथमैं बागको, या मधि वर्णन कीन ॥ ४ ॥

अथ बाग धरिबेकी विधि ।

दोहा—तुला समान गहे रहै, बागहिको हय जानि ।
ना अतिलंबी राखिये, ना अति ऊँची मानि ॥ १ ॥
प्रथम कदम काढन विषे, अरु धावनमो जानि ।
या विधिसों बागहि गहै, सो अब कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ कदम काढन विधि ।

दोहा—सांझसमय असवार हो, कोश एक चलि जाइ ।
दुलकी उखरन देइ नहिं, तहँते देइ घुमाइ ॥ १ ॥
मंद मंद गृहमाँझलौं, आवे लीन्हें ताहि ।
बाग तंग नहिं राखिये, ना अति ढीली ताहि ॥ २ ॥
नितप्रति फेरै याहि विधि, कदम गाम ठहराइ ।
दूगा माहि कीन्हों चहै, ताकी या विधि आइ ॥ ३ ॥
बाग पकारि है तंग तेहि, अरु ऊँची कछु जानि ।
जेरबंद ढीलो करै, या विधि ताकी मानि ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंद चलत जानै जबै, एँडै देइ लगाइ ।
आसन मसकत जाइ अरु, नहिं अति जोर कराइ॥ ५ ॥
तुली बाग दुहुँ राखिये, दुलकी उखरि न जाय ।
दौरन दीजै ताहि नहिं, कदम ठीक ह्वै जाय ॥ ६ ॥
जेरबंदको कीजिये, थोरा थोरा तंग ।
सूरति प्यारी होति है, याविधि किये तुरंग ॥ ७ ॥
होइ तुरंगम जल्द अति, कूदन लागत सोइ ।
याही विधिके करतही, सो जानौ सब कोइ ॥ ८ ॥
हाँकौ याही विधि तुरी, बाग रसाइनि माहि ।
थोरी थोरी कीजिये, तंग ताहिको आहि ॥ ९ ॥
औ ऊँची नहिं पकरिये, तुली रहै तेहि बाग ।
कायम दोनों कदमपर, होत बाजिसूं भाग ॥ १० ॥
होत सही यह बात है, देकर जानौ सोइ ।
शालहोत्र मत देखिकै, वर्णत हैं सबकोइ ॥ ११ ॥
तंग बाग अतिही किये, या विधि फेरत जाइ ।
तौ अबिया कदमै चलै, पीठि हलाइ हलाइ ॥ १२ ॥

अथ लंगर डारिकै कदमकी विधि ।

चौपाई—दोई रस्सी लेइ बनाई । सूत मुजम्मा बाँधै भाई ॥
अश्वके गांठिन ऊपर बाँधै । यत्न समेत यहीविधि साधै ॥
ऊपर चढिकै हाँकै कोई । अबिया कदम होति है सोई ॥

अन्य विधि ।

दोहा—अगिले पद दहिने विषे, पछिले बायें जानि ॥
पछिले दहिने पगहिमें, अगिले बाम बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याही विधिसों बाँधियो, हयके गामचि माहि ।
राशिनपर हय हाँकिये, कदम ठीक ह्वै जाहि ॥ २ ॥
राशिनकेरे मध्यमें, हय पीठीके माहि ।
रस्सी एक लगाइकै, बाँधिदेउ सो नाहि ॥ ३ ॥
पाँयनमें अरझै नहीं, कदम चलत हय सोइ ।
लंगर डारै घन पगहि, होय कहै सब कोइ ॥ ४ ॥
कदम काढिबेकी कही, औरौ विधि बहु आइ ।
ते अधीन असवारके, कहँलौं वरणी जाइ ॥ ५ ॥

अथ कावा फेरन विधि ।

दोहा-प्रथम राशिको डारिकै, दीजै कुंडलि वाहि ।
भा दुरुस्त दुहुँ बाग फिरि, और जतन है ताहि ॥ १ ॥
पीठीपर असवार ह्वै, दुहूँबाग गहि लेइ ।
बाग भीतरी हाथ यक, धरिकै कावा देइ ॥ २ ॥
तुली बाग दुहुँ राखियै, कावा फेरन माहि ।
उरझत ढीली बाग है, औरौ दोष लखाहि ॥ ३ ॥
ढीली बागै लेत नहुँ, मुँहके बल गिरिजाइ ।
हयके गिरे सवार जो, सही चोटको खाइ ॥ ४ ॥
बाग बदलिये अश्वकी, बाहरको यह जानि ।
भीतर बदलै बाग जो, उरझत हय यह मानि ॥ ५ ॥

अथ गस्त फेरन विधि ।

दोहा-पंद्रह धनुषनते कहो, तीस धनुष लगु जानि ।
छातक फेरै बाजिको, गस्त ताहिको मानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बागै दोऊ राखिये, तुली तहाँ हू जानि ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥
फेरै जौनी बाग पर, धरे रहै यक हाथ ।
यहिविधि जो कोऊ करै, वाजि चलै मनसाथ ॥ ३ ॥

अथ धावन वर्णन ।

दोहा-दौरावै अतिजोरसों, सूधो लीक समान ।
तुली राखिये बागको, दुहूँ हाथमें जान ॥

धावनप्रमाण ।

दोहा-चारि हाथको जानिये, एक धनुष परमान ॥
धनुष अठारह होइ जो, कष्ट तासुको जान ॥ १ ॥
आठ कष्टको कहत हैं, एक मंत्र यक जानि ।
आठ मंत्र अरु धनुष शत, हयको धावन मानि ॥ २ ॥
एक समानै दौरई, या परमानै सोइ ।
अरु ढीलो परिजाइ नाहिं, उत्तम बाजि होइ ॥ ३ ॥
एक मंत्र दौराइये, तुरी नितै प्रति जानि ।
और अधिक दौराइबो, बिना काज नाहिं मानि ॥ ४ ॥

अथ जल्द करिबेकी विधि ।

दोहा-जल्द करनकी विधि कहौं, जो फेरते आहि ।
औषाधीविधि जल्दी करन, कहा दवाके माहि ॥ १ ॥
कदम कदम टहलाइये, वाजीको यह जानि ।
ठौर २ पर कीजिये, रोज अचानक आनि ॥ २ ॥
मारै चाबुक वाजिके, जाते जाइ डेराइ ।
यहिविधि कीजै जतनको, चमक आइ तेहि जाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ बाजीको ओछिनपर और लंबिनपर कुदावनविधि ।

दोहा—प्रथमहि सूरति बाँधिये, ताकी या विधि आहि ।
रासिन डारि चलाइये, मंद मंद सो ताहि ॥ १ ॥
सूधो जब चलने लगै, तबै देइ झमकाइ ।
झमकावनकी विधि कहौं, जाते कूदति आइ ॥ २ ॥
आपु होइ दहिनी तरफ, बाजीके यह जानि ।
रासी डारै तासुके, सो अब कहौं बखानि ॥ ३ ॥
हयकी छातीके विषे, तंग जहाँपर आहि ।
जेरबंदको छोर तहँ, तंग रहति जा माहि ॥ ४ ॥
बाईओर लगाममें, बाँधि रासिको देइ ।
जेरबंदके छोरमें, बाँधि रासिको लेइ ॥ ५ ॥
दहिनी तरफे लेइकै, बाँधि लगामै देइ ।
दुहूँ तरफकी रासिको, हाथमाहिं गहिलेइ ॥ ६ ॥
जेरबंदमें रासि जो, संग कीजिये ताहि ॥
दहिनी रासै हाथमें, तुरी चलावति जाहि ॥ ७ ॥
जहँपर झमकै नहिं तुरी, औगी मारै बाहि ॥
औगी लीन्हें एक नर, रहै पिछारी ताहि ॥ ८ ॥
चलन अगारी देइ नहिं, अरु कूदन नहिं देइ ॥
या विधि झमकैये तुरी, जानि तासुको लेइ ॥ ९ ॥
औगी लीन्हें जौन नर, पांपर राखै हाथ ॥
जाइ बजावति ताहिसो, हयकी झमकनि साथ ॥
रासि कीजिये ढीलि कछु, दहिने बढवति जाहि ॥
ओछिन पर तब जानिये, कूदति बाजी आहि ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढीली कीजै रासिको, दीजै बहुत बढाइ ॥
तबतौ जानौ वाजि बहु, लंबिनपरलै जाइ ॥ १२ ॥

अथ तुरी फेरैके महीना ।

दोहा– सावन और अषाढ पुनि, आश्विन भादौं जानि ॥
अतिमेहनति नाहिं लीजिये, इन महिननमो मानि ॥ १ ॥
कार्तिक जेठहि मासमें, या विधि फेरति आहि ॥
बडे प्रातमें फेरिये, घाम चढेमें नाहिं ॥ २ ॥
हठ करिकै जो फेरई, मर्म न जानत ताहि ॥
पित्त विकार जु रोग है, वाजीके ह्वै जाहि ॥ ३ ॥
रहे मास जे षट अहैं, तिनमें दूषण नाहिं ॥
जैसी मेहनत चाहिये, तैसी लीजै ताहि ॥ ४ ॥

अथ मैजलिकी विधि ।

दोहा–मैजलि कारि द्वै कोसपर, लीदि पेशाब कराइ ॥
पानी दीजै ताहिको, मूठिक घास खवाइ ॥ १ ॥
चहै तेतनी दूरि लगु, हयको लीन्हें जाहि ॥
वाजी ताको भरत नाहिं, या विधि चढत जुआहि ॥ २ ॥
उतरै हयको फेरि जब, तब यह औषधि देइ ॥
टका एक भारि फिटकरी, दूनि मिठाई लेइ ॥ ३ ॥
हयको देइ खवाइ सो, टहलावै घारि चारि ॥
तब लै आवै थान पर, जीनहि धरै उतारि ॥ ४ ॥
अरग्गीरको राखिये, तुरी पीठि पर जानि ॥
कैजा कीजै तासुको, श्रीधर कहत बखानि ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाजीकी छाती विषे, मलवावै बहुबार ॥
की हत्थीकी घासते, कै हयको सुखसार ॥ ६ ॥

अथ रथलायक वाजी फेरैकी विधि ।

दोहा—प्रथम वाजिको फेरिये, रासिन पर हय जानि ॥
चलै ठीक पर अश्व जो, ता विधि कहौं बखानि ॥ १ ॥
कीजै कँडरा लोहको, तापर ऊन मढाइ ॥
ता पर चाम मढाइये, ताकी यह विधि आइ ॥ २ ॥
हयकी गरदनि माहिमें, देहु ताहि डरवाइ ॥
ताहि डारिकै फेरिये, जब वाको सहिजाइ ॥ ३ ॥
तामें दूनौ तरफ कारि, रसरी दुइ बँधवाइ ॥
जब लौं रसरी नाहिं सहै, तबलौं फेराति जाइ ॥ ४ ॥
फिरि उन रसरिन माहिमो, हलुक काठ बँधवाइ ॥
रसे रसे तेहि काठको, करति गरुव सो जाइ ॥ ५ ॥
हयके कांधे माहिमो, जब ठट्ठा परिजाइ ॥
तब तेहि बांधे काठ पर, देहु सवार चढाय ॥ ६ ॥
सो दुहुँ रासन हाथलै, नितप्राति फरात जाइ ॥
या विधि हय फिरि जाइ जब, रथमें देहु लगाइ ॥ ७ ॥
शास्त्र चलावन जौन विधि, कहो सवारी माहिं ।
ग्रंथ होत विस्तार अति, यासों वरणो नाहिं ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीफेरनाविधिवर्णनो
नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अग्निपुराणोक्त अश्वशांति । शालहोत्र उवाच ।

श्लोक--अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्द्दिनीम् ।
नित्यां नैमित्तिकीं काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरञ्च श्रियमुच्चैःश्रवाह्वयम् ।
हयराजं समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥
द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत् ।
आश्वयुक्छुक्लपक्षस्य पञ्चदश्यां च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत् ।
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४ ॥
घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान्दिक्षु दद्यात्सवल्लकान् ।
यवाज्यं जुहुयात् प्रार्च्य यजेदश्वांश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु ।
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैर्विष्णुं श्रियं यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माणं शङ्करं सोममादित्यं च तथाश्विनौ ।
रेवन्तमुच्चैःश्रवसं दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुम्भैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत् ।
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान् देवतानां शतं शतम् ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥ ८ ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशांतिर्नाम नवत्यधिकद्वि-
शततमोऽध्यायः ॥ २९० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ
शालहोत्रसंग्रह प्रारम्भ ।

अथ चिकित्साकाण्ड प्रारम्भ ।

दोहा—कहत चिकित्साकांड अब, शालहोत्र मत जानि ।
विविध भाँतिके रोग जे, होहिं जासुते आनि ॥ १ ॥
धातुकोपते होत है, रोग सकल विधि आनि ।
वात पित्त कफ रक्तकी, प्रकृति चारि विधि जानि ॥२॥
तिनमें कोई विषम भा, धातुकोप सो जान ।
ताते प्रथमहिं प्रकृतिको, कीन्हों इहाँ बखान ॥ ३ ॥

अथ वाजीप्रकृतिवर्णन ।

दोहा—प्रकृति तुरिनकी चारि विधि, प्रथम पित्तकी जानि ।
दूजी कफकी जानियो, तीजी वात प्रमानि ॥ १ ॥
चौथी जानौ रक्तकी, तिनकी जो पहिंचानि ।
ताको अब वर्णन करौं, जानि लेहु गुणखानि ॥ २ ॥

अथ वाजीकी पित्तप्रकृति वर्णन ।

दोहा—पित्ती होइ मिजाज जिहि, ताकी यह पहिचानि ।
तेज चीजको खाइ बहु, क्रोधवंत अरु मानि ॥ १ ॥
दौरै अतिही दूरिलौं, और जल्द अति होइ ।
रोआँ ताके साफ बहु, और मुलायम जोइ ॥ २ ॥
जलदी करत अहारमो, क्षुधावंत अति जानि ।
ऐसे लक्षण जाहि तनु, पित्त प्रकृति सो मानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कफप्रकृतिवाजी ।

दोहा—रोआँ पतरे होइँ अति, और चमक बहु जोइ ।
चाह करै घोडीन पर, और जल्द अति होइ ॥ १ ॥
दाना घासहि खाइ कम, बहुत देरतक जानि ।
ऐसो बाजी होइ जो, ताहि बलगमी मानि ॥ २ ॥

अथ वातप्रकृतिवाजी ।

दोहा—सूखी देही होइ सब, गर्दन सीधी जानि ।
रगैं देखाई देइँ बहु, मोटो रोम बखानि ॥ १ ॥
मोटा होइ शरीर जो, या विधि जानै सोइ ।
करै अहारै देर महँ, कहत सयाने लोइ ॥ २ ॥
रोवाँ मैले ताहिके, अरु घुघुँआरे जानि ।
दाना ताको कम पचै, मंदअग्नि अतिमानि ॥ ३ ॥
असवारी भारी नहीं, ताहि उठाई जाइ ।
राह चले थकिजाइ बहु, खट्टी चीजैं खाइ ॥ ४ ॥
ए लक्षण जामें मिलैं, वादी ताको जानि ।
शालहोत्र मत मानिके, श्रीधर कहो बखानि ॥ ५ ॥

अथ रक्तप्रकृति वाजी ।

दोहा—मीठी चीजैं खाइ बहु, छोटे रोम लखाइ ।
साफ तासुको बदन है, पतरी खाल देखाइ ॥ १ ॥
मोटा होइ शरीर बहु, अरु ढीलो नहिं होइ ।
क्रोधवंत सो होइ नहिं, बहुत जल्द लखि सोइ ॥ २ ॥
दाना घासहि खाइ बहु, जलदी करै अहार ।
राह चलेते थकत नाहिं, ऐसो तासु विचार ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह लक्षण जिहि बाजिकौं, रक्त प्रकृति तिहि जान ।
या सम वाजी और नाहिं, श्रीधर कहो बखान ॥ ४ ॥

अथ धातुवर्णन ।

दोहा—धातु चारि ए बाजितनु, तिनमें कोपै कोइ ।
तिहि वाजीके जानिये, उत्पति रोगकि होइ ॥ १ ॥
धातुकोपको जाइकै, कीजै औषधि ताहि ॥
तबहीं जानौ ताहिको, रोग दूर ह्वै जाहि ॥ २ ॥
नब्ज देखिकै होत है, धातुकोपको ज्ञान ॥
यहिते प्रथमहि नब्जको, कीन्हों यहाँ बखान ॥ ३ ॥
नब्ज वाजिकी होति है, आँखि बतानें माहि ॥
ताहि देखि जान्यो परत, कोपधातु जो आहि ॥ ४ ॥
आँखिन ऊपर पलक जो, देखौ ताहि उठाइ ॥
ताहि बताना कहत हैं, कोवा लगु जो आइ ॥ ५ ॥

अथ नाटिकावर्णन ।

दोहा—होइ गुलाबी रंग जो, अश्व बताना माहि ॥
तबहीं जानौ वाजिको, सब विधि नीको आहि ॥

अथ धातुकोप प्रथम पित्त ।

दोहा—जासु बताने माहिं मों, रंग जर्द अतिहोइ ॥
कोप पित्तको जानियो, शालहोत्र कहि सोइ ॥ १ ॥
होइ बताने माहि मों, रंग सफेदी आइ ॥
तबतौ जानौ वाजितनु, शरदी कोपी जाइ ॥ २ ॥
वही सफेदी माहिं जो, लघु छाले दरशाहिं ॥
तबहीं जानौ अश्वतनु, कोप वातको आहि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते छाले अस जानियो, कुटुका कुटुका होइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, वात कोप है सोइ ॥ ४ ॥
रंग बताने माहिं मों, कछुक सफेदी होइ ॥
तौन सफेदी होइ यों, चरबीके सम सोइ ॥ ५ ॥
कफ कोपेते जानियो, वाजीके तनुमाहि ॥
बलगम ताको कहत हैं, जानिलेहु लखि ताहि ॥ ६ ॥
जरदी मायल होइ जो, कछुक सफेदी आइ ।
तुरी बताने रंगमहँ, कफ अरु पित्त लखाइ ॥ ७ ॥
होइ बताने रंगमहँ, जरदी लाली आइ ।
रक्तपित्तको कोप है, जानिलेहु सुखमाइ ॥ ८ ॥

अथ खूनसे सफरा मिला ।

दोहा-अश्व बताने माहिमो, सुरखी अति दरशाइ ।
कोप रक्तको जानियो, सो गरमीते आइ ॥ १ ॥
थोरी सुरखी होइ जो, अश्व बताने माहि ।
तो थोरी गरमी लखी, बाजी तनुमें आहि ॥ २ ॥
स्याही मायल लालजो, अश्व बताना होइ ।
पित्त गिरत है खूनपर, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
खून जरत है अश्वतनु, जानिलेहु मनमाहि ।
शालहोत्र मत देखिके, यामे वरणो ताहि ॥ ४ ॥
तुरी बताने रंग जो, जामुनके सम होइ ।
बिलकुल जारिगा खून है, जानिलेहु जिय सोइ ॥ ५ ॥
जानौ ताहि असाध्य है, औषध करिये नाहिं ।
हठकरि औषध जो करै, होत असर नहिं आहि ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ चिकित्सा विधि ।

दोहा—प्रथमाह यह लाजिम अहै, होइ बिमारी कोइ ।
औषध ताकी कीजिये, सेहत जल्दी होइ ॥ १ ॥
औषध दीजै ताहिको, लीजै समय विचारि ।
गरमीऋतुमें गरमआति, नहिं दीजै निरधारि ॥ २ ॥
यहि प्रकारसों जानियो, शरदीऋतुमें मीत ।
औषध ऐसि न दीजिये, जो होवे आति शीत ॥ ३ ॥
वादीको अधिकार जो, तुरी मिजाजहि माह ।
तौ सब औषधमाहिमें, राखे तासु निगाह ॥ ४ ॥
सब बीमारी जे अहैं, कोई ऋतुमें होइ ।
वादीकी तदबीर यह, चही जरूरी सोइ ॥ ५ ॥
वादी कफको श्वेतरँग, जानिलेहु जिय सोइ ।
शरदी हयको है जबै, श्वेत बताना होइ ॥ ६ ॥
गर्म खुश्क जे औषधी, दीजै हयको लाइ ।
शालहोत्र यों कहत हैं, तुरत नीक ह्वैजाइ ॥ ७ ॥
सफराका रँग जरद है, हयको सो अधिकाइ ।
होइ बताना जरद तब, कहत मुनीनके राइ ॥ ८ ॥
होइ शरद तब औषधी, ताको दीजै लाइ ।
पित्तकोपको नाश तब, वाजीतनु ह्वैजाइ ॥ ९ ॥
रक्त प्रकृतिमें होत है, गरमीको अधिकार ।
रंग तासुको लाल है, कीन्हों यह निरधार ॥ १० ॥
रक्तकोप जब होत है, सुरख बताना होइ ।
रक्तप्रकृति है गर्मतर, श्रीधर वरणो सोइ ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औषध दीजै ताहिको, शरद खुश्कको लाइ ।
कोप रक्तको होइ जो, तुरत नीक ह्वैजाइ ॥ १२ ॥

अथ वाजी असाध्य परीक्षा ।

दोहा—गंधि देहमें भूमि सम, होइ बताना स्याह ।
ताको कहत असाध्य हैं, शालहोत्र मुनिनाह ॥ १ ॥
या विधि जाके देहमें, लक्षण परैं लखाइ ।
दोइ मासके भीतरै, तुरी सही मरिजाइ ॥ २ ॥
जरदी मायल स्याह जो, तुरी बताना होइ ।
जतन करै सो बहुत विधि, मरत वाजि है सोइ ॥ ३ ॥
कष्टसाध्य सो जानिये, ये लक्षण जहँ होइँ ।
तीनि मासके ऊपरै, मरत वाजि है सोइ ॥ ४ ॥

अथ जीभके असाध्य लक्षण ।

दोहा—बिंदु श्वेत जा वाजिके, जीभमाहिं परिजाइ ।
ताको कहत असाध्य हैं, शालहोत्र मुनिराइ ॥ १ ॥
बडी जतनसों मास यक, जीवत वाजी नाहिं ।
बिन कीन्हें जो जतनके, जानिलेहु मनमाहिं ॥ २ ॥
तप्तवस्तु भोजन करै, खारी चीजैं खाइ ।
परे बिंदु हैं जीभमें, तिनको दोष न आइ ॥ ३ ॥
पीत बिंदु जो जीभमें, बिन कारण परिजाइ ।
दोइ मासके भीतरै, अवाशि वाजि मरिजाइ ॥ ४ ॥
जाहि तुरीकी जीभमें, हरित बिन्दु परिजाइ ।
तीनि मासके ऊपरै, वाजी जीवत नाइ ॥ ५ ॥
चित्रित बिंदुक जीभमें, जा हयके ह्वैजाय ।
चारि मासके भीतरै, सही वाजि मरिजाइ ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जा वाजीके जीभमें, स्याह बिंदु परिजाहिं ।
चारि मासके ऊपरै, जीवत वाजी नाहिं ॥ ७ ॥
जाहि बताने माहिमें, पित्तदोष दरशाइ ।
तीनि कोनके श्वेत जे, बिंदु जीभ परिजाइ ॥ ८ ॥
षट महिनाके भीतरै, वाजी सो मरिजाइ ।
कहत सयानै लोग सब, शालहोत्र मत आइ ॥ ९ ॥
चंपाके रँग बिंदु जो, तुरी जीभ परिजाइ ।
मास सातयें वाजिको, अवशि नाश ह्वैजाइ ॥ १० ॥
हरदीके रँग बिंदु जो, वाजि जीभ परि जाइ ।
दशयें महिना अवशिकै, वाजी सो मरि जाइ ॥ ११ ॥
सुरख बिंदु जो वाजिके, जीभ माहिं ह्वैजाइ ।
मास सातयें लागते, तासु नाश ह्वै आइ ॥ १२ ॥
साखी वर्णहिं बिंदुसे, वाजि जीभ दरशाइ ।
मास ग्यारहें जानियो, वाजी सो मरिजाइ ॥ १३ ॥
जाकी रसना माहिमें, हिमिसम बिंदुक होइ ।
एक सालके ऊपरै, नाहिं जीवत है सोइ ॥ १४ ॥
नितप्रति बाढै श्वास जिहि, पुलकित अंग लखाइ ।
रसना ताको होइ जो, हिमि समान दरशाइ ॥ १५ ॥
षट महिनाके भीतरै, सो वाजी मरिजाइ ।
सो श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्र मत पाइ ॥ १६ ॥
दशन वसन अरु ग्रीवमें, गूंथीसी परिजाइ ।
मूत्र होइ युत रक्तके, सो वाजी मरिजाइ ॥ १७ ॥
शीतल जल पीवन चहै, शीतल छाँह सुहाय ।
सब विधि पित्तविकार जो, तासु बदन दरशाय॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब चेष्टा हैं याहि विधि, श्वेत बताना होय ।
ये लक्षण नहिं नीक हैं, जियत वाजि नाहिं सोय ॥ १९॥
पीडित वाजी वातसों, स्याह बताना होइ ।
तीनि मासके ऊपरे, जियत वाजि नहिं सोइ ॥ २० ॥
पीडित वाजी पित्तसों, नेत्र जर्द ह्वैजाय ।
कष्टसाध्य तिहि जानिये, सतयें मास नशाइ ॥ २१ ॥
जा वाजीके होइ बहु, रंग बताना माहिं ।
घर्घराइ बहु श्वासते, जीवत वाजी नाहिं ॥ २२ ॥
एक बताना लाल अति, नील वर्ण यक होइ ।
पीत वर्ण है देह सब, अरु सूखीसी जोइ ॥ २३ ॥
एकमासमें मरत सो, जानिलेउ तुम मीत ।
कैसो अच्छी देइ जो, औषध करिके प्रीत ॥ २४ ॥
जा वाजीकी देहमें, पित्तदोष अधिकाइ ।
घर्घराइ गल श्वासते, वर्षाऋतुको पाइ ॥ २५ ॥
पक्षभरेमें अवाशि करि, सो वाजी मरि जाइ ।
कोटि जतन कोऊ करै, नाहिन तासु उपाइ ॥ २६ ॥
जीभ स्याह ह्वै जाइ जिहि, दशन स्याह ह्वैजाहि ।
और बताने माहिमों, पित्तदोष दर्शाहि ॥ २७ ॥
आठ रोजके भीतरे, सो वाजी मरिजाइ ।
कवि श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्र मत पाइ ॥ २८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतचिकित्साकांडे वाजीप्रकृति वा नाडीपरीक्षा वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ दूतपरीक्षावर्णन ।

रोगी बोलै वैद्यको, दूत गयो जो होइ ।
करे परीक्षा ताहिकी, वैद्य विचक्षण जोइ ॥ १ ॥
चेष्टा भाषा वेष अरु, पुनि तारागण जानि ।
वेला तिथि मन देहते, दूत परीक्षा मानि ॥ २ ॥
वैद्य होइ जा थल विषे, सोऊ लेइ विचारि ।
सूचक शुभ अरु अशुभके, लक्षण ये निरधारि ॥ ३ ॥
नारि नपुंसक कन्यका, और असुर आमानि ।
स्यंदन खर आरूढको, किये होइ जो जानि ॥ ४ ॥
वस्त्र इतर हैं पांडुते, मलिन आइकी होइ ।
की सो जीरण वस्त्र है, कीतौ फाटे जोइ ॥ ५ ॥
न्यून अधिक अँगदूतके, उद्भट चित की होइ ।
विकित जाके अंग हैं, रूप भयंकर जोइ ॥ ६ ॥
निष्ठुर रूक्ष अमंगलौ, बोलै वाणी आनि ।
कितौ साथ नर होइँ बहु, निन्दित दूत बखानि ॥ ७ ॥
तिनुका खोटति होइकी, की कुछ काटति होइ ।
की नासा स्तन विषे, हाथ लगाये सोइ ॥ ८ ॥

सोरठा—रगरति कपरा होइ, नासा कच अरु रोम पर ।
दूत अमंगल सोइ, कीतौ पोंछे हाथ निज ॥

दोहा—गोपनी फाँसी हाथमें, मीजति कपरा होइ ।
पहिरे माला अरुणकी, तेलु लगाये सोइ ॥ १ ॥
हृदय कपोल ललाटमें, हाथ लगाये देखि ।
हाथ धरेकी कानपर, दूत निषिद्ध विशेखि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या कोउफल करमें लिये, चंदन अरुण लिलार ।
वस्तु असारक होइ कर, ऐसो दूत नकार ॥ ३ ॥
कर्दम लाये अंग निज, की कछु फेंकति होइ ।
माटी फारत हाथसों, विक्रित रूपहि सोइ ॥ ४ ॥

सोरठा—भूमि लिखत सो होइ, हाथ चरणकी आँगुरिन ।
कीतो खोंटति सोइ, नखते नखको जानिये ॥

दोहा—चरण दबाये हाथ निज, की कुम्हडा लिये हाथ ।
कीतो पीडित रोगसों, दूत दोय यक साथ ॥ १ ॥
किये आचरण दुष्ट तनु, विक्रित तनै लखाहि ।
दीरघ लेइ उसाँसकी, कीतो रोवत आहि ॥ २ ॥
कीतो दक्षिणमुख खडो, की कर जोरे आनि ।
एक चरण ठाढो विकल, दूत अमंगल खानि ॥ ३ ॥
दंड लिये की हाथमें, शास्त्र होइ की पानि ।
मुनिनायक यतने कहे, निंदित दूत बखानि ॥ ४ ॥

अथ वैद्यस्थानवर्णन ।

दोहा—खपरी पाथर भस्म औ, भूति हाड अरु आगि ।
इनयुत स्थल वैद्य ढिग, आवै दूत अभागि ॥

अथ वैद्यदर्शन— चौपय्या छंद ।

दक्षिण दिशि मुख कीन्हें होइ । तैल लगाये अशुची सोइ ॥
अमनीर युक्त अरु विकल अंग । कछु होइ पियारी वस्तु भंग ॥
देव पितर कृत कर्म होइ । की क्षौर कर्ममें उदित सोइ ॥
स्थान अशुचिमें वैद्य होइ । क्षिति शयन किये पुनि श्रमित सोइ ॥
की क्षौर करति वरतक्रसान । भोजन विचरत ये अशुभ जान ॥
उत्पात समय सो प्राप्त होइ । सब केश छुटे जो वैद्य सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—वैद्य होइ या भांतिसों, दूत वैद्यढिग जाइ ।
रोगी निश्चयके मरै, नाहिन तासु उपाइ ॥

अथ वेलादूषित वर्णन ।

दोहा—तीनो संध्या अर्द्धनिशि, दूषित वेला जानि ।
इनमें आवै दूत जो, होइ अमंगल खानि ॥

अथ तिथिदूषित वर्णन ।

दोहा—रिक्तातिथि षष्ठी सहित, और कही संक्रांति ।
इनमें आवै दूत जो, नहीं रोगकी शांति ॥

अथ नक्षत्रदूषित ।

दोहा—भरणी अश्लेषा बहुरि, मघा आर्द्रा मूल ।
और पूर्वा कृत्तिका, ये नक्षत्र सम शूल ॥

अथ शुभदूतवर्णन ।

छन्द—रूपश्यामरो सुंदर होई । गौर स्वरूप मनोहर सोई ॥
शुक्ल वस्त्र धारे सो आहि । ये कहै दूत मुनिवर सराहि ॥

दोहा—दूत होइ निज गोत्रको, कीतो अपनी जाति ॥
रोगी छूटे रोगसों, वैद्य होइ यशख्याति ॥ १ ॥
कीतो पेदर दूत हो, कितो किये गोजान ॥
कितो होइ कालज्ञ सो, कीतो स्मृतिवान ॥ २ ॥
अलंकार तनमें लसै, सुन्दर जाको रूप ।
ललित वचन मुखते कहै, ऐसो दूत अनूप ॥ ३ ॥

छप्पय—दूत होइ स्वाधीन शास्त्रमें होइ विचक्षण ।
लोकरीतिमें चतुर वचन बोलै शुभ लक्षण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निपुण दूत पुनि होइ अलंकार युत वस्त्र वर ।
लखिय दूत या भांति जानिये सब सिद्धिकर ॥
मुख पूरब करि बोलै वचन वैद्य होइ अरु स्वस्तिचित ।
यह दूत परीक्षा मुनि कही सो रोगीको होइ हित ॥

अथ वैद्यदर्शन ।

दोहा—पूरब दिशिको मुख किये, बैठ वैद्य या भांति ।
अस्थल होइ पवित्र पुनि, रोग होइ सब शांति ॥ १ ॥
श्वेत वसन तांबूल मुख, पंकज करमें होइ ।
पूर्वदिशा स्थित भयो, दूत जानु शुभ सोइ ॥ २ ॥
बोलै गिरा प्रबीन अति, कीतो वचन रसाल ।
दूत होइ या भांति जो, जाइ रोग ततकाल ॥ ३ ॥
फल अक्षत दधि द्रव्य युत, देख्यो वैद्य विचारि ।
शुभवानी मुख दूतकी, जाइ रोग सब झारि ॥ ४ ॥

अथ दूतमुखवर्णपरीक्षा ।

दोहा—दूत कहे मुखवर्णते, दूनो करो निशंक ।
भाग लेहु पुनि तीनिको, जीवे रहे जु अंक ॥

अथ दूतपरीक्षाचक्रम् ।

६	३	२	४	७	६	४	३	१	२०	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

दोहा—द्वादश रेखा ऊर्द्धकारि, पटरेखा सम जानि ।
ता ऊपरकी पांतिमें, भरो अंक ये आनि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंग राम पुनि पक्ष लिखि, वेद बार रस जानि ।
युग गुण शशिकर रंध्र कहि, लिखो अंक ये आनि॥२॥
अकारादिस्वर दीर्घ लघु, लिखो दूसरी पांति ।
कवर्गादि पुनि वर्ग सब, भरौ चक्र या भांति ॥ ३ ॥
दूतनामके वर्ण स्वर, ता ऊपर जे अंक ।
जोरि करौ यकतीर सब, जानिलेहु निरशंक ॥ ४ ॥
रोगी नामहि वर्ण स्वर, वही भाँति गनि लेहु ।
जुदे जुदे करि दुहुँनको, भाग आठको देहु ॥ ५ ॥
रोगीनामहि अंक बढि, दूत नाम ते होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जीवै रोगी सोइ ॥ ६ ॥
रोगीनामहि अंक गनि, दूत नाम जे अंक ।
ताते सम अरु हीन जो, रोगी मरे निशंक ॥ ७ ॥
दूतपरीक्षा वैद्य करि, रोगीके गृह जाइ ।
रोगी छूटै रोगसों, सुयश तासु अधिकाइ ॥ ८ ॥

अथ वैद्यचलैके समयको शकुन ।

दोहा—रीतो घट आगे मिलै, की आमिष दृग दोखि ।
विप्र मिलै जो तिलक युत, है शुभ शकुन विशेषि॥ १॥
वेणु वीण अरु दुंदुभी, शंख भेरि सहनाइ ।
मेघ सिंह गज धेनु कहि, शब्द इते सुखदाइ ॥ २ ॥
निज दाहिन जो लखिपरै, विषम कुरंग सुजान ।
रोगी छूटै रोगसों, होइ वैद्य यशवान ॥ ३ ॥

चौपाई—मिलै जो आगे कन्या आई । पुत्रसहित युवती दरशाई ॥
फल अरु फूल लिये कर सोई । दोखिपरै अस पूरुष कोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अशकुन ।

दोहा—मारग काटे अग्र ह्वै, गिरगिटश्वानशृगाल ।
देखिपरे जो गिद्ध पुनि, अशकुन अहै कराल ॥ १ ॥
सजल कुंभ या पतित कछु, वृक्षपात भुवि होइ ।
और ज्वालित ग्रह देखिये, अशकुन जानो सोइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतचिकित्साकांडे दूतपरीक्षा-
शुभाशुभवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ शिरामोक्षण फस्तखोलना ।

दोहा—प्रथम दवाईको करै, जो नाहिं होइ अराम ।
तबतौ लीजै फस्तको, ताके वरणौं ठाम ॥ १ ॥
शिरा एक है जीभ तर, सो वह खोली जाइ ।
दिलमें गरमी होइ जो, सो नीकी ह्वैजाइ ॥ २ ॥
पक्के पाव भरेते, ज्यादा खून न लेइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, ऐसे फस्ताहि देइ ॥ ३ ॥

दूजी रग तालूकी ।

चौपाई—तालूकी रग वरणौं भाई । दांततीरते सीठी ताई ॥
सीठी दोइ छोंडिकै जानौ । तिसरी सीठीके तर मानो ॥
नस्तर देइ शिरावहिकेरो । गुणिजन शालहोत्र मत हेरो ॥
ज्वर दीमाग जिगरको खोवै । रुधिर आधसेर पक्का लेवै ॥

तीसरीजगहफस्तलेनेकी विधि ।

चौपाई—ओठनके भीतरमें देखो । छाला ऐस परे औरेखो ॥
तिहिते अश्व घास नाहिं खाई । मुँहते पानी गिरत सदाई ॥
तेहिकी दवा यहै करवावै । दोनौं हाथसे ओठ उठावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते छालनमें नस्तर लेई । ऊपर नमक चुपारि सो देई ॥
मलिकै नमक धोइ फिरि डारै । होइ अराम अश्व निरधारै ॥

चौथीरगफस्तलेनेकी विधि।

दोहा—आँखितरे रग एक है, ऊपर दूजहि होइ ।
दूऔ तरफसों होति है, खोलाति है रग सोइ ॥ १ ॥
गरमी होइ दिमागमें, अरु भौंरी जो होइ ।
ताही रगको खोलिये, तुरतहि नीको जोइ ॥ २ ॥
लीजै खून छटाँकभरि, ज्यादा ना ह्वैजाइ ।
कमती होइ तौ दोष नहिं, शालहोत्रमत आइ ॥ ३ ॥

छठी रग फस्तलेनेकी विधि।

दोहा—मथुननमें रग होइ यक, सो वह खोलीजाइ ।
जोनी विधिसों खोलिये, सो अब कहौं उपाइ ॥ १ ॥
पूजमालको दीजिये, प्रथमहि नथुना माहि ।
नथुना पकरै हाथ इक, तामधि देखै ताहि ॥ २ ॥
खूब ध्यानकरि देखिये, जबहीं रग दरशाइ ।
तामें नस्तर मारिये, शिरामोक्ष ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
जो अति असवारी विषे, हफ्फति वाजी होइ ।
ताकी यह रग खोलिये, अतिहि फायदा सोइ ॥ ४ ॥
खून तासुको लीजिये, आधपाव परमान ।
ज्यादा लीन्हें होत है, अवगुण ताहि सुजान ॥ ५ ॥

अथ सतईं रग फस्तलेनेकी विधि।

दोहा—कानतरे रग एक है, जहां कनगुदी आहि ।
दोऊ तरफन होति है, ध्यान किये दरशाहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खून निकारै ताहिते, आधसेर यह जानि ।
ताते निकसत खून है, गर्दनको यह मानि ॥ २ ॥
शिरके जितने रोग हैं, औरौं कहौं बखानि ।
सूजनि गरके भीतरै, तिन्हैं फायदा जानि ॥ ३ ॥
खुश्की होइ दिमागमें, और रोग सबजाहिं ।
गर्दनकी सूजनि मिटै, सो जानौ मनमाहिं ॥ ४ ॥

अथ अठईं रग फस्तखोलनेकी विधि ।

दोहा—गर्दन मारग होति है, तरफ दुहुँनमें जानि ।
फस्त खोलिये ताहिमें, वाजीको सुखदानि ॥ १ ॥
पीडित होइ खरिस्तिते, अरु बर्साती होइ ।
ताकी यह रग खोलिये, अती फायदा सोइ ॥ २ ॥

नवईं रग ।

दोहा—दूनौ सीननपर अहै, एक एक रग जानि ।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह मानि ॥ १ ॥
जाके सीनाबंद जो, बहुत दिननते होइ ।
यह रग खोलै ताहिके, ताको गुण अतिजोइ ॥

दशईं रग ।

दोहा—दोनों अगिले पाँवमें, होत एक रग आइ ।
परकी रग सो जानिये, सोऊ खोली जाइ ॥ १ ॥
सब देहीमें रक्त जो, निकसत तासों जानि ।
खून निकारै ताहिते, पक्को सेरहि मानि ।

ग्यारहवीं रग ।

दोहा—तंग तरे रग होति है, फस्त तहाँ लै लेइ ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा देइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होइ बिमारी पीठिमें, औरौ कटिमें जानि ।
सोवतमें बर्राति है, ताहि फायदा मानि ॥ २ ॥
सपना देखै बहुतसो, औ उठि ठाढो होइ ।
नींद परति नाहिं ताहि को, सोऊ नीको जोइ ॥ ३ ॥
याते खून निकारिये, पक्के पाव प्रमान ।
ज्यादा होने देइ नहिं, नहिं कमती सकजान ॥ ४ ॥

बारहवीं रग ।

दोहा—पछिले दोऊ पाँवमें, गाँठिन ऊपर जानि ।
तहाँ होति है एक रग, पटरग ताहि बखानि ॥ १ ॥
पछिले धरको खून जो, ताते निकसत आहि ।
खून लीजिये सेरभरि, दोनों पावन माहि ॥ २ ॥

तेरहवीं रग ।

दोहा—और एक रग होति है, चारिउ पायन माहिं ।
बँधो मुजम्मा जाति जहँ, तुरी गामचिनमाहिं ॥ १ ॥
सो रग है बारीख अति, जानिलेहु सुखदानि ।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह जानि ॥ २ ॥
जखम होइ सुममाहि जो, रोग पेटमें होइ ।
की गरुहाउट पेटमें, तौ रग खोलै सोइ ॥ ३ ॥
फस्त खोलना ताहिको, बहुत मुनासिब जान ।
शालहोत्र मुनिके मते, सो लीजै पहिचान ॥ ४ ॥
पट्टी बांधै ताहिमें, अति मजबूताहि सोइ ।
वह पट्टी खुलि जाइ जो, तो न फायदा होइ ॥ ५ ॥
ताते वाजिब है सबै, पट्टीकी अंदाज ।
किये रहै मजबूत तेहि, तीनि रोज लगु साज ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो खुलिजाइ कदाचि वह, जारी होवे रक्त ।
शालहोत्र मत देखिकै, बाँधौ ताको सख्त ॥ ७ ॥
सोरठा—तीनि रोज पश्चात्, खोलै पट्टी पाँवकी ।
अश्व निरुज ह्वैजात, यह गति जानौ ताहिकी ॥

अन्य रग ।

दोहा—बाजीकी ठेरी कहैं, अगिले सुममें होइ ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा सोइ ॥ १ ॥
नालके भीतर होत है, नालबंदको काम ।
कफी वगैरह रोग जे, ते नाशैं अभिराम ॥ २ ॥

अन्य रग ।

दोहा—पूँछ माँहिं रग होति है, जरते आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिये, शिरामोक्ष निरधार ॥ १ ॥
पूँछ हाथते पकारिकै, नापै आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिकै, काढै खून सुधारि ॥ २ ॥
खून निकारै ताहिते, पक्का आधासेर ।
रसूबंद जो रोग है, ताहि फायदा ढेर ॥ ३ ॥

अथ शिरामोक्षणके मुख्यस्थान ।

दोहा—सीनेकी रग जानिये, और गरेकी मानि ।
तालूकी रग होति जो, अरु नथुनाकी जानि ॥ १ ॥
आगिले पाछिले पाँवमें, दोइ रगैं जे होइँ ।
अंडकोशकी एक रग, अरु छालै मुहँजोइ ॥ २ ॥
आठ रगैं ये मुख्य हैं, सो मैं कही बखानि ।
अंडकोशकी होति रग, अंड पिछारी मानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंडकोश सूजै जबै, की चढिजाँय सुजान ।
तबै खोलना फस्त यह, बहुत मुनासिब मान ॥ ४ ॥
वाजीको बल जानिकै, और समय पहिचानि ।
नाडी मोक्षण तब करै, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ फस्तलेनेको समय ।

दोहा—सावन आश्विन चैत्र पुनि, इन महिननको पाइ ।
फस्त वाजिके लीजिये, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ १ ॥
होइ महीना और जो, रोग वाजि तनु होइ ।
विना फस्त सो जाइ नाहिं, ताकी यह विधि जोइ ॥ २ ॥
गरमीकी ऋतु होइ जो, शरद बखतको पाइ ।
नाडीमोक्षण कीजिये, वाजीको सुखदाइ ॥ ३ ॥
वर्षामें जा दिन विषे, बादर नाहीं होइ ।
मोक्षण नाडीको करै, तुरतै नीको जोइ ॥ ४ ॥
जिन महिननमें शरदऋतु, अती शीत दरशाइ ।
धूप होइ दुपहर विषे, खोली रग तब जाइ ॥ ५ ॥
प्रथमहि हय टहलाइये, गरम कछू जब होइ ।
तब तौ खोलै फस्तको, तुरतै नीको जोइ ॥ ६ ॥
आश्विनसम कार्तिक अहै, चैत्रैसम बैशाख ।
अषाढ सावन एक सम, शालहोत्रमत भाष ॥ ७ ॥
कवि श्रीधर चितचाउ करि, शालहोत्र मत जानि ।
नाडीमोक्षण विधि कही, वाजीको सुखदानि ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत चिकित्साकांडे वाजीशिरामोक्ष-वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ चिकित्सावर्णन ।

दोहा—धातुकोपते होत है, वाजीतनुमें रोग ।
ताको कहत निदान अब, अरु औषधी प्रयोग ॥ १ ॥
वात पित्त कफ रक्त जो, तिनमें कोपे कोइ ।
बाजीके तनु माहिमें, रोग सु उत्पति होइ ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तके, दोष लेइ पहिचानि ।
तबहीं औषधिको करै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
एक धातुको कोप कहुँ, कहूँ दोइको होइ ।
कोपै धातुहि तीनि कहुँ, कहूँ विषम सब सोइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तपित्तके कोपको निदान वर्णन ।

दोहा—खजुरी तनुमें होइ कहुँ, अरु धाँसत हय होइ ।
मुँहते पानी चलत है, ऐसे लक्षण जोइ ॥ १ ॥
शीतल जल अतिही चहै, चाहै शीतल छाँह ।
बहु भोजन पर मन रहै, शीतल वस्तुहि चाह ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

चौ०—कुटकी एक टकाभरि लीजै । लालि मिठाई ता सम कीजै ॥
प्रातहि उठि नित ताहि खवावै । रोग घटै बहु भूँख बढावै ॥
दोहा—कही एक मौताज यह, जानि लेहु मनमाहि ।
सात दिवस लगु दीजिये, रोग नाश ह्वैजाहि ।

अथ पित्तकोपते असाध्य लक्षण ।

दोहा—मैलु कढै आँखिन विषे, बार बार हिहनाइ ।
आँसू आवत जाहिं बहु, लेहु जाहि यहि भाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होइ बताना स्याह यक, होइ एक अतिपीत ।
ताकी औषधि नहिं करो, जानिलेहु यह मीत ॥ २ ॥

अथ वातरक्तकोप वर्णन ।

दोहा–वात रक्तको कोप जब, वाजीके तनु होइ ।
श्वास चले अतिजोरसे, दोष वातको सोइ ॥ १ ॥
बार बार बैठै उठै, पोढै पाँइ बढाइ ।
अंग मरोरै बार बहु, बार बार जमुहाइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

चौ०–आध पाव त्रिफलाको लीजै । घीमें सानिकै पिंडी कीजै ॥
सो वाजीको देउ खवाई । सतयें रोज नीक ह्वैजाई ।
दोहा–आध पाव मौताज यक, सात रोज लगु देइ ।
रोग घटै अरु बल बढै, नीको वाजी लेइ ॥ १ ॥
वातरक्तके दोषमें, ये लक्षण दरशायँ ।
काटै अपनी देहको, अति सरोष ह्वैजाइ ॥ २ ॥
एक बताना लाल अति, एक श्वेत दरशाइ ।
जानो ताहि असाध्य है, जियत नहीं सो आइ ॥ ३ ॥

तिसकी दवा ।

चौपाई–मासाभरि अभ्रकरस लेहू । सोरह मासे अदरख देहू ।
दुवौ मिलैकै देहु खवाई । नीक तीनि दिनमें ह्वैजाई ॥
दोहा–मासाभरि मौताज यक, हयको देहु खवाइ ।
नीको वाजी होइ सो, चंडी जाहि सहाइ ॥

अथ श्लेष्मरक्तकोपवर्णन ।

दोहा–वाजी धाँसै अधोमुख, दाना घास न खाइ ।
जल्द चलै नहिं राहमें, पावक घाम सुहाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानि परत नाहिं ताहिको, चाबुक मारे कोइ ।
नथुनाते पानी चले, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

दोहा—नाडीमोक्षण कीजिये, अगिले पाँयन माहि ।
तब औषधको दीजिये, तुरी नीक ह्वैजाहि ॥

चौ०—चारि टकाभारि सोंठि मँगावे । ता सम गुड लाले मिलवावे ॥
पिंडी दीजे ताहि खवाई । सतयें दिन नीको ह्वैजाई ॥

दोहा—चारि टका मौताज यक, हयको देहु खवाय ।
यहि विधि कीजे सात दिन, जल्द नीक होजाइ ॥

अथ पित्तश्लेष्माको कोप ।

दोहा—येई लक्षण होंइ सब, औरो कछु दरशाइ ।
खीसे काढे बार बहु, मुँह नीचे लटकाइ ॥

तिसकी दवा ।

चौ०—यक औषध सब लेहु मँगाई । ताहि बराबरि सौंफ मिलाई ॥
पिंडीकरि घोडाको दीजे । सात दिवसमें नीको लीजे ॥

अन्य दवा ।

दोहा—सोंठि मिर्च गुड पीपरी, मोथा और मिलाइ ।
जेठीमाई हींग लै, समभागहि तौलाइ ॥ १ ॥
दोइ टकाभरि लेइ सब, पिंडी एक बनाइ ।
जानो यह मौताज है, प्रातहि देहु खवाइ ॥ २ ॥
या विधि दीजे सात दिन, शालहोत्र मत जानि ।
रोग घटे अरु बल बढे, होइ क्षुधा बहु आनि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—सैंधव सोंठि बराबरि लीजै । कूटि कपरछन ताको कीजै ॥
नासु तासुको वाजिहि दीजै । नीको होइ रोग सब छीजै ॥

अथ वातरक्तको कोप ।

दोहा—डोरा आँखिन माहिके, श्वेत लाल दरशाइँ ।
कोखी दोनों ताहिकी, नितप्रति फूलति जाइँ ॥ १ ॥
एक तीर ठहराइ नाहिं, नितप्रति बाढै श्वास ।
बार बार हिहिनाइ बहु, ये लक्षण करि खास ॥ २ ॥

तिसकी औषध ।

चौ०—जीभ माहिं रग देहु खुलाई । ता पीछे घृत देहु खवाई ॥
घृतकी विधि सब आगे कही । टका दोइ मोताजहि लही ॥
दोहा—सात दिवस लगु दीजिये, टका दोइभारि लाइ ।
रोग घटै अरु बल बढै, क्षुधा बहुत अधिकाइ ॥

अथ वातपित्तको कोप ।

दोहा—लाल बताना एक है, एक श्वेत दरशाइ ।
मुँहमें खजुरी होइ अरु, नितप्रति धांसति जाइ ॥ १ ॥
दाना घासहि खाइ नाहिं, अरु टापति बहु आइ ।
चौंके बारंबार बहु, सो असाध्य दरशाइ ॥ २ ॥
ताकी औषधि नाहिं करै, सही वाजि मरिजाहि ।
वातपित्तको कोप यह, जानिलेहु मनमाहि ॥ ३ ॥
मुखमें कंडू होइ नाहिं, उदर मध्य खजुआइ ।
येई लक्षण होंइ सब, वाजीके तनुमाइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कफको जानौ दोष तौ, सोउ साध्य नहिं आइ ।
ताकी औषध यह करै, सही नीक ह्वैजाय ॥ ५ ॥
गुरच पीपरी हींग अरु, ककरासिंगी आनि ।
अरु महुरेठी लीजिये, समकरि सबको सानि ॥ ६ ॥
यहि औषधको कीजिये, दोइ टकाभरि लाइ ।
नव दिन कीजै याहि विधि, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ ७ ॥

अथ कफ पित्त वात रक्त कोप ।

दोहा—वात पित्त कफ रक्त जहँ, चारिउ कोपे होइँ ।
सन्निपात तहँ जानिये, बिरले जीवत कोइ ॥ १ ॥
कहूँ अधिक है धातु यक, दोइ अधिक कहुँ होइ ।
कोपी धातुइ तीनि कहुँ, जानिलेउ जिय सोइ ॥ २ ॥

अथ रक्तदोष अधिक सन्निपात लक्षण ।

दोहा—नेत्र माहिं आँसू चलैं, औ हृफाहि हय होइ ।
आँखी मूँदे सोरहै, धौंक लागि बहु जोइ ॥ १ ॥
बोलत नाहि न जोरसों, दाना घास न खाइ ।
रक्त अधिक सनिपातके, ये लक्षण दरशाइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

दोहा—खून निकारै जीभसों, कीतो पाँवन माहि ।
दीजै दाना घास नहिं, पानी दीजै ताहि ॥ १ ॥
गरमीकी ऋतु होइ जो, जल शीतल करि देइ ।
जाडेकी ऋतु माहिमें, उदक कूपको लेइ ॥ २ ॥
वच अरु कुटकी लीजिये, गाई मूत्र पकाइ ।
दोइ टकाभरि दीजिये, वाजि नीक ह्वैजाय ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औषधि लीजै भाग सम, नवदिन देहु खवाइ ।
भूँख बढै अति ताहिको, सन्निपात मिटिजाइ ॥ ४ ॥

अन्य सन्निपातलक्षण ।

दोहा—कान दुओ ठाढे रहैं, औ अति कांपति होइ ।
बार बार खाँसति रहै, आँखी मूँदै सोइ ॥ १ ॥
परे रहैं झप्पान अरु, लार बहति अतिहोइ ।
नाभि निकट सो जानियो, मल ताके है सोइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

दोहा—जीभ माहिं रग छेदिये, अरु लंघन करवाइ ।
औषध दीजै ताहिको, रोग नीक ह्वैजाइ ॥ १ ॥
पित्तपापरा गुर्च वच, कुटकी और मँगाइ ।
इनको कीजै भाग सम, कूपोदकसन खाइ ॥ २ ॥
दुइ पलकी मौताज यक, साँझ सकारे देइ ।
नवदिन दीजै याहि विधि, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥
जल देवेकी विधि कही, ताही विधिसे देइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, तुरी नीक सो लेइ ॥ ४ ॥

अथ सन्निपातते मंदाग्नि होइ ताकी दवा ।

चौपाई—सन्निपात नीको ह्वैजाई । मंदआग्नि ताके रहिजाई ॥
ताको यह औषध करवावै । ताहि क्षुधा अतिही सरसावै ॥
दोहा—सिरसाकेरे फूल जो, बेत लेउ मँगवाइ ।
दोइ टकाभारि भाँग सम, वाजिहि देउ खवाइ ॥ १ ॥
शाम सबेरे दीजिये, या औषधको लाइ ।
दीजै ताको सात दिन, भूँख बढाति अति जाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्निपात संक्षेपसों, दीन्हों इहाँ बताइ ।
लक्षण युत अरु औषधी, कहे अगारी आइ ॥ ३ ॥
धातुकोप वर्णन कियो, शालहोत्र मत देखि ।
अरु औषध श्रीधर कही, वाजिनको हित पेखि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह कविकेशवदासकृत धातुकोपवर्णनो-
नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ आठौ ज्वर स्वरूप नाम लक्षण उत्पत्ति वर्णन ।

कुण्डलिया—आठौ ज्वर शिवकोपते प्रगट भये संसार ।
प्रथम विभत्स त्रिशिरा कपिल चौथे भस्मप्रहार ॥
चौथे भस्मप्रहार त्रिपद पिंगाक्ष बखानौ ।
लंबोदर भैरौं बखानकै ई सब नाम प्रमानौ ॥
कहि धन्वंतर अत्रि और अश्वनी सुखेनै ।
सकल जक्तको नाशकार प्राणन दुख देनै ॥

अथ बीभत्सज्वर । देखो चित्र नम्बर १०५.

कवित्त—वैद्यशास्त्रमें विधान लिखे रूप रंग जान, प्रगट शिव-कोपमान मानिये विश्वासै ॥ रुधिर भीज वसन जाल अतिबल बहु नेत्र लाल, क्रोधी महा मुंडमाल सबको मद नासै ॥ देही कृमी अक्षि तीन और अंग है मलीन, कज्जलसम अंग वरन नग्न-रूप भासै ॥ नाश जक्त करनहार देहमें दुगंधधार, पूषा द्विज नाशकर विभत्सज्वर प्रकाशै ॥

अथ त्रिशिरज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०६.

कवित्त—शंकरजू कोप कीन ज्वरको प्रगट कीन, आँखी नव-चर्ण तीन कामी बड भारी है ॥ जाँघै साखू वृक्ष मानौ लाली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाली आँखी जानौ, अतिक्रोधी सो बखानौ तीनि शीश धारी है ॥ रसना कपोल चाटै वैद्यशास्त्र भाषत है, नीलवर्न भासत है हाथ पट कारी है ॥ अस रूप कीन धारी स्वेदअक्ष अंतकारी, मुनि वृन्द यों पुकारी त्रिशिर नामधारी है ॥

अथ कपिलज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०७.

कवित्त—गौरीपति लोकनाथ भूतनके वृन्द साथ, कोप करि श्वास साथ या विधि उपजायो है ॥ ताके मुखते अँगार गिरते हैं बार बार, भाषत यों ग्रंथसार वैद्यनहू गायो है ॥ कामी बड मध्य गात लोचन् मद चमूचमात, मेघ सम घुर्घुरात वैद्यकमें गायो है ॥ तप्त ताँब तुल्य केश राखत ना हर्ष लेश, भाषै अस देश देश कापिलज्वर छायो है ॥

अथ भस्मप्रहारज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर १०८.

कवित्त—गिर्जापति कोप कीन श्वासते प्रकट कीन, ग्रंथमें विधान कीन एस रूप धारी है ॥ दाढैं विकराल सप्त जीभ लफ्लफात भस्म, अस्त्रकरमें विशाल देखो भयकारी है ॥ अट्टहास कर्प्रकाश बार बार जृंभ तास, नीलरंग ताहि भास वैद्यकमें गायो है ॥ तप्त ताँब बर्न बार दाढि मुच्छ मुंडकेर, नाम ज्वर भस्मप्रहार यज्ञ भंग धायो है ॥

अथ त्रिपादज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर १०९.

कवित्त—जब सती देह जारी मुनिवृंद यौं विचारी, शिव कोप कीन भारी तब ज्वर जायो है ॥ चर्ण तीन नैन लाल भारी तनु है विशाल, सब अंग करै ज्वाल दक्षयज्ञ आयो है ॥ दाढी भृगुकी उखारी श्वास लेत बार बार, ऊर्द्धकान जाहि केर श्यामरूप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गायो है ॥ है त्रिशूल अस्त्रधारी रणमध्य नृत्य भारी, त्रिपाद नामकारी जो कथन सब गायो है ॥

अथ पिंगाक्षज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर ११०.

कवित्त–पंच मुक्खहै विशाल काटत जो भर्मजाल, कीन कोप है कराल श्वास ज्वर जायो है ॥ क्षीण अंग सूख मास छोटी छोटी जाँघैं जासु, है कठोर बार तासु अग्निबाण धारी है ॥ है वदन बडो भारी दूजे भयानक कारी, रसना युगलधारी वैद्यकमें गायो है ॥ है तृषा बहुत वाके दुइ अक्ष पीत ताके, पिंग अक्ष नाम जाको नरसिंह धायो हैं ॥

अथ लंबोदरज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर १११.

कवित्त–है गरल कंठधारी लोक रक्षकारी तिन, कोप कीन भारी तब ऐसो ज्वर जायो है ॥ लंब बडो पेट जाहि बडे बडे कान ताहि, रक्तवर्ण नेत्र वाहि वैद्यकमें गायो है ॥ रूप ज्वालरंग भास जमुहाइ और श्वास, ताको बडी है पिआस महाबली आयो है॥ लक्षण असाध्य तिहि अंग अंग पीर बाँधि, लंबोदर नाम कहो क्रोधित ह्वै धायो है ॥

अथ भैरौंज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर ११२.

कवित्त–नाम ध्यान शिव प्रवीन दसै चह नाशकीन, श्वासतो प्रगट कीन ऐसो ज्वर जायो है ॥ रूप जैस रंग ज्वाल और खोलि शीश बाल, चमक भौंहकी कराल फाँसी व्याल हाथ है ॥ पट बाग अस्त्र कारी दूजे तिरशूल धारी, बलवान भारी देह दूबरी बखान्यो है ॥ अंग सूख मांस नाहिं बडा भयकार वाहि, लक्षण असाध्य ताहि भैरौं नाम गायो है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ शांति विधि ।

कुण्डलिया—जड चेतन पशु जीव जग, ज्वर सबको दुख देत ।
ताकी शांति विधान हित, शिव पूजन करु हेत ॥
शिव पूजन करु हेत दूर्व अक्षत गोक्षीरै ।
पराछि सकल विधि नीर सहस घटमें अनुसारै ॥
ग्यारह दिन करु यतन सकल देवनके खंभू ।
तुरत देइ बरदान दयाके सागर शंभू ॥

पित्त कफ वातज्वर वर्णन ।

दोहा—पित्त और कफ वात ज्वर, हयके उठै विकार ॥
औषध लंघन कहत हौं, शालहोत्र मत सार ।

अथ पित्तज्वर लक्षण ।

दोहा—अरुणनेत्र धौंकी बजै, टापैं पानी हेत ॥
पित्त वक्र तिहि जानियो, ज्वर निदान कहि देत ।
सोरठा—लोचन रसना पीत, पीत मूत्र अरु लीद लखि ।
मुख तन तातो मीत, पित्तज्वर लक्षण निरखि ॥

दवा ।

चौपाई—नागेश्वर बाँसाको पाता । पाढी गुर्च समान जु खाता ॥
कुटकी हरैं अरु मधुसानी । याको दिये पित्तकी हानी ॥

पुनः ।

चौपाई—काकजंघ अरु मिश्री लेहू । एला और शतावरि देहू ॥
सानि सहत सँग देउ खवाई । पित्तज्वर सो हयको जाई ॥

पुनः ।

चौपाई—मोथा पिपरी लेउ गिलोई। लौंग मिर्च जैफल पिसवाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदरख पान सोंठि सम लेहू । सातैं दिवस यह औषध देहू ॥
नीको होइ व्याधि सब हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

पुनः ।

चौपाई–जौ सेतुआको दाना दीजै । सात दिवसमा नीको लीजै ॥

अथ पित्तसान्निपात लक्षण ।

सोरठा–अरुण पीत चख होय, रातो पीतो मूत्र पुनि ॥
धौंस श्वास सब होय, श्रमित होय जब होय निशि ॥

छंददुपद–गंधारीफल सेर सेर इक मिश्री लीजै ।
गोघृतके सँग देइ पित्तकी सान्नि हरीजै ॥

पुनः ।

छंददुपद–मिश्री लीजै पावसेर अँबिली पकि आधी ।
नासु देइ तिहुँबेर नीर शीतलमें साधी ॥

पुनः ।

छंददुपद–लै पिचुमंद शतावरी तौलिकारि धरौ सेर भरि ।
कारि दधि संग यकत्र नासु तिहि देइ नाल भरि ॥

पुनः ।

चौपाई–तेजपात नागेश्वर लेहू । बाला वंशलोचनै देहू ॥
चंदनरक्त लेउ तालीसा । तीतुल धनियां सोंठी ईसा ॥
दाडिमसार और छड जानी । जीरा श्वेत इलाची आनी ॥
पाव डेढ प्रति औषध कही । चौगुन गोघृत लीजै सही ॥
घृतहि संग दीजै पल साता । शालहौत्र मत जानो ताता ॥
औषध बनै तुरंको दीजै । पित्त सान्नि नाशै सुख लीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ पित्तदोष नथुनाते रक्त चलै।

चौपाई—जो घोडाका मूँड पिराई। रुधिर चलै नथुनाते आई॥
पित्तदोष पहिचानो ताही। औषध कीजै या विधि वा ही॥
औंरा औ खसखस मँगवावै। गऊ क्षीर सँग लेप करावै॥
माथे लेप करै दिन साता। चेतन चंद कहै अस बाता॥

पुनः।

चौपाई—नासु देइ त्रिफलाको नीरा। जैहै रोग मूँडकी पीरा॥

पुनः।

दोहा—जर सिरसई कि आनिकै, गाई दूध बँटाय।
नासु अश्वको दीजिये, रक्तशूल मिटिजाय॥

पुनः।

दोहा—पात चँबेली लीजिये, गोघृत कल्क पचाय।
नासु अश्वको दीजिये, मस्तकशूल विहाय॥ १॥
सो घृत मस्तकमें मलै, मलै कनपटी सोय।
दवा करौ ततकालही, शूल दूरि सो होय॥ २॥

अथ पित्तरक्तलक्षण।

दोहा—घर्ष करै कंडू वपुष, चाहै जल अरु छाँह।
चरै न तृण सो जानिये, पित्तरक्त यह माँह॥ १॥
यह लक्षण लखि तुरँगको, तुरतै लोहू लेय।
होय अरोगी तनु तबै, कुटकी औ गुड देय॥ २॥

सोरठा—मिश्रीके सँग क्षीर, पियन अश्वको दीजिये।
निर्मल होइ शरीर, दाह पित्त छूटै तुरत॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आधपाव परमान, सुरवारीके बीज लै ।
अरु कुटकी गुडसान, दीजै तुरत अरोगि कर ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्तको असाध्य लक्षण ।

चौ०—रुधिर लिये पाछे हय देखो। पांडु वर्ण लोचन युग लेखो।
तासु मरण निश्चयकरि जाना । शालहोत्रके वचन प्रमाना ॥

अथ पित्तलक्षण वर्णन ।

दोहा—बारबार करि लीदको, गात गिलदि इति होय ।
लक्षणते पहिचानिये, पित्त जानिये सोय ॥ १ ॥
गोदधि लीजै सेर इक, चीनी शक्कर होय ।
सालिममिश्री टंक दुइ, उज्वल जीरा सोय ॥ २ ॥
अश्वखानको दीजिये, पित्तदोष जिहि होय ।
याते जाय विकार सब, जो पहिचानै कोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

छं०प०—हय पित्तरक्त बाढै शरीर । खजुआय अंग बहु चहै नीर॥
अति शीतथान सो बासु लहै । अतिशीत न भक्षण भक्ष चहै ॥

दवा ।

छं०—तहँ रुधिर अंग हय करै हीन । तब कुटकी औ गुड दे प्रवीन॥
जो होय अंग वाजी निरोग । यह जानो जनकहि सर्व लोग ॥

असाध्य लक्षण ।

छं०हरि०—हय होय लक्षण प्रथमके पुनि पित्त शोणित सो मिलै।
अरु अश्व श्वास विमुचई हिहनाय नैन सिलासिलै ॥
अरु रक्त पित्त दिगंत दीसै साध्य लक्षण है नहीं ।
यह शालहोत्र विचारि भाषत वाजि नहिं जीवै सही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पित्तकी दवा ।

चौ०—श्वेत इलाची मूसरि श्यामा । काकजंघ मधु घृत अभिरामा
शक्कर श्वेत भाग सम कीजै । पीसि दवा गुडके सँग दीजै ॥
पित्त सकल खाते हरिलेई । उनइस टंक खानको देई ॥

अथ कफज्वरलक्षण वर्णन ।

दोहा—तनु तातो व्याकुल स्रवत, नाक शिथिलता नैन ।
अधर अधर में लीन जल, यहै कफज्वर अैन ॥

पुनः ।

दोहा—तप्त शरीर रु पेट गद, शोथ दृगन पर होय ।
कफ डारै कांपै वदन, घास खाय नाहिं सोय ॥

दवा ।

चौपाई—पिपरी सैंधव घी मेलाई । नासु देव घोडेकी जाई ।
ता पाछे यह काढा करै । अंगपीर घोडेकी हरै ॥

पुनः ।

चौ०—वायविडंग अंडजर लावै । सोंठि कचूर गुरच मिलवावै ॥
अष्ट विशेषी काढा देऊ । सात रोज मा नीको लेऊ ॥

पुनः ।

दोहा—भारी माथो होय अति, नेत्र चुवैं बहु नीर ।
पीरो कफ मुखते झरै, बदन होय तिहि पीर ।

दवा ।

चौपाई—रेवतचीनी गायक घीऊ । अग्नि मध्य परिपक्व करेऊ ॥
हाथ पाँव घोडेके रगरै । ता पाछे यह औषध करै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनः ।

चौपाई—सोंठि कटाई वायभिरंगा । पिपरामूल जवाइनि संगा ॥
सैंधव सोंचर हींग मिलावै । औषध वजन बराबरि लावै ॥
हींग सोहागा खील करावै । मासे चारि वजन मिलवावै ॥
टंक तीनि भरि दीजै रोजा । मेटै अंगरोगको खोजा ॥

पुनः ।

चौपाई—दंतीजर भारंगी आनै । नागरमोथा कुटकी सानै ॥
नीबछालि असगँध देउदारा । चीत मिर्च लीजो घुँघुआरा ॥
अष्टविशेषी काढा करै । सहल टंकभरि तामें धरै ॥
आठ दिना जो दीजै भाई । सुःख होय अरु रोग विहाई ॥

पुनः ।

चौपाई—मिर्चैं जीरा सैंधव लोना । चीत रु चाब सोंठिलै तौना ॥
वच अतीस अरु पिपरामूला । मधुसों सानि सबै समतूला ॥
वजन तीनि पलकी नित दीनो । जो तुरंग है गुणद प्रवीनो ॥
कछु दिन याको सेवन कीजै । नितप्रति ताहि कफज्वर छीजै ॥

पुनः ।

चौपाई—भौंहनपर जो सोथ दिखावै । नास कटैया केर दिवावै ॥
पीरो कफ पानी दृग ढारै । तौ यह औषधिको अनुसारै ॥
सोंठि सोहागा सोंचर लेहू । मिर्च पीपरी तामें देहू ॥
वजन बराबरि सबको कीजै । सात रोज घोडेको दीजै ॥

अथ वातज्वरलक्षण ।

दोहा—स्रवत वारि मुख अंग जड़, ग्रीव मारि ऐंडाय ।
वातज्वर सो जानिये, लक्षण दिये बताय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई–पिपरी सोंठि पीपरामूलै । कूट जवाइनि वच सम तूलै ॥
रहसनि लेउ अतीस समानै । सेर सेर की है परमानै ॥
येक सेर मधुसों लै सानै । वजन कीजिये सुमति प्रमानै ॥
नकुलेश्वर यह रीति बखानी । सो करिहैं वातज्वर हानी ॥

अथ वातसन्निपातलक्षण ।

दोहा–रहै जरीसी जीभ व्रण, कंप खेद मुख लार ॥
तप्त अंग सब अश्वको, वातसन्नि कहि सार ।

दवा ।

दोहा–जौ मसुरीको राँधिकै, तासु कढा हद प्याय ॥
राखै गृह निर्वातमें, सेंकै अग्नि जराय ।

पुनः ।

चौपाई–पिपरी जीरा पिपलामूल । हींग अतीस बच्च सम तूल ॥
लौन और सोनाली लाव । सेर सेर सब हींग जु पाव ॥
देहु पिंड करि घृतसों सानी । यहिविधि हयकी जतन विधानी ॥
नकुलेश्वर ऐसो उच्चरै । याते वातसन्निको हरै ॥

पुनः ।

चौपाई–चीत पीपरी मोथा गुरची। परवरजर कुटकी औ मिरची ॥
पाव तीनि लै घृतमो सानी । याते बात सन्निकी हानी ॥

पुनः ।

चौपाई–सोंचर हींग सैंधव जीरा । सोंठि पीपरी मिर्च धीरा ॥
प्रतिप्रति तीस टंक लै आवै । लहसुन लै पल बीस मिलावै ॥
तुरतै सो कटुतेल मँगावै । सब औषध त्रय पाव कुटावै ॥
कपरछान करि तामें सानी । दीन्हें वातसन्निकी हानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनः ।

दोहा—गजपीपरि पीपरि तगर, सोंठि कूट मंजीठ ।
पिपरामूरि कचूर लै, देवदारु करु डीठ ॥ १ ॥
तीनि पाव यह सर्व लै, दीजै घृतसों सानि ।
होय अश्वको देतही, वातसन्निकी हानि ॥ २ ॥

पुनः ।

चौ०—मोथा गुरच इन्द्रारुनि लीजै । गोल कटैया सामिल कीजै ॥
दोहा—भाग बराबरि पूडिया, बाँधौ आटा सानि ।
वात जाइ अरु बल करै, घोडे देउ विधानि ॥

पुनः ।

सोरठा—लेहु राजिका जीर, चीता दधिसँग पीसिकै ।
निर्मल करै शरीर, अतीसार विष वातरस ॥

अथ वातसन्निपात ।

दोहा—मुखते जो पानी झरै, गंधि करै बहु सोय ।
हयको पग तरवा जरै, ज्वर संताप सु होय ॥
चौपाई—केलाजरको नीर मँगावै । गूलरकी छाली लै आवै ॥
लेउ बहेरा तुचको खारा । तौल सेर दुइ करु निरधारा ॥
सब इकत्र करि दीजै तुरंगा । मुखकी गंधि हरै ज्वर भंगा ॥

अथ दूसरा वातज्वर लक्षण व दवा ।

दोहा—चरत रहै हय घास जो, परैं ददोरा गात ।
नकुल कहैं लक्षण निरखि, ताहि कहै ज्वरवात ॥
चौ०—बच औ बीज पलाश मँगावै । छालि पलाश कुरैया लावै ॥
रंड सहींजन जरकी छाली । अँवरवेलि अरु मुंडी घाली ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब समभाग टंक दश लीजे । ताको काढा जलमें कीजै ॥
पानी तौल सेर दुइ देई । प्रात दिये हय नीको लेइ ॥

अथ वात श्लेष्मज्वर लक्षण ।

दोहा—तानै तनु आलस भरो, साँसै बारंबार ।
वात श्लेष्मज्वर सई, तास करो उपचार ॥
चौपाई—पोहकरमूल पीपरामूला । भारंगी पिपरी सम तूला ॥
रेगनि औ ओरूसो लेहू । मधुरँग सकल सेर नित देहू ॥

अथ वातरक्तलक्षण ।

दोहा—मैथुन पर बहु मनु करै, बिना तुरंगिनि देखि ।
मांस होय दृढ कोखिकर, वातरक्त सु विशेखि ॥ १ ॥
श्वास सरस जो जानिये, वातरक्तको कोप ।
रुधिर ताहिको लीजिये, होय रोगको लोप ॥ २ ॥
नींबपात इक पाव घृत, सेर नीर महँ औटि ।
लोहचन डारि खवाइये, देइ रोगको लौटि ॥ ३ ॥

याहीमें असाध्य लक्षण ।

दोहा—नैन युगल मेचक बरन, श्वास कंडु अति तुंड ।
तुरँग जाय यमसदनको, जो उपचारक झुंड ॥

अथ वातसन्निपातज्वर ।

चौपाई—तत शरीर अश्वको होई । हाँसै टापै चौंकै सोई ॥
श्वास प्रचण्ड चलै तिहि अंगा । सन्निपातज्वर ताके संगा ॥
बायबिडंग घुघुवारी पोस्ता । जरअंडा कूढेकी निस्ता ॥
अष्टविशेषी काढा करै । वातसन्निज्वरको तब हरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई—गुल्म अंग जो वाके परै । तौ पाछे यह औषध करै ॥
सोंठि पीपरामूरि मँमावै । सहत खांड गुडसंग मिलावै ॥
वजन बराबरि घोडे देहू । गुल्मव्याधि ताके हरिलेहू ॥

अन्य ।

चौपाई—वही वातज्वरकी अनुसारै।सन्निपातज्वर औषधि कारै॥
सोवा पालक लेउ अजीर । सक्करसहतऔकिसिमिसिछीर ॥
वजन बराबरि सबको लेहू । गऊदूधमें घोडे देहू ॥
नाशै रोग व्याधि बहि जाई । जो घोडेको करौ उपाई ॥

अथ वातरक्त लक्षण ।

छंद—वातरक्त अश्वके सो मानिये सबै प्रमान ।
श्वासदीघ छोडई सो जानिये सबै निदान ॥
बारबार पौढि जाय जानुको पसारि देइ ।
अंग अंग कोरि कोरि मोरि मोरि जंभु लेइ ॥

दोहा—ता वाजीको कहत हौं, वरणि चिकित्सा चारु ।
पाहिले दै त्रिफलादिको, सैंधव करौ प्रचारु ॥

सोरठा—रक्तवातको दोष, ता वाजीके जानिये ।
छूटै सुतनु सरोष, लाल श्वेत दृग अन्त इमि ॥

दोहा—ए सब लक्षण मैं कहौं, सो असाध्य हय जान ।
मारो अब्रख दीजिये, वर्णत सुकवि निधान ॥

छन्द उपेन्द्रवज्रा ।

शरीर जाके कफ पित्त बाढै । अधोमुख वाजि चलै सु गाढै ॥
न खात अहार चलै न नीके । चहै चमकी अति अश्वजीके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ असाध्य वातरक्त लक्षण—चौपाई ।

लक्षण एक असाध्यक जानौ । हय दृग अंत बिन्दुयुत मानौ ॥
ऊदरमध्य कष्ट अति होई । सो षटमास जियै नहिं कोई ॥

दवा ।

छंद मालिनी—गुरच सहित सोंठी पीपरी हींग मानौ ।
पुनि सुठि मदुरेठी काकराशृंगि जानौ ॥
सब सम गहि लावौ भागके तीनि देई ।
कफ रुधिर विकारौ होति है दूरि तेई ।

छंद हरि०—कफ वात पित्त त्रिदोष मिलिकै होत हैं यक संगही ।
तहँ रक्त कोप करै तबै हय होत है वातंगही ॥
अति चलत आँसू नैनते इमि घासको धक लागही ।
नहिं खुलत लोचन मंद भूख अनंद पाकरि पावही ॥

सोरठ—बोलै अति गंभीर, औ त्रिदोष प्रथमै कहे ।
जानि लेउ मतिधीर, सन्निपातको रूप यह ॥

दवा ।

छंद मालिनी—रुधिर तुरत हीनो सो करै अंग माही ।
अशन कुछ न दीजै वाजि रोग नशाही ॥
जिमि जिमि क्रमहीसों रोगही हानि होई ।
इमि इमि लघु दीजै भोजनै वाहि सोई ॥

दोहा—वात पित्त कफ दोष लखि, जैसे जो अधिकाय ।
ऊपर शीतल मीसरी, दीजै छानि पिआय ॥ १ ॥
कैसो वाजी दोष युत, होय बहुत की थोर ।
बिन जल कबहुँ न राखिये, कहत ग्रंथ शिरमोर ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

छंह चामर-मूत्रले मिलाय साथ कूटकी सु लाइये ।
पीसिकै बचे समेत अश्वको खवाइये ॥
सन्निपात नाश होइ शालिहोत्र भाषही ।
भूंख होय रोग जाय अंग अंग राखही ॥

चिकित्सा ।

छ०गी०-छिरकासा कंदहि आदि दै त्रिफला सु दूनहु लीजिये ।
पुनि चारु चीतहि डारिकै त्रिगुनो तहाँ करि दीजिये ॥
सब पीसिकै करि भाग तीनहु एक एक खवाइये ।
तहँ मन्द अग्नि मिटाय सांतिहि सर्व दोष नशाइये ॥

अथ श्लेष्माकमलज्वर लक्षण ।

दोहा-जलप्रवाह बह नासिका, युद्ध धीर दरशाय ।
सो श्लेष्मा कमलज्वर, याही यतन विहाय ॥
चौपाई-देवदारु अरु केरा कंदा । धनियां और विलारूकंदा ॥
लै वकचंड यकत्र करावै । कूटि छानि घोडे मुख नावै ॥
नीक होइ तनु बहु सुख पाई । श्लेष्मा कोप कमलज्वर जाई ॥

अथ शेषज्वर लक्षण ।

दोहा-अहिकैसी रसना कढै, पूँछ हनै दृग नीर ।
जल पैठै मुख कृमि परै, बहु दौरै ज्वर पीर ॥
चौपाई-बेलके गूदक हड्डा लीजै । सेंबरमूल कटैया दीजै ॥
मूसारिकंद मिलै करु काढा । शेषज्वर जैहै बहु वाढा ॥

---

१ घाडा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कालज्वर लक्षण ।

दोहा—जासु तुरँगके वदनमें, फुटका परि दरशात ।
कालज्वर पहिचानिये, शालहोत्र विख्यात ॥ १ ॥
कछुक बेर जलमें सुमति, कीजै जलमें ठाढ ।
याहिते कालज्वर नशै, कछु दिन करि मतिदाढ ॥ २ ॥

अथ रक्तश्लेष्मा लक्षण ।

दोहा—चरै न तृण नासा स्रवै, खाँसै मुख अधराखि ।
मन मलीन आतप चहै, श्लेष्मरक्त तिहि भाषि ॥ १ ॥
शोणित लीजै ताहिको, दीजै हरैं सोंठि ।
होय अरोगी अश्व जो, रुजकी करै अनोठि ॥

अथ याहीमें असाध्य लक्षण—चौपाई ।

खजुली उदर नैन रँग लाला । बीच मास पट तिहिको काला ॥
मिश्री सैंधव सोंठि मँगावै । दश दश टंक सकल पिसवावै ॥
जलके साथ नासु दै रचै । ईश दयालु होय तौ बचै ॥

अथ सन्निपातप्राणहर ।

दोहा—सूजै अगिला पाँव जिहि, रक्तवर्ण है गात ।
कंप अधिक तनु प्राण हर, सन्निपात सरसात ॥
चौ०—सोंठि पीपरी मिरचै गोली । सौंफ जवाइनि समकरि तौली ॥
जलके साथ तुरैको देई । सन्निपातको नाश करेई ॥

अथ सन्निपात दूसरो ।

दोहा—अवशि चलै चौंकत तुरय, सूजै आगिल पाँउ ।
सन्निपात यह दूसरो, ताकी जतन बताउँ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—अजवाइनि अजमोद मँगावै । कुटकी सौंफ हींग मिलवावै ॥
लहसुनगोली मिर्च भरंगी । पित्तपापरा सरसौं रंगी ॥
कटसरइयाजर अंक मँगावै । रहसानि सब सम भाग पिसावै ॥
गोघृत संग देइ जो तुरँगे । होय अराम करै रुज भंगे ॥

पुनः ।

चौपाई—कुटकी मिर्च पीपरी जेती । आमिलतास सोंठी जो लेती ॥
दारुहरद मोथा मँगवावै । टंक पचीस सहत मिलवावै ॥
सकल दवा समभाग पिसावै । पिंड बनाय अश्वमुख नावै ॥

अथ रक्त सन्नि लक्षण ।

दोहा—आलस निद्रा डारि श्रुति, कंप श्वास मुखलार ।
सन्नि रक्त बहुवेग जहँ, चरै न नेक अहार ॥
चौपाई—लोहू काढि उपास करावै । औटि नीर तब तुरै पियावै ॥
आँविलवेत सरवन अरु बेले । तीनौं मिलै तुरै मुखमेलै ॥

सर्वज्वरको काढा ।

चौपाई—धनियाँ कुलफा बेला फूल । ऐलामेंडी लै सम तूल ॥
सूखी लकरी नींबि मँगाई । सबका काढा देउ चढाई ॥
अष्ट विशेषी काढा देई । सर्वज्वरको नाश करेई ॥

अथ दशमूलतैल सन्निपातज्वराधिकारमें ।

दोहा—बेलछालि त्रयपाव लै, सोना पडरी आनि ।
खंभारी गुखुरा बडा, सरवन पिथवन जानि ॥ १ ॥
वनभाँटा रनि लीजिये, यह दशमूलकि छालि ।
तीनि तीनि पोवा वजन, कुचालि कराही घालि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीससेर जलमें अवटि, चतुर्थांश करि लेहि ।
सेर चारि तिलतेलको, यहि विधि सिद्धि करेहि ॥ ३ ॥
पाव मजीठ जो भाग सम, लोध हरदि त्रिफलानि ।
तज मोथा बाला सुगंध, वच तोला श्रुति जानि ॥ ४ ॥
सब यकत्र करि पीसि ले, देउ तेलमें डारि ।
पचि जावे तब छानिकै, भरु भाजनमें धारि ॥ ५ ॥

अन्यमत ज्वरचिकित्सा ।

दोहा–तप है चारि प्रकारका, सफरावी यक जानि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, कफते दूसरि मानि ॥ १ ॥
रक्त दोषते तीसरो, चौथी बादी जानि ।
औषधि अरु पहिचानि जो, सो अब कहौं बखानि ॥२॥

अथ तप सफरावी लक्षण ।

दोहा–मध्य दिवस अंधरातको, होत आइ तप जौन ।
शीश झुकाये अरु रहै, सफरावी हय तौन ॥ १ ॥
जरदी मायल आँखिमों, सुरखी ताके होइ ।
गर्म देह अरु होति है, सफरावी तप सोइ ॥ २ ॥
धौंकी जाकी श्वासमें, पानीपै अति चाह ।
भोजन शीतल अति चहै, शीतल छाहँ उमाह ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–छालि केवरेकी सहित, जर केलाकी लाइ ।
धनियाँ औरो कासनी, औंराछालि मँगाइ ॥ १ ॥
चारि चारि तोला सबै, औषधि लेहु पिसाइ ।
पाँच सेर पानी विषे, तिनको देहु मिलाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पानीकी मौताज यह, सो पक्की करि मान ।
शालहोत्र मत देखिकै, वरणी तौन सुजान ॥ ३ ॥
ताहि चुरावै अग्नि पर, दोइ सेर रहिजाइ ।
ठाढो करिकै ताहिको, हयको देहु पिआइ ॥ ४ ॥
तंग तरे अरु जीभमें, कीतौ तालू माहि ।
फस्त लीजिये ताहिके, रोग नाश हो जाहि ॥ ५ ॥

अन्य दवा ।

दोहा—तोला एक मँगाइये, तौन सहतरा आनि ।
तांते दूनी लीजिये, मेहदी पात सुजानि ॥ १ ॥
यवके आटा माहिमें, दोऊ पीसि मिलाइ ।
पिंडी कीजै ताहिकी, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्य दवा ।

दोहा—मोथा पीपरि गुरच लै, मिर्च लौंग मँगवाइ ।
अदरख जयफल सोंठि पुनि, लीजै पान मिलाइ ॥ १ ॥
औषध तोले चारि सब, लीजै भाग समान ।
सात दिवस लग दीजिये, नित प्रति हय परमान ॥ २ ॥
गरमीके दिन होंइ जो, यातौ गरम मिजाज ।
प्रथमै जो औषधि कही, सो दीजै सुखसाज ॥ ३ ॥

अथ बलगमीतप लक्षण ।

दोहा—जाके होयं कनार अरु, देह गर्म ह्वैजाय ।
काँपै जाको वदन पुनि, ऐसी गति दरशाय ॥ १ ॥
रंग आँखिको सुरख यों, मिलो सफेदी सोइ ।
भारी माथो अरु रहै, नेत्र चुवत जल होइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

दोहा—सोंठि कूठ पीपरि सहित, पिपरामूरि मँगाइ ।
अजवाइन अजमोद अरु, मिरचस्याहमिलवाइ ॥ १ ॥
दुइ २ तोले औषधी, सबको लेहु पिसाय ।
चारि सेर जल माहिं करि, लीजै तिन्हैं पकाइ ॥ २ ॥
जल आधो रहिजाय जब, लीजै ताहि उतारि ।
बाँस पोर यक लीजिये, ताके मुखहि सुधार ॥ ३ ॥
बाँसपोरमें ताहि भरि, आधा देइ दिआइ ।
आधा दीजै साँझको, औषध विधि यह आइ ॥ ४ ॥
रोजिस जारी होइ जब, शालहोत्र मत जानि ।
दीजै ताको नाश तब, सो अब कहौं बखानि ॥ ५ ॥
बीज कटैया आनिकै, और कैफरा जानि ।
वजन बरोबरि जानिये, पीसै कंपरा छानि ॥ ६ ॥
रंडाकी चोंगलि विषे, भरै दवाई सोइ ।
नथुनामें फूंकै सुई, तुरी नीक तब होइ ॥ ७ ॥
सोंठि कटैया लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ।
जलमें घोरै ताहिको, पाव एक गुड आनि ॥ ८ ॥
गर्म कीजिये अग्निपर, दीजै ताहि पिआइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ९ ॥
पीपरि पिपरामूरि लै, सोंचर सैंधव आनि ।
हींग कटैया सोंठि लै, वाय विडंगी जानि ॥ १० ॥
लेहु कटैया भूँजि सो, सब काँटा जरि जाँइ ।
टका तीनि भरि तौलि करि, सबै इलाजै लाइ ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींग सोहागा लीजिये, मासे आठहि जानि ।
और औषध जो रही, वजन बरोबरि आनि ॥ १२ ॥
सात दिवस यह औषधी, घोडे दीजै रोज ।
ताके अंगहि रोज जो, रहै नेक नाहिं खोज ॥ १३ ॥

अन्य दवा ।

सोरठा—दंती जरको आनि, और भरंगी लीजिये ।
नागर मोथा जानि, नींब छालि कुटकी सहित ॥
दोहा—देवदारु चीतो मिरच, असगँध औ घुघुवारि ।
टंकटंक सब औषधी, भाग बरोबरि धारि ॥ १ ॥
सेर चारि जलमाहि करि, लीजै ताहि चुराइ ।
अठयों हीसा जब रहै, लेहु ताहि सेरवाइ ॥ २ ॥
टंक एक भरि ताहिमें, दीजै सहत मिलाइ ।
नितप्रति करि यह औषधी, घोडेहि देहु पिआइ ॥ ३ ॥
औषध दीजै सात दिन, रोग नीक ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर दियो बताइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तते तप होइ ताको लक्षण ।

दोहा—रंग बतानेको सुरुख, स्याही मायल होइ ।
दुहूँ कानके मध्यमें, गरम बहुत है सोइ ॥ १ ॥
शिरडारे हय रहत सो, रक्त ज्वरके माहि ।
शालहोत्र मुनिके मते, लक्षण कहे सुआहि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—तारू नथुना जीभते, फस्त लीजिये ताहि ।
ता पाछे औषध करै, शालहोत्र मत याहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–धनियाँ हर्र बहेर कहि, और सहतरा जानि ।
दो दो तोले औषधी, दीजै हयको आनि ॥ १ ॥
घास हरी वाहि दीजिये, दाना दीजै नाहि ।
दोखि बताना आंखिको, औषध दीजै ताहि ॥ २ ॥
गरमी सरदी होइ जो, लीजै ताहि विचारि ।
औषध दीजै ताहिको, मौसिमको निरधारि ॥ ३ ॥
अश्व मिजाजहि जानिकै, ता अनुसारहि जोय ।
औषध दीजै ताहिको, वाजी नीको होय ॥ ४ ॥

अथ वादीतप लक्षण ।

दोहा–दर्द होति है पेटमें, फूलि पेट जो जानि ।
तनु प्रस्वेद अति ताहिके, रोज अधिक अधिकानि ॥ १ ॥
रातिब पावत होइ जो, मोटो होइ शरीर ।
होत ताहिको आनिकै, वादी तपकी पीर ॥ २ ॥
होइ विछार सुगिरि परै, फिरि उठि ठाढो होइ ।
बार बार गति ताहि यों, लेहु तुरीकी जोइ ॥ ३ ॥
रंग बतानेको सुरुख, स्याही लीन्हें होइ ।
वात पित्तके दोषते, यह तप हयके सोइ ॥ ४ ॥
औषध कीजै जल्दअति, जियत वाजि तो आइ ।
देर होइ औषध विषे, तुरी तबै मरिजाइ ॥ ५ ॥

ताको धूरा ।

दोहा–औंरा फलको पीसिकै, तासम खैरु मिलाइ ।
धूरा कीजै देह सब, सूखि पसीना जाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोडेकेरे पेटमें, गांठि पराति है तौन ।
हुकना कीये सो खुलै, जानि लेहु बुधि भौन ॥ २ ॥

तरकीब हुकनाकी ।

दोहा—चाऊ बाँस मँगाइकै, पोर एक कटवाइ ।
दोनों तरफन ताहिको, कमल सदृश करवाइ ॥ १ ॥
नोक होइ तामें नहीं, सो जानौ बुधिवान ।
नाहीं तो गाडि जाइ है, अश्व गुदामें च्वान ॥ २ ॥
तेल लगावै गुदामें, डारै लीदि कढाइ ।
सोंठि पीसि जल तेलमें, पोटरी लेइ बनाइ ॥ ३ ॥
घोडे केरी गुदामें, पोटरी देइ धराइ ।
फूँकि देइ फिरि ताहिको, गाँठिपरी खुलि जाइ ॥ ४ ॥
जब लगु होइ अराम नाहिं, हुकना कीन्हें जाहि ।
गरम दवा अति अश्वको, दीजै कबहूँ नाहि ॥ ५ ॥
फस्त खोलिये ताहिकी, तारू नथुना माहि ।
उठिकै ठाढो होइ जब, औ अराम दरशाहि ॥ ६ ॥
औषध दीजै ताहिको, लेहु क्षुधाकर जोइ ।
दुइ दिन दाना देइ नाहिं, तुरी नीक सो होइ ॥ ७ ॥
देखि बताना ताहिको, औषध दीजै तात ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जात ॥ ८ ॥

अथ श्लेष्माज्वर लक्षण ।

दोहा—तप्त होति है देह सब, आँवासे दृगलाल ।
काँपत है सब देह अरु, होत अहै यह हाल ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कफ मुखते बहुतै झरै, विकल वाजि अति होइ ।
सफरा बलगम योगते, यह तप हयतनु होइ ॥ २ ॥

ताकी औषध ।

दोहा—पीपरि सैंधव घीव लै, समकरि लेउ मिलाइ ।
नासु दीजिये अश्वको, रोग कमी ह्वै जाइ ॥

दवा खानेकी ।

सोरठा—वाय विडंग मँगाइ, सोंठि मिरच अरु रंडजर ।
तेलकचूर मिलाइ, औषध दीजै भाग सम ॥

दोहा—टका टका भरि सब दवा, लेहु ताहि बुधिमान ।
एक खुराक दवा कही, सो लीजै मनमान ॥ १ ॥
चारि सेर जलमध्यधरि, औषध लेउ पकाइ ।
अष्ट विशेषी जब रहै, हयको देउ पिआइ ॥ २ ॥

अथ सर्व तपकी दवा ।

चौ०—सोंठि चिरैता दोनों लाज । तोले आठ वजन विहि कीजै॥
एला तोला दुइ भरि लेहू । वाय बिडंग तोला भरि देहू ॥
नीब बुरादा तोला चारी । तासम कुलफा बीज सुडारी ॥
पाँच सेर जलमध्य पकावै । अठवाँ हींसा जब रहि जावै ॥

दोहा—शीतल कीजै ताहि फिरि, औषध लेहु मिलाइ ॥
छानौ कपरा मध्यकरि, हयको देहु पिआइ ।

अथ अन्य तप लक्षण ।

दोहा—मुखमें आवै वासु बहु, कान गरम ह्वै जाइ ।
गुलफी ताकी देहमें, होति सहीते आइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताकी दवा ।

चौपाई—रंडाकी जर लेहु मँगाई । तासम खसखस देहु मिलाई ॥
अरु झिकबाझिक बकला लीजै । जामुनि छालि तासुमें दीजै ॥

दोहा—वजन बराबरि औषधी, चारि टकाभरि जानि ।
दोइ सेर जलमाहिं करि, ताहि चुरावै आनि ॥ १ ॥
सेर एक रहिजाइ जब, हयको देहु पिआइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ त्रिदोष ज्वर सन्निपात लक्षण ।

दोहा—चौंकै हींसै टापई, तप्तदेह अतिहोइ ।
श्वास चलै अति जोरसे, सन्निपातज्वर सोइ ॥

ताकी दवा ।

दोहा—मोथा अरु अंजीर लै, पालाकि मिश्री लाइ ।
दुइ दुइ तोला औषधी, गाई दूध मिलाइ ॥ १ ॥
सर्व दवनते चौगुनो, लीजै दूध मिलाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, औषध देइ खवाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै पाँच दिन, रोग सकल मिटि जाइ ।
केशव वरणो चाउ करि, शालहोत्र मत पाइ ॥

अन्य

दोहा—लीजै वायविडंग अरु, पोस्ता युत झिकवार ।
जोगिया रंड कि जर सहित, जलमें ताको डार ॥ १ ॥
पांच सेर जलमाहिं करि, लीजै ताहि पकाइ ।
अठओं हींसा जब रहे, हयको देहु पिआइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—गुल्म तासुकी देहमें, जो कदाचि परिजाइ ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥
सोंठि पीपरी मूल लै, गुडके साथ मिलाइ ।
खांड सहतसों सानिकै, हयको देहु खवाइ ॥ २ ॥
टका टका भरि औषधी, सबै लेइ तौलाइ ।
सन्निपातके लक्षणौ, प्रथमै कहे सुनाइ ॥ ३ ॥
वात पित्त कफ पित्तते, ज्वरकी उत्पति होय ।
कफ रु वातते होइ नहिं, जानि लेहु यह सोय ॥ ४ ॥

अथ ज्वरके पीछे पेशाब बंद हो या और तरहते बंद हो ताको लक्षण ।

दोहा—बंद होत पेशाब जब, तब यह गति दरशाइ ।
लोटै पाँइ पसारिकै, फेरि खडा हो जाइ ॥ १ ॥
कियो चहै पेशाबको, अरु पेशाब न होइ ।
जानौ बंद पेशाब है, ये लक्षण सबकोइ ॥ २ ॥

ताकी दवा ।

दोहा—दुइ तोले भरि सोंठि लै, तीनि बतासा लाइ ।
नींबूके रस माहिं करि, गोली एक बनाइ ॥ १ ॥
प्रथम तुरीकी गुदामें, रेंडी तेल लगाइ ।
फिरि गोली भीतर करै, अश्व नीक हो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—मडुई केर पिसानु मँगावै । ता सम तामें सोंठि मिलावै ॥
दोहा—जलमें घोरै ताहिको, लीजै ताहि पकाइ ।
वाजी पोतन माहिमें, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माजूफल औ सोंठिको, जलमें लेइ पिसाइ ।
बाती एक बनाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥
प्रथमै पोतनके उपर, लेप देइ करवाइ ।
फिरि पेशाबके छेदमें, बाती देइ धराइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जो पेशाब खुलै नहीं, तौ हुकना करि देइ ।
ऊपर हुकना विधि कही, सोई विधि करि लेइ ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि सोंठि पिसाइकै, लेपै बाती माहिं ।
बाजी केरे लिंगमें, बाती देहु धराहि ।

अन्य ।

दोहा—स्याह मिरच सोंचरु सहित, जलमें लेहु मिलाइ ।
हयके दोनों कानमें, दीजै ताहि डराइ ॥

अन्य ।

दोहा—ककरी बीज पिसाइकै, मूरी लेहु कुटाइ ।
अरु अँबिलीको पीसिकै, जलमें लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
डेढ पाव ये ओषधी, जलमें लेहु छनाइ ।
नारि मध्यकारि ताहिको, हयको देहु पिआय ॥ २ ॥

अन्य विधि ।

चौ०—जो यतनी सब दवा कराहीं । खुलै पेशाब अश्वकी नाहीं ॥
तो घोडेको देउ गिराई । हाथ पाँइ सब उपर कराई ॥
आँगुर चारि नारिके आगे । सीना तरफ लोहभे दागे ॥
पारा चारि यही विधि कीजै । तुरतै अश्व नीक सो लीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यविधि ।

दोहा—सब विधि औषध करिचुकै, अरु पेशाब नहिं होइ ।
जाते होइ पेशाब अब, कहत अहौं विधि सोइ ॥ १ ॥
गांठिन लौं जलमध्य मों, ठाढा कीजै ताहि ।
एक घरी परमानमों, मूत्र तासु खुलि जाहि ॥ २ ॥

अथ मस्तकशूल लक्षण ।

दोहा—ज्वरमें और कनारमें, शिरमें पीडा होइ ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
ज्वरके पाछे जाहिके, शिरमें पीडा होइ ।
रुधिर चलत है नाकते, शिरमें पीडा सोइ ॥ २ ॥

ताकी दवा ।

दोहा—औंरा औ खसखस विषे, कोका फूल मिलाइ ।
शिरपर सो लेपन करौ, तुरत दर्द मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—त्रिफला जलमें पीसिकै, लीजै ताको छानि ।
नासु तासुको दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

और लक्षण शिरदर्दको ।

दोहा—मन मारे जो हय रहै, भौंहन होइ अमासु ।
सूखिजात कफ ताहिको, औषध कीजै आसु ॥

अथ दवा ।

चौपाई—गोलिनदार कटैया लावै । ताको हयको नासु दिवावै ॥

दवा खानेकी ।

चौ०—नासु दियेते जब कफ झरई । ताको तब यह औषध करई ॥
सोंठि मिरच पीपरिकी लावै । तामें सोंचरलोनु मिलावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—और सोहागा डारिये, वजन बराबरि जानि ।
दीजै दो पल औषधी, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य विधि शिरदर्दकी ।

सोरठा—शिरमें होइ अमासु, गर्दन डारे हय रहै ।
दीजै ताको नासु, सहित कटाई तिर्कुटा ॥

औषध खानेकी ।

दोहा—कुटकी वाय विडंग अरु, पिपरामूरि मँगाइ ।
सोंठि कचूर सोहागा, वजन बरोबरि लाइ ॥ १ ॥
सबै औषधी दोइ पल, भूजै अटामाहि ।
या विधि दीजै तीनि दिन, व्याधि दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्र० ज्वराधिकारवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ शूलनिदान चिकित्सा वर्णन ।

दोहा—शूलहरण औषध कहौं, अलंकार पहिचान ।
या विधिसों जो देखिये, तैसो रोग निदान ॥

अथ मूत्रशूल । देखो घोडा नंबर ११३.

दोहा—भौंरी आवै अश्वको, पुहुमी लेइ सुगंध ।
दोनों पाँजर मारई, मूत्रशूल तिहि बंध ॥

दवा ।

दोहा—सैंधव पैसा चारि भारि, महुआ गुडूलू तेलु ।
पावसेर तिहि दीजिये, रोग दूरि परहेलु ॥

अन्य ।

दोहा—पाँच टकाभारि लीजिये, गजपीपरि अभिराम ।
ताही सम मधु डारिये, संकटमोचन नाम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—लीजै सेर सवाय, तेल मेलिये तिलनको ।
औषध देउ खवाइ, तुरँग नीक ततकालही॥

अन्य ।

चौ०—जो घोडा छिन छिन तनिआवै ।बंद पेशाब बहुत दुख पावै
मिर्च अरुण नाय जे घालै । करै पेशाब लहै सुखजालै ॥
की सोराकी बत्ती मेलै । तुर्त पेशावै अश्वकी खोलै ॥

दोहा—की पीसे काली मिरच, बाती तासु बनाय ।
लिंग माँह घालो सुघर, तुर्त पेशाब कराय ॥

चौ०—झिकवारीको पात मँगावे । इंद्रजवा इंद्रारुनि लावै ॥
लै कंकोल मिर्च सम तूला । औटो कूपतोय सुख मूला ॥
सात दिवस इमि हयको देवै । करै पेशाब बहुत सुख लेवै ॥

दोहा—पूँछ कि डंडी उलटिकै, गरम नीर कर भेइ ।
करिहै तुर्त पेशाबको, वाजि परम सुख लेइ ॥

अन्य ।

चौपाई—घोडीके पिशाब थलमाही । एक बतासा धरिये ताही ॥
बेरि पात मुख कूचिक धरिहै । घोडी तुर्त पेशाब सु करिहै ॥

अन्य ।

चौपाई—की साबुन पट भिजै लपेटै । बातीकरै रोगको मेटै ॥

अन्य ।

चौपाई—आधसेरकै तेल मँगावै । नासु देइ तबहूँ सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ.-जुआँ दोय इक कै श्रुति डारै । करै पेशाब बहुत सुख सारै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई–जो याते नाहिं नीक दिखावै । तो रोईको लेप बनावै ॥
लेप करै अंडनके ऊपर । तुर्तै अश्व उदरको दुखहर ॥

अन्य ।

चौपाई–की दुइ लोटा पानी लावै । धार गुदाढिग ऊपर नावै ॥

अन्य ।

चौपाई–सोंठी दीजै मुखते बानिकै । करै पेशाब उदरको तानिकै॥

अन्य ।

दोहा–सोंठि बैतरा कूटिकै, गोली बनै सुजान ।
तुरत अश्वको दीजिये, करै पेशाब निदान ॥ १ ॥
याहीमें जो डारिये, हर्रा तोला चारि ।
तोला हींग फुलाइकै, दीजै तुरै विचारि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–तप्त उदक सिरका मिलै, विरिआ चौभारि लेहु ।
करै पेशाब रु लीदिको, औषधको फल येहु ॥

अथ मूत्रवर्त्तक शूल । देखो घोडा नंबर ११४.

चौपाई–वमन रंग हरदीके करै । मुखते लार अधिक गिरिपरै ॥
शीतल बदन हलावै शीशा । मूत्रशूलवर्त्तक अवनीशा ॥
सैंधव पीसि नैनमें डारै । मिरचन सहित नास अनुसारै ॥
टहलावै अरु कोखी मलै । औषध खान देइ तब खुलै ॥

अन्य ।

चौपाई–जर स्वाती गूगुर सम लीजै । पीसि दूधमों घोडे दीजै ॥
नीक होइ जो औषध करै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ लीदिबंदशूल । देखो घोडा नंबर ११५.

चौपाई—लीदिबंद घोडेकी जानौ । एक छटाँक तमाखू आनौ ॥
ताको लै मुख चीरि खवावै । लीदि करै अतिही सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०—दुइ पैसा भरि सोंठि मँगावै । गुड पुरान तिहि दून मिलावै ॥
तोला एक भाँगको लीजै । मिलै खवाय कायजा कीजै ॥
जबलौं लीदि करै नाहिं घोरा । तबलौं राखु कायजा जोरा ॥
यंह रंगी उस्ताद बखानै । या विधि हयकी जतन विधानै ॥

अन्य ।

चौपाई—सेर सवाय क्षीर महिषीको । आधसेर गुड लीजै नीको ॥
पावसेर घृत तामें कीजै । अग्नि पकाय नालिमें दीजै ॥
वाही समय लीदिको कारि है । सकल विकार पेटको हरि है ॥

अथ वायुशूल । देखो घोडा नंबर ११६ । ११७.

दोहा—गिरै धराणि बहु दम करै, नेत्र मूदि रहिजाय ।
वायुशूल ताको कहैं, वाको करौ उपाय ॥

चौ०-जो हय लोटिबगलानिज झाँकै । छिनछिन काँखिकाँखिकै ताकै

दोहा—यामें लक्षण जो सबै, अरु थोरेही पाय ॥
वायुशूल तिहि जानिये, तुर्तें करौ उपाय ॥

चौ०—खुरासानि वच कूट मँगावै । दंति छालि अरु सैंधव लावै ॥
हींग सोहागा समकारि लेहू । पषाणभेद लै तामें देहू ॥
सकल पीसि मैदा सो कीजै । माखन सानि अश्वको दीजै ॥
देतै सो नीको ह्वै जाई । वायुशूलको नाश कराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—साँभरि औ सैंधव ले आवै । पलासबीज अजमोद मँगावै ॥
पाँच पाँच तोले सब लीजै । लहसुन दुइ तोला कारि दीजै ॥
आधपाव गुड लेउ पुराना । दो तोलाभरि हींग विधाना ॥
चारि चारि तोले करवावै । चनाके आटा संग खवावै ॥
दोहा—दूनौ पहर खवाइये, शाम सुबह बुधिमान ।
वायशूल सब मेटि है, मुनिके वचन प्रमान ॥

अन्य ।

चौ०—अरुण मिर्च दो तोले लीजै । पैसाभरि लहसुन कारि दीजै ॥
पीसि कूटि घोडे मुख नावै । वायुशूलको खोजि नशावै ॥

अन्य ।

चौ०—हाथीको यक लेंड जु लीजै । पीपर छालि तासु सम कीजै ॥
ताहि पीसि पतरो कारि छानै । अग्नि चढाय पकाय सुजाने ॥
लेइ उतारि सुशीतल करै । नारीभे प्यावै दुख हरै ॥

अथ दुमभिरोरशूल । देखो घोडा नंबर ११८.

चौ०—दुम मिरोरि घोडा लोटै माहि।खायो डाभ अटकअतरी कहि
सेर एक जो दूध मँगावै । ताको आधा घृत लै आवै ॥
मिले पिआय अश्वको दीजै । याते शूल हरै जो कीजै ॥

अथ वायुभक्ष शूल । देखो घोडा नंबर ११९.

दोहा—जो घोडेको देखिये, फूलो उदर सेवाय ।
पटकि पटकि लोटै धरणि, ताको जतन बताइ ॥
चौ०—हवाखात भूलो तिहि जानै । ताकी दवा तुरतही आनै ॥
तालुमें गुड देइ लगाई । ताते रोग नीक हो जाई ॥
गलिहै गुड तब बदन डुलावै । तब वहि हवाखान सुधि आवै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

चौ०—मासे पाँच सोहागा भूँजे। पावसेर जलमें तिहि दीजे॥
बहुत गोज करिहै ताही दिन। होइ है रोग दूरि ताही छिन॥

अन्य।

चौ०—अँगुठा सरिस नींबिकी लकरी। छोटी लै दीजे मुख दुकरी॥
पहर एक दे ठाढो राखे। मुख डुलाय हय सुखको चाखे॥

अथ अँतावरिशूल। देखो घोडा नंबर १२०.

चौ०-लोटैअश्व अधिक बिन कारन। उठिफिरिगिरिलोटैदुखभारन
तो तिहि अंडकोश झुकि देखे। जो सूजनि कठोर अवरेखे॥
तो परदा ओदर ठहराई। परदा फूटि अँतरि बढि आई॥
ताको तुरत आखता कीजे। आँतरि प्रथम उदर भरिलीजे॥

अथ जीमार शूल। देखो घोडा नंबर १२१.

चौ०—बैठै उठै अतिहि बेकारे। अँतरी लेंडी अडी विचारे॥
बकरीको कल्ला मँगवावे। चारों पाँव सहित पकवावे॥
सुरुवा गाढ पके दश सेरे। ताहि पिआइ करो मति देरे॥
की सुजान करमें घृत लीजे। गुदा हाथ डारे तिहि दीजे॥
लेंडी टोय काढि तिहि डारे। हयको दुःख सकल नेवारे॥
ता हयको दीजे नाहिं दानो। है जीमार शूल पहिचानो॥
की कचूर इक पाव मँगावे। ताको कपरछान करवावे॥
जबलौं साफ लीदि नाहिं देखे। तबलोंही खवाय सुख रेखे॥

अथ कुलिंज शूल। देखो घोडा नंबर १२२.

चौ०—अठयों मर्ज कुलिंज कहैहै। पोता उतरत चढत लखैहै॥
आध सेर घृत पय दुइ सेरे। मोठ पिसान पाव भरि घोरे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साँझ सबेरे हयको दीजै । पेट न चलै तौ नितही कीजै ॥
जो याते नाहिं होवे नीको । चारो तरफ दागि करि ठीको ॥
लखि नेजेके आगे दागै । निरखि हथेली मित सुख पागै ॥

अथ वक्रशूल । देखो घोडा नम्बर १२३.

चौ०—बैठै उठै नाभिको टोवै । थोबरी दैकरि महिमें सोवै ॥
ताको वक्रशूल अनुमानै । सोंचर अर्कफूल दै भानै ॥
दोहा—स्याहमिर्च अंजीर फल, कारीजीर मँगाय ॥
दीजै हयको तुरतही, आठो शूल नशाय ॥

अथ मूर्त्तिवंतशूल । देखो घोडा नम्बर १२४.

दोहा—आगे पग धरि घूमि महि, गिरै तुरँग दुख पाय ।
मूर्त्तिवंत सो शूल है, ताको जतन बताय ॥
चौपाई—गजपीपरि औ पीपरि लावै । दशदश टंक दुवौ पिसवावै ॥
पानी एक सेरमें दीजै । मूर्त्तिशूलको नाश करीजै ॥

अथ अस्तावर्त्तशूल । देखो घोडा नम्बर १२५.

दोहा—ताकै छिन छिन कुक्षि हय, शोक ग्रसो लखि जानु ॥
नकुल कहैं तिहि शूलको, अस्तावर्त्त बखानु ॥
चौपाई—महुली और गँगेरुवा आनै । सात सात टंकै परमानै ॥
पलाश बीज नौ टंक मँगावै । सोंठि टंक चारिक लै आवै ॥
दोहा—हींग टंक लै तीनि सो, कपरछान करवाय ।
गोघृत सेर मिलायकै, नारी मध्य पिआय ॥

अथ वातशूल । देखो घोडा नंबर १२६.

दोहा—बैठै उठै तुरंग जो, रहै कराहत देखि ।
वातशूल वाको कहै, ताहि जतन अवरोखि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—भूमि गिरै औ दम करै, फिरि फिरि उठै मरोरि ।
यह निदान दूजी तरह, लक्षण देखि बहोरि ॥
चौपाई—कूट पषाण भेद लै आवै । दतुनि वृक्षसह मूल मँगावै ॥
सैंधव आध सेर सो लीजै । काँजी ताहि बराबरि कीजै ॥
सकल पीसि घोडेको दीजै । सात रोजमें नीको लीजै ॥

अन्य ।

दोहा—त्रिकुटा हींग रु कैफरा, खाँड बराबरि लेउ ॥
गंधी मासे चारि सो, मदिराके सँग देउ ॥
सोरठा—करवावै परहेज, दाना पानी वातसों ।
औषध है यह तेज, गात देखिकै दीजिये ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि सोंठी रेणुका, बडी इलाची जानु ।
वजन बराबरि दीजियो, ले मदिरामें सानु ॥

अन्य ।

दोहा—जो घोडा काँपै हफै, होइ बताने लाल ।
ताको दीजै नासु यह, रोग बहै ततकाल ॥
चौपाई—गोघृतको लैकै निर्दोषा । बेल पिसाय नासु दै पोषा ॥

अन्य मत ।

दोहा—दुम झहरावै अंग तनि, जो हय बारंबार ।
वातशूल ताको कहै, कीजै यह उपचार ॥
चौपाई—लेउ बिजौराकोरि चनूरी । हींग पलास बीज यकठौरी ॥
देउ कचूर डारि तिहि माहीं । सकल दवा सम पीसो ताही ॥
गुड घृत साथ तुरँगको दीजै । वातशूल तुरतै हरिलीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ शुद्धवातशूल । देखो घोडा नम्बर १२७.

दोहा—पूँछ चलावै अंग तानि, यही परीक्षा देखि ।
शुद्धवात तिहि नाम है, कहौं नकुलमत पेखि ॥

चौपाई—गुरखुल लेउ समूल मँगाई । गऊदूधसँग देउ पिआई ॥
षोडश दिन जो दवा खवावै । शुद्धवात नीको हो जावै ॥

अथ कंठवातशूल । देखो घोडा नम्बर १२८.

दोहा—जो हयको मुख बोलिये, घरैं घुघरि घरोरि ।
झूँक खायकै गिरिपरै, चहूँओर भय हेरि ॥

चौपाई—चकचूनीकी जरको लीजै । गोपयसों नित प्रातै दीजै ॥
वासर पाँच सात तिहि देई । रोग दोष सगरो हरिलेई ॥

अथ शिखिवातशूल । देखो घोडा नंबर १२९.

चौ०—कारूरा जो जरद कराई । नीर न पियै जोर घटि जाई ॥
शिखीवात है शूल निदाना । औषध कीजै चतुर सुजाना ॥
हरदी राई गुड सम लीजै । छिरकाके सँग हयको दीजै ॥
साँझ सकारे दोनों बेरा । नीको होइ सु रुज तिहिकेरा ॥

अथ अपरशूल । देखो घोडा नंबर १३०.

दोहा—रदसों भूमिहि धरि तडफि, किरैं रदन सुहालि ।
थोबरी महिमें धरि रहै, शूल दुखित मन घालि ॥

चौ०—गोघृतमें गंधी मिलवाई । अश्व अंग मर्दन करु भाई ॥
जबलग तुरंग नीक नाहिं होई । तबलग अंग मलो पुनि सोई ॥

अथ कृमिशूल । देखो घोडा नंबर १३१.

दोहा—नेन बहैं काटे उदर, छिनछिन बह अकुलाय ।
सो कृमिशूल विचारिये, ताकी जतन कराय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—सोंठि कूट पिपरी मँगवावै । पलाशबीज मिरचे मिलवावै ॥
सकल पीसि समभाग मिलावै । गुडके साथ अश्व मुख नावै ॥
आठ रोजतक घोडे दीजे । कृमीशूलको नाश करीजे ॥

अन्य मत ।

दोहा—चरण गूँथि राखै धराणि, गिरै शोक करि घोर ।
सो कृमिशूल कहावई, करै जतन यहि तोर ॥
चौ०—इँगुआकी जर हींग मँगावै । पलाशछालि भारंगी लावै ॥
अरु अजवाइनि देउ मिलाई । सर्व दवा सम भाग पिसाई ॥
गुडके साथ अश्वको दीजै । रोग जाइ जो औषध कीजै ॥

अन्य मत ।

दोहा—नेत्र चुअैं विधि जाहिके, औ काँपै निजदेह ।
पेट कटै औ भुँइपरै, ताहि अलक्षण येह ॥
चौ०—डेढपाव त्रिकुटा मँगवावै । आधपाव वच ताहि मिलावै ॥
बीज पलाश पाव अध लीजै । कूटि छानि मैदा धरि दीजै ॥
एक छटाँक प्रात नित देहू । सात रोजमें नीको लेहू ॥

अथ सर्वकृमिशूल । देखो घोडा नंबर. १३२.

दोहा—काट उदर अरु जीभको, धरि राखै रदमाहि ।
कहो सर्व कृमिशूलको, बैठो रहे सुचाह ॥
चौ०—रहसनिकी जर खोदि मँगावै । खुरासानि वचको लै आवै ॥
अजवाइनी पलाशके बीजा । छोटी कंटकारि जर लीजा ॥
सर्वदवा सम भाग पिसावै । गुडके साथ अश्वमुख नावै ॥
तोला तीनि प्रमाण खवावै । पंद्रह दिनलौं नकुल बतावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ समवर्त्तशूल । देखो घोडा नंबर १३३.

दोहा—लोटै बहु चारौं चरण, राखै हृदय लगाय ।
सो समवर्त्तक शूल है, जतन कियेते जाय ॥
चौ०—सैंधव लहसुन हींग मँगावै । अजमोदा सम भाग पिसावै ॥
गुड गोलक मिलैकै दीजै । समवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ वैवर्त्तशूल । देखो घोडा नंबर. १३४.

दोहा—तानै देह तुरंग जो, बैठै उठै कराहि ॥
सो वैवर्त्तकशूल है, जतन करै इमि चाहि ॥
चौ०—कपरा लेउ पुरान मँगाई । वाकी भस्म करो मन लाई ॥
हींग मिलै पानीमें घोरै । घोडा पिये शूलको हरै ॥

अथ विभ्रमशूल । देखो घोडा नंबर १३५.

दोहा—भूंख जाइ अरु बहु लटै, चितवै चारौं ओर ।
चलै मंद अकडो रहै, विभ्रमशूलै जोर ॥
चौ०—दाना खाय न जलते नेहा । नितप्रति दूबरि होवै देहा ॥
टापै भ्रमै औ गिरि गिरि परै । ताकी औषध याविधि करै ॥

दवा ।

चौ०—प्रथम बदाम एकते देई । दशते आगे कम करि लेई ॥

अन्य ।

चौ०—बहुरि मसाला याविधि करै । तामें रोग अश्वको हरै ॥
हरदी राई गुड सम लेहू । कूटि छानि छिरका सँग देहू ॥
तप्तनीर पीवैको दीजै । सात दिवसमो नीको लीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

चौ०—हरदी हींग हर्र वेशाषी। सोंठि सोहागा खील सुभाषी॥
वजन बराबरि पीसौ भाई। हींग सोहागा थोरा लाई॥
भूंख बढै भ्रमशूलै नाशै। बल औ बीरज बहुत प्रकाशै॥

अन्य।

चौ०—आधसेर विषखपरा लीजै। प्रातकाल घोडेको दीजै॥

अन्य।

चौ०—मर्दन पाँयनमें कछु दीजै। विभ्रमशूल तुरत हरिलीजै॥
साँभरि हरदी औ अजवायन। तिलको तेल मिलै मलु पायन॥

अन्य।

चौ०—घृत अरु तेलको मर्दन कीजै। याहूसों विभ्रम हरिलीजै॥

अन्य।

चौ०—हर्रा हरदी सोंठि मँगावै। गुड पुरान सम मिलै पिसावै॥
घोडाको नित प्रातै दीजै। सातरोजमें नीको लीजै॥

अथ सनदशूल। देखो घोडा नम्बर १३६.

दोहा—धरणी गिरै तुरंग जो, सोवै चरण पसारि।
वासु लेइ निज पेटकी, सनदशूल निरधारि॥ १॥
हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै ढक दोय।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय॥ २॥
गोदधि संग पिसायकै, औषध देउ खवाय।
सातरोज तक दीजिये, सनदशूल मिटि जाय॥ ३॥

अथ बिंबशूल। देखो घोडा नंबर १३७.

दोहा—उठिबैठै बहु शीघ्रही, बहुत भाँति अलसाय।
बिंबशूल है नाम तिहि, तुरतै करो उपाय॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हींग अधेला एक भारि, वच औ वायविडंग ।
भस्म करा कै दीजिये, पानीकेरे संग ॥ २ ॥

अथ झलद शूल । देखो घोडा नंबर १३८.

दोहा—मुँहसे करै अवाज बहु, धरणीमें गिरि जाय ।
झलदशूल है नाम तिहि, तुरते करौ उपाय ॥
चौ०—लटजीराके बीज मँगावै । पिपरी सैंधव आनि पिसावै ॥
पैसा पैसा भरि सब लीजै । महुआ तेल आधसेर दीजै ॥
एक रोजकी यह मौताजा । करो तीनिदिन शूल सो भाजा ॥

अथ गजशूल । देखो घोडा नंबर १३९.

दोहा—रमरै नाभी तुरंग जो, भुँइलोटै भुँइ जाइ ।
सोवै चरण पसारिकै, सो गजशूल कहाय ॥
चौ०—वच औ कूट दुवो पिसवावै । ताते जलके संग पियावै ॥
सात पाँच दिन दीजै भाई । सो गजशूल दूरि होजाइ ॥

अथ राकसशूल । देखो घोडा नंबर १४०.

दोहा—उदरपीर जाके हवै, उठि गिरि पल छिन माहि ।
हींसै टापै दृग अरुण, औषध करो सु ताहि ॥
चौ०—पाकी अँबिलीको रस लेहू । सैंधव तेलु तिलनको देहू ॥
सिरसाको रस तासम करो । एकत करि नारीमें भरो ॥
तीनिरोज घोडेको दीजै । हृष्ट पुष्ट तिहि नीको लीजै ॥

अथ शीलप्रवर्तीशूल । देखो घोडा नंबर १४१.

दोहा—सूधी छाती जों गिरै, अश्व धरणि बहुबार ।
शीलप्रवर्ती शूल है, ताको यह उपचार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई–हींग सोंठि सैंधवसम लेहू । छिरका सानि दहीमों देहू ॥
तातो नीर शूल लखि दाज । यह विचार नीको सुनि लीजे ॥
लंघन करो हानि नाहिं होई । दाना ताहि न दीजे कोई ॥

अथ श्रवंतशूल । देखो घोडा नंबर १४२.

दोहा–छींके धाँसे बहुत जो, बदन मलीनो होय ।
शूलश्रवंत सु जानिये, महाकठिन रुज सोय ॥
चौपाई–स्याह मिरच महुरेठी लावे । [illegible] पलाशके बीज मँगावे ॥
अजवाइनि लै दूनो भाई । सकलदवा सम पीसो जाई ॥
पावसेर गोदूध मँगावे । हींग लेउ मखतूल बतावे ॥
साँझ सकारे दीजे कोइ । जाय श्रवंतक शूल सु खोइ ॥

अथ क्षुधाव्रतशूल । देखो घोडा नम्बर १४३.

दोहा–बैठे उठि लोटे बहुरि, मुख बोले अकुलाय ।
घास न खावे अश्व सो, शूल क्षुधाव्रत आय ॥
चौपाई–छालीमकरा और पलासा । बीजकरंज हींग बहुबासा ॥
सैंधव समकरि देउ खवाई । उदरशूलको नाश कराई ॥

अथ खंडशूल । देखो घोडा नम्बर १४४.

दोहा–पेट फूलि काँपे अधिक, अरु गिरि परै जु धाय ।
खंडशूल है नाम तिहि, दैवयोगते जाय ॥ १ ॥
चारिउ पाँयन जाँघमें, पछना देइ दिवाय ।
यह उपाय प्रथमे करै, पाछे औषध खाय ॥ २ ॥
चौपाई–पाँच टंक हरैं लै आवे । वायविडंग बराबरि लावे ॥
पैसाभारि ले बीज पवाँरा । रोवनसीर जवायानि डारा ॥
निंबु कागजीको रसु लावे । सकल पीसि औषध सनवावे ॥
चोदाहादिन घोडेको दीजे । खंडशूल तुरते हरि लीजे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ सखंतशूल । देखो घोडा नम्बर १४५.

दोहा—निशि वासर माहि परि रहै, बोलै उदर बेहोस ।
श्वास अधिक मुखते चलै, तिहि यमलोक निवास ॥

चौपाई—केला मूलटंक दश लेऊ । पाँचटका केताकि जर देऊ ॥
सेंबरछाली अँवरा आनी । बीस टका दोऊ परमानी ॥
छा पैसाभरि भीतिको खारा । गोपय लीजै तिहि सम भारा ॥
थोरी आँच अग्निकी देवै । यहिविधि औटि पाक करि लेवै ॥
मिश्री मेलि जो हयको देहू । शूलसखंत तुरत हरिलेहू ॥

अथ वातोदरशूल । देखो घोडा नंबर १४६.

दोहा—बैठि बैठि पुनि पुनि उठै, रहै चरणको तानि ।
छिनमें करै कराहको, सो वातोदर जानि ॥

चौपाई—खुरासनि अजवायनि लावै । तामें वचको आनि मिलावै ॥
कुटकी कुरथी लीजै सोवा । सकल पीसि सम करै समोवा ॥
टंक टंक दुइ प्रात खवावै । सात रोजमें नीको पावै ॥

अथ प्रवर्तीशूल । देखो घोडा नंबर १४७.

दोहा—हींसै टापै अति झुकै, बोलै बारंबार ।
शूलप्रवर्ती जानिये, ताको यह उपचार ॥

चौपाई—वायविडंग हींग सम लेहू । नमदाराख जारि सम देहू ॥
वच औ सोंठि सोहागा लीजै । रेहूपानीमें सब दीजै ॥
नीको होय व्याधि बहि जाई । जो या विधिसों करै उपाई ॥

अन्य ।

दोहा—हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै ढक दोय ।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दाधि गाईके साथही, पीसौ औषध सोय ।
सातरोज लगु दीजिये, तुरंग अरामै होय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—हींग अधेला एक भारि, वच औ वायविडंग ।
भस्म करायके दीजिये, सीरे जलके संग ॥

अन्य ।

चौ०—तिलको तेल पाव यक आनी । ताहि बराबरि गोघृतजानी ॥
घामें बाँधिक देउ खवाई । तुरतै शूल नीक होजाई ॥

अन्य ।

चौ०—सोंठि रु हालिम एक पिसाई । गोघृतसंगै गूट बँधाई ॥
पहर सकारे देउ खवाई । खातै रोग नीक ह्वै जाई ॥

अथ मृगशूल ।

दोहा—चहूँ ओर चितवत रहै, दाना घास न खाइ ।
मृगशूल सो जानियो, औरौ बल घटि जाइ ॥ १ ॥
खील सोहागा लीजिये, पैसाभरि मँगवाइ ।
ता सम लीजै हींगको, सोऊ खील कराइ ॥ २ ॥
सोंठि हर्र हरदी सहित, टकाटकाभरि लाइ ।
सबको लेउ मिलाइ करि, हयको देहु खवाइ ॥ ३ ॥

अथ मुद्रितशूल ।

दोहा—घूमति वाजी होइ जो, दमति बहुत पुनि सोइ ।
सूँघै भूको बार बहु, मुद्रित कहिये सोइ ॥ १ ॥
सोंठि लीजिये दोइ पल, महुआतेल मिलाइ ।
शूलव्याधि नाशै तुरत, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ साकवर्त्तशूल ।

दोहा—घरघराय बोलै तुरँग, गिरि गिरि परै न होस ।
साकवर्त्त सो शूल है, करौं उपाय नरेस ॥
चौ०—छेवटाकै जर सोंठि मिलाई । समकारि कपरछान पिसवाई ॥
दूध मिलाय अश्वको दीजै । साकवर्त्त शूलै हरिलीजै ॥

अथ सुखवर्त्तशूल ।

दोहा—बहु दाना खावै तुरंग, रहै पिआसो जौन ।
पीत लार मुख स्वेद तनु, सुखवर्त्तक है तौन ॥
चौ०—सेहुँडाकी जर सोंठि मँगावै । पिपरी तीनोसम पिसवावै ॥
गोपय संग मिलायक दीजै । सुख वर्त्तकशूलै हरिलीजै ॥

अथ गलतरही शूल ।

दोहा—उदर जु ऐंठोई करै, तानै देह तुरंग ।
गलतरही सो शूल गनि, यह औषध करि ढंग ॥
चौ०—जीन पुरानेको लैआवै । ताको फूँकि भस्म करवावै ॥
पलाशबीज अरु हींग मँगावै । दानाको पानी धरवावै ॥
दवा पीसि तिहि पानी घोरै । गेरह दिन खावै दुख हरै ॥

अथ सनदरतशूल ।

दोहा—श्वास लेय बहु अश्व जो, लोटि धरणिमों जाइ ।
पाँजर मारै पीरसों, तिहि सनदरत कहाय ॥
चौ०—अजवायनि औ मुंडी आनै । पैसापैसाभरि परमानै ॥
पैसा पित्तपापरा डारी । कसेरुवा इक पाव निहारी ॥
गोघृत सेर मिलावै एका । तामें गुटिका करौ विवेका ॥
औषध घोडे देउ खवाई । रामप्रताप नीक ह्वैजाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ टाटशूल।

दोहा—झूलि पेट गिरि गिरि परै, रह पेशाब जो बंद।
टाटशूल ताको कहैं, यह औषध सुखकंद॥
चौ—गदहपुरैना दंतीकी जर। पलाशछालि तिलतेल मिलैकर॥
पीसि कूटि घोडाको दीजै। टाटशूलको नाश करीजै॥

अथ पानिशूल।

दोहा—जल पिआय दौरावई, जो हयको असवार।
पानिशूल तिहि ऊपजै, ताको यह उपचार॥
पानी पिये जु धाइकै, जो दौरावै घोर।
पानिशूल तिहि ऊपजै, सो अति कीन्हें जोर॥ २॥
चौ०—पीपरि सोंठि हींगको लीजै। सैंधवलोन भाग सम कीजै॥
तीनि रोज घोडा जो पावै। पानिशूलको खोज नशावै॥

अन्य।

चा०—सोंठि मिर्च गजपीपरि लावै। सैंधव सोंचर लोन मँगावै॥
वजन बराबरि करि पिसवावै। एक छटाँक प्रात मुख नावै॥
आठरोज लग हयको दीजै। पानिशूल सगरो हरि लीजै॥

अथ रसवंतशूल।

दोहा—परो रहै बोलै उदर, कुरकुराय हय जौन।
शूल कही रसवंत सो,. करै जतन रुजदौन॥
चौ०—जांघ रुधिरकी फस्त खुलाई। तब औषध कीजै मनलाई॥
अजवायनि अरु हींग मँगावै। बायविडंग हर्र लै आवै॥ ॥
परवरकी जर सम सब कीजै। गोघृत रस कागजीको लीजै॥
निंबु कागजी शक्कर लीजै। सकल मिलाय तुरंगहि दीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अजीर्ण शूल ।

दोहा–माथ पटकि तानै वदन, करहै बहुत तुरंग ।
शूल अजीरणकी परख, दवा किये रुज भंग ॥

चौपाई–सैंधव सोंचर लोन मँगावै । हींग तक्रमों मेल खवावै ॥
बहुतै कष्ट शूलते होई । खाये दवा अजीरण खोई ॥

अजीर्ण लक्षण ।

दोहा–अंग सकल काँपै बहुत, कहै अजीरण दोष ।
नकुल मते तिहि जतन करु, रहै न उरमें रोष ॥

चौ०–हींग सुगंधबाला अरु सोंचर । लेउ अतीस भाग सम सुंदर ॥
चनाके आटामें तिहि दीजै । ताके पाछे औषध कीजै ॥
गोदाधि जीरा मिलै खवावै । सकल अजीरण दोष नशावै ॥

अथ रुखवंत शूल ।

दोहा–पटकि पटकि पग धरत महि, ताकी यह पहिचान ।
होत शूल रुखवंत सो, कीजै जतन विधान ॥

चौपाई–सोंठि पीपरी वायविडंगा । मिर्च स्याह लहसुन सम संगा ॥
पीसि छानि गोघृत सँग खावै । रुखवंती सो शूल नशावै ॥

अथ गदशूल ।

दोहा–दमै तुरंगम बहुत जो, धरणीमों गिरिजाय ।
गद शूले तिहि जानियो, तुरते करो उपाय ॥

चौपाई–वच औ कूट पषाण मँगावै । अजैपाल सैंधव लै आवै ॥
दोकरा दोकराकी परमाना । चनाके आटा दीजै खाना ॥

अथ वदशूल ।

दोहा–उदर श्वास जिहिके हवै, बैठै उठै बहोर ।
अधिक पीर तिहि जानिये, बदै शूल है जोर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई—वच औ कूट पषाण मँगावै । पैसा पैसा भरि लै आवै ॥
ताते नीर सु देइ पिआई । सो वदशूल नीक हो जाई ॥

अथ दहनशूल ।

दोहा—जिहि बाजीके पेटते, जरद झरत है नीर ।
दहनशूल तिहि जानियो, महारोग गंभीर ॥
चौ०—असगँध सोंठि मिरचको लावै । गऊदूधमें पीसि पिआवै ॥
सात पाँच दिनलौं जो दीजै । दहनशूल तुरतै हरि लीजै ॥

अथ आसनशूल ।

दोहा—श्वास लेइ बहु अश्व जो, लोटि धरणिमहँ जाइ ।
पाँजर रगरै पीरसों, आसनशूल कहाइ ॥
चौ०—अजवाइनि औ मुंडी आनौ । पैसा दुइ दुइ भरि परमानौ ॥
कालेश्वर दुइ तोला लावै । पावसेर हरदी पिसवावै ॥
गाईका घृत लै पल एका । तामें गुटिका करौ विवेका ॥
औषध घोडे देउ खवाई । आसनशूल दूरि हो जाई ॥

अथ ऊर्द्धशूल ।

दोहा—बैठै मुँइ लोटै नहीं, अधिक पसीना जानि ॥
नैन मूँदि झुकि झुकि झुमै, ऊर्द्धशूल सो मानि ॥
चौ०—मुख घोडेके पानी गिरै । सब लक्षण विचारि उर धरै ॥
सोरठा—पिपरी पिपरामूर, बीज कसौंजी मिर्च लै ॥
सोंठि बैतरा मूढ, गऊदूध सँग दीजिये ॥
चौ०—तप्तनीर सरिो करि देई । दानाका तिहि नाउ न लेई ॥
भूँख बढै मोटो हो गाता । रोग घटै जो दीजै प्राता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ सन्निपातशूल ।

दोहा--काँपै बहु उछरै गिरै, बारंबार निदान ॥
सन्निपात तिहि शूलको, नाम कहौं पहिंचान ॥
चौ०--अजवाइनि बच राई लीजै । पिपरी सम कारि तामें दीजै ॥
सौंफ सोहागा हींग मँगाई । छिरकाके सँग देउ खवाई ॥
ता छिरकामें डारौ घीऊ । ताते शूलै होइ निर्जीऊ ॥
आठ दिनालौं औषध कीजै । सन्निपातशूलै हरि लीजै ॥

अथ शरदशूल ।

दोहा--कहली रहै तुरंग जो, सूक्षम करै अहार ॥
शरदशूल तिहि जानिये, ताको पुनि उपचार ॥
चौ०--तिलको तेल पाव यक आनी । ताहि बराबरि गोघृत सानी ॥
घामें बाँधिक देउ खवाई । तुरतै अश्व नीक ह्वैजाई ॥

अन्य ।

चौपाई--सोंठि रु हालिम एक पिसावै । गोघृत संगइ गूट बँधावै ॥
पहर सकारे देइं खवाई । शरदशूलको नाश कराई ॥

अथ सर्वशूलकी दवा ।

चौपाई--वच मुंडी गंधीको आनी । उभै जवाइनि लै खुरसानी ॥
मूल इँदोरनि कूट सनाई । चँदसुर हरदी गुरच मिलाई ॥
जैतिकि पाती बायविडंगा । वन भांटा मेलौ तिहि संगा ॥
पलाशपापरा सैंधव रारा । जेठीसंग पत्तरज भारा ॥
गोली बाँध सहतके संगा । साँझ सकारे देउ तुरंगा ॥
पाँच सात दिन ग्यारह रोजा । सर्वशूलको रहै न खोजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ धनाशूल छन्दभुजंगप्रयात ।

भलो तक्र लेके सु हर्रे मिलावै । तहाँ सोंचरे औ कपूरे मँगावै ॥
करै पिंड याको तुरीको खवावै । धनापित्तकी शूल ताको मिटावै ॥
दोहा—शूल कही पंचास यहि, नाम निदान सुजान ।
जो कछु अब बाकी रही, आगे कहौं प्रमान ॥

अथ शूलकुरकुरी ।

चौपाई—हाले उदर नासिका फरके । नैन नासिकाते जल ढरकै ॥
ताको प्रथम वतीसा दीजै । घृत अरु सोंठि वेतरा पीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—जो याते नहिं छाड शूलै । पाछे देय सुराकर फूलै ॥
जल आगे पाछे हय फेरै । कहैं नकुल तिह शूलक घेरै ॥

लक्षण वा दवा ।

चौपाई—बैठै उठै घोड तनिआवै । ताकी दवा तुरत करवावै ॥
हरै राई लोन पिसावै । चनाके आटा साथ खवावै ॥
याहिते जो कुरकुरी न छूटै । तौ दूसरि औषध लै कूटै ॥
हैंसिमूलको तुचा मँगावै । पातर पीसि नीरसँग प्यावै ॥

अन्य ।

चौ०—कारीजीर जवायानि बुकनी । तामें डारु तमाखू थुकनी ॥
घोडाको जो देउ खवाई । तुरत कुरकुरी खोज नशाई ॥

अथ कुरकुरी कमखुराककी ।

दोहा—जिहि घोडेको धरति है, सदा कुरकुरी मर्ज ।
कमखुराक होजात है, जतन करौ नहिं हर्ज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—कुटकी घुडबच बायविडंगा । हरदी भाँग करौ यक संगा ॥
दुइ दुइ तोलाकी परमाना । आगे दवाके और विधाना ॥
हींग सोहागा खील करावै । छा छा मासे सोंचर लावै ॥
कारीजीर मिरच ले गोली । चारि चारि तोला तिहि मेली ॥
कपरछान कारि ताहि धरावै । दो तोला नित प्रात खवावै ॥
भूँख बढै अरु ताजा होई । उदरकुरकुरीको हरि लेई ॥

अन्य ।

दोहा—त्रिफला राई काँचरी, सोंठि जवायनि लेउ ।
सहिंजन छालि कुटाय सम, कछु जल बहु दधि भेउ ॥ १ ॥
मटुकामें भारि लीदि जहँ, गाडि देउ दिन सात ।
काढि पावभारि देइ नित, सर्व कुरकुरी जात ॥ २ ॥
जो सरदीकी ऋतु लखै, तामें दही न डारि ।
छिरका मिलै जु गाडिये, दिये उदर सुखकारि ॥ ३ ॥

अथ कुरकुरीकी दवा ।

हरिगी०छंद—घुँघुँवारि असगँध सेंवरे पुनि मास पिंडहि लेहु ।
मंजीठ इंद्रावनि फलहि सो लाय तामहँ देहु ॥
भाग सम कंकोल आनहु अग्नि लेहु पचाइ ।
दुइ टकाभारि देहु वाजी उदशूल नशाइ ।
दोहा—मिटै कुरकुरी वाजिकी, लघुशंका खुलि जाइ ।
नकुलमते यह भाषिये, काढा दियो बताय ॥

अन्य ।

स०—सोंचर लै अजवाइनि चारु भली विधि हर्र विशाल मिलावै ॥
औ मधु वाहि समान करौ फिरि कूपको लै जल माहि पचावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टम अंश रहै जबहीं तबहीं सो तो जाय तुरीको खवावै ॥
रोग नशै अरु भूख बढै पुनि ता हय पौन समान चलावै ॥

अथ कुरकुरीका जुलाब ।

दोहा—मोथी कीतौ चनाके, बिरवा हरिअर होइ ।
ते समूच हय खाइ जो, गूंजा बैठति सोइ ॥ १ ॥
खूखादाना नाजुकी, बेमौताज जु खाय ।
अश्व विकल हो जात है, पेट फूलि तिहि जाय ॥ २ ॥

चौपाई—ताकी दवा जुलाब बतावा । आधसेर घृत लै धरवावा ॥
कीतौ रेंडीतेल मँगावै । आध सेर परमान करावै ॥
डेढ सेर दूधै लै धरै । आध सेर गुड तामें करै ॥
यह सब अग्नि चढाइ पकावै । सीर गरम करि अश्व पिआवै ॥
बच्चा होइ अश्व जो कोई । कीतौ अंगक छोटा होई ॥
गात देखिकै दवा कराई । दस्त ताहि बहु आवैं भाई ॥
पटकै उदर अश्व खुलि जाई । रामकृपाते नीक दिखाई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतशूलवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ पेटमें कीरा वा हिरुआ वा जोंक वगैरह परैकी दवा ।

छंद हरि०—फलसा सुखेकी मूल लै पुनि रेणु आनि मिलाइये ।
सहत लै सो कूपजलसों अग्नि मध्य पचाइये ॥
क्राथ लै करि अंश अष्टम तुरत वाजिहि प्याइये ।
जोंक आदिक कीट नाशै नकुल मत समुझाइये ॥

अन्य ।

चौपाई—बीज बिजौरा चंदन लावै । सरसौं श्वेत उशीर मँगावै ॥
पुनर्नवा ब्रह्मदंडी लावै । क्राथ पकाइ सोंठि मिलवावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सीरो करि कटु तेल जो, तोला चारि मिलाइ ।
वाजि पिआवो जो सुघर, सर्व किरिमि बहिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—सेंहुड दूध कपूर लै, धात्रीपत्राहि आनि ।
कूपनीरसों पिंड करि, किरिमि उदरकी हानि ॥

अन्य ।

दोहा—जो घोडेके पेटमों, बहुत किरिमि ह्वै जाइ ॥
गिरै पेटारू पेटते, दाना घास न खाइ ।
चौपाई—राई हरदी मिलै कैफरा । कूटि छानि बरतनमें धरा ॥
इकइस दिन दुइ पहर खवावै । आध पाव परमान बतावै ॥
देइ जुलाब अश्वको कोई । तासों किरिमि नाश सब होई ॥

जुलाब ।

दोहा—राई खारी तुल्य करि, आध सेर दधि माहिं ।
यह जुलाब हयको करै, उदरव्याधि नाशि जाहिं ॥

दवा ।

दोहा—मधुरेठी सम ताहिके, बायबिंडग मँगाइ ।
काढा औटिक दीजिये, कीरा उदर नशाइ ॥

जुलाब ।

दोहा—सज्जी लोध पिसाइकै, भाग बराबरि लेइ ।
गऊ तक्र सम दीजिये, दस्त अधिक करि देइ ॥

अन्य ।

दोहा—राई और बिधार लै, खारी दही मिलाइ ।
आध सेर मौताज कहि, भाग समान कराइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—हयको देउ खवाइ, एकरोज फिरि बीचु दै ।
दीजै फेरि देवाइ, तीनिबार यहि विधि करै ॥ १ ॥
दाना दीजै नाय, नरम घास तिहि दीजिये ।
जब जुलाब ह्वै जाय, यह औषध तब कीजिये ॥ २ ॥

दोहा—ईसबगोलै पाव अध, ता सम दही मिलाइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, उदरव्याधि मिटि जाइ ॥

अन्य जुलाब पित्तरोगका ।

दोहा—आमिलतास अरु हर्र कहि, लीजै सोंठि मिलाइ ।
बहुरि मिठाई पोटरी, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गर्मनीरसों राति भरि, दीजै ताहि भिजाइ ।
प्रात भयेमो मीजिकै, कपरासो छनवाइ ॥ २ ॥
नेनू लीजै एक पल, सोऊ लेउ मिलाइ ।
सेर एक मौताज करि, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक रोजको बीचु दै, फेर दीजिये आनि ।
या विधि दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥
गरमी तासु मिजाजमो, अती होइ जो आनि ।
खुश्की ताते होति है, या औषधको जानि ॥ ५ ॥

दवा ।

दोहा—आमिलतास लाभेर अरु, पाकी अँबिली आनि ।
बडी हर्र अरु लीजिये, सेर एक सब जानि ॥ १ ॥
भिजवै पानी गरममों, ताको मीजि छनाय ।
बिहिदानाको लेहु पुनि, ईसबगोल मँगाय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूनौ लीजै आठ पल, तासु लबाब कढाइ ।
औषध माहि मिलाइकै, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक एक दिन बीचु दै, तीनि रोज दै याहि ।
फिरि ठंढाई दीजिये, चारि रोज लगु ताहि ॥ ४ ॥

ठंढाई ।

दोहा—रेसा खतमी लाइकै, बिहिदाना मँगवाय ।
तासु लबाब कढाइकै, दुइ दुइ पल धरवाय ॥ १ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, चारि टका भरि लाइ ।
तिनको पीसि छनायकै, लेहु लबाब मिलाइ ॥ २ ॥
सोरठा—दीजै ताहि पिआइ, पित्त दोष मिटि जात है ।
शालहोत्र मत आइ, सो लखिकै हम यहि लिख्यो ॥

अथ जुलाब कफदोषकी ।

दोहा—सौंफ कूट पुनि हींग लै, टका टका भरि जानि ।
अमिलतास पुनि बीस पल, खारीदुइ पलआनि ॥ १ ॥
गरमनीरसों प्रथम ही, अमिलतासु भिजवाइ ।
सबै औषधी पीसिकै, तामहँ देउ मिलाइ ॥ २ ॥
हयको देउ पिआइ सो, तीनि रोज लौं ताहि ।
एक एक दिन बीचु दै, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, शक्कर मिलै खवाइ ।
यह औषध दिन तीनि लै, हयको देउ दिवाइ ॥ ४ ॥

अथ पेटमें आंव पडनेका जुलाब ।

सोरठा—सिमिटि सिमिटि रहि जाइ, उठै मरोरा पेटमें ।
आँवदोष सो आइ, दाना घासहि खाइ कम ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—लै जमालगोटा दशाहि, मीठे तेल जराइ ।
भांटा भरता मध्य सो, हयको देउ खवाइ ॥
सोरठा—खूब पेट झरि जाय, सेर एक दधि दीजिये ।
प्रात भये फिरि नाय, तिसरे दिन फिरि देउ हय ॥
दोहा—या विधि दीजै तीनि दिन, पेट साफ ह्वै जाइ ।
जौलों रहै जुलाब दिन, दाना नहीं देवाइ ॥

जुलाबमें दाना देनेकी विधि ।

सोरठा—मूंग महेला ताय, प्रथमहि थोरो दीजिये ।
फेरि बढावति जाय, पावति जेतो होइ हय ॥

अथ जुलाब अजमाया हुआ बहुत अच्छा ।

चौ०—लेउ सोहागा सज्जी भाई । तामें डारु निसोदर आई ॥
तोले तोले सम पिसवावै । आधसेर पक्के जल लावै ॥
खुरासानि अजवायन लीजै । आधपाव पक्के तिहि कीजै ॥
चारौ दवा नीरमें डारै । पावक मध्य पकाय सुधारै ॥
तीनो दवा जवायनि स्वकिहै । तब छाहीमें सूखे धरि है ॥
जौके आटा मध्य मिलावै । पैसाभरि नित प्रात खवावै ॥
आठरोज घोडाको दीजै । उदर सफाई बहुविधि कीजै ॥

दस्तबंद होनेकी दवा ।

चौ०—सेंबरकी जो रुई मँगावै, गोघृत साथ तुरै खिलवावै ॥
देतै दस्त बंद होजाई । सकल रोगको नाश कराई ॥

अन्य ।

चौ०—एक छटाँक भाँग मँगवावै । गोदधि आधपाव लै आवै ॥
दोनों मिलै तुरँगको दीजै । दस्तबंद ताही छिन लीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—चावर लेउ पुरान मँगाई । भात पकाइ सिरो करवाई ॥
गोदाधि ईसबगोल मँगावै । सकल फेंटि यकसम करवावै ॥
घोडेको जो देइ खवाई । तुरते दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ उदरव्याधि नाशन ।

दोहा—कालेसुर औ सोंठि लै, असगँध मिलै पिसाय ।
काढा दीजै भाग सम, उदरव्याधि बहिजाय ॥

अन्य ।

दोहा—राईखारी सम दही, सेर आध जो देहु ।
व्याधि उदरकी गिरि परै, सकल रोग हरि लेहु ॥

अन्य ।

दोहा—भाँटा भरत कराइकै, दधिसों देहु खवाइ ।
तीनि दिनामें अश्वको, सकल रोग बहि जाइ॥

इति श्रीशालहोत्र०जुलाबवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ खारिस्ति खजुलीके लक्षण वा दवा ।

दोहा—देह होति खजुवाति जो, अति खारिस्ति जो होइ ।
औषध कीजै ताहि यह, शालहोत्र मत जोइ ॥
पहिले दोनों पगनकी, लीजै रगै खुलाइ ।
ता पाछे औषध करै, रोग ताहि बहि जाइ ॥ २ ॥

औषध ।

दोहा—बकुची तिल हरदी सहित, बीज पवाँरहि आनि ।
मोथा और भेलाव लै, तोले तीस बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीसै सब बारीक करि, दीजै दही मिलाइ ।
एकदिवस भरि घाममें, दीजै ताहि धराइ ॥ २॥
घामेमें हय बाँधिकै, दीजै ताहि मलाइ ।
फिर धोवै जल शीतसों, तीनिरोजमें जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—तीनि पाव साबुन सहित, ता सम मिर्चालाल ।
सूखि तमाखू ताहि सम, सबको पीसै हाल ॥ १ ॥
लीलाथोथा लीजिये, आध पाउ यह जानि ॥
सोरा कलमी पाउ यक, सबको पीसै आनि ॥ २ ॥
दालिं उरदकी लीजिये, तीनिसेर यह जान ।
ताहि चौगुनो डारि जल, खूब पकावै आन ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिकै, लोहे बर्त्तन माहि ।
घोटै लकरी नीबकी, दालि सहित मिलि जाहि ॥ ४ ॥
ताहि लगावै धूपमें, तीन दिवसलौं जानि ।
शीतोदकसों धोइये, जाय रोग यह मानि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—अरुई दधि खारी मिरच, पानमहेला नाय ।
ताहि खवावै जून दहुँ, कइउ रोग नाशि जाय ॥

अन्य दवा लगानेकी ।

दोहा—पोस्ता और कसाँवजी, भूँजि अधजरी लेउ ।
सेर एक दूनौं पिसै, कटुक तेल मधि घेउ ॥ १ ॥
फेंटि लगावै तुरँग तन, मलौ घरी दुइ पूरि ।
घाम बाँधि दिन सातलौं, होइ खारिस्ती दूरि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—चावर लेउ पुरान मँगाई । भात पकाइ सिरो करवाई ॥
गोदाधि ईसबगोल मँगावै । सकल फेंटि यकसम करवावै ॥
घोडेको जो देइ खवाई । तुरते दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ उदरव्याधि नाशन ।

दोहा—कालेसुर औ सोंठि लै, असगँध मिलै पिसाय ।
काढा दीजै भाग सम, उदरव्याधि बहिजाय ॥

अन्य ।

दोहा—राईखारी सम दही, सेर आध जो देहु ।
व्याधि उदरकी गिरि परै, सकल रोग हरि लेहु ॥

अन्य ।

दोहा—भाँटा भरत कराइकै, दधिसों देहु खवाइ ।
तीनि दिनामें अश्वको, सकल रोग बहि जाइ॥

इति श्रीशालहोत्र०जुलाबवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ खारिस्ति खजुलीके लक्षण वा दवा ।

दोहा—देह होति खजुवाति जो, अति खारिस्ति जो होइ ।
औषध कीजै ताहि यह, शालहोत्र मत जोइ ॥
पहिले दोनों पगनकी, लीजै रगै खुलाइ ।
ता पाछे औषध करै, रोग ताहि बहि जाइ ॥ २ ॥

औषध ।

दोहा—बकुची तिल हरदी सहित, बीज पवाँरहि आनि ।
मोथा और भेलाव लै, तोले तीस बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीसै सब बारीक करि, दीजै दही मिलाइ ।
एकदिवस भरि घाममें, दीजै ताहि धराइ ॥ २॥
घामेमें हय बाँधिकै, दीजै ताहि मलाइ ।
फिर धोवै जल शीतसों, तीनिरोजमें जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—तीनि पाव साबुन सहित, ता सम मिर्चालाल ।
सूखि तमाखू ताहि सम, सबको पीसै हाल ॥ १ ॥
लीलाथोथा लीजिये, आध पाउ यह जानि ॥
सोरा कलमी पाउ यक, सबको पीसै आनि ॥ २ ॥
दालिं उरदकी लीजिये, तीनिसेर यह जान ।
ताहि चौगुनो डारि जल, खूब पकावै आन ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिकै, लोहे बर्त्तन माहि ।
घोटै लकरी नीबकी, दालि सहित मिलि जाहि ॥ ४ ॥
ताहि लगावै धूपमें, तीन दिवसलौं जानि ।
शीतोदकसों धोइये, जाय रोग यह मानि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—अरुई दधि खारी मिरच, पानमहेला नाय ।
ताहि खवावै जून दहुँ, कइउ रोग नाशि जाय ॥

अन्य दवा लगानेकी ।

दोहा—पोस्ता और कसाँवजी, भूँजि अधजरी लेउ ।
सेर एक दूनौं पिसै, कटुक तेल मधि घेउ ॥ १ ॥
फेंटि लगावै तुरँग तन, मलौ घरी दुइ पूरि ।
घाम बाँधि दिन सातलौं, होइ खारिस्ती दूरि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य खानेकी दवा ।

चौ०—गोघृत मैदा लेउ मँगाई । तोला तीनि तीनि तौलाई ॥
दालचीनि पैसा भारि लीजै । चोख बराबारि तामें दीजै ॥
गोली तोला करौ विधाना । दाना साथ दीजिये खाना ॥
सातरोज घोडेको दीजै । रोग जाय जो औषध कीजै ॥

दवा लगानेकी ।

दोहा--हरदी गंधक नैनियां, मैनसिला त्रै आनि ।
सरसर दमरी वजन करि, सेर तेल कटु जानि ॥ १ ॥
बूँकि दवाई तेलमें, पकै छानि तेहि लेइ ।
मलै पहर यक अश्वतनु, पांच दिवस करि देइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—पोहकरमूलै सहत लै, अडुअ बकाइनि पात ।
गूगुर स्याह जो वजन करि, सरसर दमरी ख्यात ॥ २॥
सवासेर घृतमें सकल, पीसि पकै ले छानि ।
मलै तुरंगके गात नित, चूलुनसों परमानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बदरीफलको हाथ मलि, फेन उठै सो लेय ।
खूनै मलै खारिस्तमें, घोडा निर्मल होय ॥

अन्य ।

दोहा—मेडुआचूरन सेर येक, सज्जी आधी आनि ।
फेंटि अनलपर सो पकै , मींजै बलसों जानि ॥

अन्य ।

दोहा—बटदल पीपर छालिको, जारि छार करि लेइ ।
खारी अरु खारीनमक, रस अंजीरहि देइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माठामें सबको मिलै, लावै हयको अंग ।
चुल्ली और खरिस्तको, करिहै तुरतै भंग ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—बचुकी गंधक मनसिल आनी । बायविडंग ताहिमें सानी ॥
कूटि पीसिकै यक सम कीजे । पानीमें सब निशिभरि भीजे ॥
प्रात मथे लै सरप पतेलू । घोडे अंग सो मर्दन मेलू ॥
घटिका तीनि घाममें राखी । माटीमिल धोवै हरसाखी ॥
रोग घटै जो घीव पिआवे । फेरि खारिस्ति होन नाहिं पावै ॥
गंधक मनसिल औ हरतारू । तिलके तेलहि करु निरधारू ॥
सोई तेल अश्वके मलै । जाइ खारिस्ति होय अति भलै ॥

अन्य—चौपाई ।

साबुन चँदसुर गुड सम लीजै । तीनों वस्तु ओट सम कीजै ॥
अश्वअंगमें ताहि मलावै । भोर भये घामें अन्हवावै ॥
शालहोत्र यह कहै उपाई । रोग खरस्ती दूरि कराई ॥

अन्य ।

दोहा—मुरदा शंखै तूतिया, रसकपूरको लेउ ।
पैसा पैसा भारि करौ, कपरछान करि देउ ॥ १ ॥
अजवानि तीनौ पाव यक, घोडबच पाव सवाय ।
पारा सिंगरफ लीजिये, दुइ तोला तौलाय ॥ २ ॥

चौपाई—गंधक बचुकीको लै आवे । आधपाव दूनौ तौलावै ॥
हटतार संखिया जहर मँगाई । पैसा पैसा भारि तौलाई ॥
सकल दवा खल में पिसवावै । सर्षप तेल ऽ२॥ मध्य घोरवावै ॥
घामें बाँधि अश्वतनु रगरै । ताके पाछे मृतिका घोरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक पहरके पाछे मलै । भोर भये नहलावै भलै ॥
ताके भोर दवा मलवावै । याहि कर्मते रोग नशावै ॥
ऊँट श्वान वृष हय पशु भाई । सकल खरिस्ती नाश कराई ॥
सकल चिकित्सा जे खजुलीके । याहि समान नाहिं और मतेके ॥

अन्य ।

दोहा—नींबी गुडुलू तेल लै, एक छटाँक प्रमान ।
जौरोटी सँग दीजिये, यकइस दिवस विधान ॥ १ ॥
कोई होइ खरिस्ति जो, अश्वाके तनु माहि ।
शालहोत्र मत जानियो, यहि सम दूजी नाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—गिरई मछरी लाइकै, पाँच सेर तौलाइ ।
उतनाई दधि दीजिये, महिषी केर मिलाइ ॥
चौपाई—माटीके बरतन भरि धरिये, मोहराबंद ताहिको करिये ॥
यकइस दिन घूरे गडवावै । ताहि बइसयें दिन निकरावै ॥
नित प्रति कच्चे पाव खवावै । रोग खरिस्ती सब मिटि जावै ॥

अन्य लगानेकी दवा ।

चौपाई—मछरी भूर पाँचसेर लावै, दशसेर महिषीतक्र मिलावै ॥
माटीके बरतन भरि धरिये । आठरोज लगु घूरे गडिये ॥
दोहा—नवयें दिनमें देहमें, मालिसि करो सुजान ।
जाइ खरिस्ती नीक है, दवा करो बुधिमान ॥

अन्य ।

चौपाई—बेल जंगली तोरि मँगावै । पानी डारि अग्नि पकवावै ॥
ताको गूदा लेउ कढाई । पानीडारि खूब घेपवाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माफिक सीराके करि लीजै। देह भरेमें मालिस कीजै॥
देह सूखि जब जावै भाई। तब पिंडोर माटी पोतवाई॥
तिसरे पहर देइ अन्हवाई। पाँच सात दिन यहै कराई॥

अन्य।

चौपाई—दही भैंसिको लेउ मँगाई। पक्के आठ सेर तौलाई॥
भूरे मछरी फेरि मँगाई। तीनि पाव ताको तौलाई॥
तितिली और करहुँआ लीजै। पाव पाव भरि वजन करीजै॥
मिरचा लाल छटाँक मँगावै। धोई दालि पाव भरि लावै॥
तोला एक तूतिया लावै। गंधक तोले तीनि मिलावै॥
आधपाव लै नींब कि पाती। पीसि दवा सब दही मिलाती॥
सो सब बरतनमें भरि लीजै। गोबर माहिं गाडि तिहि दीजै॥
दोहा—दुइ दिन तामें गाडिकै, तिसरे दिन खुदवाइ।
दवा अश्वकी देहमें, दुइ घंटा मलवाइ॥
चौपाई—धूपमाहिं बाँधौ तेहि भाई। घंटा भरि तक देह सुखाई॥
घोरि पिडोरु देह लगवावै। कूपके जलसे तेहि अन्हवावै॥
तीनिरोज यहि भाँति करावै। ता पाछे यह दवा खवावै॥
दोहा—दुइदिन आगे ताहिको, दानाबंद कराइ।
सातरोजतक दीजिये, खाजु नाश ह्वै जाइ॥

अन्य खाइकी दवा।

चौपाई—दही कि मूरानि लेउ बनाई, पाव एक ताको तौलाई॥
आँबा हरदी तोला तीनी। कूटौ ताको बहुत महीनी॥
गिरई मछरीको लै आवै। एक छटाँक वजन करवावै॥
यवके आटा सानि खवाई। एक खुराक कही यह भाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई–नींबीकी पाती लै आवै । कोपल दुइसेर वजन करवावै ॥
एकसेर सहतरा मँगाई । दूनौ कूटिक देउ धराई ॥
माटीके बरतनमें धरै । ऊपरतक माठा तेहि भरै ॥
आठरोज घामें धरवाई । नवयें दिन ते अश्व खवाई ॥
यव वा चनाके आटा दीजै । आध पाव तेहि वजन करीजै ॥

अन्य लगानेकी दवा ।

चौपाई–तोले तीनि तमाखू लीजै। लाल मिर्च ताके सम कीजै॥
बीज बकैनाके लै आवै । पावसेर तिनको तोलावै ॥
दोहा–दालि उरदकी सेरु भरि, जलमें सबै मिलाइ ।
ताहि चढावै अग्निपर, खूब पाकि जब जाइ ॥
सोरठा–लीजै ताहि उतारि, जब ठंढा होजाय बहु ।
डारै तुरत निकारि, मिरच तमाखू ताहिते ॥
दोहा–खूब मलै फिरि हाथसों, लीजै ताहि छनाइ ।
गूदी रंडा पाव अध, दही सेरु मिलवाइ ॥ १ ॥
एकरोज धारि धूपमें, रोज दूसरे माँहि ।
मलै अश्वकी देहमें, बाँधै घामें ताहि ॥ २ ॥
फिरि धोवै जल शीतसों, श्रीधर वरणो आनि ।
या विधि कीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–दूध गाइको सेरु दुइ, पक्की तौल मँगाइ ।
लेहु फिटकरी मिर्च अरु, तोले पट मँगवाइ ॥ १ ॥
ताहि मलै सब देहमें, पहर बीति जब जाइ ।
धोवै पानी ठंढ करि, सात दिवस करवाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य बहुतदिनी खाजुकी दवा।

दोहा—सेर एक लै तेल तिल, दीजै ताहि मलाय।
रोज रोज सब देहमें, तेल मलत सो जाय॥ १॥
यकइस दिनलौं तेलसों, भीजि रहै सब देह।
मिटै खाजु सब वाजिकी, जानौ विन संदेह॥ २॥

अन्य।

दोहा—मनुजमूत्र मँगवाइकै, दीजै ताहि लगाय।
औषध कीजै ताहि पर, खाजु दूरि होजाय॥
चौपाई—मडुईकेर पिसानु मँगावै। तीनि पाव ताको तौलावै॥
सात टका भारि लोनु मिलावै। लेई ताकी आनि पकावै॥
सो देहीमें देइ लगाई। भोर भये डारै अन्हवाई॥
सात बार औषध यह करै। खाजु व्याधि घोडेकी हरै॥

अन्य।

चौपाई—षटमासे तूतिया मँगावै। ताते दूनी मिरच मिलावै॥
दोनोंको यकमाहिं पिसाई। गऊमूत्रमें ताहि मिलाई॥
दोहा—वाहि लगावै देहमें, रोज दूसरे मांहि।
माटी घोरि लगाइये, सूखि जबै सब जाहि॥
चौपाई—शीतोदकसों ताको धोवै। खाजु व्याधि घोडेकी खोवै॥
सातबेर यह औषध कीजै। खाजु व्याधि कबहूं नाहिं लीजै॥

अन्य।

दोहा—पावसेर लै लोनको, तोला भारि हरतारु।
पावसेर घृत माहिमो, दुवौ पीसिकै डारु॥
सोरठा—अग्नि पकावै ताहि, फेरि लगावै देहमें।
तीनि रोज लगु वाहि, बाँधौ ताको धूपमें॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—ठंढे जलसों धोइये, छिरका और शराब ।
दोऊ मिलै लगाइये, बढै देहकी आब ॥

अन्य ।

चौपाई—गोदधि तेरह सेर मँगावै । करुव तेल दुइ सेर मिलावै॥
पाती नींबकेर लै आवै । सेर एक तेहि अर्क कढावै ॥
दोहा—दालि उरदकी सेर भरि, ताको लेउ पकाइ ।
यक बासनमें औषधी, दीजै सबै भराइ ॥ १ ॥
सो लै गाडै लीदिमें, दशयें दिन कढवाइ ।
धरै ताहि लै धूपमें, रोज खवावति जाइ ॥ २ ॥
आटा भूँजे जवनको, पाउ सेर सो जानि ।
औषध लीजै ताहि सम, दीजै हयको आनि ॥ ३ ॥
चौ.-तीनि रोज या विधिको कीजै । डेढ पाव फिरि औषध दीजै॥
बारह दिनलौं देउ खवाई । बहुत दिननकी खाजु नशाई ॥
दोहा—अग्निवायु नाशै तुरत, बरसाती मिटि जाइ ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, खाजु पुरानी जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—हरदी मोथा कूट अरु, बरुन छालिको आनि ।
बीज कसौंजीको बहुरि, यक यक पलसों जानि ॥
चौपाई—करुआतेल सेरुभरि लावै । सबै औषधी पीसि मिलावै॥
घामें बाँधि देह लगवाई । तीनि दिवसमें खाजु नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई—गेहूँकेर पिसान मँगावै । ता सम तामें लोनु मिलावै ॥
फिरि ताकी यक रोटी कीजै । जारि तासुको कैला कीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–आधो कैला तैल तिल, तीनि रोज लगवाइ ।
आधो बाकी जो रहै, जलमें लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
ताहि लगावै तीनि दिन, नदीकेर जल लाइ ।
ताते धोवै वाजितनु, तुरतै खाजु नशाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बरगद पाता जारिकै, ताकी भस्म कराइ ।
लाल मिठाई दहीयुत, खारी लोनु मँगाइ ॥ १ ॥
सेर सेर सब औषध, जलसों लेइ मिलाइ ।
ताहि लगावै तीनि दिन, खाजु दूरि ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–कुटकी सोंठि चिरायता, सैंधव सेंदुर आनि ।
मोथा तिल हरदी सहित, और सोहागा जानि ॥ १ ॥
ताहि लगावै तीनि दिन, तिलके तैल मिलाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तहूँ खाजु मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य दवा खानेकी ।

दोहा–सर्व औषधी करिचुकै, खाजु नहीं जो जाइ ।
ताकी औषध कहत हौं, दीजै ताहि खवाइ ॥
चौपाई–समुलखार धेला भरि लावै । गूगुरु ताके सम मिलवावै॥
तोला चारि भिलावां लीजै । पाँचटका भरि अदरख कीजै ॥
दोहा–सबै पिसावै एकमें, खूब मिही ह्वै जाइ ।
आठ आठ मासे सबै, गोली लेहु बँधाइ ॥ १ ॥
बँगलापान पचासमें, गोली एक खवाइ ।
दीजै दूनो बेरमें, याही विधिसों लाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अग्निवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—चटै परैं जो देहमें, खाल उधिलि तिहि जाहि ।
अरु लोहू तिनते चलै, पुनि खाँसी अधिकाहि ॥

अन्य ।

दोहा—उधिले खाल जु गातकी, पुहुमी रगरै घोर ।
गूँथिनते लोहू चलै, अग्निवायु है जोर ॥

अन्य ।

दोहा—लाखबार जो अश्वके, उधिलि गये दरशाय ।
अग्नि वायु याहू कहो, रंगीमत सो आय ॥ १ ॥
आध सेर तंडुल पकै, नींबपत्रमें घालि ।
आध सेर दधिमें सुई, काढि दीजिये डालि ॥ २ ॥
सीरो करि करसों मसलि, देवै दिन चालीस ।
ता ऊपर जल देइ नाहिं, अग्निवायु करि खीस ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—गोमाखन यक पाव लै, नितप्रति दिन दे सात ।
ता पाछे औषध करै, रोग दूरि होजात ॥

अन्य ।

चौपाई—अहिकारेकी केंचुलि लावै । मासे चारि खरिल करवावै ॥
गोहूँकी रोटीमें सानै । घीके संग खाय मतिवानै ॥
प्रात सात दिन देउ खवाई । अग्निवायु नीकी हो जाई ॥

अन्य ।

चौ०—अरुण मिरच पैसा भरि लेहू । मधु माथि ले माटीमें देहू ॥
माटी आध पाव मुलतानी । तेल डारि करुएमें सानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घामें बाँधि अश्वतनु मलै । भेडमहीते धोवै भलै ॥
पोंछि सुखाय अंगको भाई । माप पकाय देइ मलवाई ॥

अन्य ।

चौपाई–कोकाफूल तालके लेहू । गोदधि बरतनमें लै भरहू ॥
सातरोज घूरेमों धरै । अठयें दिन सो बाहर करै ॥
पाव सेर घोडेको दीजै । ता पाछे यह औषध कीजै ॥
माहिषाको यक सींग जरावै । दूध भेडको लै मथवावै ॥
तीनि टका भरि मनशिल लेहू । कारि मैदा ताहीमें देहू ॥
तिलके तेलम मथै बनाई । घरी एक घामें धरवाई ॥
घामें बाँधि दवा मलवावै । माटी पोति अश्व अन्हवावै ॥

अन्य ।

चौपाई–काई तालकेरि मँगवावै । सात रोज घोडा मुख नावै ॥

अन्य ।

सोरठा–काले खरको आनि, लौंग तूतिया लीजिये ।
नागकेसरिहि जानि, चारि चारि रत्ती सबै ॥
दोहा–हरदी पैसा भरि बहुरि, हयको देहु खवाइ ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ ।

अन्य ।

दोहा–नैनू लैकै पाँच पल, नितप्रति देहु खवाइ ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ ॥ १ ॥
लाल मिरच अरु सहतको, टका एक भरि जानि ।
पीसै करुये तेलमें, यह विधि लीजै मानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताहि लगावै देहमें, जानि लेहु यह चित्त ।
माठा लीजै मेषको, तासों धोवै नित्त ॥ ३ ॥
उरद उसेवै नीरमें, तिनको खूब मिलाइ ।
वा औषधको पोंछिकै, तापर देइ लगाइ ॥ ४ ॥
या विधि कीजै बीस दिन, अग्निवायु नाशि जाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं दवा बताइ ॥ ५ ॥

अथ दाद छिर्छिला अग्निवायु ।

दोहा—चारौ गंधक लीजिये, अरु हरदी हरतार ॥
बायविडंग समान करि, बचुकी दूनी डार ॥ १ ॥
पारा सम अरु चोष तिमि, चौगुन लै कटु तेलु ।
पहर अढाई लोहसे, खलिभाजनमें मेलु ॥ २ ॥
सोइ लगावै अंग मलि, तीनि पहर राखि घाम ।
मलि पिंडोर चौथे पहर, धोय प्रातके याम ।

अन्य

दोहा—लै बासी पानी तुरै, धोय देइ दिन सात ।
की हुक्काको जल सरो, धोवै नितप्रति प्रात ॥

अन्य ।

दोहा—गोदाधि अरु बारूद लै, फेंटि मलै हय अंग ।
बाँधि तीनि दिन धूपमें, करि खरिस्तिको भंग ॥

अन्य ।

दोहा—की भडभड (हुक्का) सराँइको, पानी लै मतिमान ।
मलै अंग दे तीनि दिन, नशै खरिस्ति निदान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—की साबुन ल आठ भारि, ताको आधो लोन ।
कूटि बाँधि पटमें तिन्हैं, करै जतन रुज दौन ॥ १ ॥
बासी पानीमें रगारि, धोय तुरय दिन तीन ।
बुद्धिधीर यहि रीतिको, कर खारिस्तिको हीन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—की पीपरि बारीक लै, पीसि तेल रलि देव ।
बाँधि धूप सोखै जबै, पोति मृत्तिका सोय ॥

अथ बादखोरा खाजु ।

दोहा—बार गिरैं खजुली उठै, खाल चीकनी होय ।
कह्यो बादखोरा नकुल, दुष्टरक्तते सोय ॥ १ ॥
सवासेर गोमूत्र लै, लोह कराही माहि ।
जरो आध लखिये जबै, पीछे जतन कराहि ॥ २ ॥
मिर्च तूतिया लीजिये, दश भरि चतुर सुजान ।
सुमिलखार सिंदूर सम, पीसि महीन प्रमान ॥ ३ ॥
आध पाव कटुतेलमें, सकल दवा लै घेल ।
वाही लोहडीमें सुघर, वस्तु पाँचहू मेल ॥ ४ ॥
सबको फेंटि उतारि ले, यकइस रोज लगाय ।
खाजु बादखोरा प्रगट, देहै तुरत नशाय ॥ ५ ॥

अथ गजचर्मलक्षण वा दवा ।

दोहा—रोवाँ जाके गिरि परैं, हुचकी आवति होइ ।
जानौ सो गजचर्म है, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गदहपुरैना सोंठि पुनि, हर्र मिर्चको जानि ।
दुइ दुइ पल सब लीजिये, देवदारु सो आनि ॥ ३ ॥
चारि सेर जल आनिकै, लीजै ताहि पकाइ ।
सेर एक जल जब रहै, ताको मींजि छनाइ ॥ ३ ॥
बीज कसौंजी लीजिये, पैस भरि तौलाइ ।
तिनको पीसि मिलाइकै, काढा देहु पिआइ ॥ ४ ॥
काढा दीजै तीसदिन, शालहोत्र मत आइ ।
जेती औषध खाजुकी, तिन्हैं लगावत जाइ ॥ ५ ॥

अथ बरसातीलक्षण व दवा ।

दोहा-पैर गामची तर उपर, नैन नीच दरशात ।
फूटि बहै बरसातमें, बरसाती विख्यात ॥

अन्य ।

दोहा-उधिलै खाल जु अंग कहुँ, लाली बहु दरशाय ।
बारहु मासमें देखिये, सो बरसाती आय ॥
चौ०-बरसाती मोमसों मलै । मलत मलत जब लोहू चलै ।
सर्षपतेल मोम ले आवै । अरु बारूदहि आनि मँगावै ॥
सिंगरफ सहत सबै मिलवाई । अग्निमध्यमा लेउ पकाई ॥
मलहम करै हरै बरसाती । सात दिवस लागै दिन राती ॥

अन्य ।

चौ०-छोटी माई आनि पिसावै । तिहिसम मसुरि पिसान मँगावै ॥
ताकी टिकिया करो बनाई । बरसाती ऊपर बँधवाई ॥
तीनि दिना सो बाँधी रहै । चौथे दिवस छोरिकै लहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निंबु कागजीके रस धोवै । लाली हरै नीक ह्वै जावै ॥
तीनि रोज फिरि टिकिया बाँधै । याही क्रमसे औषध साधै ॥

अन्य ।

चौपाई—तिल्लीको पीना ले आवै । गऊतक्रमें ताहि घुरावै ॥
तीन दिना सो भीजा करै । ता पाछे लेपनको करै ॥
साँझ और लागै परभाती । बारहें दिवस जाय बरसाती ॥

अन्य ।

दोहा—ले सज्जी अरु मैनशिल, सम करि सुमिलक्षार ।
खलमें मदिरा युत खलै, चौबिस पहर विचार ॥ १ ॥
पैसा भरि नित दीजिये, यकइस दिवस प्रमान ।
बरसातीको नाशि है, याही यतन निदान ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—मासा चारि प्रमान बुध, लेउ सोहागा भूनि ।
बूँकि तासु दुइ भाग करु, डारि श्रवण दुहुंगूनि ॥ १ ॥
ताके ऊपर कागजी, निंबू करै दुफाल ।
दुहूँ श्रवणमें गारि दे, करिहै रुजको काल ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—निंबूरसमें रगरिकै, देइ सिंघारा लाय ।
कई बेर लावै सुघर, बरसाती मिटि जाय ॥

अन्यमत लक्षण ।

दोहा—हाथ पाँइ मुहँ माहिमें, चट जाके परि जाँइ ।
पाकैं उधिलैं वे बहुरि, गांठीसी दरशाँइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीति जाइ बरसाति जब, सूखि सबै वै जांइ ।
फिरि आवै बरसाति जब, वैसै फिरि ह्वै जांइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—मासा भारि हरतार लै, नीलाथोथा डारि ।
इन तीनोंको सम करो, स्याह लोन निरधारि ॥ १ ॥
समुद्रखारको लीजिये, रती चारि मँगवाइ ।
सूखो सबको पीसिये, अति बारीक कराइ ॥ २ ॥
पाती लैकै नींबकी, जलमें लेउ मिलेइ ।
कपरासे जल छानिकै, धोय चटै सब देइ ॥ ३ ॥
यह औषध सब चटनपर, खूब मलै सो जानि ।
नमदा धरिकै ताहिपर, बाँधै कपरा आनि ॥ ४ ॥
बाँधो राखै दोइ दिन, दीजै फेरि खुलाइ ।
चटको देखै ध्यान करि, छूटि जरै जब जाइ ॥ ५ ॥
फिरि धोवै जल गर्म करि, तापर करै निगाह ।
छूटै जर चहुँ तरफते, होइ जाइ अरु स्याह ॥ ६ ॥
याविधि की चट होइ नहिं, यही औषधी लाइ ।
दीजै ताहि बंधाइ फिरि, वाही विधि करवाइ ॥ ७ ॥
धाननकेरो भातु लै, टिकिया तासु बँधाइ ।
तीनिरोजके बादिमें, ताको खोलै आइ ॥ ८ ॥
बरसाती जरसों मिटै, घोडा चंगा होय ।
श्रीधर कह्यो विचारिकै, शालहोत्र मत जोय ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा—गोदधि तेरह सेर लै, दशपल सरसों तेल ।
नींबपात ले सेर भारि, उरद सेर भारि मेल ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाडे ताको भूमिमें, करि जब वासनमाहि ।
सात रोज राखै तबै, जाइ निकारै ताहि ॥ २ ॥

पाउ पाउ भरि दीजिये, तीनि रोज लग जानि ।
फिरि दीजै विवि पाउ भरि, चालिस दिनला मानि ॥ १ ॥

भूँजे चना पिसानमें, औषध हयको देउ ।
कवि श्रीधर यों कहत हैं, वाजी नीको लेउ ॥ ४ ॥

अन्य ।

सोरठा—कपरा लेउ तहाइ, बरसातीकी गाँठिपर ।
ताको देहु बँधाइ, छिन छिन डारैं नीरको ॥

दोहा—दुइ महिना यहि विधि करै, बरसाती मिटि जाइ ।
शालहोत्र यह कहत हैं, नीकी विधि यह आइ ॥

अन्य ।

दोहा—झींगा मछरी गुडसहित, साँभरि लोन बखानि ।
आध पाव मौताज यक, तीनोंको सम जानि ॥ १ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ।
चालिस दिनके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—छालि जवासा दोइ पल, छाहीं माहिं सुखाइ ।
आध पाव नैनू सहित, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
डेढ पहर दिनके चढे, जलको देइ पिआइ ।
ता पाछे यह औषधी, दीजै आनि खवाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—नरके शिरको हाड लै, आध पाव पिसवाइ ।
अर्कपात मँगवाइकै, तिनको लेउ जराइ ॥

चौ०—तोला भरि हरतारु मगावै।तासम लुहचन आनि मिलावै॥
तोला भरि गुडको फिरि लीजै । सबको पीसि यकट्ठा कीजै ॥
दोहा—डेढसेर लै प्याजको, ताको अर्क मिलाइ ।
कर्षमात्र गोली करै, फिरि औषध पिसवाइ ॥ १ ॥
गोली एक नहार मुख, हयको दीजै आनि ।
दाना दीजै ताहि नहिं, नाहारीको जानि ॥ २ ॥
पानी पहिले देइ कारि, मध्य दिवसमें ताहि ।
गोली दूसीर दीजिये, शालहोत्र मत याहि ॥ ३ ॥
दोइ घरी कैजा करै, पाछे देइ उतारि ।
याहि विधि कीजै तीनि दिन, श्रीधर कह्यो विचारि ॥४॥
बीस दिवस अरु तीनिते, दिन चालिसलौं जानि ।
जल पिआइकै दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ५ ॥
रोग घटै अरु बल बढै, क्षुधा तासु अधिकाइ ।
औषध याहि समानकी, और नहीं दरशाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—बरसाती पर मोमको, मलै देरतक आनि ।
मलत मलत लोहू चलै, मलत तहाँ लगु जानि ॥

मलहम ।

दोहा—करू तेल आगी धरै, थोरा मोम मिलाइ ।
बंदन अरु वारूद लै, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोटै ताको देरतक, एक माहिं मिलि जाइ।
बरसातकि जखमपर, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्र संग्रह केशवसिंहकृत वाजीखारिस्त-
वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नेत्ररोगलक्षण व दवा।

मुज्जारोग।

दोहा—किरीमि होत यक नेत्रमें, कच समान सो मानि।
श्वेतरंग लखिये बहुरि, मुज्जा ताको जानि ॥
चौपाई—सो आंखीमें दौरा करै। ताके दौरे माडा परै ॥
एक खालके नीचे जानो। मुज्जा रोग कठिन अनुमानो ॥

दवा।

चौपाई—पीपरि सैंधव सहत मिलाई। पथरचटाके रंग पिसाई ॥
वजन बराबरि सबको करै। अंजन दै दृग मूंदा करै ॥
सातरोजलौं औषध कीजै। कीरा मरै सफेदी छीजै ॥

अन्य।

छंदपुवङ्गम—अर्क दूध फिटकरी सु या विधि आनिये।
गोहूँ मैदा सानि पिंड यक बाँधिये ॥
अग्नि मध्यमें राखि भस्म करि लीजिये।
पीसि नेत्रमें आँजि किरिमिको छीजिये ॥

अन्य।

दोहा—मानुषकी खुपरी तनक, अग्नि मध्य दे जारि।
खील फिटकरी मिलै सम, सुरमा करौ विचारि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अजा दूधमें सानिकै, अंजन दीजै नेत्र ।
फूली मुज्जा काटि है, साँची मानो मित्र ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–सैंधव कदली फल सुपक, मेलि जु पट्टो देय ।
तीनि दिवस या विधि करै, मिटै रोग सुख लेय ॥

अन्य ।

दोहा–अर्कक्षीर गोबर महिष, ताको अर्क निचोय ।
पीतारिके खोरवा विषे, पैसासों घसि लेय ॥ १ ॥
अंजन करि दे नैनमें, साँझ भोर यहि रीत ।
ता ऊपर हलुवा बनै, मैदा गोघृत मीत ॥ २ ॥
खाँड मेलि तामें धरै, नैन उपर सुखदानि ।
फिरि घृत लावै ताहि पर, जो कछु माडा जानि ॥ ३ ॥
तो सेंदुर भरि दीजिये, तामें जतन समेत ।
नाशै मुज्जा नैनको, कहै नकुल सुखहेत ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–दूधपिवा शिशुकी सुघर, विष्ठा लेइ मँगाय ।
चारि बेर दृगमों भरै, मुज्जा नैन विहाय ॥

अन्य ।

दोहा–लेंडी लै खरगोशकी, जलमें लेउ पिसाइ ।
सो लै बाँधै आँखिपर, मुज्जा तौ मारि जाइ ।

अथ मुज्जा फूली और मांडाकी दवा ।

दोहा–चूरी लीजै काचकी, सैंधव लोन मिलाइ ।
पीसै अति बारीक करि, सुरमा जब ह्वै जाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो लै डारै आँखिमें, दूरि सफेदी होइ ।
मुज्जा अरु फूली नशै, कहत सयाने लोइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–बीट कबूतरकी लै आवो । लोन लहौरी ताहि मिलावो ॥
मासे डेढ दुहुँनको लीजै । रत्ती भरि रांधी पुनि दीजै ॥
दोहा–पिसवावै बारीक करि, धरिकै छूंछी माहि ।
फूँकि देइ सो आँखिमो, पाँच रोजमें जाहि ॥

अन्य ।

दोहा–सिरसा खिन्नी बीजकी, गूदी लेउ कढाइ ।
साबुन गेरू लौंग पुनि, सैंधव सेंदुरु लाइ ॥ १ ॥
नींबूकेरे अर्कमें, पीसै अति बारीक ।
अंजन दीन्हें होत है, फूलीवालो नीक ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–पीपरि पीसै खरिलमें, एक दिवस भरि आनि ।
अंजन दीन्हें होति है, मांडा फूली हानि ॥

अन्य ।

चौपाई–समुदफेन अरु सोरा लीजै । फूल गुलाब ताहिमें दीजै ॥
सँगबसरी मिलि सम पिसवावै । खूब महीन खरिल करवावै ॥
दोहा–अंजन दीजै आँखिमों, मांडा सो छटि जाइ ॥
सातरोज औषध करै, नेत्रज्योति सरसाइ ।

अन्य ।

दोहा–सोरा बंदन फटकरी, सिरसाबीज मँगाइ ।
मिर्च कपूरै शर्करा, साबुन देउ मिलाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबको पीसै एकमें, अंजन ताको देइ ।
सात दिवस औषध करै, फूलीको हरि लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—अर्क दूध औ फिटकरी, लेउ धतूर मिलाइ ।
सो लै आगीमें धरै, दीजै खूब जराइ ॥ १ ॥
सुरमा करिकै ताहिको, दीजै आँखीमाहि ।
दूरि सफेदी होति है, अरु मुज्जा मरि जाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—आमिलतासकी छालि लै, चंदन रक्त मिलाइ ।
पीसि ताहि गोली करै, छाहींमाहिं सुखाइ ॥ १ ॥
रगरि पान रसमें बटी, यकइस रोज लगाय ।
तुरँगनैनफूली मिटै, याही यतन बनाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—जेठीमधु चंदन अरुण, घसि अदरखरसमाहिं ।
नैन दिये फूली कटै, कइउ रोग नाशि जाहिं ॥

अन्य ।

चौपाई—लोधु फिटकरी मुरदाशंक । हरदी जीरा यक यक टंक ॥
अफीम चनाभरि मिरचे चारि । उरद बराबरि थोथा डारि ॥
सिरसछालि रस अंजन कीजै । सकल विकार नैनको छीजै ॥
मुज्जा फूली और नखूना । माडा धुंध आदि कतहूँ ना ॥

अन्य ।

दोहा—जो फूली दृगमें परै, कीजै जतन उताल ।
कइउ रोज सेंदुर तहाँ, फूँकि देइ भरि नाल ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की बरतन चीनी सुघर, पीसि भरै तेहि नैन ।
नाशि जैहै फूली तुरत, लहै वाजि बर चैन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—की रीठी रगरै सुघर, डारै नैन लगाय ।
कहि रंगी वस्ताद यह, फूली नैन बिहाय ॥

अन्य ।

दोहा—की सोरा गेरू मिलै, घालि नालमें फूँकि ।
कइउ रोज याको करै, उपर तमाखू थूँकि ॥

अन्य ।

चौपाई—काचक चूरन आटा जोडी । अर्कदूधमें भिजै समंडी ॥
गोला करिकै ताहि सुखावै । अग्नि जारिकै भस्म पिसावै ॥
चुटकी चूरण नैनन धरै । सातरोजमें फूली हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—सोनामाखी बंदनु लीजै । रक्त फिटकरी तामें दीजै ॥
सिरसबीज अरु चीनी लेई । लेउ कचूर मिर्चको सोई ॥
मैदा करि अंजन दृग भरै । नीक होइ अरु फूली हरै ॥

अन्य ।

चौ०-रसउत अरुण फिटकरी लीजै। सहत संग घसि अंजन कीजै॥

अथ नाखूना ।

दोहा—जहाँ सफेदी नेत्रमें, तहाँ नखूना होइ ।
छूरासे तेहि काटिये, डारि सेराई सोइ ॥

चौपाई—लै अस्तूरा साफ उतारी । मुज्जा फूट बहै नाहिं वारी ॥
हरदी सोंठि सहत घृत सानी । ताहि बाँधु ऊपरते आनी ॥
शीत वातते देउ बचाई । नीको होइ नखूना भाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई–मिर्च दक्षिणी वंदन लेहू । खील सोहागा तामें देहू ॥
गूगुर वजन बराबरि मेलै । सैंधव लोन फिटकरी खीलै ॥
सर्षपतेलमें खरिल कराई । नाखूनामें देउ लगाई ॥

अन्य ।

दोहा–नींबछालि नरमूत्रमें, रगरि सु अंजन देय ।
कटे नखुना नैनको, वाजि अधिक सुखलेय ॥

अथ नेत्रचोटकी दवा ।

दोहा–बासी पानी लोन ले, दोनों मुखमें डारि ।
कूचि नैनमें फूँकि दे, तुरत चोट दुख हारि ॥

अन्य ।

चौपाई–गोघृत मैदा डारि मिठाई । आँबाहरदी लेउ पिसाई ॥
दोहा–घुँघुँवारीके नीरसँग, अग्निमध्य पकवाय ।
हलुवा करि बाँधो सुघर, नैन चोट बहि जाय ॥

अथ नेत्रबँभनी ।

दोहा–पलकरोम गिरिजात सब, बहु किचपिचा दिखाय ।
आँखिनमें पानी बहै, कछु लाली दरशाय ॥
चौ०–पटसनजरकी राख करावै । साँभारि टका तीनि भरि लावै ॥
दोउ शिरमध्य बीच लगवावै । चारि घरी पीछे अन्हवावै ॥
सनभव मुर्दाशंख मिलाई । सहत संग माथे देइ लगाई ॥
सात दिना करि है जो कोई । बँभनी बोलि जाय सब खोई ॥

अथ रतौंधीकी दवा ।

दोहा–रंचक मिरच कपूर लै, घृतमें सानै ताहि ।
घिसि अंजन नैनन करै, मिटै रतौंधी वाहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–साबुन मिर्च मँगायके, लीदि रंगसों सानि ।
घोडे दृग अंजन करै, मिटै रतौंधी आनि ॥

अथ आँखिमें ढरका बहै ताकी दवा ।

चौ०–सरसों पीपरि मूल अरंडा । गोला बाँधि करौ जिमि अंडा ॥
ताको अर्क निचोइ सु लीजे । ताहि मध्य औषध यह दीजे ॥
हाऊबेर व गेरू लाई । कँदयल कली सहित मिसवाई ॥
सबका अर्क यकत्र निकारै । साँझ भोर दृग छींटा मारै ॥
नीक होय सब ढरका बंदा । शालहोत्र भाषै सुखकंदा ॥

अन्य ।

चौपाई–चंदन सौंफ तगर जो लावै । अजापुत्र पेशाब मँगावै ॥
रस इनका सब लेइ निकारी । ता मधि सहत घीउ सो डारी ॥
भरै नेत्र सो जतन कराई । ढरका रोग नीक ह्वै जाई ॥

अन्य ।

दोहा–बच दतूनि गुड घृत मिलै, खाय तुरी मतिमान ।
बाहिबो नैनन नीरको, रोकिह कहौं प्रमान ॥

अथ नेत्रमाडाकी दवा ।

दोहा–मानुषकी खपरोइया, अति महीन करि बूँकि ।
माडा तुरत नशाइ है, देइ नाल भारि फूँकि ॥

नेत्र सफेदीकी दवा ।

चौपाई–पिपरी सैंधव सहत मिलाई । विषखोपराके अर्क सनाई ॥
अंजन दै मूँदौ दृग ताही । जाय सफेदी तुरतै वाही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ लोटरोग लक्षण व दवा ।

दोहा—ऊपर सूजहि आँखितर, जख्म होति है आनि ।
लोट तासुको नाम है, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
काँचेकी थारी विषे, दीजे पारा डारि ।
पैसा भेरे रगरिये, रस नींबूको गारि ॥ २ ॥
सोरठा—मिलि पारा नाहिं जाहि, तौलौं रगरति जाइये ।
जब कजरी ह्वै जाइ, लावै हयके जखमपर ॥
चौपाई—एक रोजमें औषध भाई । दफा पाँच अरु सात लगाई ॥
जबतक जखम न नीक देखावै । तबतक दवा यही करवावै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतनेत्ररोगचिकित्सावर्णनो
नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ वातव्याधि । झोला अकरब वायु ।

चौ०—मानुष दग्ध होय जहँ भाई । यक हथ माटी डारु खोदाई ॥
ता नीचेकी माटी लीजै । घोरि कराह औटनो कीजै ॥
धरै उतारि जु शीतल होई । तेल उपर छहरै जामि सोई ॥
वाही तेलको लेउ उतारी । सीसामें करि धरै विचारी ॥
घोडेके तनु मालिस करै । कछुक खवाय रोगको हरै ॥
वातव्याधि सकल मिटि जाई । मानुषतैल मलो जो भाई ॥

अन्य ।

चौपाई—सेर चारि भैंसीकी गोबरी । सैंधव सज्जी और फिटकरी ॥
टका टका भरि तीनो मेलै । बेंबउरकी माटी तिहि घेलै ॥
एकेमें सब गरम करावै । लेपै अंग बयारि न पावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेल मालकाँगनिको लीजै । याहीमें सो शामिल कीजै ॥
गेरह दिन सो कीजो भाई । याहीते झोला मिटि जाई ॥

अन्य ।

चौपाई—अजमोदा अरु कूट मँगावै । नागरमोथा हरदी लावै ॥
बारह बारह भरि सब लीजै । गुर्च सोहागा टकाभरीजै ॥
टका एक भरि खारी लीजै । बेसनके सग घोडे दीजै ॥
सात रोज घोडे मुख धरै । अश्वाकौ झोला सब हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—सुरमा नासु देउ बुधिमाना । गर्म नीर करवावै पाना ॥
चनाके सतुआ सानि खवावे । एक जून पानीको पावे ॥
घोडा राखु बयारि न लागै । याहूते सब झोला भागै ॥

अन्य ।

चौपाई—सेर एक गूगुर मँगवावै । पाँच सेर गोदूधै लावै ॥
गूगुर दूधै मेलि पकावै । कम्मरके छन्ना छनवावै ॥
चनाके आटा सेर पिसावै । वही दूध हेलुवा बनवावै ॥
हेलुआकी गोली बनवावै । तोला चारि चारि करवावै ॥
साँझ सकारे यक यक दीजै । बहुत भाँति टहलावा कीजै ॥

अथ प्रबलवायु लक्षण ।

चौपाई—झाऊपत्र तमाल मँगावै । पुहकरमूल लोध लै आवै ॥
गुड गोदूध मिलाय करीजै । पिंड बनाय अश्वको दीजै ॥
याते रोग दूरि हो जाई । प्रबल वायुको करो उपाई ॥

अन्य ।

चौ०—हरदी अरु जैफल मँगवावै । सम करि दिये बहुत सुख पावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ अग्निवायु लक्षण व दवा ।

दोहा–चिनगारी सम छिटिक अँग, निज तनु काटै जौन ।
शालहोत्र ऐसी कहै, अग्नि वायु है तौन ॥

चौपाई–तेलीको कोल्हू मँगवावै । यंत्र पताल तेल कढवावै ॥
तिल्लीको सम तेल मिलावै, अश्वअंग मालिस करवावै ॥
याही तेल खानको दीजै । चौदह दिनमों नीक करीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–सर्षप लेउ पति मँगवाई । दश सेर पक्के ले तौलाई ॥
पीसि कूटि गोदाधिमों सारै । दिन उंचास तुरीमुख धारै ॥

अन्य ।

चौ०–श्यामा तिलको तेल मँगावै । सिंगरफ मिलै अंग मलवावै ॥
मंडलभरिकी साधन कीजै । रोग जाय सब दुःख हरीजै ॥

अथ हिरणवायु लक्षण ।

दोहा–अधर रदन काटै अपन, माँस नोचि निज खाय ॥
हिरणवायु ताको कहै, खफकी सो दरशाय ॥ १ ॥
जो कोऊ आगे परै, ताको काटै दौर ॥
अवशि जानियो मृत्यु यहि, प्राणहरन करु गौर ॥ २ ॥

चौपाई–पहर दुइक तीनिकमें मरै । बहुतै दवा उताहिल करै ॥
सोरह भाग कपूर मँगावै । ताहि पीसि लुगदी मुख नावै ॥

अन्य ।

चौ०–सूकरको बच्चा मँगवावै । घोडाके आगू बँधवावै ॥
बच्चा चिघरै हल्ला करै । हिरण वायु घोडेकी हरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—दूनो तरफ कानके ऊपर । जहाँ कनपटी काहिये तेहि पर॥
गुले दागिदीजे बुधिमाना । हिरण वायुको खोज नशाना॥

अथ वोढाकरन वायु लक्षण व दवा ।

दोहा—सूजि जाइ जेहि अश्वको, कर पद गर्दन नैन ।
वायु नाम वोढाकरन, शालहोत्र कह बैन ॥

चौ०—लौकाकी जर मुंडी आनै । बचुकी सोंठि हींग परमानै ॥
सैंधव सोवा बायविडंग । पलाशपापरा घृतके संगा ॥
औषध सम कारि एक मिलाई । आठ रोज तक देउ खवाई ॥

अन्य ।

चौ०—अंड सँभारू पात मँगावै । श्याम धतूरा तांहि मिलावै ॥
हांडी मध्य पकाइक सेंकै । वोढाकरन वायुको छेंकै ॥

अन्य ।

चौ०—अश्वअंगमा होय अमासू । पूरव लक्षण खाय न घासू ॥
उचकै चौंकि धराणि पर गिरै । ताकी औषध या विधि करै॥
प्रथम सहींजन हींग मँगावै । अजवायनि कंचनरिपु लावै ॥
बायबिडंग सोंठि औ सरसों । धूरा करौ अंगमा करसों ॥

अन्य ।

चौ०—सोंठि जवायनि बायविडंगा। वजन बराबरि कारि यक संगा
अष्ट विशेषी काढा करै । सातरोजमा रोगे हरै ॥

अथ टनक वायु लक्षण व दवा ।

दोहा—टनकै घोडा पाँउमें, टनक वायु तेहि जानु ।
ताकी औषध कीजिये, रोग जाय परमानु ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—गूगुर पैसा भरि मँगवावै । ताहि पकाय अश्वमुख नावै ॥
यकइस दिनलौं देउ खवाई । टनक वायु दूरी हो जाई ॥

अन्य ।

चौ०—अंडा लेउ टिटिहिरीके षट । देउ अश्व नित जाइ रोग हट ॥

अथ कपोतवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—खाये सूजैं अश्वके, जानौ ताहि कपोत ।
ताकी औषध कीजिये, रोग अरामी होत ॥

चौ०—रंडा बैंगन मूल मँगावै । छालि बरेरा जरकी लावै ॥
वच त्रिकुटा अरु लौका लेई । घृतके साथ खानको देई ॥
तिलको तेल कपोत लगावै । महुआ पाता सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौ०—काराजीरी गेरू लेहू । सोंठि कचूर ताहिमें देहू ॥
गोबरके रस खरिल करावै । छिरकाके रस अग्नि पकावै ॥
गरम होइ तब लेप करावै । मिटै कपोतवायु सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०—सुमन पलाश बफारा देवै । बांधो ताहि कपोतै खोवै ॥

अन्य ।

चौ०—हाड मनुष्य शीशको लावै । पुंगीफल छोटे मँगवावै ॥
कँदयल मूल तुचाको लीजै । सकल पीसिकै लेप करीजै ॥

अन्य ।

दोहा—अमिली औ कचनारको, नींब पत्र सम लेउ ।
वासन मध्य पकायकै, सेंक कपोतै देउ ॥

चौ०—कारीजीर पीसि पानीमें । चुपारि कपोत देइ तेहि गरमें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कंपवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—काँपै अंग तुरंगको, दाना घास न खाय ।
कंपवायु तेहि जानिये, जतन कियेते जाय ॥
चौपाई—घीउ कपूर खाँड ले सानै । दूध मिलाइ पिंड मुख भानै॥
कंपवायु वाजीकी जाई । शालहोत्र यह भाषै भाई ॥

अथ मुखवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—मुख सूजे जेहि अश्वको, रुज मुख ताको नाम ।
ताकी औषध कीजिये, जो हय होय अराम ॥
चौपाई—जवाखार अजवायनि लीजे।हरदी सर्षप सम करि दीजे॥
सैंधव मिले पीसि सब लेहू । अँबिली रसमें गरम करेहू ॥
अश्व वदनं पर लेप करावै । ताके ऊपर पट बँधवावै ॥

अन्य ।

चौपाई—जो मुख सूज अश्वको देखै । वात विकार तासु अवरेखै॥
जवाखार अजवाइनि राई । सर्षप हरदी सौंफ मिलाई ॥
लहसुन मेलि वजन सम करौ । जलसों पीसि अग्निमें धरौ ॥
गरम गरम सेंकौ मनलाई । औषध करौ रोग बहि जाई ॥
सोरठा—होय वदन पर सूझ, जा तुरंगको देखिये ।
ताको जतन समूझ, लोन बफारा दै प्रथम ॥ १ ॥
राई हरदी सोंठि, जवाखार कुटकी गनौ ।
और सोहागा घोटि,सम करि सकल खवाइये ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—मोथ इलाची आनि, अमिलतासु धनियाँ सुमधु ।
सम करिकै तेहि सानु, हयको रुजनाशक भणित ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०-भुज छाती सूजे जो आनन । दाना घास नहीं मनभानन ॥
मिर्च कसौंजी अदरख पानै । चारौ करौ एक परमानै ॥
दीन्हें जहरवातको हरै । दूजी औषध नाहक करै ॥

अन्य ।

चौपाई-अर्धमास पर दीजै ग्रासै । जहरवातको नाहीं त्रासै ॥
दोहा-बारह दिवस असाध्य गनि, तेरह दिन गत साध्य ॥
पक्ष पक्ष ऐसी दवा, दिये न कारीति उपाय ।

अथ गिलिमवायु लक्षण व दवा ।

दोहा-जेहि घोडेके वदन पर, गिलटी परिगइ होय ।
रुधिर चलै तेहि गिरहते, गिल्मवायु है सोय ॥
चौपाई-पहिले घृत अरु तेल लगावै । पात सँभारूकेर मँगावै ॥
सेंकै गुलफ तेलके संगा । गिल्मवायुको होई भंगा ॥

अथ गुल्मवायु लक्षण व दवा ।

दोहा-जगह जगह परिजात है, गुल्म सकल तनुमाहि ।
गोलाकृति स्थूल बहु, गुल्मवायु कहि ताहि ॥
छंद संकर-वंशलोचन वरिअरा अरु अवलकै पुनि लेहु ।
निंबू विजौरा तासुको रस लाय यामें देहु ॥
पिंड चारि खवाय वाजी गुल्म नाशित होय ।
शालहोत्र विचारिकै यह कह्यो ग्रंथ विलोय ॥

अथ कर्णवायु लक्षण व दवा ।

दोहा-फूटै अश्वके कनसरी, धार छुटै दुहुँ ओर ।
की लोहू पानी गिरै, कर्णवायु है जोर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—सौंफ धना जीरा मँगवाई। सोंठि सहित लीजो पिसवाई॥
भाल अश्वके लेपन कीजै। औरौ नासु उपरते दीजै॥
लेंडी ऊँट कोरि मँगवावै। अर्क निकारि ताहि छनवावै॥
गोघृत सम करि देहु मिलाई। दमरी भरि सैंधव पिसवाई॥
नासु देइ घोडेको जबहीं। शोणित बंद होयगो तबहीं॥

सोरठा—ऊँटकुमारे वारि, अग्नि जारिकै सेंक दे॥
औषध करौ विचारि, रोग हरै संशय नहीं॥

चौपाई—सेंक देय हरदी औ पाना। ता पाछे लेपन करि आना॥
सोंठि सोहागा पिपरी लावै। कूटि पीसि लेपन करवावै॥

अन्य।

चौपाई—शोणित चुव कर्णते जाके। की आमास होय ज्वर ताके॥
झारै शिर काँपै सब गाता। ताहि जानियो रुज करि घाता॥
ताको औषध सुनौ निदाना। तिल हरदीसे सेंकै काना॥

अन्य।

चौपाई—लहसुन हरदी हींग मिलाई। अर्कपातके बीच धराई॥
करि कपरोटी दीजै आगी। काचो रहै जरै नहिं लागी॥
ताहि कूटिकै अर्क निकारी। घीव सहत तोहि दीजो डारी॥
थोरी थोरी श्रवणन भरै। कर्णवायु अश्वाकी हरै॥

अन्य।

चौपाई—जो आमास होय अधिकाई। तौ नस्तर दीजै लगवाई॥
सैंधव सज्जी साबुन आनी। सो लीजै पानीमें छानी॥
ताको पानी श्रवणन भरै। सेंक करै पीरा सब हरै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ रक्तवायु लक्षण व दवा ।

दोहा–जा हयकी दिशि आगिली, चलै न एकौ पाँउ ॥
पाछिल धरणीको रहै, रक्तवायु तोहि नाँउ ॥
चौपाई–खुरासनि वच दूनौ आनै । औंराके दल रसमें सानै ॥

अन्य लक्षण रोगकी पहिचानका ।

दोहा–श्वास चलै बहु दम करै, कछुक देर थँभि जाइ ।
दूसर लक्षण जानियो, रक्तवायु सो आइ ॥
चौपाई–मानुषका जिमि लकवा बाई । ऐसे तुरी रोग हो जाई ॥
महाकठिन है रोग विशाला । याकी दवा करौ ततकाला ॥
पैसा पैसा भरि पिसवावै । सेंबरछालि टंक दश लावै ॥
लहसुनकी गाँठी सम करौ । पीसि छानि मैदा सम धरौ ॥
गोघृतके सँग दश दिन दीजै । औरो घृत तनु मर्दन कीजै ॥
ईंटसेंक ऊपरते देहू । पवन बंद मा राखै वोहू ॥
या विधि दवा करौ मनलाई । रक्तवायुको खोज नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई–देउ बतीसा चूरण याही । मानुषकी खोपरी जेहि माही ॥
तोला तोलाकी परमाना । शाम सुबह दिन बहुत विधाना ॥

अन्य ।

चौपाई–सेर एक गोमूत्र मँगावै । दुइ तोला गूगुर मिलवावै ॥
ओटी करिकै प्रात पियावै । गेरह दिन याही विधि पावै ॥

अन्य ।

चौपाई–वृषभ अस्थिको तैल बनाई । लेउ पतालयंत्र निकराई ॥
तीन तेलकी मालिस करै । सकल देहमें सो अनुसरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेल लगाइ बफारा दीजै। ताकी दवा सबै लखि लीजै॥
पात धतूर बकैना लावै। और सँभारू तामें नावै॥
रहसानि अंबर बेलि मँगावै। रनिकी पाती ताहि मिलावै॥
जोगिआ अंडके पात मँगाई। सातौ दवा बराबरि लाई॥
माटीके बर्तन उसनावै। सकल अंगमें बाफ देवावै॥
पाँच सात दिन या विधि कीजै। बहुत दई निशि बासर दीजै॥
पवन बंदमें राखै भाई। सकल वायुको नाश कराई॥
दोहा—सकल वायुको नाशि है, कह्यो बफारा तौन।
शालहोत्र यह मत कहैं, ग्रंथसारमें जौन॥

अथ अर्द्धांगवायुलक्षण व दवा।

दोहा—पाछिल धर जा बाजिको, पकरो बाई होइ।
ताहि कहत अर्द्धांग हैं, सकल सयाने लोइ॥

प्रसारिनीतैल।

दोहा—रहसानि गंधपसारिनी, गदहपुरैना जानि।
बचुकी जर सहिंजन सहित, दोइ दोइ पल मानि॥ १॥
अजवायनि कनयर जरहि, आठ आठ पल लेइ।
अरसी सर्षप सेर दश, मिलै सबनको देइ॥ २॥
सब औषध यक संग करि, लीजै तैल पेराइ।
तैल कराही माहिं करि, दीजै अग्नि चढाइ॥ ३॥
सैंधव लीजै पाँच पल, ताको लेउ पिसाइ।
माठा लीजै तैल सम, दोऊ देउ पचाइ॥ ४॥
शुद्ध तैल हो जाय जब, लीजै तबै छनाइ।
ताहि लगावै अश्वके, छाहींमें बँधवाइ॥ ५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दाना दीजै मूंगको, सेर एक यह जानि ।
पानी दीजै कूपको, मध्य दिवसमें आनि ॥ ६ ॥

सोरठा—दीजै तैल पिआइ, टका एक भरि प्रथमही ।
दीजै फेरि लगाय, तीस रोजमें जानिये ॥ १ ॥

दोहा—आधे घरकी वायु पुनि, और काञ्जियत जाय ।
जो कोई या विधि करै, सगरी वायु नशाय ॥ २ ॥

अथ कहानवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—बेर बेर बैठै उठै, नितप्राति यह गति होइ ।
असवारीमें ताहिके, ऊर्द्धश्वास चलै सोइ ॥ १ ॥
शिलाजीत गुखुरू सहित, गोघृत लेउ मँगाइ ।
यक यक औषध दोइपल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, दीजै दाना माहि ।
औषध दीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ भस्मकवायु लक्षण व दवा ।

दोहा—कीतौ बांई कोखिमों, कीतौ दाहिनी जानि ।
अथवा देहीं सब विषे, सूजनि तामें आनि ॥ १ ॥
देह छुये करकस परै, सूजनि बाढति जाइ ।
गुदा माँहि पानी चलै, जूडे कान लखाइ ॥ २ ॥
दाना घासहि खाइ बहु, अति जल पीवत होइ ।
जानौ ताहि असाध्य है, मरै सही हय सोइ ॥ ३ ॥
कहे भेलावाँ पाँच पल, तिनको लेउ मँगाइ ।
दशपल तिलके तेलमों, लीजै खूब चुराइ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेसा साढे तीनि भारि, ताहि पिसावे आइ।
दाना घास न दीजिये, पांच दिवस लौं ताइ ॥ ५ ॥
कूटि चिरेता कैफरा, दोइ दोइ पल लाइ।
गउके मूत्र पिसाइकै, लीजै तप्त कराइ।
मर्दन कीजे पीठिपर, पांच दिवस लगु जानि।
पानी दीजै स्वल्प तेहि, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥
लंघन करिबेकी शकति, जा घोडेके होइ।
औषध कीजे ताहिकी, जियत तुरी है सोइ ॥ ८ ॥

अथ कुमकुम वायु रोग लक्षण व दवा।

दोहा—गाँठिनमें गाँठी परै, औ गाँठी फिरि जाइ।
जानौ कुमकुम रोग है, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
माजूफल औ कैफरा, धायके फूल मँगाइ।
सबको भाग समान लै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
दोइ टकाभरि औषधी, गोघृत लेउ मिलाइ।
औषध दीजै बीस दिन, रोग तासुको जाइ ॥ ३ ॥

अन्य कुमकुम रोगके लक्षण।

दोहा—मोजा जाके फिरि गये, की गांठी दरशाइ।
सोऊ कुमकुम रोग है, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि नाल बँधाइकै, सूधो सुम करि देइ।
ता पाछे पट्टी कहौं, बाँधि तासुके देइ ॥ २ ॥

पट्टीविधि।

दोहा—प्रथम पात लै रंडके, दीजै तिन्हैं बँधाय।
बाँधो राखै तीनि दिन, डारै फेरि खुलाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भीतर बाहर पाँउके, डारै बार मुँडाइ ।
पछना देके ताहिपर, पट्टी देउ बँधाइ ॥ २ ॥
आँबाहरदी दोइ पल, कुचिला दोनों आनि ।
यलुआ लीजै एक पल, ताको जलमों सानि ॥ ३ ॥
चौपाई—पट्टी ऊपर ताहि लगावै । सो पट्टी लै पगहि बँधावै ॥
तीनि दिवसलौं बाँधो राखै । शालहोत्र मुनि ऐसो भाखै ॥
दोहा—खोलै चौथे रोजमें, पाकि गयो जो होइ ।
यह औषध लगवाइकै, बाँधै पट्टी सोइ ॥ १ ॥
समुदखार हरतार अरु, नीलाथोथा आनि ।
लै जमालगोटा बहुरि, और निसोदर जानि ॥ २ ॥
अर्क दूध मँगवाइकै, तामें लेउ पिसाइ ।
पछना ऊपर पग विषे, दीजै ताहि लगाय ॥
दोइ पहर बाँधो रहै, डारै फेरि खुलाइ ।
जलमों नींब उसेइकै । ऊपर देउ लगाइ ॥ ४ ॥
नीब धरत तौलौं रहै, खूब साफ होजाइ ।
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक हो जाइ ॥ ५ ॥
मोजा सूधो होइ अरु, कुमकुम रोग नशाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—यलुवा और अफीम लै, रेवतचीनी आनि ।
हरदी मानुषमूत्रमों, ताहि पकावै सानि ॥ १ ॥
पट्टी ऊपर लाइ सो, दीजै ताहि बँधाइ ।
औषध वही सबै करै, प्रथमहि कही जु आइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थूहर और मदारको, लीजै दूध कढाइ ।
फीहा तासु बनाइकै, दीजै ताहि बँधाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, तासु जतन यह आइ ।
धोवै ताहि शराबते, खूब साफ ह्वै जाइ ॥ ४ ॥
मादिरा चून मिलाइकै, रोज लगावत जाय ।
जखम सूखि जब जाइगो, पग सूधो ह्वै जाय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि गुड चोकरा, गेहूँकेर मँगाय ।
थोरा पानी डारिकै, लीजै गरम कराय ॥ १ ॥
सो लै बाँधै पगविषे, पछना दैकरि ताहि ।
या विधि बाँधे चारि दिन, पाकि यहीते जाहि॥ २ ॥
पाती नींब पिसाइकै, तामें सहत मिलाइ ।
ताहि लगावै जखमपर, साफ तभी ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक जब होइ ।
धरणी परसे शुद्ध हो, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
पग कदाचि टेढो रहै, ताको कहौं उपाय ।
ताहि लगावै पग विषे, खपचै बाँधत जाय ॥ ५ ॥

चौ०—मोम मस्तगी तैल कढावै । दोइ घरीलौं ताहि बँधावै ॥
ताके ऊपर देउ लगाई । मास एकमें रोग नशाई ॥

दोहा—नितप्रति याही विधि करै, शालहोत्र कहि ताहि ।
धरणी परशै शुद्ध पग, रोग तहीं बहि जाहि ॥

अन्य ।

दोहा—दालचिनी अरु जाइफल, मोम मस्तगी आनि ।
मैदा लकरी एलुआ, गरी कही बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पात सँभारूके सहित, नींबपात अरु आनि ।
पात बकैना रंडके, अरु अनारके जानि ॥ २ ॥
सेर दोइ तिल तैल लै, दुइ दुइ पल सब पात ।
दीजै अग्नि चढाय सो, होइ खूब जब तात ॥ ३ ॥
एक एक पाती सबै, तामें लेइ जराइ ।
फेरि उतारै अग्नितें, लीजै ताहि छनाइ ॥
अंडा मुरगीके बहुरि, सो तौ लीजै चारि ।
जरदी तिनकी दूरि करि, दीजै तामें डारि ॥ ५ ॥
एक एक पल औषधी, जलमें लेहु पिसाइ ।
सबै मिलावै तैलमें, दीजै अग्नि चढाइ ॥ ६ ॥
खूब लाल ह्वै जाइ जब, लेउ तबै उतराइ ।
ताहि लगावै पग विषे, खपचै देउ बँधाइ ॥ ७ ॥
मुड्डा टेढो जासुको, दुवौ पगन ह्वै जाइ ।
औषध कीजै एककी, जब नीको दरशाइ ॥ ८ ॥
दुसरे मुड्डा माहिमो, औषध देउ लगाय ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जाय ॥ ९ ॥

अथ एकअंग वायुलक्षण व दवा ।

सोरठा—पाँइ आगिले माँहि, कीतौ पछिले पाँइमें ।
लंग होति है आहि, दुर्बल वाजी होइ अरु ॥ १ ॥
जो तौ बरम लखाइ, रक्त तहाँते काढिये ।
तब औषध करु ताहि, वाजी होत अराम है ॥ २ ॥
दोहा—रहसनि गुखुरू गुर्च लै, गदापुरैना जानि ।
लीजै जोगिआ रंड जर, ताकी बकली आनि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवदारु पुनि लीजिये, पाँच पाँच पल आनि ।
अँबिलतास पुनि सोंठि लै, अरु हडजुरी बखानि ॥ २ ॥
बकली झाडीकी जरहि, कुटकी वायविडंग ।
सरवन पिथवन वेलकी, लेइ जरै यक संग ॥ ३ ॥
दुवो कटैआ लीजिये, अरु बहेर सुख दानि ।
डेढ डेढ पल औषधी, पृथक पृथक जिय जानि ॥ ४॥
सब औषध यक ठाँव करि, दोइभाग करि ताहि ।
ताकी विधि अब कहतहौं, समुझिलेहु जियमाहि॥ ५ ॥
चौ०—सात भाग आधेके कीजै । एक भाग तामेंको लीजै ॥
चारि सेर जल तामें डारै । आगीके ऊपर लै धारै ॥
दोहा—आध सेर बाकी रहै, लीजै तबै उतारि ।
इयको देहु पिआइ सो, श्रीधर कहो विचारि ॥ १ ॥
प्रातसमय यह दीजिये, सात दिवस लौं जानि ।
भाग जोन आधा रहै, ताको कहौं बखानि ॥ २ ॥
चौपाई—सात भाग ताहूके कीजै । मोठ महेला संगहि दीजै ॥
मध्य दिवसमें देहु खवाई । सतयें दिन नीको ह्वै जाई ॥
दोहा—आमवात जाके अहै, रुधिर स्रवत की जोइ ।
चक्रवात की तौ भई, तीनों नीके होइ ॥

अन्य ।

दोहा—रहसानि मोठी सोंठि लै, असगँध देशी आनि ।
पुनि अमलोनियाजरसहित, दश दश पल सब जानि॥ १॥
पंद्रह पल अरु लीजिये, गुड पुरान मँगवाइ ।
गोघृत लीजै पांच पल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दश दिन दोनों बखतमें, दीजै ताहि खवाइ ।
निश्चय जानौ बात यह, बाइ छतीसउ जाइ ॥ ३ ॥

अथ वातभेद ।

दोहा–सूजनि चारिउ चरणमें, बनी रहति जो होइ ।
फेरेते वह कम परै, वातभेद है सोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना पीसि पुनि, बच बकुची खंभारि ।
देवदारु रहसनि सहित, सोंठि बहेरा डारि ॥ २ ॥
सरफोंका असगँध सहित, पिपरामूल मँगाइ ।
दुइ दुइ पलकी वजन करि, सबको लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
बीसभाग ताको करौ, चारि सेर जल माहि ।
काढा करिकै तासुको, हयको दीजै ताहि ॥ ४ ॥
या विधि दीजै बीस दिन, शालहोत्र मत जानि ।
सूजनि उतरै चरणकी, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ लकवा बाईके लक्षण व दवा ।

दोहा–लकवा मारत जाहिको, मुख टेढो ह्वै जाइ ।
टेढी गर्दन होति है, एक तरफको आइ ॥ १ ॥
मुश्किलसे वह खात है, दाना घासहि जानि ।
जहाँ पवन नहिं लागई, बाँधै हयको आनि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि पीपरामूल लै, अरु अजमोद मँगाइ ।
पीपरि कुटकी कैफरा, अरु अजवाइनि लाइ ॥ १ ॥
हरदी गूगुर लीजिये, और भेलाउँ मँगाइ ।
खुरासानि अजवाइनी, काराजीरी लाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालेश्वर बच कूट घिउ, अरु बंडार मिलाइ।
भाग बरोबरि आनि सो, इनको लेउ कुटाइ ॥ ३ ॥
चौपाई—दश तोले सब औषध लीजै। दाना पाछे हयको दीजै ॥
दोहा—दाना दीजै मोठको, अग्निमाहिं पकवाइ।
पानी दीजै गर्म करि, जब ठंढो ह्वै जाइ ॥ १ ॥
जबतक होइ अराम नहिं, यही दवा करवाइ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताइ ॥ २ ॥

अन्य तेल।

दोहा—लेउ सँभारू रंड अरु, अर्क बकैना आनि।
थूहरकी छीमी कही, और धतूरो जानि ॥
चौपाई—इनके सबके पात मँगावो। करुये तैलहि आनि जरावो॥
सेंकि सेंकि गर्दन पर मलई। पहर एकमें पीडा हरई ॥

अन्य।

दोहा—इंद्रायनिके बीज लै, और मुसव्वर आनि।
और मस्तगी लीजिये, अक्करकरहा जानि ॥ १ ॥
अंबरु हिंदी तगरु लै, भाग समान मँगाइ।
औषध तोले दोइ भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
सहत पाउ भरि लीजिये, ता सँग देउ खवाइ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—बायविडंगी कूट लै, और मुसव्वर लाइ।
डारै हयके कानमें, तिलको तैल जराइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—कुटकी हर्र बहेर लै, शिलाजीत गुड आनि ॥
हरदी साबुन सोंठि पुनि, हरदीदारु बखानि ॥ १ ॥
बकली रूसेकी बहुरि, बीस टका भरि जानि ।
सबको भाग समान लै, आठ सेर जल आनि ॥ २ ॥
चौ०—सब औषध अधकचरा कीजै।जल मिलाइ परिपक्क करीजै॥
चौथा हींसा जल रहि जावै । तब उतारि मलि छानि धरावै ॥
ताके हींसा तान करीजै । तीनि रोज नित प्रातहि दीजै ॥
याविधि चौदह दिन लगु करिये । ता पीछे विधि यह अनुसरिये॥
पाव एक मेथी मँगवावै । मोठि सेर भरि मिलै पकावै ॥
दोहा—काढा प्याइक दीजिये, यही महेला रोज ।
पानी औटा दीजिये, रोगक रहै न खोज ॥

अथ वातगुर्ग लक्षण ।

दोहा—गर्दन कन्धो जासुको, सूखि तुरीको जाइ ।
चमडा चपकै हाडमों, वात गुर्ग सो आइ ॥ १ ॥
सूखति ताकी पीठि फिरि, पीडा अति अधिकाइ ।
सूखब ताको होइ कम, यह औषध करवाइ ॥ २ ॥
रंडतेल तिलतेल सम, दोऊ लेय मिलाइ ।
तामें थोरा डारिये, मैनशिलहिको लाइ ॥ ३ ॥
सूखेपर मलि देइ सो, रंडपात सेंकवाइ ।
बाँधे ऊपर ताहिके, शालहोत्र मत आइ ॥ ४ ॥
चौपाई—एक जगह जो सूजानि आवै ।होइ अराम अश्व सुख पावै॥
जो अराम नाहिं देइ दिखाई । तौ ताको चीरौ गिरवाई ॥
चारो पाँइ उपर करि बाँधै । ता ऊपर फिरि यह विधि साधै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सूखि खाल जहँ देइ देखाई। ताके पाँजर देउ चिराई॥
आँगुर भरि तहँ घाउ करावै। रंडाकी चोंगलि बनवावै॥
तेहि लगाइ कारि फूँकौ वाही। घाउमें हवा बहुत भरि जाही॥
खाल पकारि चुटकीसे लेहू। भीतर हवा भरै तेहि देहू॥
देउ दबाइ हाथते वाही। चमडा हड्डी छाँडै जाही॥
दफा एक दुइ तीनि करीजै। तेहिके उपर और विधि कीजै॥
मिला मैनाशिल तेल मँगाई। ऊपर लिखा जौन है भाई॥
जखम माहिं सो तेल भरीजै। सूखी जगह दाबि करि दीजै॥
टाँका घाउम देव देवाई। फिरि घोडेको ठाढ कराई॥
काठ तिपाई यक बनवाई। पेटतरे सो देइ गडाई॥
घोडा फिरि बैठै नाहिं पावै। सोई जतन स्वामि करवावै॥
जखम पास सूजति है ताके। निकरै पीबु चारिये वाके॥
फिरि तापर मलहम लगवावै। होइ अराम अश्व सुख पावै॥
फोरि वताना देखैं तेहिको। देइ मसाला वाजिब वहिको॥

अथ ऊर्द्धवायुलक्षण व दवा।

दोहा—अंडकोश यक तरफको, ऊपरको चढिजाइ।
अंड चढै जेहि तरफको, पाँव तौन लँगराइ॥ १॥
नींब पात उसवायकै, देइ बफारा ताहि।
करै लँगोटा वस्त्रको, बाँधै भरता वाहि॥ २॥

अन्य लक्षण।

दोहा—यह औषध कारि पाँच दिन, जो अराम नाहिं होइ।
ताकी औषध कहत हौं, जानि लेहु अब सोइ॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंड एक चढि जाय सब, नहीं देखाई देइ ।
औषध कीजै ताहिकी, ताते नीको होइ ॥ २ ॥
यह बीमारी कठिन है, अंड चढा रहि जाइ ।
पाँव सूखि तेहि जात है, ताजुब नहिं मरिजाइ ॥ ३ ॥
पीपरि तोले एक लै, ताको लेउ कुटाइ ।
ताते दुगुनी सोंठि लै, तामें देउ मिलाइ ॥ ४ ॥
तीनि सेर गोदुग्ध लै, औषध लेउ मिलाय ।
पहर एक दिन भीतरै, ताको देउ पिआय ॥ ५ ॥

चौ०—पक्की तौल दूधकी कही । सात रोज हय दीजे सही ॥
यक खुराक मौताज बताई । यतनी रोज दीजिये भाई ॥

अन्य ।

दोहा—पैर पिछारी माहिकी, पट रग देउ खुलाय ।
खून निकारै ताहिते, वाजि नीक ह्वै जाय ॥ १ ॥
नींबपात मँगवाइकै, देइ बफारा वाहि ।
बाँधै भर्त्ता नींबको, फिरि हुकना करु ताहि ॥ २ ॥

दवा हुकना ।

दोहा—अजवायनि अजमोद लै, हरदी सोंठि मिलाइ ।
बायविडंगहि लाइ पुनि, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
औषध तोले बीस भरि, सात सेर जल माहि ।
ताहि चुरावै अग्नि पर, तीनि सेर रहि जाहि ॥ २ ॥
फेरि उतारै अग्नितें, खूब मलाय छनाय ।
आध पाव तिल तैल लै, सो तेहि माहिं मिलाय ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुकना कीजे वाहिसे, और मसाला देय ।
शालहोत्र मत जानिकै, देखि बताना लेइ ॥ ४ ॥

अथ बलगम वायु लक्षण व दवा ।

दोहा—पाछिल घर काँपत अहै, वात भई यह लोय ।
बैठै सो मुश्किल किये, उठिकै ठाढो होइ ॥ १ ॥
पेर दुओ लरखराति हैं, राह चलतमों आनि ।
ये लक्षण हैं जाहिमें, वात बलगमी जानि ॥ २ ॥

चौ०—खुरासानि अजवाइनि कही । सोंठि जवाइनि पीपरि लही ॥
कारा जीरि भेलावाँ लावै । सबै दवा यकमाहिं मिलावै ॥

दोहा—हरदी दोनों कैफरा, अस कालेश्वर आनि ।
घोडवच अरु बंडार काहि, भाग बरोबरि जानि ॥ १ ॥
कूटै अति बारीख करि, सबको लेउ मिलाइ ।
पैसा भरि ले शामको, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दाना दीजे मोठको, अग्नि माहिं पकवाइ ।
मेथी लीजे पाउ भरि, सोऊ लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
तैल जौन लकवा विषे, कहो अहै सुखदाइ ।
हयकी पाछिले अंगमें, दीजे ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
हुकना कीजे ताहिको, दवा लेउ मँगवाइ ।
ऊर्द्ध वायुमें जो कही, सोइ दवाई आइ ॥ ५ ॥
ऐसे घरमें राखिये, नहीं पवन छुइ जाइ ।
गरुई झूल मँगाइ करि, दीजे ताहि उढाइ ॥ ६ ॥

अथ गठिया वायु लक्षण व दवा ।

दोहा—आगिले पछिले पाँवकी, गाँठी फूलि जु जाहि ।
लंग करति है तासु पग, गँठिया जानो ताहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुचिला पैसा एक भरि, तिनको लेउ भुँजाइ ।
गोली चना प्रमाणकी, ताको लेउ बनाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे शामको, गोली एक खवाइ ।
यहि विधि दीजै नित्त प्रति, रोगनाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ धडकावायुलक्षण व दवा ।

दोहा—बहुत चलत है बाजि जो, की आति दौरौ होइ ।
वात दबावति आनि तब, धडका कहिये सोइ ॥ १ ॥
धडकाकी पहिचानि यह, सुस्त बदन ह्वै जाहि ।
दिलमारे हफ्फति बहुत, सीना हालति आहि ॥ २ ॥
औषध कीजै जल्द तेहि, नाहिन यह गति होइ ।
करै सवारी ताहि जब, ऐसिय गति तब सोइ ॥
ताजा लोहू छागको, सेर एक सो जानि ।
मिर्चें पीसै टका भरि, मिलवै तामें आनि ॥ ४ ॥
पाँच रोज यहि तरहसे, हयको देउ पिआइ ।
लीजै सोंठि छटाँक भरि, दूनो गुडाह मिलाइ ॥ ५ ॥
हयको देउ खवाइ सो, तुरत नीक ह्वै जाइ ।
खोलै ताके फस्त जो, तुरी सही मरि जाइ ॥ ६ ॥

अथ जहरवात लक्षण व दवा ।

दोहा—हाथ पांव गर्दन सहित, सूजै हयकी आइ ।
चौहर जाकी नहिं चलै, खाइ घास ना जाइ ॥ १ ॥
सूजि विथारि पानी बहै, लखि लबाबके तौर ।
सो जलके लागे बढै, जहरवात करि गौर ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरदी पिपरामूल अरु, कुटकी सोंठि मँगाइ ।
भाँग भेलावां मिर्चयुत, सबै समान कराइ ॥ ३ ॥
औषध तोले षट सबै, सबको लेउ पिसाय ।
दाना पाछे ताहिको, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—चमिरा पात मँगाइये, अंबरबोलि मँगाइ ।
लेउ सँभारूपात अरु, पात धतूरा लाइ ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, जलमें लेउ पकाइ ।
सहत सहत हय पीठिपर, ताको देउ धराइ ॥ २ ॥
चारि घरी लग सेंकिये, याही विधिसों जानि ।
खुलति देह तब वाजिकी, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जर लौकाकी लीजिये, बकली तासु मँगाइ ।
निरगुंडी औ हींग लै, वच अरु सोंठि मिलाय ॥ १ ॥
लै पलाश पीपरि सहित, सैंधव बाइविडंग ।
चारि चारि मासे सबै, जानौ सहित उमंग ॥ २ ॥
सेर एक लै गाइघिउ, औषध सबै मिलाय ।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ ३ ॥
सेंकनकी विधि जो कही, सेंक वही विधि देइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अन्य जहरवात लक्षण ।

दोहा—बलगमते जो होव है, जहरवात तनु आइ ।
तासु बताने माहिं सो, रंग श्वेत दरशाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीरबहूटी एकपर, गुड लीजै लपटाय ।
या विधि दीजै तीनि दिन, जहरवात मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य जहर वात लक्षण ।

दोहा–रंग बतानेको जरद, सूजनि करीं होय ।
प्रथमहि औषधि जो कही, देतै नीको होइ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–अंड सूजि जाके गये, देखि बताना तासु ।
प्रथम जौन औषध कही, ताको दीजै आसु ॥ १ ॥
तिलको तैल मँगाइकै, ताको देउ लगाय ।
रूस पात लै जोस करि, तिनको देउ बँधाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–दुहूं रानमें जौन रग, तिनते खून कढाइ ।
ता पाछे यह औषधी, ताको देउ खवाइ ॥ १ ॥
लोन लहौरी घृतसहित, तोले डेढ मँगाय ।
ते दोनों मिलवाइकै, दीजै लेप कराय ॥ २ ॥
महुआपात मँगाइकै, तिनको लेइ उसेइ ।
वाजीके बैजा विषे, बाँधि रोज सो देइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–सूजनि सब पोतन विषे, जा वाजीके होइ ।
खील सोहागा दीजिये, अदरखके रस सोइ ॥
चौ०–मासे तीनि सोहागा लीजै । सानिक अदरखके रस दीजै॥

अन्य ।

दोहा–भाठीकी जर सोंठि अरु, पीपरि मिर्च मँगाइ ।
बकली गूलरि वच सहित, रिंघिनिकी जर लाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारि चारि मासे सबै, औषध लेउ मँगाइ ।
बकली लीजै रंडजर, मासे दुइ मिलवाइ ॥ २ ॥
सेर एक ले गाइघृत, औषध ताहि मिलाय ।
रोज तीनिमें औषधी, हयको देउ खवाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—काराजीरी लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ ।
अरु कचूर मँगवाइकै, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गोबरके रस माहि सो, लीजै खरल कराइ ।
छिरकामो सो तप्त करि, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
कद अरु मौसम देखिकै, या औषधको देइ ।
चंडीके परतापते, बाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—टेसू फूल मँगाइकै, जलमें लेउ पकाइ ।
सो बाँधै दिन सातलौं, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—मिर्च पान अदरख सहित, बीज कसौंजी लाइ ।
दोइ टकाभरि लीजिये, भोग समान कराइ ॥ १ ॥
जहरवात विष बेलि अरु, दूरि सही ह्वै जाय ।
शालहोत्र मुनिनाहको, मतो गूढ यह आय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—राई पीपरि मिर्च ले, टका टका भरि लाइ ।
हींग सोहागा लीजिये, और अफीम मिलाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लौंग अकरकरहा सहित, इनको लेउ मँगाइ ।
पैसा पैसा भारि कही, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
सोंठि पीपरामूल लै, कर्ष कर्ष भारि लेउ ।
छालि सहींजन कूटिकै, ताहूको रस देउ ॥ ३ ॥
लघु अँवरा परमानकी, गोली लेउ बनाय ।
प्रात साँझ यक यक कही, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥
जहरवात नाशै सही, मंद अग्नि मिटि जाइ ।
भोजनपर अति रुचि बढै, शालहोत्र मत आइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—शोथ होइ जो देहमें, औ गर्दनमें जानि ।
जकारि जाय जो वाजिकी, जहरवात सो मानि ॥ १ ॥
हींग सोंठि अजमोद लै, कारीजीरी आनि ।
भाग बरोबरि कीजिये, अजवायनि अरु जानि ॥ २ ॥
जलसों पीसे औषधी, लीजै तप्त कराइ ।
शोथ होय जहँ अंगमें, दीजै लेप कराइ ॥ ३ ॥
शोथ सकल मिटि जाइ जब, तबकी यह विधि आहि ।
रुधिर काढिये ताहिको, छातीकी रगमाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—वातरोग है जाहि तनु, जहरवात अरु होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
मेथी लीजै सेर यक, ता सम हर्र बखानि ।
पात बकैना लेउ पुनि, सेर अढाई आनि ॥ २ ॥
सज्जी लीजै सेर भारि, सबको लेउ पिसाइ ।
भेडी मूत मिलायकै, दीजै तेहि गडवाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाडै ताको सात दिन, लीजै फिरि निकसाइ ।
पेसा भरि तेहि अश्वको, दीजै ताहि खवाइ ॥ ४ ॥
मंद अग्नि अरु बाइ पुनि, जहरवात हरि जाइ ।
औषधि दीजै सात दिन, हरिबल देत बढाइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—वरम पेटतर होइ जो, जहरवात सो आइ ।
सबक कहति हैं ताहिको, सो हयको दुखदाइ ॥ १ ॥
छाती अरु गर्दन विषे, तहाँ वरम जो होइ ।
सबकी औषध एक है, शालहोत्र मत सोइ ॥ २ ॥
जौलौं थोरी वरम है, वाजीके तनु माहि ।
तौलौं यह औषध करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ३ ॥
गोबर लीजै महिषको, महिषीमूत्र मिलाइ ।
डारै खारी लोन अरु, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लेप कीजिये ताहिको, बरम दूरि ह्वै जाइ ।
वरम नहीं यासों मिटै, अरु इजादि दरशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—कारीजीरी पीसि जल, लीजै तप्त कराइ ।
लेप कीजिये ताहिको, वरम दूरि ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—भरता बाँधै नींबको, वरम नरम ह्वै जाय ।
पछना देकै ताहि पर, दीजै जहर गिराइ ॥ १ ॥
भरता बाँधत जाइ फिरि, जखम साफ दरशाइ ।
तब तापर मलहम धरै, जखम नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारीजीरी सोंठि अरु, नितहि खवावत जाइ ।
तौलौं दीजै औषधी, जब नीको दरशाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—हरदी सज्जी लोनको, समकारि लेउ पिसाइ ।
पछना देकै वरम पर, हयको देहु मलाइ ॥ १ ॥
पात रंडके गरम करि, ऊपर देउ बँधाइ ॥
जहर सकल गिरि जाइ जब, बाँधे नींब पिसाइ ॥ २ ॥
जखम साफ ह्वै जाइ जब, मलहम देउ लगाय ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, तुरी नीक ह्वै जाय ॥ ३ ॥

अन्य

दोहा—साहिंजन छालि मँगाइकै, लीजै ताहि कुटाइ ।
यकइस दिन लगु दीजिये, एक टका भरि लाइ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—जहरवात है जाहि तनु, भूँख तासु घटि जाइ ।
ताकी औषध जो अहै, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
सेर एक भरि लीजिये, पाँचौ लोन मँगाय ।
कारीजीरी सेर भरि, दोऊ लेउ कुटाय ॥ २ ॥
सोंठि मिर्च पीपरि सहित, कालेश्वर अरु लाय ।
हरदी अजवाइनि सहित, पिपरामूल मँगाय ॥ ३ ॥
बायविडंगहि लेउ पुनि, सेरु सेरु सब आनि ।
हींग सहित लहसुन बहुरि, सात टका भरि जानि ॥ ४ ॥
टका दोइ भरि लीजिये, एक खुराक बखानि ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

दोहा—सिरसापात मँगाइकै, लीजै राँगु कढाइ।
फीहा ताको बाँधिये, तीनि दिवस सुखदाइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा मेलिकै, फेरि देउ बँधवाइ।
षट दिनके पर्यन्तमें, सूजनि सब पाचि जाइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—सज्जी साँभरि लोन लै, हरदी देउ मिलाइ ॥
औषध पैसा दोइ भरि, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, यतनी यतनी आनि।
पात धतूर बँधाइये, एक दिवस यह जानि ॥ २ ॥
अरु पाती अंजीरकी, तेऊ लेउ मँगाइ।
सो बाँधै लै तीनि दिन, सूजनि सब मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण व दवा।

दोहा—जहरवात जाको गहै, सरदी गरमी होइ।
आगे ताको है कहो, लक्षण लीजै जोइ ॥ १ ॥
कारीजीरी तूतिया, बायविडंग मँगाइ।
लेउ सोहागा मिर्च अरु, मेथी कुटकी लाइ ॥ २ ॥
छालि सहींजनकी सहित, पाँचौ लोन बखानि।
लीजै जंगी हर्र पुनि, लहसुन हालिम आनि ॥ ३ ॥
गूगुर पिपरामूरि अरु, पुनि अजवाइनि जानि।
लेउ मैनफल सोंठि पुनि, वच अरु हरदी मानि ॥
चौपाई—मुर्दाशंख लेउ मँगवाई। सुमिलखार तामें मिलवाई ॥
नागकेसरीको पुनि लीजै। वजन बराबरि सबको कीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—खुसियारी यक होति है, तृण ऊपर सो जानि ।
सहित चिरैता लीजिये, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
पैसा पैसा भारि सबै, औषध लेउ मँगाय ।
पाँच टका भारि पीपरी, तामें देउ मिलाय ॥ २ ॥
लेउ धतूरे फल बहुरि, टका चारि भरि आनि ।
पाँच पसेरी लीजिये, मेषमूत्र यह जानि ॥ ३ ॥
यक बरतनमें सो भरौ, औषध सबै मिलाइ ।
सो चढवावै अग्निपर, लीजै ताहि चुराइ ॥ ४ ॥
मूत्र सबै जरिजाइ जब, दीजै अग्नि बुझाइ ।
औषध ठंढी होइ जब, लीजै ताहि पिसाइ ॥ ५ ॥
दुइ दुइ पलकी बाँधिये, यक यक गोली जानि ।
साँझ सकारे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥
रोग घटै अरु बल बढै, क्षुधा तासु अधिकाइ ।
औषध दीजै सात दिन, जहरवात मिटि जाइ ॥ ७ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा— कर्णमूलके भीतरै, जाके सूजनि होइ ।
जहरवात तेहि जानिये, शालहोत्र मत सोइ ॥
चौपाई—तोला एक मुसव्वर लीजै । पोस्तासुत मासे भरि दीजै ॥
आँबाहरादि रजनि पुनि लेहू । छा छा मासे दोऊ देहू ॥
दोहा—जलमें ताको पीसिकै, सीर गरम करवाइ ।
सो लै हयके कानपर, दीजै ताहि लगाइ ॥

अन्य ।

दोहा—सैंधव साबुन लीजिये, छिरका काटि मँगाइ ।
ताकी पोटरी बाँधिकै, दीजै कान सेंकाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाकि जाइ आमास जो, दीजै ताको फारि ॥
होत बिमारी कठिन सो, औषध करै विचारि ॥ २ ॥

अथ शरदी व गरमीते जहरवात होइ उन दोनोंकी दवा ।

दोहा—ईसबंद पीपरि मिरच, हर्दी वायविडंग ॥
अजवायनि घोडबच बहुरि, कारीजीरी संग ॥ १ ॥
सज्जी कुटकी सोंठि पुनि, राई गूगुर आन ।
खील सोहागाकी बहुरि, पिपरामूल बखान ॥ २ ॥

सोरठा—साँभरि सोंचर आनि, चारि चारि तोले सबै ।
सेर सेर पै जानि, लहसुन और पिआजु पुनि ।

दोहा—नींब बकैना सहिंजना, और कसौंजी जानि ॥
पाती लीजै सबनकी, चारि चारि पल आनि ॥ १ ॥
सबको कूटै एकमों, जलमें लेइ पकाइ ।
गोली ताकी बाँधिये, फेरि शराब मिलाय ॥ २ ॥
तीनि तीनि पलकी सबै, गोली बाँधै ताहि ।
ताहि खवावै नित्यप्रति, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
लेउ पिसान मसूरको, सेर एक कहि ताहि ।
ताहि शराब मिलाइये, रोज खवावति जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—जाकी सब देहीविषे, गूँथी सी परिजाय ।
गूँथिनते लोहू चलै, जहरवात सो आय ॥

सोरठा—नीबूके रस माहिं, तजहि मिलावै आनिकै ।
ताको लेप कराय, औषध दीजै खानको ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सैंधव अजवाइनि सहित, बायविडंग मँगाय ।
पाँच पाँच तोले सबै, तिनको लेउ पिसाय ॥ १ ॥
गोघृत पैसा पाँच भारि, तामें देउ मिलाइ ।
यह औषध दिन सातमें, दीजै सकल खवाइ ॥ २ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—सूजनि ह्वैकै प्रथम ही, फूटि फेर जो जाइ ।
जखम नकि सो होइ नाहिं, वाजी आति दुबराइ ॥ १ ॥
कारीजीरी मिर्च पुनि, अरु बंडार मँगाय ।
जीरा लेउ सफेद पुनि, कुटकी सौंफ मिलाइ ॥ २ ॥
अरु घोड़वचको लीजिये, भाग बरोबारि आन ।
तीनि सेर साढे सबै, एती औषधि जान ॥ ३ ॥
खुरासान अजवाइनी, सज्जी बायविडंग ।
पाव पाव सब लीजिये, औरौ कूट प्रसंग ॥ ४ ॥
सबको पीसि मिलाइकै, शालहोत्र मत जानि ।
साँझ सकारे दीजिये, एक एक पल आनि ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—चौहैं जाकी नाहिं चलैं, जहरवात सो आहि ।
या कछु सूजनि होति है, जानि लेहु मनमाहि ॥ १ ॥
हर्र चिरैता सोंठि लै, कुटकी पीपरि आनि ।
रेवतचीनी लेउ पुनि, नागरमोथा जानि ॥ २ ॥
गूदी लीजै बेलकी, अरु अजमोद मँगाइ ।
सेर एक जल डारिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—आधा जल जारि जाय, ताहि उतारि मिलाइये।
ताको लेहु छनाय, कवि श्रीधर यह जानिये ॥ १ ॥
वंशलोचनहि लाइ, टका एक भरि तौलिकै।
तामें देउ मिलाइ, ताहि पिआवै वाजिको ॥ २ ॥
लीजै चना भुँजाइ, दाना दीजै ताहिको।
फेरत नितप्रति जाइ, दुहूँ बखतमों दीजिये ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—भूँजे चना पिसानु लै, ता सम मिरच मिलाय।
दीजै हयको पाउ भरि, तहूँ चौंह खुलि जाय ॥

अन्य खूनते जहरवातके लक्षण।

चौपाई—असवारी हयको बहु परै। की आति बोझा ता पर धरै॥
की गरमीकी मौसम होई। जहरवात वाजीके जोई ॥

दोहा—खूनहि सूजनि खाति है, होसु रहै नाहिं ताहि।
हफ्फै अरु गिरि गिरि परै, जहरवात सो आहि ॥ १ ॥
खाली ताको फेरिये, जब ठंढो ह्वै जाय।
शीतोदकसों धोइकै, शीतल नीर पिआय ॥ २ ॥
साँभरि लोनु मिलाइकै, यवके आटामाहि।
आध पाव मौताज करि, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
फिरि ताको कैजा करै, जलसों छिरकत जाइ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, याही जतन कराइ ॥ ४ ॥

सोरठा—बीति घरी भरि जाइ, कैजा खोलै ताहिकी।
हरी दूबको लाइ, ताहि खवावै वाजिको ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुरी मिजाजहि माहि, जानै गर्मी बहुत है ।
रंग बताने काहि, सुर्ख होइ अति तासुको ॥ १ ॥
दोहा—होइ नितैप्राति सुस्त सो, भूँख रहै नाहिं ताहि ।
यहि विधि ताकी औषधी, शालहोत्रमत आहि ॥

अन्य ।

दोहा—ताकी तारू जीभमों, दीजै फस्त खुलाइ ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥

दवा ।

दोहा—हर्र बहेरा आँवरा, और सहतरा आनि ।
सौंफ सहित सब लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥
सोरठा—यवको आटा लाइ, सबको पीसि मिलाइकै ।
हयको देउ खवाय, पानीके सम जानिये ॥

अन्य लक्षण ।

सोरठा—खून सूखतो जाइ, खबरि तासुकी लेइ नाहिं ।
खून तासु ह्वै जाइ, पानीके सम जानिये ॥
दोहा—वरम होति है ताहिते, वाजीके तनुमाहि ।
जो तौ सूजनि होइ नाहिं, तौ यह गति ह्वै जाहि ॥ १ ॥
पेटु तासु फूला रहै, सुस्ती अति सरसाइ ।
औरौ मन मारे रहै, भूँख तासु घटि जाइ ॥ २ ॥
जीरा काला सहतरा, अरु अजमोद मँगाइ ।
पात कसौंजी सौंफ पूनि, एक एक पल लाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—सबको पीसि मिलाय, दाना पाछे साँझको ।
हयको देउ खवाय, दाना आधो दीजिये ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधिक रोग दरशाहि, फस्त तासुकी खोलिये ।
जीभहि तारू माहि, तंग तरेकी रग विषे ॥ २ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—जहरवात ज्यादा भये, खून जर्द पारिजाइ ।
जमत पेट तर आइकै, तुरी रोज दुबराइ ॥ १ ॥
कोई हयकी देहमें, छालासे पारि जाँय ।
कछुक दिननके बादि फिरि, पाकि सही ते जाँय ॥ २ ॥
मोथा हर्दीके सहित, विषखोपरा जर आनि ।
जीरा लेउ सफेद पुनि, औ महुरेठी जानि ॥ ३ ॥
डेढ डेढ तोले सबै, यवके आटा माहि ।
ताहि खवावै सात दिन, जहरवात मिटि जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—पेटु जासु फूलो रहै, दाना घास न खाय ।
शालहोत्र मत जानिकै, ताको कहौं उपाय ॥
सोरठा—दागे ताको आनि, तोंदी आगे जानिको ।
आँगुर चारि बखानि, बीच दीजिये नाभिसो ।
दोहा—सेंदुर दूध मदारको, तिलको तेल मँगाइ ।
एक एक मासे सबै, तापर देउ मलाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होति है, तीनि रोज लगु जानि ।
फिरि वह कमती परति है, ता विधि कहौं बखानि॥२॥
सोरठा—पछना देउ देवाइ, चारौ तरफन दागके ।
मुनिवर दियो बताय, पै नस्तर बारीखसों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा खानेकी ।

दोहा—स्याह जीर पुनि कूट लै, दुइ दुइ तोले जानि ।
एक मास पुनि ताहिको, रोज खवावो आनि ॥ १ ॥
नीब सँभारू पातको, देइ बफारा ताहि ।
मलहम ताहि लगाइये, पीबु जबै बहि जाहि ॥ २ ॥

अन्य लेप ।

चौ०—रेहू हरदी कनिक मँगावै । लोनु आँबिली सम पिसवावै ॥
पानी घोरि गर्म करवावै । तीनि दई सो लेप लगावै ॥
ताके पीछे मलहम करै । याते जहरवात सब हरै ॥

अन्य ।

चौ०—नीलाथोथा अरु कामीला । आध पाव लै दूनों तौला ॥
हरदी पीत रार मँगवाई । सेर सेरकी वजन कराई ॥
दुइसेर तिलको तेल मँगावै । ताहि बराबरि साबुन लावै ॥
पीसि छानिकै मलहम करै । पावकमध्य पक्कै धरै ॥
घायन ऊपर याको चुपरै । तुरते जहरवातको हरै ॥

अन्य ।

चौ०—काराजीरी औ बंडारा । लेप करौ रुज जैहै मारा ॥
या सम और लेप नहिं होई । सूजनि वरम जाइ सब खोई ॥

अन्य ।

चौ०—मिर्च कसौंजी अदरख पाना । चारौ करौ एक परमाना ॥
सात रोज घोडे मुख धरै । जहरावत विषवेली हरै ॥

अन्य ।

दोहा—सिंगरफ सोंठी शंखिया, बीरबहूटी आनु ।
जवाखार माजूफलै, समुदखार सो जानु ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—लेउ करनफल देउ मिलाई । अदरखरसमें पीसि बनाई ॥
तीनि तीनि मासे सब लीजै । गोली मासे यक यक कीजै ॥
यक गोली नित प्रात खवावै । जहरवातको खोज नशावै ॥

अथ जहररोग लक्षण व दवा ।

दोहा— मुखते बहु लारै गिरै, दृगन नीर अधिकार ।
जहर रोग सो जानियो, शालहोत्र मत सार ॥
सोरठा—पिपरी राई सोंठि, हरदी मिरच मिलाय सम ।
रोग डारि है खोंटि, पिंडी करि दीजै तुरय ॥

बफारा ।

दल अंडाको आनि, और खिरहरीको लियो ।
अरु अहरा परमानि, याहीते सेंकौ सुघर ॥

अन्य ।

चौ०—सुमिलखार सिंगरफ लै आवै।अकरकरा औ मिर्च मँगावै॥
मुर्दाशंख पापरी खारा । तोला चारि चारि सब डारा ॥
दुइ तोला तूतिया प्रमाना । पीसि छानि अदरखरस साना ॥
ताकी गोली करौ विधाना । रती चारि भरि है परमाना ॥
याते रोग जहरको खोई । बुधजन जतन करै जो कोई ॥

अन्य ।

चौ०—तोला भरि पारा मँगवावै । गुड पुरान दुइ तोला लावै ॥
रहसनि अजवाइनिको लीजै । दुइ दुइ तोला वजन करीजै ॥
पीसि छानि गोली षट करै । तीनि रोज मुखमें सो धरै ॥

अन्य ।

चौ०—रेंडी स्याह मिर्च पिसवावै । बाती करि इंद्री चलवावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—जवाखार अरु रेवतचीनी । धेला धेलाभरि करि लीनी ॥
चीनी आध पावमें घोरै । हयको देय सकल दुख हरै ॥

अन्य ।

चौ०—चागोरीको साग मँगावै । चीनी मिल अश्व मुख नावै ॥
खुलै पेशाब रोगको हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अन्य ।

चौ०—नागोरी असगध ले आवै । दुकरा भरि घृत माहिं सनावै ॥
याके दिये जहर हरि जावै । शालहोत्र यह वचन सुनावै ॥

अथ जहरदौरा रोग लक्षण व दवा ।

दोहा—मुख सूजै गिलटी परै, देहभरेमें जानु ।
कोई कोई तुरँगके, छाला परै सो मानु ॥

चौ.-बहुत कठिन रुज याको जानौ।दवा करो जलदी बुधिमानौ॥
सेर एक दल तूत मँगावै । एक छटांक मिरच मिलवावै ॥

दोहा—चनाके आटामें मिलै, पिंड बनाय खवाय ।
तीनि चारि दिन दीजिये, तुरी नीक ह्वै जाय ॥

चौ०—जो तोरई बंडार कहावै । मुख सूजनि पर पीसि लगावै ॥

दोहा—जौन बतीस है लिखा, मानुष खुपरी बाल ।
तौल मसाला दीजिये, तुरी नीक ह्वै हाल ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत अनेक वातव्याधिवर्णनो
नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ चाँदनी मारनेकी विधि ।

दोहा—करते हयके माथलौं, हनै चपेटा जानि ।
आँखि पलटि जावै जबै, करै मर्ज पहिचानि ॥

चौ०—रोग चाँदनी लक्षण भाषौ । जो निदान मनमें गुणि राखौ ॥
मारै हयको आकसमातै । देर न लागै दाना खातै ॥
घाव अंगमें जाके होई । हनै चाँदनी ताको सोई ॥
प्रथम रोग मस्तकमें आवै । अंग अंगमें फिरि घुसि जावै ॥
हाथ पाँव नहिं झुकै झुकाई । और पूँछ लकुटी होजाई ॥
उदर कठोर बहुत ह्वै जावै । अँगुरी नाहीं गडै गडावै ॥
ठाढ रहै महिमें नहिं परै । दाना घास सबै परिहरै ॥
पांच सात दिन ठाढो रहै । ता पाछे हय मृत्युइ गहै ॥

दवा ।

चौ०—महिषी गोबर लै ढक एका । गुड पुरान लै दून विवेका ॥
चनाके आटा संग खवाई । रोग चांदनी दूरि कराई ॥

अन्य ।

चौ०—मेथी तीनि टका भरि लीजै। सम करि लहसुन तामें दीजै॥
पिपरी मिरच सोंठि अरु पाना । छालि सहींजनकी सम आना ॥
कंज मैनफर सन यक करौ । पैसा भरि गोली अनुसरौ ॥
प्रात सांझ घोडेको दीजै । रोग घटै जो औषध कीजै ॥

अन्य ।

चौ०—श्याम चर्म अजयाको लावै । घोडाके मुख टाप बँधावै॥

अन्य ।

चौ०—लहसुन हींग सोहागा आनी । कारीजीरी औ अजवानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिपरी मिर्चैं सोंठि भरंगी । सज्जी सोंचर सैंधव संगी ॥
सिंघजराव भस्म करि लेहू । तब औषधके माहीं देहू ॥

अन्य ।

चौपाई–मूल जवासा औ ले रूसा । पात कटैया और अतीसा ॥
विषखपरा औ अदरख पाना । गोली करु औंरा परमाना ॥
भुने चनाके आटा देहू । यक दुइ पहर बंद करि लेहू ॥
पानी तप्त अधिक करवाई । शीतल करिकै देउ पिआई ॥

अन्य ।

चौपाई–अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी । अजवाइनि हरदी ले डारी ॥
घोडेको यह देउ खवाई । जाइ चाँदनी रोग नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई–अर्क धतूर सेंहुडा जारी । आँवाराख छानिकै धारी ॥
सब यकत्र करि अंग मलावै । बंद जगहमें ताहि बँधावै ॥

अन्य ।

दोहा–जबलौं मुख बगरो रहै, तब यह दवा बनाय ।
एक मुर्ग लै मारिये, बनवै यही उपाय ॥ १ ॥
चोंच चरण तिहि काटिकै, चुरवै जलमें तासु ।
काढि तिन्हैं कूटै बहुत, सहित अस्थि अरु मासु ॥ २ ॥
मिलै महेला सेर दो, या सब लै यक सेर ।
आध पाव काली मिरच, मिलै तुरँग मुख गेर ॥ ३ ॥
दिन चालिस शामौ सुबह, देइ गरम जल प्याय ।
लै तुरंग बाँधे तहाँ, जहँ कहुँ पवन न जाय ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

दोहा—कीतौ मारै कागको, चरण चोंच लै लेइ।
गोहूँमें की माषमें, पकै तुरँगको देइ॥

अन्य

दोहा—जारि खोपरी मनुजकी, ले छटाँक परमान।
और कमीला आठ भरि, इता भिलावाँ मान॥ १॥
आध पाव गूगुरु मिलै, काले तिल यकपाव।
डारि सोहागा टंक पट, सब लै बटी बनाव॥ २॥
वजन अश्वको दीजिये, एक छटाँक प्रमान।
पवन न लागै अंगमें, बचै तु भाग्य अमान॥ ३॥

अन्य।

दोहा—जो रद बैठावे तुरँग, ताको यही उपाय।
तौ त्रियको ऋतुवसन जो, लीजै बहुत मँगाय॥ १॥
नीर सेर दशमें चुरै, पट वाहीमें डारि।
आधो जरि जावै तबै, लीजै ताहि उतारि॥ २॥
नासु दीजिये अश्वको, पाँच दिवस याहि रीति।
दाना पानी बंद करि, बाचि है अश्व प्रतीति॥ ३॥

अन्य।

चौपाई—पल्ली एक पकरि लै आवै। पूँछ मूँड ताको कटवावै॥
देह समूची आटा सानी। घोडा खाय नीक सो जानी॥

दोहा—औषध कीजै जो कही, लाग न आवै कोय।
दधिसुत रविसुतको हनै, बहुरि नवीनो होय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंत्र—चंडी चंडी तू परचंडी आवत चोट करै उवखंडी हय राखु ॥ हिया राखु थून्हि बडेरा राखु दोहाई हनुमत वीरकी अगस्त्य मुनिकी फट् स्वाहा ॥

चौपाई—यहै मंत्र दिन तीनि जु झारै । होइ अलप तबहूं ना मारै॥

अन्यमत लक्षण व दवा ।

दोहा—हवा एक है वात सर, हयको पकरत आइ ।
ताके दोइ प्रकार हैं, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
अगिले धरमें होइ जो, ताहि चाँदनी जानि ।
पछिले धरमें होइ सो, वात कैसरा मानि ॥ २ ॥
होति आइ है बाइ वह, हयकी देही माहिं ।
अंग शिथिल ह्वै जात है, ये लक्षण दरशाहिं ॥ ३ ॥
चाँदनि मारै जाहिको, बंद तासु मुख होइ ।
दाना घास न खाइ सो, ऐसे लक्षण जोइ ॥ ४ ॥
रंग बतानेको जरद, स्याही लीन्हें होइ ।
दूनों वाइन माँझमें, लेइ बताना जोइ ॥ ५ ॥
दूनौंकी ये औषधैं, हैं जानौ सो ताहि ।
है असाध्य यह जानियो, दवा तुरत करु वाहि ॥ ६ ॥
बाँधै बंद मकानमें, हवा जहाँ नाहिं जाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ ७ ॥

दवा ।

दोहा—नमक लहौरी लाइकै, ताको लेउ पिसाइ ।
डारै हयकी आँखिमें, कपरा देइ बँधाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खुलन आँखि नहिं पावई, अस पोषित करि देइ ।
ता पीछे यह औषधी, सो वहि हयको देइ ॥ २ ॥

दवा खानेकी ।

दोहा—तैल रंडको लीजिये, पाव एक मँगवाइ ।
ताते दूनों तैल तिल, दोऊ देइ पिआइ ॥

अन्य ।

चौ०—अजवाइनि अजमोद मँगावै । सोंठि पीपरामूल मिलावै ॥
कुटकी हरदि भेलावाँ लेई । और कैफरा तामें देई ॥
खुरासानि अजवाइनि लीजै । अरु घुरसारी तामें दीजै ॥
कालेश्वर घोडबच लै आवै । औरौ हरदी दारु मिलावै ॥
दोहा—देवदारु गुग्गुल सहित, कारीजीरी आनि ।
असगँध अरु पीपरि कहौं, आँवा हरदी जानि ॥ १ ॥
रंडतेलमें सानिये, अरु कपरा छनवाय ।
आध पाव मौताज यक, हयको देउ खवाय ॥ २ ॥
यहि विधि दीजै सात दिन, रोग दूरि हो जाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ३ ॥
चौ०—मेथी पक्के दुइ सेर लावै । ताहि महेला खूब पकावै ॥
पानी लेउ गरम करवाई । ठंढा करिके देउ पिआई ॥

अन्य ।

दोहा—नागौरी असगँध सहित, अरु अजवानी जानि ।
ईसबंद अजमोद लै, कुटकी सोंठि बखानि ॥ १ ॥
मेथी सोवा बीज लै, हरदी गूगुर आनि ।
कारीजीरी लेइ पुनि, भाग बरोबरि जानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबै औषधी लीजिये, अध अध पाव कराइ ।
भूँजो आटा मोठको, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
औषधि पैसा पाँच भरि, हयको देउ खवाइ ।
देउ दवाई अश्वको, साँझ समयमें लाइ ॥ ४ ॥
दाना दीजै ताहिको, अग्निमाहिं पकवाय ।
पानी दीजै गर्म करि, शालहोत्र मत आय ॥ ५ ॥

चौ०—नकछिकनी तोला भरि लीजै। दमरीभरि हरदी तिहि दीजै॥
अंडा मुरगीकेर मँगावै । तामें औषध दुओ मिलावै ॥

दोहा—भूँजै आटा मोटको, तामें देइ मिलाइ ।
पानी पीछे अश्वको, याको देउ खवाइ ॥ १ ॥
जबतक नीको होइ नाहिं, दिये औषधी जाइ ।
वात कैसरा कठिन है, मृत्यु समान लखाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—मेथी लहसुन पीपरी, मिरच सोंठि अरु पान ।
छालि सहींजनकी कही, कंज मैनफल आन ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, कूटै कपरा छानि ।
सात टका भरि औषधी, गोली चौदह जानि ॥ २ ॥
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ।
भूँख बढै अति ताहिकी, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि पीपरि मिरच, कारा जीरी आनि ।
सैंधव सोंचरु हींग पुनि, सोंठि सोहागा जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदरख पान जवास जर, विषखोपरा मँगवाय ।
महिषी शृंग जरायकै, दीजै ताहि मिलाय ॥ २ ॥
कूटै अति बारीक करि, गोली लेइ बँधाइ ।
अँवरा सम गोली करै, भाग समान कराइ ॥ ३ ॥

चौपाई—भूँजो आटा यवको लावै । गोली तामें एक मिलावै ॥
शाम सबेरे देइ खवाई । यक यक गोली ताहि बताई ॥

दोहा—जहाँ वायु नहिं लागई, बांधै हयको लाय ।
गर्म नीर करवाइकै, तिहि सो देउ पिआय ॥

अन्य ।

दोहा—टाट कि चमडा मुर्गको, बाँधै आँखिन माहि ।
कीतो जंबू खाल लै, करु अँधियारी ताहि ॥

अथ जोखाम कनारैके लक्षण व दवा ।

दोहा—नाक बहै हफ्फै अधिक, दाना घास न खाय ।
सो तुरंगको जानिये, रोग कनार बताय ॥

चौपाई—जाहि कनार होइ अति बिगरो। दुख देवै अश्वाको सगरो॥
याहीते कुब्बक अनुसारै । या विधि औषध ताहि विचारै ॥

नासु ।

चौ—भटकटाय फलको लै आवै । अजैदूधमें माहि छनवावै ॥
वाही दूधक दीजै नासू । साँझ सकारे दुइ दिन तासू ॥
श्लेष्मा जब सब झारि झारि परै । तब खानेकी औषध करै ॥

दवा खानेकी ।

चा०—हरदा सैंधव साँभारि आनै । टका टका भारि तीनों जानै॥
चारि टका भारि अदरख लावै । पाव सेर गुड आनि मिलावै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकल पीसि बासन औटावै । क्वाथ बनाय अश्वमुख नावै ॥
सात रोज लग देउ खवाई । सकल कनार दूरि हो जाई ॥
अजमाई यह औषध जानौ । याते अधिक और नहिं मानौ ॥

अन्य ।

छंदतोमर–सैंधव सु पीपरि सारु । बंडार गुरच विचारु ।
चारोंकि गोली बाँधु । हय रोग ऊपर साधु ॥
जब मिटै अंगनि रोग । तब दीजिये यहि भोग ।
पुनि देउ प्रात विचारि । मुनि यौं कहैं निरधारि ॥

दोहा–मोरशिखा है औषधी, कै सैंधवके योग ।
नासु देइ प्रातै समय, मिटै कनारी रोग ॥

अन्य ।

छंदनराच–पटोलमूल पीसिकै सो खांडमें मिलाइये ।
भहूष मेलिकै प्रमाण नार वार लाइये ॥
सबै टका प्रमाण लै सो नासु वाजि दीजिये ।
समै सरद पाइकै कनार ताहि छीजिये ॥

अन्य ।

सोरठा–गुरच हरद औ तार, गूदी बेल मँगाइए ।
करौ नासु निरधार, हयको दीजै शिशिर ऋतु ॥

अन्य ।

दोहा–तेल मिले गोमूत्रसों, दीजै अग्नि पचाय ।
अर्ध भाग वाको रहै, नास देउ सुख पाय ॥

अन्य ।

छंदचंचरी–भाँति भांतिन बाजिके जब पाइये मुखरोगको ।
चिरचिरा गोमूत्रको लै अजै मूत्र संयोगको ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीनि वस्तु मिलाइकै सुठि नासु दीजै वाजिको।
मतो ग्रंथ विचारि मुनिवर कहो तुरकी ताजिको॥

पिंड।

छंदचंचरी—सौंफ मिर्च मिलाइकै चकचूनि है सुखदानिकै।
सहंत सहित शतावरी सम सजौ पिंड मिलाइकै॥
पिंडयुक्त सु होय वाजी देहु ताहि पिआइकै।
अंग अँग सब रोग नाशै कहत मुनि चित लाइकै॥

अन्य।

छंद—कंकोल केतकी मिलाय दाख खांड लै समान।
महेटि पीपरी मिलाय पिंडिका करौ प्रमान॥
देहु वाजिको सो खाय पुष्ट होय चारु अंग।
शालहोत्र देखिकै विचारि देत व्याधि भंग॥

छंद पद्धरी।

करि भाग युक्तहु त्रै मिलाय। पुनि डारि घिउ वाजी खवाय॥
अति अबल वाजिकेबलनिधान।मुनिमत विलोकि भाषै सुजान॥

अन्य।

छंद पद्धरी।

दधिवस्त्र बाँधि सहतौ मिलाय। सो पिंड देहु वाजी खवाय॥
अति वृद्ध होय सो तुरी ज्वान। कबहूँ न होय सो सदनितान॥

अन्य।

छंद भुजंगप्रयात।

भली कूटकी मध्य सौंफै मिलावै।बिडंगैहि लै शुद्ध चीतो मँगावै॥
नशै आलसै वाजि वेगै बढावै।कहो चारु सो पिंड याको खवावै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

छदहीरंगीतिका—बात कफ वाजी कनारै ताहि यह औषध करौ।
लेउ लहसुन नागकेसरि मूल पीपरि सम धरौ ॥
गुर्च लैकै सम मिलावहु पीसि करुवे तेलसों ।
नासु याको देहु वाजिहि मिटै रोगन जेलसों ॥

अन्य ।

दोहा—की कैफराको पीसिकै, नासु नाल भरि देय ।
सकल बुखार निकारि है, यहि विधि करि सुख लेय ॥

अन्य ।

दोहा—की अतीस यक भारि अवटि, पैमें धूप सुखाय ।
ता आधो सैंधव मिलै, जैफल आधो नाय ॥ १ ॥
पीसि छानि सब एक करि, धारि राखै बनवाय ।
साँझ सकारे दो रती, नासु दिये सुख पाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—श्रुति तोला घृत सम सहत, कछु कैफर तिहि डारि ।
आधो आधो दुहुँन पुट, नासु दिये दुख हारि ॥
चौपाई—कुटकी कैपर पिपरामूरी । सोंठि जवायनिकै सम तूरी॥
बाइविडंग मैनफल हरदी । कंटकारि फल एकै मरदी ॥
अकरकरा गुड चौगुन करै । खांसी शीत कनारै हरै ॥

अन्यमत कनारकी दवा ।

दोहा—रोजिस होइ दिमागमें, आवत नथुना माहि ।
नथुनाते पानी झरै, की गाढो कफ आहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वेत होइ की तौन कफ, केवल सरदी आइ ।
देखि बताना लीजिये, सोउ श्वेत दरशाइ ॥ २ ॥
वाजि कनारो होइ जो, विगर औषध जाइ ।
ताते रोग अनेक जेहि, होत वाजि तनु आइ ॥ ३ ॥
होइ कनारो अश्व जो, देखि बताना लेइ ।
रंग जानिकै ताहिको, तब औषधिको देइ ॥ ४ ॥
होइ बताने माहि जो, सफराको रँग आइ ।
गरम औषधी जे अहैं, वजन कमी करवाइ ॥ ५ ॥
रंग बताना देखिये, वात पित्त कफ रक्त ।
खुला देखाई देइ जो, करौ हिफाजति सक्त ॥ ६ ॥

अन्य मसाला ।

दोहा—पीपरि पिपरामूल अरु, स्याह मिर्च मँगवाइ ।
और लेइ अजमोदको, सोंठि सहित मिलवाइ ॥ १ ॥
अजवाइनि लीजै दुवौ, वजन बरोबरि आनि ।
चारि चारि तोले सबै, औषध लीजै जानि ॥ २ ॥
लेउ भेलावाँ टका भरि, ते सब लेहु कुटाइ ।
बीज धतूरे लीजिये, तोला एक मँगाइ ॥ ३ ॥
तेऊ लीजै कूटि करि, कपर्छाम करवाय ।
सब औषध यकठा करै, ताकी विधि यह आय ॥ ४ ॥
दीजै ताको साँझको, दाना पीछे लाय ।
औषध तोले चारि सो, हयको देउ खवाय ॥ ५ ॥
या विधि कीजै आठ दिन, हयको औषध आनि ।
क्षुधा बढै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य नासु ।

दोहा–सूखि तमाखू छानिके, और केफरा छानि ।
ये दोनों यकठा करै, भाग बराबरि आनि ॥ १ ॥
रँडकि छूछी माहि धरि, हयके नथुना माहि ।
फूँकि देइ अति जोरसों, सब रेजिसिं झरि जाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०–लाले मिर्च पाव भरि लीजै । ता सम लहसुन तामें कीजै ॥
तीनि पाउ तिल लेउ मँगाई । हींग टका भरि खील कराई ॥

दोहा–बाँधो गोली पंचदश, अदरखके रस सानि ।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ १ ॥
मोठके आटा साथमें, हयको देउ खवाय ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, अश्व नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य थोरी सरदी होइ ताकी दवा ।

दोहा–हालिम हरदी सोंठि लै, स्याह मिर्च अरु लाइ ।
तीनि टका भरि तौलि कर, गुडके साथ मिलाई ॥ १ ॥
वाजिहि दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय ।
थोरी सरदी होइ जो, ताकी औषध आय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जाहि कनारे माहिंमों, सफरा अति अधिकाइ ।
ताके बलगम गिरत है, जरदी मायल आइ ॥ १ ॥
साँस लेतमें ताहिके, नथुना बोलत आहिं ।
तो गरमी अति जानियो, शालहोत्र मत माहिं ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरम होति है नाकपर, ता हयके कछु आइ ।
गर्मी है अति ताहिके, खाइ घास नहिं जाइ ॥ ३ ॥
तासु बताना देखिये, जो सफरा दरशाइ ।
दीजे औषध गरम नहिं, ता वाजीको लाइ ॥ ४ ॥
शिरमें निकसत खूनु है, जौन सिराते आइ ।
ताही रगको खोलिये, नीको हय ह्वै जाइ ॥ ५ ॥

चौपाई—डेढ पा भटकटैआ लेहू । कुचिला तासम तामहँ देहू ॥
मूजाको रस लेउ कढाई । तामहँ औषध देउ भिजाई ॥

दोहा—कपरामें कारि ताहिको, रसको लेहु निकारि ।
ताके हींसा कीजियो, तीनि तीनि निरधारि ॥ १ ॥
घोडाको गिरवाइकै, नथुना उपर कराइ ।
औषध हींसा एक लै, तामें देउ डराइ ॥ २ ॥
एक घरीके बाद सों, करो खरहरा ताहि ।
याही विधि करवाइये, तीनि दिवस लग वाहि ॥ ३ ॥
वरम होइ नथुना विषे, ताको देउ दगाइ ।
वरम भरेपर कीजिये, लंबा दाग बनाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा— अदरख पैसा पाँच भरि, लीजै ताहि भुँजाइ ।
अरु पैसा भरि हींगको, लेउ खील करवाइ ॥ १ ॥
तिनकी पिंडी एक करि, हयको देउ खवाइ ।
या विधि कीजे सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ नथुनाका रोग ।

दोहा—वाजी नथुना माहिमों, बढि आवत है मासु ।
देत देखाई बाहरै, औरो होत अमासु ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छालाके सम होत है, सो जानौ तुम मीत ।
श्वास बंद करि देत है, याकी है यह रीत ॥ २ ॥
पैसाभारि जंगाल अरु, हींग फिटकरी लाइ ।
कूपोदकसों पीसिके, दीजे ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
तीनों औषध भाग सम, कहो आइ सुख पाइ ।
ताको कीजे तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—नीलाथोथा फिटकरी, अरु हरतार मँगाय ।
और निसोदर लीजिए, सम भागहि करवाय ॥ १ ॥
सूखी औषध पीसि सब, दीजै ताहि लगाय ।
मासु बढो जो नाकमों, दूरि तौन ह्वै जाय ॥ २ ॥

अथ कुब्बकके लक्षण व दवा ।

दोहा—जा हयके रुकि जात है, रोग कनार गँभीर ।
तासों कुब्बक होत है, दवा करौ मतिधीर ।

नासु ।

चौ०—जा वाजीके कुब्बक होई । अदरख सोंठि मिलावै सोई ॥
सैंधव लाय सकल सम कीजै । गऊ मूत्रमें नासु करीजे ॥

अन्य ।

चौ.-जो निकसै कुब्बकको जोरा । ताकी औषध करौ निवेरा ॥
लेउ सरगवौ निंबिके पाता । डारु सँभारू तामें भ्राता ॥
रंड बकायन दाडिम लीजै । सबके दल सम भाग करीजे ॥
हाँडा मध्य मेलि औटावै । ताहि बफारा कुब्बक लावै ॥
सक देयकै पाछे बाँधै । तीनि बखत याही विधि साधै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की बैठे की फूंटि बहाई। या विधि दवा करो मन लाई॥
जब फूटै विधि यहे करावै। याही पानीमें धुलवावै॥
जब लग घाव साफ नहिं पावै। तबलग दवा यहे करवावै॥
पीछेते मलहमको चुपरै। फीहा धरै पीर सब हरै॥

अन्य।

चौ०—खाँसी आगे कुब्बक निकसै। ताहि बफारा दै सुख दरशै॥
नींब बकायन मुंडी वाँसा। याहि बफारा ते रुज नासा॥

अन्य।

दोहा—रेंडीतेल मँगाइकै, थोरेमें चुपराय।
की बैठी की फूटि बहि, करौ जतन यह आय॥

अथ कनारका मसाला।

चौ०—मेथी साँभरि नमक मँगावै। टका टका भरि लै तौलावै॥
राई जौन बनरसी भाई। आँबा हरदी ताहि मिलाई॥
अजवाइनि करु तोला तोला। एक छटांक पिआजहि मेला॥
लेउ कटैया गोल फलनकी। आध पाउ तौलाइ वजनकी॥
सकल पीसि यक पिंड बनावै। चनाके आटा सानि खवावै॥
एक खुराक लिखी यह जानौ। पांच सात दिनलौं करि मानौ॥

अथ चषकी बीमारी लक्षण व दवा।

दोहा—वाजी गलफर माहिमें, वक्ष जहां पर आइ।
लगत दहाना आहि जो, फूलि कछू सो जाइ॥ १॥
लीजै साँभरि लोनकी, दो पुटरी करवाइ।
कर्छामें घिउ डारिकै, दीजै अग्नि धराइ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तामें पोटरि गरम करि, सेंकि वक्षको देइ ।
या बिधि सेंकै पांच दिन, नीको वाजी लेइ ॥ ३ ॥
घरी तीनि अरु चारितक, सेंकि खूब तिहि देइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, वक्ष नीक तिहि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–गुड अरु चून मिलाइकै, दीजै ताहि लगाइ ।
सात दिनाके भीतरै, वक्ष नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा–हरदी पीसिक लीजिये, और मुसव्वर लाइ ।
दुवौ बरोबरि लीजिये, देहु अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
मानुष मूत्र पकाइकै, लेप वक्ष करवाय ।
सात दिवस तक कीजिये, रोग नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बाँसक डंडा लाइकै, बाँधै नुक्ता माहि ।
घोडाकी पेशाबसे, वक्ष धुवावै ताहि ॥ १ ॥
समुदखार हरतार लै, और निसोदर लाइ ।
सूखा पीसै ताहिको, चष पर देइ लगाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै दुहुँ बखत, दुइ दिन लग यह जानि ।
लेप लगावै ताहि पर, सो अब देत बखानि ॥ ३ ॥
भात माहि घिउ डारिकै, मलिकै देइ लगाइ ।
चषके ऊपर वाछमो, दीजै ताहि लागाइ ॥ ४ ॥
छूरा तेज मँगाइकै, दीजै ताहि चिराइ ।
फेरि लगावै यह दवा, जाते रोग नशाइ ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ मुख आवा होय ताकी दवा।

दोहा—जा वाजीकी जीभमें, छालेसे परिजाय।
ताकी औषध यह करै, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ १ ॥
तारूकी रग खोलिये, और जीभ रग जानि।
ता पीछे यह औषधी, कीजै ताकी आनि ॥ २ ॥

चौपाई—बडी इलाची लेउ मँगाई। ता सम दुधिआ खेरु मिलाई॥
ताको पीसि मिही अति कीजे। कहौं तासु विधि सो सुनि लीजै॥

दोहा—डारै वाजी जीभ पर, मुख भीतरमों जानि।
घरी एकके बाद फिरि, जूडो पानी आनि ॥ १ ॥
ताको छीटा मारिये, जीभ और मुख माहि।
या विधि कीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

दवा खानेकी।

चौपाई—मेंहदी पात लेउ मँगवाई। धनियां हर्राहि देइ मिलाई॥
दुइ दुइ तोले औषध लीजै। प्रातसमय घोडेको दीजै॥
तीनि दिवस तिहि देउ खवाई। राम कृपाते नीक देखाई॥

अथ जीभपर मेझुकी होनेके लक्षण व दवा।

दोहा—जो मेझुकी हय ऊपजे, जीभ मध्य सो जानु।
दाना चारा खाय कम, लक्षण तन अनुमान॥

चौपाई—चना कि भूसी भस्म करावे। छानीकेर करहुआँ लावे॥
मिर्च गोल हरदी सम लीजै। सकल पीसि मेझुकी मलि दीजै॥
तीनि रोज औषध जो करे। मेझुकी रोग अश्वको हरे॥

अन्य।

चौपाई—माँजरि माँस व्यालको लावै। जो बरजतिया सर्प कहावै॥
मासे तीनि तीनि नित दीजै। सात दिनामों नीको लीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कालबंद रोग जीभ सूखै ।

दोहा—जेहि घोडेकी जीभ पर, खुश्की बहुत देखाय ।
तुचा जीभ सूखी रहै, कालबंद सो आय ।

चौ०—सैंधव मिर्च दोउ सम लीजै । कुकुरौंधे रस खरिल करीजै ॥
गोली करि मेले मुख तासू । ताके पीछे लेप प्रकासू ॥

अन्य ।

सोरठा—पिपरी पिपरामूरि, सोंठि कुलींजन वचाहि ले ।
सबको कीजै चूर, कटुक तेलमें खरिक करि ॥

चौ०—मलहम करि सो ताको लीजै । लेपन करि कपरामें दीजै ॥
बाँधै गरे अश्वके कोई । जो सेंकै सो नीको होई ॥

अन्य मत ।

दोहा—लीजै सैंधव लोनु सम, स्याह मिर्च मिलवाइ ।
कुकुरौंधा रस ताहिमें, देहु खरिल करवाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै ताहिकी, दिना तीनि लगु देइ ।
यक यक गोली दीजिये, तुरी नीक करि लेइ ॥ २ ॥
टका टकाभरि वजनकी, गोली लेइ बनाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, हयको देइ खवाय ॥ ३ ॥

अथ तालूकी बीमारी ।

दोहा—जाके तारू माहिमो, वर्म होइ कछु आइ ।
दाना खायो जाइ नहिं, कीतौ थोरा खाइ ॥ १ ॥
तारूमें नस होति है, ताको देइ छेदाय ।
खून निकारै ताहिते, अश्व नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—तारू आवै जाहिके, ताको देइ दगाय ।
हरदी नमक बुकाइकै, दे तापर चुपराय ॥

अन्य विधि तारूरोग ।

दोहा—दोऊ ओंठन भीतरै, कीतो तारू माहि ।
छाला जाके परत हैं, दाना घास न खाहि ॥ १ ॥
सब छालन पर लाइकै, नस्तर देइ लगाय ।
साँभरि लोन मलाइ फिरि, जलसे देइ धुवाय ॥ २ ॥

अन्य तारूमें दाँत जामैं तिसकी दवा ।

चौपाई—तारू मध्य दाँत जो होई । काम नाम भाषै सब कोई ॥
दाँत तोरिकै औषध कीजै । घोडे घास खाइ ना दीजै ॥
कहुआ हरदी सैंधव लीजै । गोघृत मिरच सहत सम कीजै ॥
रदन तोरिकै अश्व खवावै । यह औषध तापर मलवावै ॥

अथ मुँहमें छाला परैं तिसकी दवा ।

दोहा—मुखमें जो छाला परैं, लार न आवति होइ ।
श्याम होइ मुख माहिं अरु, जानि लेहु जिय सोइ ॥ १ ॥
सैंधव साँभरि लोन अरु, सोंचर लेउ मँगाइ ।
औषध कीजै तीनि दिन, छाला सब मिटि जाइ ॥ २ ॥
छाला जो मुखमें परैं, लार बहति अति होय ।
घास न खाई जाइ जो, यही दवा करु सोय ॥ ३ ॥

अथ मुख पाकै व छाला परै तिसकी दवा ।

चौपाई—छाला परैं पकै मुख जासू । लार बहै बहु आवै बासू ॥
श्यामरंग कफ गिरै बनाई । धाँसै बहुत अश्व अकुलाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रस कुकुरौंध निचो करि लीजै । सैंधव साँभरि मिरचै दीजै ॥
सकल पीसि छाला पर मलै । नीक होय तुरँगै मुख खुलै ॥

अथ सब मुख सूजि जाय ताकी दवा ।

दोहा—जवाखार हरदी सहित, सरसों सौंफ मँगाय ।
कूपोदकसों पीसिकै, देउ अग्नि धरवाय ॥ १ ॥
जाय दवाई पाकि जब, तबै बफारा देइ ।
वही दवाई काढिकै, लेप ताहि करि लेइ ॥ २ ॥
पाँच सात दिन याहि विधि, करै दवा जो कोय ।
घोडा होय अराम तिहि, जाइ रोग सब धोय ॥ ३ ॥

अथ अस्तीककी बीमारी ।

दोहा—जाहि तुरी मुख माहिमें, खून जु जारी होइ ।
तिहि अस्तीका कहति हैं, सकल सयाने लोइ ॥ १ ॥
प्रथमहि तारू माहिमें, रगको देउ खुलाइ ।
पाछेते औषध करौ, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—औंरा हर्र बहेर लै, तिनको लेउ कुटाइ ।
यवके आटा मध्य करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य विधि ।

दोहा—फूटै नथुना वाजिको, लोहू जारी होइ ।
तेहि अस्तीका कहत हैं, जानत हैं जे कोइ ॥ १ ॥
केलाकी जर काटिकै, पानी ले निकराइ ।
गऊदूध मिलवाइकै, नथुना देउ धराइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरु औंराको पीसिके, शिरपर देउ धराइ।
खीरा ककरी बीज लै, पीसिके देउ सुँघाइ ॥ ३ ॥
दोनों विधि अस्तीककी, जो वरणी अभिराम।
यही दवा करवाइये, दोनों होंइ अराम ॥ ४ ॥

अथ अन्य विधि मुखरोग।

चौपाई—कल्ला उपर वरम जो होई। की मुख ऊपर सूजै सोई॥
आँखि तरेकी हड्डी जोई। फूलि जाति वाजीकी सोई॥
दोहा—आँखितरे जो रग अहै, अरु शिर पाछे जोय।
तिनमें खोलै एक रग, तुरतै नीको होय॥

अन्य मुखरोग।

दोहा—नथुना बाँसा जासुको, सूजि कछू सो जाइ।
साँस लेत अति जोरसों, शीश उठाइ उठाइ ॥ १ ॥
अर्द्धमान ह्वै भूमिमें, अरु पिआस अधिकाइ।
औंरा हर्र बहेरकी, बकली लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
जौ नारी जीरा सहित, स्याह मिर्च अरु जानि।
टका ठका भारि औषधी, वजन बरोबरि आनि ॥ ३ ॥
षटपल लीजै खाँड अरु, कूपोदक पल चारि।
सबै औषधी पीसिकै, मिलवै तिन्हैं सुधारि ॥ ४ ॥
यक दिनकी मौताज यह, कही सु लीजै जान।
सात रोजतक कीजिये, याही तरह विधान ॥ ५ ॥

अथ घिनीरोग।

दोहा—लीदि बासु मुखते कढै, कीरा परैं जु लीदि।
तृण न चरै अतिदुख भरो, घिनी रोग सो निंदि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरदी सैंधव नीबदल, सुरस मूत्र अज केर ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग हरत नाहिं देर ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला त्रिकुटा सैंधवे, मात्रा सम करि लेहु ।
काढा मदिरा संग करु, रुज नाशक इमि देहु ।

अथ सतपुरा रोग ।

दोहा–दाढपिर बाढि जात है, हाड गुल्मके तौर ।
सतपूरा ताको कहैं, दवा करौ कारि गौर ॥ १ ॥
मछरी हरदी भातको, उसिनै सबन मिलाय ।
तीनि दिवस बाँधै गरम, जब कौमल परिजाय ॥ २ ॥
तब सेंदुर भारि दीजिये, फूटि बहै अवरोषि ।
तासों हाड निकासिकै, मल

अथ नाकडा रोग नाकका ।

दोहा–रोग नाकडा होत है, बाँसा अंदर छेद ।
पीब चलै तामें अधिक, जानि लेउ यह भेद ॥

चौपाई–पक्षी नाम महोष कहावै । ताको चरण दुऔ कटवावै ॥
पानी डारि शिलापर रगरै । ताको लै कपरापर चुपरै ॥
बाकी बाती लेउ बनाई । छेद भीतरै मों धरवाई ॥
कइउ रोज लगु या विधि करै । छेद बंद तब ऊपर चुपरै ॥

अथ खामूसै आवैके लक्षण ।

दोहा–नथुनाके दोनों तरफ, हड्डी कीलै जौन ।
ताहि खमूस बखानिये, जानि लेउ बुध तौन ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाढै फैलै सूज जो, रोग खमूस बखानि ।
ताहि चिकित्सा कीजिये, रोग मिटै सुख दानि ॥ २ ॥

दवा कालादितैलविधिवर्णन ।

दोहा—पल गदिर ले सेर भर, मन यक वारि चढाय ।
आँच खूब करिकै पचै, पाँच सर रहिजाय ॥ १ ॥
तब उतारि लीजै सुघर, चारि सेर तिल तेल ।
भारि कराह धरु आँचपर, चारि सेर दधि मेल ॥ २ ॥
जब दधि पचि जावै लखै, काढा पलै पचाय ।
सेर एक दशमूल लै, चारि सेर जल नाय ॥ ३ ॥
भिन्न कढा यक सेर करि, तेल माह दे पाचि ।
छानि धरै वहि तेलको, लै कलकइ सो जाँचि ॥ ४ ॥
काँजीमें तिहि पीसिकै, अपर औषधी आनि ।
चीत सोंठि अजवाइनी, विषमारा सो जानि ॥ ५ ॥
सोरठा—मेथी बायविडंग, कूट कैफरा लीजिये ।
वन अजवाइनिसंग, बनमेथी सम वजन कारि ॥
दोहा—लैं मजीठ यक पाव तज, आध पाव मित लाय ।
तब फिरि तेल चढाइकै, कंजी बाँटि भुजाय ॥ १ ॥
दधिमें बाँटि मँजीठ ले, पाछे तासु पचाय ।
सिद्ध तेल तब जानिये, ताको गुण यहि भाय ॥ २ ॥
झोला पच्छाघात अरु, अकडवाय दुखदाय ।
झनकवाय कमरी सहित, मरदन करत विहाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा— चारि सेर तिल तेल, उतनोई काँजी पचै ।
तापर सज्जी मेल, सोंठि बनस्तर मूल कुट ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाही हरदि मँजीठ, लै प्रतिवस्तु पलेक मित ।
जलमें बाँटि जुईठ, भूँजि तेलमें सिद्ध करि ॥ २ ॥
ताको लीजै छानि, भरि भाजन धरु जतन करि ।
गुण पूर्ववत बखानि, शालहोत्र मुनि प्रमित मित ॥ ३ ॥

अथ वृषास्थितैल बहुत रोगन पर ।

दोहा—तेल कहो वृष अस्थिमें , ताको सुनौ सुजान ।
कइउ रोग यहिते नशैं, ताको करौं बखान ॥ १ ॥
अग्निवायु अरु शूलहर, छाती बंद सितंग ।
सन्निपात सब वात हर, सुखी होय बहु अंग ॥ २ ॥

चौपाई—वृषभ अस्थि मन एक कुटावे।तेल पताल यंत्र निकरावै॥
अश्वअंग दिन सात मलावै । इते रोग सब दूरि करावै ॥

अथ कर्णपीरकी दवा ।

सोरठा—सरवानि सोंठि मिलाय, ब्रह्मदंडि कुकुरौंध युत ।
हरदी दारु जो लाय, हरदि सुपारी मैनशिल ॥ १ ॥
दुइ दुइ मासा लेइ, कूप नीरसों औटि सब ।
अष्टभाग करि देइ, तीनि दिवस खावै सुघर ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—मसुरी कमल मगाय, केसरि पात लजारुको ।
हर्रा तुचा मिलाय, भेला चौमासा सकल ॥ १ ॥
सेर एक जल माहिं, अष्टभाग करि दीजिये ।
कर्णपीर नाशि जाय, जो बुध जन यह रीति करि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

सोरठा–ले फिटकरी मँगाय, बूँकि कानमें डारि दे ।
तापे देहि गिराय, अर्क कागजी निंबुको ॥

अन्य कानपाकेकी दवा ।

दोहा–कर्ण पकै जेहि अश्वको, पीव बहै श्रुतिमाह ।
ताकी औषध कहत हौं, युद्धधीर निरवाह ॥

चौपाई–जवाखार सैंधव अरु सोंचर।सज्जी वच समभाग परस्पर॥
चेंचपत्र मिलि सकल पकावै । सेंकै वाही अर्क डरावै ॥

अन्य मत ।

दोहा–जाके दोनों कानते, खून स्रवत जो होइ ।
जानौ वायु प्रसंग है, शिर झारत है सोइ ॥ १ ॥
काँपै वदन जु अश्वको, ताकी यह विधि साधि ।
तिल औ हरदी कानसों, सेंकै पोटरी बाँधि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–लहसुन हरदी पीसै भाई । सेंकै कान नीक ह्वै जाई ॥

अन्य ।

दोहा–अर्कपात मँगवाइकै, ओदे वसन बँधाइ ।
अग्निमध्य धरि दीजिये, खूब पाकि जब जाइ ॥ १ ॥
काढै ताको अग्निते, अर्क लेइ निकराइ ।
तुरी कानमें डारिये, गोघृत ताहि मिलाइ ॥ २ ॥

अथ कछुईकी बीमारी ।

दोहा–कर्णमूलके पासमें, गर्दन ऊपर जानि ।
तहँ सूजनि जो होति है, कछुई ताको मानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—दोनों तर्फन सूजनि होई । कीतौ एकै तरफ सुजोई ॥
ताको कछुई नाम बखानौ । शालहोत्र मत है यह जानौ ॥

दवा ।

दोहा—शिर गर्दनके जोरपर, कही कनगुदी माहि ।
जहाँ शिरा जो होति है, प्रथमहिं खोलै ताहि ॥ १ ॥
गर्दभ लीदि मँगाइकै, खारी लोनु मँगाइ ।
मानुषमूत मिलाइकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥
लेपन कीजै ताहिको, कछुई ऊपर आनि ।
रंडपातको बांधिये, ऊपरते यह जानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०—जो अराम नाहिं याते होई । लोह तप्त करि दागै सोई ॥

अन्य ।

दोहा—प्रथमहि दागै ताहिको, परी तेलकी आनि ।
औषध दीजै ताहिको, सो फिरि कहौं बखानि ॥ १ ॥
लीजै जर करवीरकी, हरदी लहसुन आनि ।
काराजीरी मिर्च लै, वजन बराबरि जानि ॥ २ ॥
सब औषध दश टंक लै, कूटि सहतमें सानि ।
छा गोली तेहि बाँधियो, प्रात खवावै आनि ॥ ३ ॥
दाना पीछे दीजिये, गोली एक खवाय ।
गऊमूत्र लै पाव भरि, ऊपर देइ पिआय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—जाइ कदाचित पाकि जो, तौ यह औषध आहि ।
कहत अहौं अब ताहिको, समुझि लेउ मन माहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—कछुआको खपटा लै आवै । औरत शिरके बार मँगावै ॥
ते दोनोंको लेउ जराई । रंडतेलमें खरिल कराई ॥
सो वह जखम उपर लगवावै । कछुई रोग नीक ह्वैजावै ॥

अन्य मत ।

दोहा—मेझुका बाँधे चीरिकै, रोम करै सब नासु ।
बहुत बढै कछुहीय जो, चीरि दवा करि तासु ॥

अन्य ।

दोहा—पाकी अँबिलीको पना, तामें नमक मिलाय ।
लेप घावपर कीजिये, कछुई रोग बिलाय ॥
चौ०—ले हरताल तावकी तोला । मासे चारि लीजिये कुचिला ॥
अँबिली पना संग सो पीसै । बार मूँडि कछुई पर लेसै ॥
ऊपर अँबिली और लेसावै । तापर रंडपात बँधवावै ॥

अथ हसना रोग ।

दोहा—दाढ पिछारी होत है, सूजनि लंबी आइ ।
ताको हसना कहत हैं, शालहोत्र मत पाइ ॥ १ ॥
जो कछुईकी है दवा, सोई याहिकी आइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, हसना रोग नशाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—ईंट पुरानी तप्त करावै । ताके सेंके रुज बहि जावै ॥

अथ वोगमाकी बीमारी ।

दोहा— दुहुँ दाढनके बीचमें, कुब्बकके तर जानि ।
हलक ऊपरै होत है, निकसत बाहर आनि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुब्बकके छा अंगुरे, आगे यह रुज होइ ।
तरे ताहिके होत है, बोगमा कहिये सोइ ॥ २ ॥
पानी पीवत नाहिं अरु, दाना घास न खाइ ।
जा वाजीके कंठमें, होत बोगमा आइ ॥ ३ ॥

चौ०—कुब्बकमें कनार हो जाई । पानी नाहीं छोडत भाई ॥
बोगमा रोग फूटि जब जावै । हलकके भीतर छेद देखावै ॥

दवा ।

दोहा—कारीजीरी सोंठि लै, कुचिला मिर्च मँगाइ ।
कालेश्वर अरु तज सहित, सम करिलेउ पिसाइ ॥ १ ॥
थोरी रेहू डारिकै, जलसों लेइ मिलाइ ।
तप्त कीजिये अग्निपर, दीजै लेप कराइ ॥ २ ॥

चौपाई—लेप कियेते रोग न जाई । तौ पाकैकी दवा कराई ॥

दवा ।

चौपाई—अजवाइनि अरु राई लावै । कारीजीरी ताहि मिलावै ॥
सोंठि सहित अजमोद मँगावै । जलसों पीसै लेप करावै ॥
दोहा—तातो कीजै अग्नि पर, दीजै ताहि लगाइ ।
भर्त्ता कीजै नींबको, देउ ताहि बँधवाइ ॥ १ ॥
रंडपात बहु सेंकिकै, तिनसों देहु बँधाइ ।
सात दिवसमें सेंकिकै, फूटि बोगि सो जाइ ॥ २ ॥
नींब कि पाती लोनु लै, पीसिक देइ लगाय ।
जखम साफ ह्वै जाइ जब, तब मलहम चुपराय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जवाखार अरु सोंठि लै, तिन सों देइ बँधाइ ।
सातरोजमें पाकिकै, फूटि बोगमा जाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नींब कसौंजी पात लै, औ अजवाइनि लाइ ।
भाग बरोबरि कीजिये, सबै औषधी आइ ॥ २ ॥
औषधि तोले चारि भरि, मोठ महेला माहि ।
हयको दीजै साँझको, रोग नीक हो जाहि ॥ ३ ॥
यह बमिारी कठिन है, जानि लेउ मन लाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, दवा करौ हरुगाइ ॥ ४ ॥

अथ मुँहते लार बहुत गिराकरै तिसकी दवा ।

दोहा—स्याह धतूरे माहिंकी, बोडी यक मँगवाइ ।
दानामों करि साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

इति श्रीशालहोत्र संग्रह केशवसिंह कृत मुखरोग
वर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ पैररोग. लक्षण व दवा ।

छप्पय पैर पाछिले मध्य गिरह भीतर हड्डा कहि ।
अस्थि नुकीलो होत लखौ चपठा चपठा लहि ॥
वही ठौर रगमाँह गुल्म कोमल मुतरा भनि ।
सूजनि अगिले मध्य गिरह जानुआं रोग आनि ।
पद आगिले नाली बढै बैर हाड्डि कहि वैरसारि ॥
लखि सूजि आगिले सुम उपर सोइ चकावारि पकत भारि॥

पुनः ।

छप्पय—पैर पाछिले भोहैं सूजि पाकै पुस्तक मित ।
वैसै पुस्तक ऊर्द्ध होय गाना कहिये हित ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झरत पूतरी माह रसा कछुहीं जु विकाशित ।
वेजा पछिली नली मुरुग अंडन सम भाषित ।
कहि छाला सुम भीतर प्रगट पीलपाँव सूजन भने ।
मसवृद्धि गनै पल बाढतो पैररोग ग्यारह गनै ॥

अथ हड्डारोग लक्षण । देखो घोडा नम्बर १४८.

दोहा—पैर पाछिले गाँठिमें, भितरी ऊँचो जौन ।
ताहीमें हड्डा प्रगट, जानौ रुजको भौन ॥

चौ०—अस्थि नुकीलो देखो भाई । चपठा चपठा सो दरशाई ॥
हड्डा कहो रोगको नामा । दवा कियेते होइ अरामा ॥

दोहा—हरिआरि लकरी नींबिकी, हड्डा सेंके जाहि ।
शोणित गिरै विकारते, पछना दीजै ताहि ॥ १ ॥
दंती गोटा निंबुरस, और निसोदर लेइ ।
सैंधव मिलि लेपन करै, अस्थि बढै नाहिं सोइ ॥ २ ॥
ऊपर कपरा बाँधिकै, लकरी नींब सेंकाय ।
दिना सात उठि प्रात करि, रोग नीक ह्वै जाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०—सोवा सागुनि सोदर लावै । नकछिकनी सैंधव पिसवावै ॥
निंबूके रस मध्य सनावै । हड्डा ऊपर ताहि बँधावै ॥
दिन ग्यारह लग औषध करै । हड्डारोग अश्वको हरै ॥

अन्य ।

सोरठा—चारौ पद दे दागि, जो जानौ यह रोग है ॥
चेतन चंद प्रमान, औषध कीजौ मास षट ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—मानुषकी खुपरी लै आवै। तप्त अग्निमें ताहि जरावै॥
महिषा मेष शृंग जरवाई। सकल दवा सम भाग पिसाई॥
त्रिकुटा त्रिफला सज्जी राई। भूँजि सोहागा खील कराई॥
कालेश्वर अरु कारीजीरी। अजवाइन हरदी बहु पीरी॥
गुडसँग गोली या विधि बाँधै। टंक टंक भरि सो अवराधै॥
उपजत रोग औषधै करै। अस्ति रोग घोडेको हरै॥

अन्य।

चौ०—चूना कली भँटामें भरै। कपरोटी करि पावक धरै॥
जब परिपक्व होइ लखि लेई। पीसि लेप हड्डा करु सोई॥

अन्य।

चौ०—बडका मूराको ले आवै। भेंडकि लेंडी बहु सुलगावै॥
तामें मूरा भरत करावै। गरम बाँधि दुइ घरी रखावै॥
जब लगु हड्डा गलै न भाई। तब लगु दवा करौ मनलाई॥

अन्य।

चौ०—मेषकेर गुरदा दोउ लावै। चीरि तवापर गरम करावै॥
हड्डा ऊपर जो बँधवावै। नीक होइ सब शोक नशावै॥
दोहा—हड्डा मोतरा जानुवा, वैजा पुस्तक जाय।
इते रोग नाशक दवा, करौ सुघर मन लाय॥

अन्य दवा खानेकी।

चौ०-गोल मिरच अरु पिपरामूला।नीलातंत लीजियो कुचिला॥
कालेश्वर मौरेठी लावै। इंद्रजवा भेलावँ मँगावै॥
समुदफेन पालाशपापरा। ढाई ढाई भरि सम धरा॥
मालकाँगनी मेथी लीजै। डेढ डेढ भरि वजन करीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारिजीरी हालिम हरदी । जहर तेलिया मुंडी मरदी ॥
जंगीहर कुलींजन लीजे । सवा सवा तोला सब कीजे ॥
राई लेउ बनरसी भाई । गेरह तोले भरि तौलाई ॥
मोथा अदरख हींग मँगावै । मानुषकी खुपरी लै आवै ॥
कारे तिल वै आदा लीजै । और कलौंगी तामें दीजै ॥
सातो दवा बराबरि लाई । पैसा नौ नौ भारि तौलाई ॥
छालि अंकजरकी मँगवावै । रंड फूल तिहि माहिं पिसावै ॥
गुड पुरान लै गुरच नींबकी । वजन सवाये सेर सेरकी ॥
सजी सोहागा गूगर साबुन । तोले सात सात तेहि लावन ॥
गेरहसेर नींबके पाता । सकल पीसि करु यकतक भ्राता ॥
ताकी गोली करो विधाना । दश दश दमरी भारि परमाना ॥
चौदह रोज खवावै कोई । रोग जाय सुख तुरंगै होई ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जि सोहागा तूतिया, जवाखार सम लेहु ।
पीसि निसोदर मोम युत, टिकरी तासु करेहु ॥ १ ॥
निंबूरसते धोयकै, गरम तनकु करवाय ।
तीनि दिवस तिहि राखिकै, डारहु ताहि छुडाय ॥ २ ॥
पंद्रह दिन यहि विधि करै, नींबपत्र फिरि लाय ।
हडा चकावारि मोतरा, कछुही घाव पुजाय ॥ ३ ॥
हड्डाके थलमें लखै, चपटा हाड उभार ।
तासु दवा नहिं कीजिए, सो नहिं अवगुण कार ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जी मुर्दाशंख पुनि, और निसोदर आनि ।
गुंजा गुंजा भारि सबै, औ हरतारु बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लावै हड्डा नोकपर, दूध मदार मिलाइ ।
नमदा धरिकै ताहिपर, कपरा देहु बँधाइ ॥ २ ॥
ऊपर सुतरी बाँधिए, सो मजबूत कराइ ।
बीते बारह पहरके, दीजै आनि खुलाइ ॥ ३ ॥
पाती नींब पिसाइकै, रोज लगावति जाइ ।
रहै बचाए चोटको, तौ हड्डा मिटि जाइ ॥ ४ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, नीकी विधि यह आइ ।
औषधि करिये चावसों, अश्व सुखी हो जाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

चौ०—ताजी जीभ हुडार कि लावै । तारूपर हरतारु लगावै ॥
सो हड्डापर देइ बँधाई । चौथे दिवस देउ खुलवाई ॥

दोहा—खुश्की फेरि लगाइये, जौलौं नीकि न होइ ।
औषध याहि समानकी, और नहीं है कोइ ॥

अथ मोतरा रोग । देखो घोडा नंबर १४९.

दोहा—हड्डाके ढिग जौनि रग, तामें गुल्म जु होय ।
कोमल नरम निहारिये, मोतरा जानौ सोय ॥

चौ.-कुचिला दुकराभरि पिसवावै । सम हरताल ताबकी लावै॥
अर्कदूधमें दोनों रगरै । मोतरा पर पछना दै चुपरै ॥
ऊपर रंड पात सो बाँधै । सात रोज याही विधि साधै ॥

बफारा ।

दोहा—रंडक कोइला पाव यक, गोघृत अर्ध मिलाय ।
चालिस दिन नित दीजिये, रोग दूरि हो जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ.-कंचनरिपुकी खील करावै । यकइस दिन तोला नित पावै ॥

अन्य बछेराके मोतरा रोगकी दवा ।

चौ०-अँविलवेत ले तोला चारी । गुड थोरा दे तामें डारी ॥
दानाके पीछे परमाने । यह रंगी उस्ताद बखाने ॥

अन्य मत ।

दोहा-रगै पिछारी पाउँकी, तरफ भीतरी माहि ।
आवत बलगम ताहिमें, सूजि तासुते जाहि ॥ १ ॥
फिरि बहु बलगम सूखिकै, जमाति नसनमों आइ ।
ताते पग लँगरा परै, चला नहीं फिरि जाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा-मिर्च स्याह हरदी सहित, पाव पाव ये आनि ।
मानुष खुपरी राख पुनि, वहौ पाव भरि जानि ॥ १ ॥
खील सोहागाकी बहुरि, तोला आठ मँगाय ।
सज्जी तोला चारि पुनि, सोऊ लेउ मिलाय ॥ २ ॥
औषध तोले चारि भरि, मोठ महेला माहि ।
पहर एक दिन भीतरै, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
औषध पीछे पहर भरि, पानी देउ पिआइ ।
या विधि कीजै तीस दिन, रोग नाश हो जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-पसुरी लेकै ऊँटकी, ताको लेउ पिसाइ ।
ताकी पोटरी बाँधिकै, मोतरादेउ सेंकाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिरि जलमों सो सानिकै, ताको गर्म कराइ ।
मोतरापर सो बाँधिये, मुनिवर दियो बताइ ॥ २ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाय ।
शालहोत्र मत देखिकै, कीजै यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—समुदखार हरतार पुनि, रत्ती दुइ भारि आनि ।
नीलाथोथ निसोदरै, दुइ दुइ रत्ती जानि ॥
लै जमालगोटा बहुरि, दाना एक मँगाइ ।
सबको पीसै एकमें, दूध माहिं मिलवाइ ॥ २ ॥
रग ऊपर लै ताहिको, दीजै आनि लगाय ।
नींबपात भरता करै, तापर दे बँधवाइ ।
सोरठा—खोलै चौथे रोज, बाँधो राखै तीनि दिन ॥
रहै न गदको खोज, मलहम फेरि लगाइये ।

अन्य ।

दोहा—लै अजवाइनि तीस पल, चूकु लेउ पल सात ।
ता सम सोंचर लोन लै, और सोहागा तात ॥ १ ॥
सबै औषधी एकमों, जलमें लेउ पकाइ ।
औषध लैकै दोइपल, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ।
तीस रोजके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा—आँबाहरदी लाइ, खलि सोहागा चौकिया ।
नासपाल मँगवाइ, आधा आधा पाव सब ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—राई कही बनारसी, सेर एक भरि लाइ ।
ता सम चना पिसानु अरु, सबको पीसि मिलाइ ॥ १ ॥
औषध पैसा एक भरि, साठि दिवस लगु देइ ।
दुपहरको जलके प्रथम, वाजी नीको लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई—पाँच सेर थूहर लै आवै । जारि तासुको राख करावै ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । आध पाव दोनोंको कीजै ॥
दोहा—कुचिला तोला दोइ पुनि, सबको पीसि मिलाइ ।
औषध पैसा दोइ भरि, ता सम घीउ मिलाइ ॥ १ ॥
या विधि दीजै चारि दिन, शालहोत्र मत मानि ।
फिरि पैसा भरि औषधी, पैसा भरि घिउ जानि ॥ २ ॥
दानै प्रथमहि साँझको, या औषधको देइ ।
दूरि होत है मोतरा, क्षुधा अधिक पुनि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—केवल कफके जोरते, जौन मोतारा होइ ।
मोटी रग अतिही परै, अरु झलकति कछु सोइ ॥ १ ॥
लोधु दोइ पल पीसिकै, पोटरी बाँधै दोइ ।
गाइ घीवको गर्म करि, सेंकति नीको होइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई—दश जमालगोटा लै आवै । बकली तिनकी दूरि करावै ॥
निंबु कागजी रसहि कढाई । तामें तिनको देइ भिजाई ॥
दोहा—चालिस दिन भीजाति रहै, लीजै फेरि सुखाइ ।
चना दालि भरि काढिकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाँधौ राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खवाइ ।
वरम होतिहै ताहिपर, सही बात यह आइ ॥ २ ॥
पुनि मुलतानी मृत्तिका, जलसों देइ लगाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ ३ ॥
सोरठा—जौलौं वरम न जाय, तौलौं रोज लगाइये ।
नीकी विधि यह आय, धोवति नित जलसों रहै ॥

अन्य ।

दोहा—रूपामाखी आनिये, सोनामाखी जानि ।
नींबूके रस माहिमों, दोऊ फूँकै आनि ॥ १ ॥
अर्क दूधमें सानि सो, चना बरोबरि लेइ ।
पछना दैकै ताहि पर, बाँधि तासुको देइ ॥ २ ॥
अजयामूत्र भिगोइकै, सात दिवस यह जानि ।
सतयें दिन फिरि खोलिये, शालहोत्र मत मानि ॥ ३ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जौलौं नीक न होइ ।
श्रीधर यह वर्णन कियो, शालहोत्र मत जोइ ॥ ४ ॥

अन्य मोतरा लक्षण ।

दोहा—पछिलो पग यक जासुको, जो मोटा ह्वै जाय ।
मोतरा जानहु ताहिको, कठिन रोग वह आय ॥ १ ॥
बाढति सूजनि जात है, होत वहै गंभीर ।
बाजी लंगरा होत है, करत अधिक है पीर ॥ २ ॥
अगिले पगमें होइ जो, फीलपाँउ सो आहि ।
एक औषधी दुहुँनकी, शालहोत्र मत माहि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

दोहा–रगै मूसरा माहि जो, तिनको खूब कढाइ ।
भरता बाँधै नींबको, तहूं रोग मिटि जाय ॥
सोरठा–नरके केश मँगाइ, तौलौं तोले चारि भारि ।
तिनको देउ जराय, शारँगधर मुनि यों कही ।
हरदी कुटकी मिर्च पुनि, खील सोहागा आनि ।
चारि चारि तोले सबै, पाव सेर गुड जानि ॥
चौ०–टका टका भरि गोली कीजै । सांझ सबेरे यकयक दीजै ॥
घटिका दुइ कैजा फिरि करई । सकल पीर वाजीकी हरई ॥

अन्य ।

सोरठा–जो नहिं नीको होइ, दीजै ताको दागि फिरि ।
शालहोत्र कहि सोइ, या सम औषध और नाहिं ॥

अन्य ।

चौ०–सुमिलखार दुइ मासे लावै । ता सम सीपी चून मिलावै ॥
फिरि पछना गँभीर पर दाजै । याको मलि औरौ कछु कीजै ॥
दोहा–फिरि तेजाब लगाइये, दीजै ताहि बँधाइ ।
बाँधो राखै एक दिन, डारै फेरि खुलाइ ॥ १ ॥
अंबरबेलि पटोल जर, सम करि दोनों लेइ ।
भर्त्ता करिकै तासुको, बाँधि रोज सो देइ ॥ २ ॥
सोरठा–पाकि खूब जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये ।
जौलौं सूखि न जाइ, दूरि होत गंभीर है ॥

अथ बैजा मोतराके लक्षण व दवा देखो घोडा नंबर १५०

दोहा–पाछिल पदकी नलिनमें, बैजा रोग बखानि ।
मुरगीके अंडान सम, जानौ रोग प्रमानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेढा कोहनी लीजिये, दिल गुरदा दोउ काढि।
ताहि चीरि तातो करै, गरम धरै रुज डाढि ॥ २ ॥
जब प्रस्वेद वामें कढै, बैजा बाँधौ ताहि ।
दश दिनलौं यहि कीजिये, मिटै रोग सुख चाहि ॥ ३ ॥
चौ०—अंडा पुहकरमूल मँगावै । ककरीबीज जवासा लावै ॥
धनियां बच अरु सेवति फूला । मिरच गोल अरु ले कंकोला ॥
घृतसँग तुरँगे देउ खवाई । बैजा सूख सकल मिटिजाई ॥
याहीको लेपन करवावै । रोग जाय सब दुःख मिटावै ॥

अथ गजपैर यानी फीलपाँवके लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर१५१.

दोहा—गजपद रुज लक्षण कहौ, दिन दिन मोटो होइ ।
सूजि जाइ यक चरण तिहि, जानि लेउ बुध सोइ ॥ १ ॥
प्रथम कुसुमको फूल लै, पीसि गरम करवाय ।
तीनि दिवस धारि नरम लखि, जाँय नीक ह्वै पाँय ॥ २॥

अन्य ।

दोहा—पलाशबीज गोमूत्र सँग, पीसि गरम करवाय ।
सात रोज लगु बाँधिये, गजपद सो मिटि जाय ॥
सोरठा—जो उतरै सुममाहि, सुमिलखार भरि चीरिकै ।
पाकि जु रुज बहि जाय, ताजा अंबर लेपि घासि ॥

मलहम ।

सोरठा—मोम जु तोला चारि, पाव एक घृत लीजिये ।
श्रुति तोला मितकारि, पीसि निंब टिकरी बनै ॥ १ ॥
घृत अरु मोम मिलाइ, नींब टीकरी घोलि काढि ।
लीजै ताहि कढाय, तोला सेंदुर मेलि फिरि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्ध भये तेहि जानि, बनै तासु फीहा सुघर ।
लाय करै छत हानि, युद्ध धीर यहि विधि करै ॥ ३ ॥

अथ जानुआ रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १५२.

दोहा—आगिल पदके मध्यमें, गाँठि सूजि जो जाय ।
ताहि जानुआ कहत हैं, याको करौ उपाय ॥

चौपाई—पहिले पछना जनुआ देई । ता पीछे औषध करु सोई ॥
सुमिलखार सैंधव मँगवावै । नीलाथोथा सज्जी लावै ॥
सकल पीसि लेपन करवावै । अर्कपातको सेंकि बँधावै ॥

अन्य

चौपाई—रसकपूर आफीम मँगावै । तोला तोला भरि लै आवै ॥
नौ मासे हरतार तावकी । चूनाके पानीमें खलकी ॥
घुटनाके कच सब मुँडवावै । नस्तरमें पछना दिलवावै ॥
मलिकै दवा रंडदल बाँधौ । सात रोज लगु याही नाधौ ॥

अन्य ।

चौपाई—घुघुवारी दल लेउ चीरिकै । सैंधव हरदी डारु पीसिकै ॥
गरम कराय रोगपर बाँधै । यकइस दिनलौं औषध साधै ॥

अन्य दवा खानेकी ।

चौ०—मानुष खुपरी वायविडंगा । तोला चारि चारि यक संगा ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । दुइ दुइ तोला वजन करीजै ॥
खुरासान कुचिला मँगवावै । तोला पाँच पाँच मेलवावै ॥
गुड पुराना कालेश्वर लीजै । लीलातंत भेलावाँ दीजै ॥
आठ आठ तोले लै करौ । पीसि छानि गोली करि धरौ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य मत।

दोहा—अगिली गाँठिन जोर तर, होत जानुआ आइ।
गूँथी दारि समानकी, प्रथमहि सो दरशाइ।
सोरठा—गूँथी बाढति जाइ, सो वह अस्थि समानकी।
तब वाजी लँगराइ, औषध कीजै प्रथमही॥ १॥
दीजै बार बनाइ, ग्रंथी ऊपर जे अहैं।
पछना देउ देवाइ, ता ऊपर श्रीधर कहो॥ २॥
चौपाई—फेरि कामजी निंबू लावै। हरै रोग सब सुख उपजावै॥
दोहा—रोटी कीजै उरदकी, सेंकि तरफ यक ले
जौन तरफ काची अहै, बाँधि ताहि पर देइ॥
सोरठा—खोलै तिसरे रोज, तीनि बार यहि विधि करै।
रहै न रोगहि खोज, कवि श्रीधर यों कहत हैं॥

अन्य।

चौपाई—मासा एक शंखिया लावै। ताहि खूब बारीख पिसावै॥
रेंडी गूदी दोइ टका भारि। ताको पीसै खूब मिही करि॥
दोहा—दुवौ मिलावै एकमें, पोटरी दोइ बनाइ।
रंडतेल धरि अग्नि पर, ताको गरम कराइ॥ १॥
फेरि जानुवा सेंकिये, दोइ घरी लगु जानि।
अर्क पात फिरि गरम करि, तिनको बाँधै आनि॥ २॥
नमदा धरिकै ताहि पर, कपरा देउ बँधाइ।
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ॥ ३॥
सोरठा—ग्रंथि बैठि जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये।
नीकी विधि यह आइ, होइ जानुआं दूरि तब॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–मानुष खुपरी जारिकै, हींग सोहागा लाइ ।
खील कीजिये दुहुँनको, तीनिहु लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
औषध मासे चारि यह, गुडमें लेउ मिलाइ ।
एक मास लगु दीजिये, रोज रोज यह लाइ ॥ १ ॥

अन्य ।

दोहा–चींटा माटी आनिकै, सेंदुर ताहि मिलाइ ।
सुमिलखार सज्जी सहित, और तूतिया लाइ ॥ १ ॥
जवाखार पुनि लीजिये, सबको पीसि मिलाइ ।
मलहम कारिकै ताहिको, रुजपर देइ लगाइ ॥ २ ॥
चौपाई–औषध मासे षट लै आवे । पछना देकै ताहि लगावे ॥
बाँधे अर्कपात सेंकवाई । चौथे वासर देउ खुलाई ॥
दोहा–मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, कीजै यही उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा–सुमिलखार अरु सिंगिया, मासे डेढ मँगाइ ।
ता सम सेंदुर ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ ॥ १ ॥
पछना देकै ताहिपर, औषद देइ लगाइ ।
याको बासर तीनि लौं, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥
चौ०–फिरि सीपीको चूना लावै । तिलके तेलहि ताहि मिलावै ॥
रोजरोज फिरि ताहि लगावै । जखम तासुको जब भरि आवै ॥
दोहा–खुश्की फेरि लगाइये, जखम सूखि जब जाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, रोग नाश ह्वै जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ बेरहड्डी । देखो घोंडी नंबर १५३.

दोहा—आगिल करनाली विषे, अस्थि बेरसम होइ ।
ताहीसों लेंगराइ है, बेरहाड्डि कहि सोइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा पीसिकै, निंबूरसहि मिलाय ।
ऊपर वाके लेपिये, हड्डी सो बहि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—अजापुत्रके अस्थिको, गूदा लेइ निकारि ।
हड्डी ऊपर बाँधिये, औषध कहौं विचारि ॥

अन्य ।

चौपाई—माटीको खपटा लै आवै । ताही मध्य अफीम लगावै ॥
अग्नि सेंकिकै हड्डी बाँधै । सात दिनाहौं सो आराधै ॥
निश्चय सो तुरतै बहि जाई । जो या विधिसों करै उपाई ॥

अन्य ।

चौपाई—मासे एक अफीम मँगावै । ताको दून बतासा लावै ॥
दूनों मिल इक टिकिआ करै । माटीके ठिकरा पर धरै ॥
ठिकरा गरम लेउ करवाई । मरजके ऊपर देउ बँधाई ॥
जबलग हड्डी नीकि न होई । तबलग ठिकरा बाँधौ सोई ॥

अन्य ।

चौपाई—खाली मिश्री कूटि बँधावै । याहूसों अच्छा ह्वै जावै ॥

अन्य ।

चौपाई—बकरी गुरदा गरम बँधावै । बेरहड्डिको नाश करावै ॥

अन्य ।

चौ०—नमक घोरि पानीमें चुपरै । हड्डी बैठि जाय हय सुधरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई—थूहर भूँजिक साबुन डारै । गेरह पहर बाँधिकै छोरै ॥

अन्य ।

चौपाई—ऊँट कि पसुरी गरम करावै । । वाहीसे हड्डी सेंकवावै ॥
अच्छा होय बार नाहिं जामें । करौ दवा जो आवै मनमें ॥

अन्य ।

चौपाई—माटीको यक ढेला लीजै । अग्नि पकाय सेंककरि दीजै॥

अन्य ।

चौपाई—उरदको आटा गोला करै । ताके बीचहि मिश्री धरै ॥
ताको अग्नि मध्य पकवावै । आधा फोरि गरम बँधवावै ॥
बहु करा करि बांधौ याही । जबलग हड्डी गलै न जाही ॥

अन्य ।

चौ०—यक मोटी ठिकरी लै आवै । पावकमें बहु तप्त करावै ॥
तेहि ठिकरी पर मिश्री डारै । चुरि जावै कछु गरम विचारै ॥
हड्डीपर बांधौ कसि बुधजन । कई रोजमें गलिहै रुजतन ॥

अन्य ।

दोहा—सेंहुड पहुँचा लाइकै, आधा लीजै फारि ।
धरै ताहि लै अग्नि पर, लोनु लहौरी डारि ॥ १ ॥
खूब गरम ह्वै जाइ जब, दीजै ताहि बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग व्याधि मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—पट्ठा लेहु कुमारिको, एक तरफको ताहि ।
बकला तासु उतारिकै, यह औषध लगवाहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताहि अग्नि पर गरम करि, दीजै आनि बधाइ।
बाँधो राखै तीनि दिन, तीनि बेर करवाइ ॥ २ ॥

अथ जेरवाइ पैर रोग लक्षण व दवा। देखो घोडा नम्बर १५४.

दोहा—पिछले पगकी नलिनमें, मध्य भीतरी ओर।
उन्नति अस्थि विलोकिये, जेरवाइ रुज घोर ॥ १ ॥
एक नलीमें होइ जो, अश्व बहुत लँगराय।
दुवौ नलिनमें होइ जो, चलत घसीटै पाँय ॥ २ ॥

सोरठा—चरण होइ कमजोर, जो हयके रुज ऊपजै।
कीजै दवा बहोर, शालहोत्र मत समुझिकै ॥

तेजाब हड्डीकाटैका।

चौपाई—जहर शंखिया कुचिला लीजै। दंती गोटा तामें दीजै ॥
और अफीम लेउ मँगवाई। कारे तिलको देउ मिलाई ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै। अर्क दूधमें लेप करावै ॥
जबलग हड्डी कटै न भाई। साँझ भोर लेपन करवाई ॥
उन्नत अस्थि जबै बाहिजाई। तब यह दवा करौ मनलाई ॥

घाव सूखैकी दवा।

दोहा—लैकै रूमीमस्तगी, सिंहजराव मँगाइ।
सूखै पीसै भाग सम, रुजपर देइ उराइ ॥ १ ॥
घाव सूखि जावै जबै, करौ जतन कछु और।
करौ दवा ऐसी सुघर, बार जमैं वहि ठौर ॥ २ ॥

बार जामैकी दवा।

चौ०—साबुन औ लिलबरी मँगावै। अजा दूध घिसि लेप करावै॥
साँझ भोर यक मास प्रमाना। बार जमैं जो करौ विधाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ चकावरि रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नम्बर १५५.

दोहा—आगिल कर सुमके उपर, अर्धगामची ओर ।
पिलापिलाइ सूजनि पकै, कहौं चकावरि ठौर ॥

चौपाई—रुज ऊपरके बार मुँडावै । नस्तरभे पछना दिलवावै ॥
रुधिर बहुत तिहि डारु निकारी । पीछे दवा करौ रुजहारी॥
अर्कमूलकी लीजौ छाली । मानुषमूत्र मेलु तिहि घाली ॥
सात रोज लगु याही बाँधै । सूजै पाँउ और विधि नाधै ॥

अन्य ।

चौपाई—खील फिटकरीकी ले आवै।मरका मोम मिलाय लगावै॥
कई रोज लगु याको कीजै । रोग चकावरि पुस्तक छीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—मोट कडा सीसेको डारै । ताके बोझ सूध पग धारै ॥

अन्य ।

चौपाई—समुदफेन वचको मँगवावै । नीलाथोथा कुचिला लावै ॥
लौंग निसोदर और अफीमा । समकारि पीसि पकाइ अनलमा॥
पछना दै औषध बधवाव । रोग चकावरि दूरि करावै ॥

अन्य मत ।

दोहा—आगिले पगकी गामची, होत ताहिके माहिं ।
हाड फोरि गूंथी कढै, कहै चकावरि ताहि ॥ १ ॥
जलदी औषध कीजिये, नाहित लँगरा होइ ।
फुरियाके सम होइ जब, नीक होइ नहिं सोइ ॥ २ ॥
रुधिर हथेरी माहिमों, ताको देइ कढाइ ।
फिरि यह औषध लाइकै, रोज बँधावति जाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रेवाचीनी एलुआ, तोले आठ बखानि ।
मासे चारि अफीम पुनि, हरदी दूनी जानि ॥ ४ ॥
सबको पीसे एकमें, थोरी औषध लेइ ।
चुरवै मानुषमूत्रमें, लेप तासु करि देइ ॥ ५ ॥
बटके पाता आनिकै, तापर घीउ लगाइ ।
फिरि आगीपर सेंकिये, तापर देहु बँधाइ ॥ ६ ॥
पुस्तक और चकावरी, सात रोजमें जाय ।
यासों नीको होइ नहिं, ताको कहौं उपाय ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा—बार चकावरि ऊपरै, तिनको देउ मुँडाइ ।
दूध अर्कको तीनि दिन, रोज लगावति जाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होइ जब, दही तोरको लाइ ।
अथवा गुडके सरबतहि, दीजै ताहि छडाइ ॥ २ ॥
सोरठा—दीजै फेरि दगाइ, पुस्तक और चकावरी ।
और मूसली जाइ, शालहोत्र प्रणकारि कहैं ॥

अथ पुस्तक रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १५६.

दोहा—सुमके ऊपर जहँ त्वचा, पाकि पिलपिला होय ।
फूटि बहै सूजै बहुत, है पुस्तक रुज सोय ।
चौ.-अगिले पाँय चकावरि जानौ । पछिले पद पुस्तक अनुमानौ

अन्य मत ।

दोहा—पछिले पगकी गामची, पुस्तक तहँ पर होइ ।
जैसि चकावरि होति है, ता सम जानौ सोइ ॥ १ ॥
कुचिला लीजै चारि पल, तिनको लेउ पिसाइ ।
आँबाहरदी दोइ पल, तामें देहु मिलाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मासे सात अफीम लै, सोऊ लेउ मिलाइ ।
अदरखके रस माहिसों, लीजै ताहि पकाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—लेप तासु कारि देइ, सूखि फिटकरी बाँधिये ।
पुस्तक नाकै सोइ, मिटत मूसली है सही ॥

अथ गानारोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नम्बर १५७.

दोहा—पुस्तकके ऊपर लखै, गाना ताहि बखानि ।
दवा न कछु ताकी कहौं, दुखद न कछु तेहि जानि ॥

सुमफटेके लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १५८.

सोरठा—हयको सुम फटि जाइ, जो तौ दोइ प्रकारसों ।
खडी लीक परिजाइ, लीक बेंडि की पराति है ॥
दोहा—सुम जाको है फटि गयो, सो लँगरा हो जाहि ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत माहि ॥ १ ॥
मोमु गरम कै लीजिये, तोला भारि यह जानि ।
सिंदुरु मासे चारि भरि, ताहि मिलावै आनि ॥ २ ॥
फटो जहाँ पर सुम अहै, तामें देउ भराय ॥
लोह तप्त कारि ताहिमें, दीजै गुलन देवाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै थानपर, दिन नवयें लगु जानि ।
सुम नीको ह्वै जात है, होइ पीरकी हानि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—कुचिला मासे चारि भरि, ताको लेउ पिसाइ ।
ता सम गूदी रंडकी, सोऊ लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
मासे एक अफीम पुनि, भँगरा रांगु मँगाइ ।
सबको करिये एकमें, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—सुम फाटो जहँ होइ, भारि ताको तहँ दीजिये ।
जौलौं नीक न होइ, ताहि भरत नितप्रति रहै ॥

अथ सुम भीतर छाला परैं तिसके लक्षण व दवा ।
देखो घोडा नंबर १५९.

दोहा—नींबपातको आनिकै, देइ बफारा ताहि ।
बहे फूटि छाला चरण, मिटै रोग सुख चाहि ।
चौपाई—जो याहूते नीक न होई । अष्टादली बफारा देई ॥
ताहि बफाराको कासि बाँधै । कई रोज लगु तेहि अवराधै ॥

अथ छीवालरोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६०.

दोहा—होत अहै मोजा विषे, गंज समान देखाइ ।
निकसत ताते पीबु है, तुरी बहुत लँगराइ ॥
सोरठा—दालि उरदकी लाइ, नींबपात पुनि ताहि सम ।
दोऊ लेउ मँगाइ, सो बाँधौ लै ताहिपर ॥
दोहा—बीते बारह पहरके, दीजै ताहि खुलाइ ।
फिरि यह औषध बाँधिये, ताहि तूतिया लाइ ॥ १ ॥
खोलै बारह पहरमो, पाति हुरहुरा लाइ ।
छीवा ऊपर बाँधिये, थोरा लोनु मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि दिवस यह औषधी, रोज लगावत जाइ ।
काव श्रीधर यह जानियो, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ मांसवृद्धि रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६१.

दोहा—मांस बढै अति पैरमें, नाकिआ बहुत देखाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, रोग काठिन यह आय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आनि सँभारू पातको, और बकायन पात ।
आँबपात सम पीसिकै, ताहि पिआवै प्रात ॥ २ ॥
कई खेज लगु दीजिये, याते जो न बिहाय ।
तौ दागै करि सुघरई, पलकी वृद्धि नशाय ॥ ३ ॥

चौपाई—मांसवृद्धि घोडाके देखै । अमिष बहुत बाढत औरेखै ॥
कीरा परैं नीक नाहिं जानै । लक्षण ताहि निदान बखानै ॥
अजेपाल अरु नीलाथोथा । सुमिलखार औ सज्जी मोथा ॥
नींबपातकी टिकिया करै । करुये तेल मध्य सो चुरै ॥
टिकिया काढि औषधी नाई । नींबीके सोंटा घुटवाई ॥
लेपन करै खोलि रग दीजै । हरै रोग नीको करि लीजै ॥

अन्य ।

चौ०—दुधिया कत्था और फिटकरी । पैसा पैसा भरि सम करी ॥
जहर शंखिया तोला लीजै । तोला दुइक निसोदर दीजै ॥
एकैमाँ सब खरिल करावै । मांसवृद्ध जल सँग चुपरावै ॥
जबलग मांस वृद्धि ना गिरै । तबलग यही औषधी करै ॥

अथ कफगीरा रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६२.

दोहा—जो पल बढि आवै लखै, पुतरीमांह तुरंग ।
कफगीरा ताको कहैं, करै दवा लखि ढंग ॥ १ ॥
चूना अरु हरुतारको, पीसि लेप करि देहि ।
बाँधि टाटसों दुइ बखत, मिटै रोग सुख लेहि ॥ २ ॥

अन्य मत ।

दोहा—मांस पूतरीको बढै, नरम बहुत सरि जाय ।
नीक होय फिरि ऊछरै, कफगीरा सो आय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ.-कुटकी मिर्च सोंठि औ पिपरी। सोंचर नमक पीसि सब धरी॥
पाव पाव सब ले तौलाई। दो तोला भारि हींग मिलाई॥
बारह दिवस अश्वको दीजै। कफगीरा ताको हरि लीजै॥

अन्य।

दोहा-सुमके भीतर जासुके, अती नर्म हो जाइ।
कीतौ मांस समान सो, सुमके भीतर आइ॥ १॥
फेरि बरोबरि होइ कारि, बैठि जाइ सुम आइ।
आवत ताते पीबु है, हयते चलो न जाय॥ २॥
छाती जाकी बंद है, ताहि रोग यह होइ।
कसारि तासुकी ना मिटै, दवा करै किन कोइ॥ ३॥
असवारी लायक तुरी, औषध कीन्हें होइ।
यासों औषध कीजिये, शालहोत्र मत जोइ॥ ४॥

दवा।

दोहा-तोले एक अफीम लै, ता सम हींग मिलाइ।
लेहु सोहागा दुहुँनसम, तासम गूगुरु लाइ॥ १॥
छा तोले भारि फिटकारी, हालिम तोले सात।
पाव एक भारि लीजिये, साबुन हरदी तात॥ २॥
आध पाव कुटकी बहुरि, सोऊ लेउ मिलाइ।
नर शिरके पुनि बार लै, तोले चारि जराइ॥ ३॥
कारीजीरी लीजिये, तोले चारि पिसाइ।
यवको लेहु पिसान पुनि, सेर एक मँगवाइ॥ ४॥
प्रथमहिं हींग अफीमको, जलमें लेहु घुराइ।
सबै औषधी पीसिके, तामें देहु मिलाइ॥ ५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोली बाँधौ पंचदश, ताहि पिसानु मिलाइ ।
एक एक दोनों बखत, ताहि खवावत जाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—चारि टका भरि मोमको, लेउ ताहि पिघलाइ ।
सेंदुर पैसा दोइ भरि, तामें लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
बाँधै हयके पाँइमें, टिकिया तासु कराइ ।
चारिउ पाँवन होइ जो, चौगुन लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
सोरठा—जौलौं नीक न होय, तौलौं नितप्रति बाँधिये ।
शालहोत्र कहि सोइ, वाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा—चर्बी तोले एक भरि, बकरा दिलकी लाइ ।
एक एक तोले बहुरि, रार मोम मँगवाइ ॥ १ ॥
लेउ भेलावाँ पाउ भरि, गरी दो पल आनि ।
पिस्ता और कक्कूदनी, दुइ दुइ तोले जानि ॥ २ ॥
ताको तेल कढाइये, यंत्र पतालहि माहि ।
ताहि लगावै वाजि सुम, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अँबिली पाती स्याह तिल, पाउ एक सो आनि ।
लेउ विरोजा डेढ पल, ताके सम गुरु जानि ॥ १ ॥
तोले भरि जंगाल पुनि, सबको पीसि पकाइ ।
बाँधै हयके सुम विषे, टिकिया तासु बनाइ ॥ २ ॥
सोरठा—खोलै तिसरे रोज, तीनि दफा औषध करै ।
रहै न गदको खोज, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ मधुपंकजरस रोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नम्बर १६३.

दोहा—बन्द बन्द जेहि अइबके, गांठी परि परि जाइ ।
मधुपंकज है नाम रस, आतुर करौ उपाइ ॥

चौ०—रसकी गिरहैं सब चिरवावै । तेहिके ऊपर औषध लावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै । और सँभारू पाती जानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । मधुपंकजरस तुरतै हरै ॥

अन्य ।

चौ०—राईपात मिठाई लावै । घोडेको उठि प्रात खवावै ॥

अन्य मत ।

दोहा—जाके सब गाँठिन विषे, वरम होति है आनि ।
वरम नरम सो होति है, मधुपंकज रस जानि ॥ १ ॥
प्रथमै ताको चीरिकै, पानी देइ बहाइ ।
ता पाछे औषध कहौं, ताको काज लाइ ॥ २ ॥
पात सँभारूके सहित, अरु असगँधके पात ।
माटी बाँबीकी बहुरि, पाकी आँबिली तात ॥ ३ ॥
जलमें सबै पकाइये, तासों देइ धुवाय ।
वही औषधी मीजिकै, ता पर देउ बँधाय ॥ ४ ॥

सोरठा—जखम साफ जब होय, मलहम फेरि लगाइये ।
सूखि जाय जब सोय, बाजी नीकी होत है ॥ ५ ॥

अन्य ।

सोरठा—हरे रंडके पात, तोला एक सु लीजिये ।
सो दीजै दिन सात, ता सम गुडहि मिलाइकै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पंकज पानरस ।

दोहा—गूँथीसी जाके परैं, चारिउ पाँवन आनि ।
तिन गूँथिनते रस बहै, पंकजरस सो जानि ॥ १ ॥
जवाखार सज्जी सहित, दुइ दुइ तोले आनि ।
अमिलीजलमो घोरिकै, ताहि मिलावै जानि ॥ २ ॥
गूंधिनपर ताको मलै, तीनि रोज यह मानि ।
ता पाछे औषध कहौं, ताहि खवावो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि सैंधव सहित, लहसुन सोंठि बखानि ।
बाघिनि हर्नी दूध पुनि, बायविडंगहि जानि ॥ १ ॥
तीनि तीनि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ ।
पल बतीस गुड ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ ॥ २ ॥
यह औषध दिन सातमें, दीजै सबै खवाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, पंकजरस मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य मत ।

दोहा—कर अरु चरण तुरंगके, रस उतरे लेंगराय ।
गुलफी पाँयनमा हवै, पंकज पान कहाय ॥ १ ॥
गुलफिनते लोहू चलै, कछुक सूज पुनि होय ।
ग्रंथिनमा कीरा परैं, यह लक्षण लख सोइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—रसकी गिरहैं कोरिकै, करै सफेदी दूरि ।
जवाखार सज्जी मिलै, अँबिलि भरै भरि पूरि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—दूध लसोढे आनिकै, सैंध जवादनि लेय ।
लहसुन सोंठि भरंगि गुड, संग खाइको देय ॥
चौपाई—रसकी गिरहैं साफ करावै । ता पाछे औषध लगवावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै । और संभारूपाती जानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । पंकजपान अश्वकी हरै ॥
दोहा—वाजीकेरे चरणकी, दीजै फस्त खुलाय ।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक हो जाय ॥

दवा ।

दोहा—पाती नीब पवाँर जर, दूध लसोढे लेइ ।
चँदसुर सुरभी घीउ सँग, खान तुरीको देइ ॥
चौपाई—ऊसरकेरि मृत्तिका लावै । निंबूरसमा सो घुरवावै ॥
लेपन करै गातमें जोई । तुरत नीक हय याते होई ॥

अन्य ।

चौपाई—सैंधव बायविडंग मँगावै । अजवाइनि हालिम पिसवावै ॥
गोघृत दूध लसोहर सानै । ग्यारह दिन खावै परमानै ॥
पछना ग्रंथि विचारिक देई । पान पिसाइ गरम करि लेई ॥
ग्रंथिन ऊपर ताहि बँधावै । सात दिवसमा नीको पावै ॥

अन्य ।

चौ०—ककई पातीको रस लीजै । गुड घृतके सँग खानहि दीजै ॥

अन्य ।

चौ०—हरदी सोंठि सोहागा लीजै । अश्वसुमन पर लेपन कीजै ॥
सर्षप तेल पीसिकै रगरै । सो रस रोग वेगही हरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—रस उतरै है पूतरी, दवा न करु दिन बीस ।
छिरकि नमक खारी तहाँ, अधिक बहै सुख दीस ॥ १ ॥
हरदी चून मिलाइ सम, खतमें खूब लगाय ।
तीनि दिवस लावे सुघर, रुकै रसा सुख पाय ॥ २ ॥

अथ थामरतिलै रस ।

दोहा—सुम पाकैं जिहि अश्वके, आमिष गलि गलि जाय ॥
तातो पानी चलत है, थामरतिलै कहाय ॥
चौ०—चँदसुर लोहचन लेउ पिसाई । तिलके तेल मेलि मलु भाई ॥
घायके ऊपर लेपन करै । रँडके पाता गरमें धरै ॥
टापू सेंकै पात बधाव । आतुर घाव नीक ह्वै जावै ॥

अन्य ।

चौपाई—दूध लसोहर सैंधव लीजै । गुडके संग खानको दीजै

अन्य ।

चौपाई—छोटी हर्र खैरु औ लुहचन । लेउ टंक सत्ताइस बुधजन ॥
अरुण रंडके पात मँगावे । सकल पीसि रुजपर बँधवावे ॥
ईंट तोति करि सेंकै जबहीं । सात रोजमें नीको लेही ॥

अथ तलथमरस लक्षण व दवा ।

दोहा—सुमके भीतर जाहिके, दधिके सम ह्वै जाय ॥
जरद नीर तासों चलै, तलथमरस सो आय ।
चँदसुरु लोहचन लीजिये, षट तोले मँगवाइ ॥
तिलको तेल मँगाइये, लीजै खरिल कराइ ॥ २ ॥
सोरठा—ताको लेप कराइ, ईंट गरम करि सेंकिये ॥
रंडपात बँधवाइ, या विधि कीजै तीनि दिन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ गतिभंगरस लक्षण व दवा ।

दोहा—कर औ चरण सूजि बहु, चलै न पावै घोर ।
गति भंगी तिहि नाम रस, बडो रोग है जोर ॥ १ ॥
अश्वपाँय चौबंदिकर, दीजै रगै खुलाय ।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥
लीजै पात पवाँर जर, दूध लसोहर लेइ ।
चँदसुर गोघृत संग ले, खान तुरीको देइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठ—आंब नींबकी छाल, पानी लीजै हर्रको ।
बीस टंक सो घाल, लहसुन लीजै टंक षट ॥
चौपाई—ज्वंडीकी जर आनो भाई । पांच टंक लीजै तौलाई ॥
पीसि छानि गोघृत सँग दीजै । गतिभंगीरसको हरि लीजै ॥
मुनि वासर तिहि दीजै खाना । औषध कीजै चतुर सुजाना ॥

अथ कचरस लक्षण व दवा ।

दोहा—अंग हलावै जो तुरँग, करै फरहरी देखि ।
यह लक्षण भाषै नकुल, कचरस सो अवरेखि ॥
चौ०—असगँध सोंठि बराबरिलीजै । कचरस रोग तुरंगको छीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—पित्तपापरा हींगजु पिपरी। मिरचै स्याह करो यक ठौरी ॥
आठ आठ टंकै परमाना । कपरछान करि गोघृत साना ॥
घोडेको जो देइ खवाई । कचरस हरै विथा सब जाई ॥

अथ अन्य मत कईतरहके रस लक्षण व दवा ।

दोहा—रस उतरै जिहि सुमनमों, प्रगट बहुत नहिं होइ ।
तप्त रहैं सुम रैनि दिन, गुप्त रहै रस सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

सोरठा—सीपी चून मँगाइ, भाँटामों भारि दीजिये ।
फिरि कपरा लपटाइ, माटी तापर लाइये ॥
दोहा—गाडि देइ सो अग्निमों, पाकि खूब जब जाइ ।
चून निकारै ताहिते, ताकी यह विधि आइ ॥ १ ॥
सुमके भीरत ताहिको, भरत रोज सो जाइ ।
सही जानियो बात यह, रस ताको बहि जाइ ॥ २ ॥

प्रगटरस ।

सोरठा—सुमकी पुतरी माहिं, बहै आनि रस जाहिको ।
प्रगट जानियो ताहि, प्रथम देह बहिजान सो ॥
दोहा—औषध खुश्कीकी अहै, तिनको देउ भराइ ।
तासों नीको होइ नाहिं, ताको कहौं उपाय ॥ १ ॥
नीलाथोथा खदिर पुनि, सूखै पीसै आनि ।
सुमके भीतर लाइकै, भरै ताहिको जानि ॥ २ ॥
नाहिं असवारीको करै, जलसों देइ बचाइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, कीजै यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा—बहत होइ रसु जाहि, बीते जाके बहुत दिन ।
सुम नाकिस ह्वैजाइ, तरफ भीतरी जानियो ॥
दोहा—कुचिला गूदी रंडकी, मासे आठ प्रमान ।
मासे चारि अफीम पुनि, तामें देउ सुजान ॥ १ ॥
सुम नाकिस जो ह्वै गयो, दीजै ताहि भराइ ।
गद्दी कपराकी करै, तापर देइ बँधाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आठ पहरके बादि सो, दीजै ताहि खुलाइ ।
नितप्रति बाँधै औषधी, जौलौं सूखि न जाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—सुम जाको फटि जाय, चुवै आनि रस ताहिते ।
ताको यहै उपाय, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

सर्वरस दूरि करिबेकी दवा ।

चौ०—हरदी चौंतिस पल भरि लीजै । कारीजीरा ता सम कीजै ॥
आठ कर्ष कुटकी लै आवै । सोऊ तामें आनि मिलावै ॥
दोहा—दिन इकइसलौं बाजिको, ताहि खवावै आनि ।
साँझ सबेरे दीजिये, दो दो पल सो जानि ॥

अथ परसगीध लक्षण ।

दोहा—प्रथमहि तौ रस उतरिकै, सुम भीतर गलि जाइ ।
परसगीध सो जानियो, दोष रसहिको आइ ॥

दवा ।

चौपाई—पहुँचा सेहुँडको लै आवै । सोरह अंगुर ताहि नपावै ॥
भीतर ताको खाली करै । खाली लोनु ताहिमों भरै ॥
दोहा—तापर गोबरु लेसिकै, डारै ताहि सुखाय ।
अग्नि माहि सो डारिकै, ताको देउ जराय ॥
सोरठा—खूब राख ह्वै जाइ, लीजै ताको काढि सब ।
तामें देउ मिलाइ, बायविडंगी तीस पल ॥
दोहा—चौदह गोली तासुकी, जलसों लेहु बँधाइ ।
धूपमाहि धरि ताहिको, डारै खूब सुखाइ ॥ १ ॥
आधी गोली साँझको, आधी भोरहि आनि ।
दीजै चौदह रोज लगि, शालहोत्र मत मानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कही लगावन औषधी, जेती रक्षमों आइ ।
तिन्हैं लगावे नित्यप्राति, और बँधावति जाइ ॥ ३ ॥

अथ पाँयनका गंभीर रोग ।

दोहा—पाक अरु फूटै बहै, अमिष कढो सो जानु ।
पीब चलै बहु छिद्र हैं, ताहि गँभीर बखानु ॥
चौपाई—सुमिलखार सज्जी औ चूना । जवाखार सबतें ले दूना ॥
रंडके पाता संग बँधावै । रोग गँभीर दूरि ह्वै जावै ॥

अन्य ।

दोहा—पान एकसै लीजिये, आधापल सिंदूर ।
ग्यारह दिनलौं खान दे, जाय रोग गंभीर ॥

अथ सुम एंडी खुश्कीते फाटैं ताकी दवा ।

दोहा—जा तुरंगके सुम बहुत, खुश्कीते फटि जाँय ।
ताकी औषध कीजिये, रोग दूरि ह्वै जाय ॥
चौपाई—अरसी अरु गोदूध भँगावै । चमराकी थैली बनवावै ॥
खीर पकाइक थैली भरै । ताके भीतर सुमको धरै ॥
साँझ सकारे या विधि कीजै । रोग हरै खुख बहुत करीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—गूगुर रार मोम गुड लेहू । लोध लाख सैंधव सम देहू ॥
पिपरी डारि सकल पिसवावै । गोघृत अरु तिल तेल मिलावै ॥
आग्नि पकाय टापमें भरै । नीको होय रोग रस हरै ॥

अन्य

चौ०—नैनू रार ऽरु सिंगरफ आनै । लोध मिलै मलहम सो ठानै ॥
तरवा लेप ताहि करवावै । रँडके पाता सेंकि बँधावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ पैरमें मोच जाय तिसकी दवा ।

दोहा—जो घोडाके हाथ पद, मोच जाय तिहि होरि ।
तो लेंडी भेडीनकी, अरु पिशाब तहँ गोरि ॥ १ ॥
पतरी कारि धरि अग्निपर, पके सो बाती भेइ ।
धूप खडोकारि चुपरि तिहि, तीनि दिवस सुखलेइ॥ २॥

अन्य ।

दोहा—सर्षप तेल अफीमको, गेरू पीसि मिलाय ।
पदपर सेंक जु दीजिये, तुरतै मोच विहाय ॥

अन्य ।

चौ०—लेउ सहोर चिटकुआ छाली। खारी नमक ताहिमें घाली ॥
अग्नि पकाय बफारा दीजै । ताहि धोय मालिस करि दीजै ॥
सात पाँच दिन औषध कीजै । मोच जाय तुरँगै सुख लीजै ॥

अन्य ।

दोहा—जो घोडाके सूंममें, चाढिकर मेष लगाय ।
की कंकर की ठीकरी, गडे लंग ह्वै जाय ॥ १ ॥
तापर हयको पद धरे, तक्रा नमक डराय ॥ २ ॥
गर्म करै यक ईंटको, पट गद्दी बनवाय ।
थोरो थोरो छोडिये, जाहिं बफारा होय ।
सकल मोच मिटि जाइ है, नकुल कहै मत सोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—मैदालकरी लोधु पुनि, हालिम हर्दी आनि ।
नरकचूर अरु तज सहित, पुहकर मूल बखानि ॥ १ ॥
सबै औषधी भाग सम, सबके सम गुरु लाइ ।
जलमो सबको पीसिकै, लीजै गरम कराइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—मोच जहांपर होइ, दीजै लेप लगाय तहँ ।
बारह दिनलौं सोइ, बाजी नीको होत है ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जी हालिम सोंठि पुनि, मैदा लकरी आनि ।
एक एक तोले सबै, येती औषध जानि ॥ १ ॥
बीज कटाईके बहुरि, तोले पाँच मँगाइ ।
गऊमूतमों पीसिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
सोरठा—मोच जहांपर होइ, होति अहै सूजनि तहाँ ।
लेप लगावै जोइ, बारह दिनलौं ताहि पर ॥

अन्य ।

दोहा—राई अजवाइनि सहित, मैदालकरी आनि ।
सबको भाग समान लै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आंबा हरदी सबनते, दूनी लेउ मँगाइ ।
औषध पैसा चारि भरि, दूध माहिं पकवाइ ॥ २ ॥
छाती जाकी बंद है, मोच गईकी आइ ।
लेप लगावै सात दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ पैर भरि जायँ तिसकी दवा ।

दोहा—जो रग है कर चरणकी, नली माँह पै सोय ।
अति मोटी परि जात है, तुरँग लंग तब होय ॥
चौपाई—यक हाँडीमें जलको भरै । पात पलाश ताहिमें धरै ॥
आध पाव खारी तिहि डारै । अग्नि पकाय अरध जल जारै ॥
दल निकारि रुजपै कासि साधै । ताके ऊपर कपरा बाँधै ॥
मूँज रसीसे दृग कसवावै । तिहि ऊपर सो पानी नावै ॥
तीनि दिवसमों नीको लेई । यह औषध जानौ बुध सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-त्रय विंशति रुज चरणके, वरणे चेतनचंद ।
लखि निदान औषध करै, कटैं दुःखके फंद ॥

अथ चोटते कहींका मांस फटि जाइ अथवा सूम भीतर फटि जाइ तिसकी दवा ।

दोहा-मांसु जासु भीतर फटो, दरद दबाये होइ ।
दरद दबाये होइ नहिं, मोच जानियो सोइ ॥

सोरठा-मैदालकरी आनि, हालिम हर्दी लेउ अरु ।
दुइ दुइ तोले जानि, दुइ पैसा भरि तेल तिल ॥

दोहा-स्याहतिलनकी पुनि खरी, पावसेर सो लाइ ।
मुर्गी अंडा तीनि लै, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
सबको पीसि पकाइ जल, दीजै ताहि लगाइ ।
रंडपात धरि ताहिपर, दीजै ताहि बँधाइ ॥ २ ॥
औषध कीजै सात दिन, फटो मांस जुरि जाइ ।
नितप्रति नई बँधाइकै, रोज लगावत जाइ ॥ ३ ॥

अथ नस फटगई होय तिसकी दवा ।

दोहा-सेंदुर तिलके तेलमों, लीजै खूब मिलाइ ।
फटी जहाँ पर नस अहै, दीजै खूब मलाइ ॥ १ ॥
पात सँभारू आनिकै, की कमरखके पात ।
गरम कराइ बँधाइये, सातरोजलौं तात ॥ २ ॥

अथ नसफार व मोच दोनोंकी दवा ।

दोहा-भेडीके घी माहिमों, खारी लोनु मिलाइ ।
ताहि मलै दिन सातलौं, नसकी पीर नशाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

लक्षण ।

सोरठा—बाजी मोजा माहि, मोच गई सब नसनमो ।
कहत अहैं पै ताहि, असवारी मो होतसों ॥ १ ॥
ऊँचे नीचे माहि, दौरत बाजी जोरसों ।
पै तबहीं ह्वै जाहि, बाजीके पुट्ठन विषे ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—बकरी गुरदा माहिकी, चर्बी लेहु मँगाइ ।
आंबाहरदी तिल सहित, तोले तोले लाइ ॥ १ ॥
मुर्गी अंडा माहिकी, जरदी लेउ कढाइ ।
यलुआ मासे षट सहित, सबको पीसि मिलाइ ॥ २ ॥
चरबी करछा माहि करि, दीजै आग्नि चढाइ ।
सो दुइ पोटरी बाँधिकै, तामें गरम कराइ ॥ ३ ॥
दोइ घरी ला ताहिको, दीजै खूब सेंकाइ ।
ताको लेप बनाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
बरगदपाता गरम करि, तापै देउ बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, हयकी पीर नशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—सेंहुड पहुँचा आनिकै, तिहिको लेउ पकाइ ।
ताकी गूदी काढिकै, हरदी देउ मिलाइ ॥
सोरठा—वरम जहांपर होय, बारह दिन बाँधे तहाँ ।
नितप्रति औषध सोय, बाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा—यलुआ चून अफीमको, तोला तोला आनि ।
लाल मिठाई तज सहित, दुइ दुइ तोला जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्ठ कबूतरको सहित, मैदा लकरी सोइ ।
दोनों तोले आठ भरि, गेरू तोले दोइ ॥ २ ॥
औषध पैसा दोइ भरि, नरके मूत पकाइ ।
हयके ऊपर ताहिको, दीजै आनि लगाइ ॥ ३ ॥
ढांक पात फिरि जोस करि, तापर देउ बँधाइ ।
बाँधा राखे तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥ ४ ॥
तीनि दफा यहि विधि करै, पै नीको ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मत जानियो, श्रीधर वरणो आय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—कत्था नरके मूतमें, लीजै गरम कराइ ।
पैके ऊपर ताहिको, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥
मूत्र ताहि पर डारिकै, ताहि भिजावति जाइ ।
औषध चौदह दिन करै, मोच ताहि मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—तिल अरु साबुन मोलिकै, सज्जी ताहि मिलाइ ।
जलमें सबको पीसिक, लीजै गरम कराइ ॥ १ ॥
लेप कीजिये सात दिन, ऊपर बरगद पात ।
सोतौ बाँधे गरम करि, तुरी नीक ह्वै जात ॥ २ ॥

बहुत दिनकी पै हो ताकी दवा ।

दोहा—सबै औषधी करि चुकै, पैको घाउ न जाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, ताको करै उपाइ ॥ १ ॥
पावसेर हालिम विषे, जवपिसान मँगवाइ ।
रोटी तासु बनाइये, एक तरफ पकवाइ ॥ २ ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नास पाल सज्जी सहित, आँबाहर्दी आनि ।
बहुरि सोहागा लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ।
पुनि जमालगोटा बहुरि, गूदी तासु कढाइ ।
छा मासे सो तौलिकै, दीजै ताहि मिलाइ ॥ ४ ॥
सबको पीसै एकमो, अति बारीख कराइ ।
रोटी काचीकी तरफ, दीजै ताहि लगाइ ॥ ५ ॥
बाँधे पै ऊपर यही, कपरासों यह जानि ।
तीनिरोजके बाद फिरि, खोलै ताको आनि ॥ ६ ॥
सोरठा—पाकि खूब जब जाइ, फिरि याही विधिसों करै ।
शालहोत्र मत पाइ, कीजै औषध ताहिकी ॥
दोहा—धोवै ताहि पेशाबसों, खूब पाकि जब जाइ ।
यह औषध मँगवाइकै, ता पर देहु लगाइ ॥

दवा ।

सोरठा—हर्दी सिंहजराउ, माई ओरो फिटकरी ।
दुइ दुइ तोले लाउ, सबको पीसि मिलाइये ।
दोहा—रोज लगावै ताहिको, जौलौं सूखि न जाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य पुरानी पैकी दवा ।

दोहा—बहुत दिननकी होइ पै, जखम ताहि परिजाइ ।
निकसत जाते पीबु है, ताको कहौं उपाइ ॥
सोरठा—सज्जी लेउ मँगाइ, बहुरि सोहागा लीजिये ।
और निसोदर लाइ, भाग बरोबरि सबनको ॥ १ ॥
जलमें लेउ पिसाइ, ताहि लगावो जखम पर ।
नींबपात उसवाइ, ताके ऊपर बाँधिये ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खूब साफ ह्वै जाय, नींब लगावो ताहिपर।
मलहम देउ लगाइ, जखम सूखि तब जात है॥ ३॥

अन्य लेप सर्व चोटका।

दोहा—लेउ कटैयाके फलन, मोथा ताहि मिलाइ।
यवके आटा संगमो, लीजै ताहि पिसाइ॥
सोरठा—लेउ तासु पकवाइ, ताहि लगावै वाजिके।
तुरी नीक ह्वै जाइ, लेप कीजिये याहि विधि॥
दोहा—जाके आगिले धर विषे, चोट कहूँपर होई।
मदऊते अरु पग विषे, लेप लगावै सोइ॥
हयको बाँधै धूपमें, लीजै लेप सुखाय।
या विधि कीजै पाँच दिन, टहलावत नित जाय॥

अन्य मोजा व गांठिमो चोट होइ तिसकी विधि।

सोरठा—थोरे तिल पिसवाइ, बकरा चरबी माहिंमों।
लीजै ताहि पकाइ, खूब सुरुख ह्वै जाइ जब॥ १॥
दोहा—गाढे कपरा माहिमों, दीजै ताहि लगाइ।
सो वाजाकी गांठिमें, दीजै आनि बँधाइ॥ १॥
सुतरीसों मजबूतकै, ताहि बँधावै आनि।
नितप्राति यह औषध करै, सात रोज लग जानि॥ २॥

अन्य पाखोरा परकी लंग।

दोहा—रंडतैल लै पाउ भरि, खूब निखालिस होइ।
सेर एक तिल तैल पुनि, ताहि मिलावै सोइ॥ १॥
ताहि कराही माहिं करि, दीजै अग्नि चढाइ।
बीज हुरहुराके सहित, मालकाँगनी लाइ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाव सेर लै दुहुँनको, जलसों लेउ पिसाइ ।
तेल माहिं सो डारिकै, दीजै ताहि पचाइ ॥ ३ ॥
आँबाहरदी लेउ पुनि, गेरू सैंधव आनि ।
लीजै खरी अफीम अरु, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ४ ॥
इनको जलमें पीसिकै, देउ तेलमो डारि ।
आँच खाइ थोरी जबै, लीजै ताहि उतारि ॥ ५ ॥
सोरठा—जब ठंढो ह्वै जाइ, फेरि चढावै अग्निपर ।
लीजै खूब पकाइ, धरि राखै तब ताहिको ॥ १ ॥
लंग जहाँपर होइ, तहाँ लगावै ताहिको ।
कंडा आगी लाइ, नितप्रति सेंकै वह जगह ॥ २ ॥
दोहा—नव दिन कीजै याहि विधि, वरम तहाँ ह्वै जात ।
बाँबी माटी गरम करि, तहाँ लगावै तात ॥ १ ॥
फिरि टहलावै वाजिको, लंग तहाँ मिटि जाहि ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर वरणो याहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बकरा गुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
मरे वरदको हाड लै, लीजै, गूद कढाइ ॥ १ ॥
आँबा हर्दी येलुआ, गरीं लेउ पुरानि ।
चँदसुर लोधु मँगाइकै, छा छा तोले जानि ॥ २ ॥
चौबिस तोले तिल बहुरि, सबको पीसि मिलाइ ।
पोटरी कीजै तासुकी, दुइ मजबूत बनाइ ॥ ३ ॥
नित पोटरिनते सेंकिये, चोट जहाँ पर होइ ।
तीनि रोज या विधि करै, चर्बी रोज मिलाइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेंकि चुकै जब तीनि दिन, ताको लेप बनाइ ।
लंग होइ जिहि अंगमो, दीजै तहाँ लगाइ ॥ ५ ॥

अथ अन्यमत सरदी गर्मीते भरि जाइ देह ऐंठै
भूँख न लगै तिसका उपचार ।

चौ०—लहसुन काराजीरी लीजै । मिरचा अरुण भागसम कीजै ॥
दुइ तोला भरि गोली करै । सात रोज घोडे मुख धरै ॥
तीनि दिवस फिरि ताहि न दीजै । इकइस दिन याहि क्रमते कीजै ॥

अन्य भरिवेकी व बतास चोटकी दवा ।

दोहा—आपामार्ग बकायना, मुंडीपत्र कचूर ।
अमरलता सम लै भरै, घटमें जल करि पूर ॥ १ ॥
औटि तासु जल अँग तुरै, मलै खूब करि जान ।
सरदी गरमी श्रम भरो, मिटै तुरतही मान ॥ २ ॥

दोहा—लहसुन हरदी हैसि तुच, मेथी सोवा कूटि ।
अरु भँगरैला मेलि दे, हरत वात सब खूटि ॥

अथ झिटका, चोट, मोच, गुखुरू डोलै, कूल उतरैकी दवा ।

चौ०—झिटका चोट मोच जिहि लागै । वाकी दवा करौ दुख भागै
षोडश मुर्गी अंड मँगावै । तोला एक अफीम मिलावै ॥
आध सेर सूकर वस लीजै । सर्षप तैल आध सेर कीजै ॥
आध पाव लै आँबाहरदी । पीसि महीन करौ बहु गरदी ॥
गेरू एक छटांक पिसावै । सकल मिलाय घेपि धरवावै ॥
मालिस खूब करै बहु रगरै । कंडा भेंड सेंक फिरि करै ॥
साँझ भोर दुहुँ बेर लगावै । सूजै चोट नीक तिहि भावै ॥
पंद्रह दिन याही विधि करै । तनुकी चोट सकल विधि हरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई–कामूनी अरु गेरू लावै । तोले पाँच पाँच तौलावै ॥
तोला एक अफीमै लीजै । सर्षपतेल आध सेर कीजै ॥
कपरछान सब दवा करावै । तेल मिलाइ ताहि धरवावै ॥
घामें बाँधिकै मालिस करै । अश्वरोग सगरे परिहरै ॥

अन्य ।

चौपाई–रेंडी गूदी सोंठि मँगावै । साँभारि नमक और लै आवै ॥
टका टका भरि सब तौलावै । भैंसी दही सेर इक लावै ॥
पीसिं दवा सब दही मिलावै । दश दिन घूरेमें गडवावै ॥
फिरि घूरेते लेइ निकारी । मालिस करै अश्व रुजहारी ॥

अन्य बफारा ।

चौ०–नींब सँभारू अँबिली लावै । सन साहिंजन सब पात मँगावै
बिरवा भटकटाइको लावै । कोदौं केर पयार मँगावै ॥
छालि सहोरेकी मँगवावै । बांबी दिमक कि माटी लावै ॥
रेहू खारी नमक मँगावै ॥ तैलयंत्रकी माटी लावै ॥
पाव पाव सब ले तौलाई । हांडीमें फिरि ताहि भराई ॥
पानी भरि मोहरा मुँदवावै । अग्नि चढाइ ताहि पकवावै ॥
देइ बफारा ताको भाई । वाही जलसे खूब धुवाई ॥
वाही दवा फेरि सब बांधै । आठ रोज याही विधि साधै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतपादरोगचिकित्सावर्णनो नाम
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ प्रमेहरोग लक्षण व दवा।

दोहा—बाजी जो दुर्बल रहै, जिहि नित होय प्रमेह।
मन्मथ झर ताको कहैं, याके लक्षण येह ॥ १ ॥
लाख टका भरि आनिये, टका चारि भरि रार।
पाँच सेर गोदूधमें, प्राते देय अहार ॥ २ ॥

अन्य मत।

चौपाई—जो नित धातु गिरै हयकेरे। जलदी दवा कहौं मैं टेरे ॥
नागबोलिकी जो जर लावै। कदलीजर सम भाग करावै ॥
तवाशीर सुरमा औ चीनी। बेनवरगूदी सम करि लेनी ॥
गऊक्षीर दुइ सेर मँगाई। सातदिना सो देउ खवाई ॥
नाशै रोग पुष्ट तनु होई। औषधि करै जो या विधि कोई ॥

अन्य।

दोहा—त्रिफला दीजै खाँडसों, सात दिवस उठि प्रात।
धातु दोष नाशै सकल, नकुलग्रंथकी बात ॥

अन्य।

दोहा—राई शक्कर सेर भरि, दूनों देउ खवाइ।
धातु बंद हो जात है, जो यह करै उपाइ ॥

अन्य।

दोहा—मूरीबीज अनारके, टका एक भरि लेय।
आठ रोज लग दीजिये, धातु बंद करि देय ॥

अन्य।

दोहा—दिउल चनाके टंक दश, गुलरी दूध भिगोय।
प्रात अश्वको दीजिये, धातुबंद सो होय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ रक्तप्रमेह लक्षण व दवा ।

दोहा–रक्त चलै पेशाब सँग, रोग कठिन है ताहि ।
रक्तप्रमेह बखानिये, दवा न देर कराहि ॥ १ ॥
गऊ दूध दुइ सेर लै, सुरवौली जर आनि ॥
तीनि टका भरि दीजिये, रोग हरै तिहि जानि ॥ २ ॥

अथ मन रहिबेको लक्षण व दवा ।

चौ०–निशि वासर अरु आठौ यामा।हयकी प्रीति तुरीके कामा॥
दोहा–मन्मथ जाग्यो प्रीतिते, अश्वाके उर आय ॥
निशि वासर आठौ पहर, घोडीसों मन लाय ॥
चौपाई–समुदफेन औ पिपरी आनै । दशै टंक दूनौ परमानै ॥
हींग टका भरि तामें सानौ । तीनों औषध पीसि बखानौ ॥
टंक पाँच शक्कर सो लीजै । सकल सानि गोघृतमें दीजै ॥
घोडे सात दिवस दै प्राता । मन्मथ तुरत रहै तिहि गाता ॥

अथ मूत्रकृच्छ्ररक्तप्रमेहकी दवा ।

दोहा–सोंचर हरदी पीपरै, इंद्रायणफल लेउ ॥
मूत्रकृच्छ्र हयको हरै, पिंड परम विधि देउ ॥

अन्य ।

सोरठा–सैंधव युत जंभीर, पिंड मिलायक दीजिये ॥
मूतै रक्त अधीर, होत दिये है परम सुख ॥

अथ मूत्रप्रमेह बार बार मूतै ।

चौपाई–मूत्र अधिक घोडाके गिरै । ताकी औषध या विधि करै॥
करुआ तोंबी टका चारि भरि । हींग अधेला एक ताहि घरि ॥
गौके दूधहिं संग मिलाई । धारा मूत्र बंद ह्वै जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—साँभरि गुड तोला बसुदीजे । अधिकमूत्रपर साधन कीजे ॥
गेरह दिन सो देय खवाई । रोग नीक होई सुख पाई ॥

अन्य ।

चौ०—पोस्ता साँभरि बबुराकि पाती । दुइदुइटंक लेउ यहि भाँती ॥
यवकें आटा प्रात खवाई । मूत्रधारको बंद कराई ॥
पैसा भरि दतूनिको तेला । गदहपुरन वाकी जर मेला ॥
दुइ पैसा भरि दीजे प्राता । मूत्रबंद ह्वै औषध खाता ॥

अथ घोडा बहुत मूतै तिसकी दवा ।

दोहा—मेथी अरु सोवाहि लै, आध पाव परमान ।
दाना साथ खिलाइये, मूतै कम यह जान ॥

अन्य लोहू मूतै तिसकी दवा ।

दोहा—लोहू मूतै जो तुरंग, ताकी यह पहिचान ।
पतरा गरमी सो लखै, गाढ जु बादी जान ॥ १ ॥
पाँच दिवस ताकी दवा, करै न जिय घबराय ।
छठयें दिन यह जतन करु, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ २ ॥
शक्कर भूर जु दोइ भरि, मैदा दुगुन मिलाय ।
जलमें घोरि पिआइये, तुरत तुरै सुख पाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जो गाढा हय खून लखु, तोला मिरच मँगाय ।
ता आधी मिश्री मिलै, आटा सानि खवाय ॥ १ ॥
याको दै जल दीजिये, जबलौं नीक न होय ।
नित ही नित हय सुख लहै, करै जतन जो कोय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा--जमुनी छाली सेर यक, वतनै गूलरि छालि ।
काढा करि दानाहि सँग, आध पाव मित घालि ॥ १ ॥
तीनि दिवस याहि रीतिसों, दीजै जतन बनाय ।
युद्धधीर भाष्यो प्रमित, रक्त मूत्र नाशि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—जेठीमधुजव चोकरा, असगँध अरु अँवराहि ।
पीसि पिआवै नीरसों, रुधिर मूत्र नाशि जाहि ॥

अन्य बहुत मूतै तिसकी दवा ।

दोहा—घोडा जो मूतै बहुत, ताको यही उपाय ।
पूस माघके मासमें, तिल गुड देइ खवाय ॥

अन्य मत रक्तमूतैकी दवा ।

दोहा—लेउ पिसानु सिंघारको, आध पाव यह जानि ।
शक्कर लीजै पाव भरि, दोनों लीजै सानि ॥ १ ॥
सैंधव तोला एक भरि, दोऊ लेउ मिलाइ ।
ताहि खवावै वाजिको, दीजै नीर पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—जो गर्मीते वाजिको, मूत्र रक्तको होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
लेउ कतीरा एक पल, शक्कर दूनि मिलाइ ।
सो घोडेको दीजिये, रक्तमूत्र नाशि जाइ ॥ २ ॥

अन्य गर्मी व बादीकी पहिंचान ।

दोहा—कोखी मारै हटि रहै, अरु कोखी चढि जाय ।
बादी ताको जानिये, शालहोत्र मत आय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खून जासु पेशाबमें, स्याही लीन्हें होय ।
अरु कछु गाढा सो गिरै, केवल गर्मी होय ॥ २ ॥
विलखो खून पेशाबसों, अरु लक्षासों होइ ।
जानो वात विकार सो, और बताना जोइ ॥ ३ ॥
बूँद न होइ पेशाब जो, अतिहि दरद तिहि होय ।
करत पेशाबहि विकल ह्वै, पथरी जानो सोइ ॥ ४ ॥

दवा ।

दोहा—सुरवारी मूरी बहुरि, दोनों बीज मँगाइ ।
दोनों तोले चारि भरि, जलमें लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दिन यकइसलौं ताहिको, रोज पिआवत जाइ ।
पथरी हयकी गिरिपरै, जो यह करै उपाइ ॥ २ ॥

अन्य मत खूनमूतैकी दवा ।

दोहा—जाहि करे जेहि माहिमो, पहुँचत गरमी आइ ।
मूतत वाजी खून जो, शालहोत्र कहि ताइ ॥ १ ॥
औंरा तोले चारि लै, जलमें लेउ भिजाइ ।
चारि टका भरि लीजिये, भूँजे जव पिसवाइ ॥ २ ॥
औंरा लीजै जल सहित, आटा माहिं सनाइ ।
हयको देउ नहार मुख, रोग सबै बहि जाइ ॥ ३ ॥
गर्मीके माहिना विषे, यहि औषधको देइ ।
औषध दीजै सात दिन, रोग वाजि हरि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—सोरह मासे फिटकरी, जलसों देउ पिआइ ।
औषध कीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

सोरठा—गँदापात मँगाइ, जानौ तोले चारि भारि ।
शीतलचीनी लाइ, तोला भारि मौताज करि ॥
दोहा—पत्थर सिंहजराउको, तोला डेढ मँगाइ ।
सोरा मासे षट सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥
सोरठा—औषध देउ खवाइ, पाछे पानी दीजिये ।
रोग नाश ह्वै जाय, सात रोजके मध्यमें ॥

अन्य ।

दोहा—स्याह मिर्च मँगवाइये, षट तोला भारि जानि ।
पीसि सिंघारे लीजिये, पाव एक यह मानि ॥ १ ॥
दुइ दुइ तोले लीजिये, सौंफ करारिको डारि ।
सोंचरु तोले एक भरि, मिश्री तोले चारि ॥ २ ॥
सबको पीसि मिलाइये, जवके आटा माहि ।
हयको दीजे सात दिन, रोग नाश ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ सलसल बोलिया रोगकी दवा व लक्षण ।

दोहा—खुलिकै होइ पेशाब नाहिं, अरु बूँदनते होइ ।
मानौ सलसल बोलिया, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
अंडा लीजै मुर्गको, छिलका ताहि छिलाइ ।
पैसा भरि तादाद करि, घीमें लेउ भुँजाइ ॥ २ ॥
दाना पीछे साँझको, दीजै ताहि खवाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जवापिसान लै सेरु भरि, अजयामूत मिलाइ ।
ताहि भिजावो एक दिन, लीजै छाँह सुखाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूध मदार मँगाइकै, दीजै तामें डारि ।
फिरि सुखवावै छाँहमें, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
ता सम तामें स्याह तिल, तिन्हैं मिलावै आनि ।
कूटै अति बारीख करि, शालहोत्र मत जानि ॥ ३ ॥
नितप्रति दीजै वाजिको, दोइ टका भरि ताहि ।
औषध दीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

चौपाई—तोले चारि चिन्हारू लावै । दुइ मासे गंधी मिलवावै ॥
यह औषध ले हयको दीजै । सात दिवस महँ नीको लीजै ॥

अन्य ।

दोहा—तोला भरि ले मोचरस, सात दिवस लगु जानि ।
आध शेर शक्कर सहित, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
देखि बताना तासुको, औ मौसम पहिचानि ।
जौन मुनासिब औषधी, हयको दीजै आनि ॥

अन्य ।

दोहा—टका चारि भरि लीजिये, त्रिफला ताहि कुटाय ।
सेर एक शक्कर सहित, हयको देउ खवाय ॥

अथ जरिआन रोग ।

दोहा—मनी मूत्रके सँग गिरै, कर्क तासुके होइ ।
होत दूबरो जाइ अरु, जरिआनो है सोइ ॥ १ ॥
भूँजो आटा मोटको, और चनेको जानि ।
पाव पाव पक्के दुऔ, तिनको लीजै छानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गूदी कदुवा बीजकी, पक्के पाव मँगाइ ।
गोंद बबूराहि तज सहित, बीजबंद अरु लाइ ॥ ३ ॥
केलाकी जर लेउ पुनि, इनको भाग समान ।
चारि चारि तोले करो, इनको जानु प्रमान ॥ ४ ॥
आध सेर शक्कर कही, पक्की तोल प्रमानि ।
पाँच सेर गोदूध ले, तौल सुपक्की जानि ॥ ५ ॥
खोवा करिकै दूधको, लीजै ताहि भुँजाइ ।
औषध सब शक्कर सहित, तामें देउ मिलाइ ॥ ६ ॥
दीजै हयको आठ पल, प्रात साँझको आनि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा—केलाकी जर एक पल, मौसम गर्मी माहि ।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥

अन्य ।

दोहा—रार लीजिये सेरु भरि, ता सम खाँड मिलाइ ॥
हयको दीजै सात दिन, बीज बंद ह्वै जाइ ॥

अथ सुजाखरोग लक्षण व दवा ।

दोहा—लिंग अगारी अश्वके, तहँ सुरखी कछु होइ ।
तुरी करै पेशाब जब, जरनि दरद तब होइ ॥ १ ॥
करै पेशाब रसेरसे, सूखत वाजी जाइ ।
ऐसे लक्षण जब मिलैं, तब प्रमेह दरशाइ ॥ २ ॥
चौपाई—खीरा ककरी बीज मँगावै । गुखुरू और ताहि मिलवावै ॥
बहुरि कतीरा लेउ मँगाई । दश तोले सबको तौलाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—औषध तोले दश सबै, भाग समाने तासु।
हयको देउ नहार मुख, होइ रोगको नासु ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, श्रीधर कहो बखानि।
अथवा दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अथ बंदपेशाबकी दवा।

दोहा—सोरा कलमी लीजिये, टका तीनि भरि जानि।
गोदधिमें करि दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य।

दोहा—माठाके जलमाहिमें, लेउ कपूर मिलाइ।
कपराकी बाती करै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
सोई बाती लिंगके, छेद माहिं धरि देइ।
होय मूत्र तिहि अश्वको, रोग सकल हरि लेइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—पाकी अँबिली पाउ भरि, जलमें लेइ मिलाइ।
कपरामें सो छानिके, हयको देउ पिआइ ॥

अन्य।

दोहा—हयको लै ठाढो करै, धाम गडरिया माहि।
सूंघे ताकी भूमिको, मूत्र तुरत खुलि जाहि ॥

अन्य।

दोहा—साबुन मिरचे स्याह लै, विष्ठ गरगवा आनि।
लै बाती ऊपर धरै, कूपोदकसों सानि ॥ १ ॥
छिद्र पेशाबहि माहिमें, बाती देइ धराइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरत मूत्र खुलि जाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई—ककरी खीरा बीज मँगावै । पीसि नीरमें ताहि पिआवै ॥
धाम गडरियाके ले जाई । सूँघत मूत्र वाइ खुलि जाई ॥

अन्य ।

चौपाई—मिर्च दाक्षिणी साबुन लोनू । गरगौआकी विष्ठा तौनू ॥
बाती भिजे नरामें कीजे । छूटै मूत्र रोग हरि लीजे ॥

अन्य ।

चौपाई—पिपरी सोंठि दुवौ पिसवावै । लिंगमध्य बाती चलवावै ॥
छूटै मूत्रधार आधिकारा । मेटै वाको सकल विकारा ॥

अन्य ।

चौपाई—मिर्च कपूर साबुनै आनी । खरिल करौ पानीमें सानी ॥
बाती करौ लिंगमें कोई । बहुत पेशाब करै हय सोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अश्वमूत्राधिकारवर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ घाव लागैकी दवा ।

दोहा—कुचिला और भेलावको, लहसुन सेंदुर धूप ।
एकै एक छटाँक ले, मिर्चा अरुणैरूप ॥ १ ॥
लेउ तूतिआ पीसिकै, दुइ तोला परमान ।
तेल लीजिये सेर यक, मलहम करौ विधान ॥ २ ॥

चौपाई—तेल कराही तप्त करावै । नींबपात रस पाव मिलावै ॥
कुचिला लहसुन मिर्च भेलावा । डारु समूचै तेल बनावा ॥
पाकि जावै वह देखो जबै । पीसि दवा मिलवावै सबै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसै दवा तेलमें जली । ताहि कराहीमें तब खली ॥
या मलहमको नित्त लगावे । सूखै घाव नीक हो जावे ॥

अन्य दवा खानेकी ।

दोहा–जवाखार सैंधव जु मधु, बायविडंग मिलाय ।
दुकरा दुकरा भरि सबै, पीसि दिये सुख पाय ॥

अथ घाव धोवेकी विधि ।

दोहा–जो धोवा छतको चहै, तौ दल नींब मँगाय ।
सो जलमें परिपक्व करि, धोय यही सो जाय ॥ १ ॥
की धोवै गोमूत्रसों, कृमि न तहाँ परि जाँय ।
जो कदापि कृमि देखिये, तौ करि यही उपाय ॥ २ ॥

अथ कारानाशन दवा ।

दोहा–सुरती और मुलीमको, कूटि लीजिये छानि ।
भारि माटी सो लेपि दे, मारि झरि हैं कीरानि ॥

अथ घावते लोहू बंद न होय तिसकी दवा ।

दोहा–मकरीको जारा तहाँ, बाँधि देइ मतिमान ।
की कंचनरिपु बूँकि तहँ, डारि रुधिर रुकि जान ॥
चौपाई–लै आवै दंबुल अखवेना । कुंदुर संग जराय तलैना ॥
लै रूमी मस्तगी मिलावै । सकल दवा समभाग पिसावै ॥
छतके ऊपर देउ लगाई । शोणित बंद होइ सो भाई ॥

अन्य घाव सूखैकी दवा ।

दोहा–जो जलदीमें घावको, चहै सुखाय प्रवीन ।
तौ गदहाकी लीदिको, सुखै पिसाय महीन ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाय दीजिये घावपर, जैहै सूखि तुरंत ।
की पुरान जूताहिको, पीसि भरै गुणवंत ॥ २ ॥
की सबजीको पीसि भरि, देहै यहौ सुखाय ।
की पसुरी लै ऊँटकी, भरिये ताहि जलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—लेउ फिटकरी खील कारि, और सुफेदा मानि ।
लीजै सिंघजराव पुनि, तीनोंको सम जानि ॥ १ ॥
सबको सूखो पीसिकै, दीजै आनि लगाइ ।
भरि आयो जो साफ है, जखम सूखि सो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—वस्त्र पुरानो स्याह जो, ताको देउ जराइ ।
ताहि लगावे घावपर, जलदी जखम सुखाय ॥

अथ जखममें मांस बढि आवै तिसकी दवा ।

दोहा—एलुवा लेउ निसोदरहि, षटमासे मँगवाइ ।
सेंदुर मासे पाँच भरि, तीनों लेउ पिसाइ ॥
सोरठा—ताको लेउ मँगाइ, मांस बाढिगयो होइ जहँ ।
वीरा एक पिसाइ, तापर दीजै बाँधि सो ॥
दोहा—सीपचून सज्जी सहित, नीलाथोथा आनि ।
पुनि हर्दीकी राख लै, चारोंको सम जानि ॥ १ ॥
सूखो याको पीसिकै, दीजै जहां लगाय ।
मांस फटत मुरदा रहै, जखम अधिक परिजाइ ॥

अन्य मलहम ।

दोहा—तिलका तेल छटांक भरि, डारि कराही माहि ।
लेउ बिरोजा दोइ पल, डारि तेलमें ताहि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तप्त कीजिये अग्निपर, देउ विरोजा जारि ।
काढि विरोजा डारिये, लीजै तेल उतारि ॥ २ ॥
एक कर्ष जंगाल लै, ताको लेउ पिसाइ ।
ताते आधा मोम लै, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
फेरि गरम थोरा करहु, राखो ताहि धराइ ।
फीहा तासु बनाइकै, दीजै रोज लगाइ ॥ ४ ॥
कटत माँसु मुरदा रहै, पूरि जखम सो जाइ ।
जखम जौन बिगरो अहै, ताको मलहम आइ ॥ ५ ॥

अन्य महलम वर्मका ।

दोहा—बकरा गुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
सो तोले भारि तौलिकै, मोम तासु सम लाइ ॥ १ ॥
लेउ सफेदा डेढ पल, पुनि सेंदुर पल चारि ।
फूल गुलाबहि फिटकरी, नौ नौ मासे डारि ॥ २ ॥
चंदन लीजै श्वेत पुनि, दुइ तोले मँगवाइ ।
पृथक पृथक सब औषधी, जलमें लेउ पिसाइ ॥ ३ ॥
दोइ सेर तिल तेलमें, चर्बी मोम मिलाइ ।
मंद आँच पर ताहिको, दीजै आनि धराइ ॥ ४ ॥
चर्बी मोम दुओ जबै, तेल माहि मिलि जाइ ।
एक एक करि औषधी, लीजै सबै पचाइ ॥ ५ ॥
स्याही पकरै तेल जब, लीजै तबै उतारि ।
ताहि लगावै वर्मपर, सात रोज लगु टारि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—जा वाजीकी जानुमें, वर्म होइ जो आइ ।
बकला छोलि पिआजको, तापर देउ बँधाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य बर्मकी दवा ।

दोहा—आँबाहर्दी तिल सहित, तोला आठ बखानि ।
अजवाइनि मेथी सहित, मैदालकरी जानि ॥
सोरठा—तज अरु साबुन लाइ, तीनि तीनि मासे सबै ।
सबको लेउ पिसाइ, तोला भरि तिल तैल लै ॥
दोहा—सबै औषधी तेलमो, हेलुवा लेउ पकाइ ।
याही औषधते बरम, बहुत बार सेंकवाइ ॥ १ ॥
फिरि थोरा जल डारिकै, हेलुआ लेउ पकाइ ।
लेप कीजिये बरम पर, तुरत नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ तंगते छातीमें जखम होइ तिसकी दवा ।

दोहा—जाकी हड्डी कटि गई, लीलबरी सो लाइ ।
छाती जाकी अति कटी, मलहम देउ लगाइ ॥ १ ॥
थैली कपराकी सियै, अजया चरबी लाइ ।
थैली तामें बोरिकै, तंग माहिं पहिराइ ॥ २ ॥
जीन कसै ता तंगते, कवि श्रीधर यह जानि ।
छाती पोढी परत है, फेरि कटाति नहिं आनि ॥ ३ ॥

अथ पीठि फूलैकी दवा ।

दोहा—जो सूजनि हय पीठि लखि, चिकनी माटी आनि ।
सानि ताहि वापर धरै, मिटि है सूजि प्रमान ॥

अन्य ।

दोहा—इसबगोलको पीसिकै, तापर देइ लगाय ।
याहूसों मिटि जायगो, पीठिसोथ सुख पाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

दोहा—की साबुन पानी गरम, धोय ताहिसों देय।
याहूसों मिटि जात है, पीठिसूज सुख लेय॥

अन्य।

दोहा—की कटु तेल लगायकै, बासी जलसे धोय।
याहूसों मिटि है सुघर, धरै जीन नहिं कोय॥

अन्य।

दोहा—पानी खूब गरम करै, तिहि पट बोरि निचोइ।
यही सेंक जो देउ नृप, पीठि सोथ हरि लेइ॥

अथ पीठि लगैकी दवा।

दोहा—नीलाथोथा फिटकरी, खैर पापरी रार।
करू तेल सम लीजिये, मलहम करु निरधार॥ १॥
काँसे बासन राखिकै, पीठि लगावै कोय।
या विधि औषध कीजिये, घाव नीक सो होय॥ २॥

चौ०—साबुन औ लिलबरी मँगावै। करुये तेल मध्य औटावै॥
पीठीपर लावे जो कोई। घाव नीक सो याते होई॥

अन्य।

दोहा—चून पुराना आठ भरि, पाव एक कटुतेल।
डारि चून जलमें प्रथम, फिरि कटु तेल जु घेल॥ १॥
खूब फेंटि दीजो मिलै, लै उठाइ जल त्यागि।
लकरीमें फीहा बनै, याही विधि तहँ लागि॥ २॥
कई रोज नित बार बहु, लावे छतपर जानु।
माखी तहाँ न बैठि है, सूखे जलदी मानु॥ ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—आधसेर लै तेल तिल, कली चून इन्द्रान ।
पानी पाव प्रमान करि, फेंटि लगाव विधान ॥

अन्यमत मदऊमें रगर लगै या पीठि कटि जाय तिसकी दवा ।

दोहा—रगर लगै मदऊ विषे, कीं थोरा कटि जाइ ।
लीलबरी जल घोरिकै, तामें देउ लगाइ ॥

अन्य ।

सोरठा—नींबपात मँगवाइ, पीसै लोन मिलाइकै ।
रोज लगावत जाइ, साफ होइ जोलौं नहीं ॥

अन्य ।

आँबाहलदी पीसिकै, तापर देउ लगाइ ।
पाँच सात दिन माहिमें, सूखि जखम सब जाइ ॥

अन्य मदऊ फूलिजाय तिसकी दवा ।

दोहा—औषध कीन्हें जासुकी, सूजनि उतरै नाइ ।
माटी लेउ पकाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
पाकि जाइ मदऊ तबै, फूटि फेरि बहि जाइ ।
नीबपात अरु लोनको, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥

सोरठा—पीब साफ ह्वै जाइ, महलम फेरि लगाइयो ।
जखम नीक ह्वै जाइ, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

अन्य पीब लबाब सम निकरै ताकी दवा ।

दोहा—जो दधिको जल डेढ पल, ताको लेउ छनाइ ।
पैसा भारि पुनि चूनको, तामें देउ मिलाय ॥

सोरठा—बाती ऊपर लाइ, सो बाती धारि जखमपर ।
फीहा देउ बनाइ, ता ऊपर सो लाइकै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य मलहम।

दोहा—पाउ एक तिल तेल लै, दीजै आँच चढाइ।
घुँघुँचिल लाउ सफेद पुनि, नरके नहँ मँगवाइ।
सोरठा—जारि तैलके माहिं, रगरै लकरी नींबसों।
एक माहिं मिलि जाहि, तब धरि राखै ताहिको॥
दोहा—फीहा ऊपर ताहिको, रोज लगावत जाइ।
जखम होइ मदऊ विषे, जलदी नीक देखाइ॥ १॥
यह मलहम नासूरमें, जो कोइ देय लगाय।
चंगा होवे अश्व आति, जखम नीक होजाय॥ २॥

मुर्दार मांस दूरि करनेकी दवा।

दोहा—दुइपल लैकै तेल तिल, दीजै आग्नि चढाइ।
मोम बिरोजा दुहुँनको, तोले चारि मँगाइ॥ १॥
तेलमाहिं सो डारिये, पाकि खूब जब जाइ।
तबै उतारै अग्नितें, लीजै ताहि छनाइ॥ २॥
तोला भारि जंगाल लै, दीजै तामें डारि।
थोरा ताहि पकाइकै, लीजै तुरत उतारि॥ ३॥
जखम ऊपरै ताहिको, फीहा देउ लगाइ।
मांस फटत मुर्दार है, जखम साफ ह्वै जाइ॥ ४॥

अथ जखममें खुश्की आनेकी दवा।

दोहा—रेवतचीनी तज सहित, मैदा लकरी आनि।
और हिरमिजी लीजिये, यक यक तोले जानि॥ १॥
सबको पीसै एकमें, राखै ताहि धराइ।
नीर माहि सो सानिकै, थोरा देइ लगाइ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नासूरकी दवा ।

दोहा—सेर एक तिल तेल लै, दीजै अग्नि चढाइ ।
मालकाँगनी एक पल, तामें देउ जराइ ॥ १ ॥
नींब पात लै एक पल, टिकिया तासु बनाइ ।
तेल माहिं सो जारिकै, डारै तिहि निकराइ ॥ २ ॥
मोम रार इन दुहुँनको, लीजै तोला चारि ।
ताहि मिलाइ पकाइकै, लीजै फेरि उतारि ॥ ३ ॥
सेंदुर मासे चारि सम, नीलाथोथा लाइ ॥
ताहि मिलाइ पकाइये, जब शीतल ह्वै जाइ ॥ ४ ॥
ताहि मलावै जखमपर, अरु नासूरहि माहि ।
भरि आवत नासूर है, जखम नीक ह्वै जाहि ॥ ५ ॥

अथ नासूरकी दवा ।

दोहा—नीलाथोथा मधु खदिर, फेंटि जु बाती भेइ ।
देइ नसूरहि छेदमें, मिटै रोग सुख लेइ ॥

अन्य ।

दोहा—लेउ कमीला अतिखरो, नौ मासे भरि जानि ।
कत्था मासे तीनि भरि, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
नीलाथोथा लेउ पुनि, मासे दोइ मँगाइ ।
विना बुझाये चूनको, यक मासे भरि लाइ ॥ २ ॥
गोघृत तोले तीनि भरि, इन्हैं मिलावै आनि ।
रगरै ताको जोरसों, पहर एक सो जानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मलहम सबतरहको जखम जल्द पूरै ।

दोहा—मोम सफेदा लीजिये, खैर पपारिया लाइ ।
दो दो तोले ये सबै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
गाजर सलगम बीज पुनि, यक यक तोले आनि ।
लीजै मुर्दाशंख पुनि, दश मासे सो जानि ॥ २ ॥
आध पाव तिल तेलमें, दीजे अग्नि चढाइ ।
नींबपात पल एक लै, टिकिया तासु बनाइ ॥ ३ ॥
जारै ताको तेलमें, डारै फेरि निकारि ॥
सबै दवाई पीसिकै, दीजै तामें डारि ॥ ४ ॥
षट मासे सेंदुर बहुरि, तामें देउ मिलाइ ।
रगरै लकरी नींबसों, एक रूप ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
ताहि लगावै वाजिके, जखम जहाँ पर होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जलदी नीको सोइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—कत्था एक छटाँक भरि, दूनी रार मिलाइ ।
आध पाव तिल तेलमें, तीनों देउ डराइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा फिटकरी, दूनों खील कराइ ।
दुइ दुइ मासे तौलिकै, तेऊ लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
फूलकि थारी माहिं करि, कवि श्रीधर यह जानि ।
धोवै ताको बार शत, एक बार अस जानि ॥ ३ ॥
फीहा ऊपर ताहिको, दीजै खूब लगाइ ।
पीब छुटति है जखमते, पूरि जल्द सो जाइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ जखमपर बार जामैकी दवा ।

दोहा—बार जमायो घाव पर, चहै सु तेल मँगाय ।
कइउ बार थुकसों घसै, दीजै तहाँ लगाइ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतअश्वघाववर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सीनाबंदके लक्षण ।

दोहा—हयते मेहनति लीजिये, अरु ठाढो करि देय ।
तांते सीना भरत है, जानि विचक्षण लेइ ॥

गर्मीके दिननकी दवा ।

दोहा—खील सोहागा फिटकरी, रेवतचीनी पाइ ।
गूगुरयुत सब औषधी, सोरह तोले लाइ ॥ १ ॥
सज्जीसाबुन लीजिये, तोले दश मँगवाइ ।
दो तोले हलदी सबै, पीसै गुडहि मिलाइ ॥ २ ॥
पींडा बाँधे ताहिके, वजन छटाँक सुजानि ।
हयको दीजै एक नित, प्रातकाल सो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—छा मासे ले फिटकरी, लावा लेइ कराय ।
पीसि मिलावै नीरमें, वाही रोज पिआय ॥

अन्य ।

दोहा—तेलीके कोल्हू विषे, बरद फिरत जहँ आनि ।
माटी लीजै ताहिका, अरु बाँबीकी जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भैंसाके गोबर सहित, रेहू माटी आनि ।
भेडीकी लेंडी बहुरि, अरु सेंहुँडको जानि ॥ २ ॥
भटकटाइ औरो कही, पाव पाव सब आनि ।
लीजे सज्जी लोनको, आध पाव सो मानि ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिये, यक बर्त्तनमें लाइ ।
अरु पानीको डारिकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लीजै ताहि उतारि फिरि, जब गुनगुन रहि जाइ ।
ठाढ कीजिये अश्वको, धूप माहिं बँधवाइ ॥ ५ ॥
काँधेते सीना तलक, छोप करै तिहि लाइ ।
एक रोजमें छा दफे, लेप किये रुज जाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौपाई—तोला एक मुसब्बर लीजै । तासम और कैफरा कीजै ॥
अंडा मुरगीको यक लावै । झिकवारीको अर्क कढावै ॥

दोहा—नरके लीजै केश अरु, एक हजामति जानि ।
सबै औषधी कूटिकै, लेउ एकमो सानि ॥ १ ॥
एक अहै मौताज यह, हयको देउ खवाइ ।
पानी दीजै गर्म करि, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥
तीनि रोज यह दवा करि, दाना आधा देइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य गर्मीके दिनकी दवा ।

दोहा—गुड पुरान हरदी सहित, सेर एक मँगवाइ ।
साँभरि लीजै पाव भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोडी लीजै पोस्तकी, आध पाव यह जानि ।
गूगुर तोले दोइ भरि, लीजै गुडमें सानि ॥ २ ॥
याकी गोली आठ करि, प्रातहि एक खवाइ ।
फिरि टहलावै अश्वको, आइ पसीना जाइ ॥ ३ ॥
हत्थीते छाती मलै, सूखि पसीना ताहि ।
या विधि कीजै आठ दिन, छाती तब खुलि जाहि ॥४॥
दाना ताहि न दीजिये, सो जानौ मन माहिं ।
शालहोत्र मुनिके मते, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—हरदी तोले चारि लै, महुआ छालि मँगाइ ।
हरदीके सम छालि करि, दोऊ लेउ कुटाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै एक फिरि, हयको देउ खवाइ ।
या विधि कीजै तीनि दिन, सीना तो खुलि जाइ ॥२ ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जी लीजै सोंठि पुनि, मैदालकरी आनि ।
तोला तोला लीजिये, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
हालिम तोले पाँच लै, सबको लेउ कुटाइ ।
नरके मूत्रहि माहिंमों, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
लेप कीजिये ताहिको, हयकी छाती माहि ।
बाँधै घामें ताहिको, छाती तब खुलि जाहि ॥

अन्य ।

दोहा—खील सोहागा फिटकरी, मूसब्बरको लाइ ।
दुइ दुइ तोले औषधी, लेउ सबै पिसवाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्यारह तोले गुड सहित, गोली एक कराइ।
हयको साँझी बेरमें, दीजै ताहि खवाइ ॥ २ ॥

चौपाई—दाना ताको नाहिं खवावै। राति दिवस कैजा करवावै॥
भोर भये कैजा उतराई। चना सेरु भारि देइ खवाई ॥
फेरि गर्दनी ताहि बढावै। होइ सवार खूब फिरिवावै ॥
खूब पसीना ताको आवै। छातीमा कमरी बँधवावै ॥
रसे रसे ताको टहलाई। सूखि पसीना जब सब जाई ॥
तबै थानपर बाँधौ भाई। हत्थीते छाती मलवाई ॥
एक रोजमें नीक न होई। तौ दुसरे दिन कीजै सोई ॥

अन्य।

दोहा—लीजै गूगुर टका भारि, गोमूत्रहिमें सानि।
तप्त कीजिये अग्नि पर, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
या विधि कीजै सात दिन, अंग सकल खुलि जाहि।
शालहोत्र मत जानि करि, श्रीधर कहो सराहि ॥ २ ॥

अन्य मत।

दोहा—शिरदै हाथ हटावई, हटै तुरत नहिं बंद।
जोर कियेते नहिं हटै, कहिये छाती बंद ॥

चौ०—ताकी तुरत दवा करवावै। नीक होय छाती खुलि जावै॥
देर भयेते नीक न होई। कितनौ दवा करौ बुध कोई ॥
गूगुर लेव छटाँक मँगाई। हरदी पाव एक पिसवाई ॥
पिपरामूल भरंगी पीपरि। डेढ पाव तीनों लै सम करि ॥
लेउ मैनफल षट कारि गंती। रनकी छाली औ लै पत्ती ॥
मुंडी लेउ समूल मँगाई। कूटि छानि एकत्र कराई ॥
एक छटाँक वजन तिहि कीजै। साँझ सकारे घोडे दीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०–बैंगन मिलै देउ दानाको । पानी गरम पिलावो नितको ॥

अन्य ।

चौपाई–हालिम हरदी साबुन लावै । ढाई ढाई सेर मँगावै ॥
आध सेर ले पिपरामूरी । कूटि छानि मैदा करि धरी ॥
पाँच सेर घृत शक्कर लीजै । यकइस दिन हेलुआ करि दीजै ॥
आध सेर नित देउ खवाई । छातीबंद रोग मिटिजाई ॥
यक दिन प्रथम नीर नहिं दीजै । रोग हरै जो आषध कीजै ॥

अन्य सर्दीगर्मीसे छाती भरि जाइ तिसकी दवा ।

चौ०–पिपरी पिपरामूल रु सोंचर।यकयकतोला तीनि वजन कर
हर्रा पाव एक मँगवावै । पीसि छानि छिरका सनवावै ॥
तीनि रोज घोडेको दीजै । दाना पानी बंद करीजै ॥

अन्य ।

चौ०–कंचनरिपु फिटकरी मँगावै । खील बनाय वजन करवावै॥
कालेश्वर औ बायविडंगा । मेलि अफीम ताहिके संगा ॥
मासे पाँच पाँच करु पाँचौ । हींग एक मासे लै साँचौ ॥
अजवाइनि अजमोद मँगावै । दश दश मासे सो करवावै ॥
साबुन भैंसा गूगुर लीजै । तोला तोला वजन करीजै ॥
तोला तीनि पुरानि मिठाई । पीसि छानि गोली बनवाई ॥
प्रथम दिवस दे शीतल नीरा । फेरि गर्म करि दे मतिधीरा ॥
थानै खुलै न दाना देई । आठरोजमें नीको लेई ॥

अन्य ।

दोहा–की अकडा होवै तुरँग, छातीबंद कि होय ।
वायु धरे होवै किधौं, ताकी औषध जोय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रंडबौर खारी नमक, पाव पाव सब लेइ ।
तीनि दिवस लग दीजिये, जल अरु अशन न देइ ॥ २ ॥
जो गर्मीते बंद लखि, पानी गर्म पिआय ।
चारि घडा जल एक भारि, अजवाइनिहिं चुराय ॥ ३ ॥
की मँगाय जर अर्ककी, एक भवँरमें भूँजि ।
उतनोही गूगुरु मिलै, गुड मिलाइ दे गूँजि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—की अफीम लै एक भारि, जलमें घोरि मिलाय ।
आटा तामें सानिकै, गोला एक बनाय ॥ १ ॥
आँबाहरदी टका भारि, सज्जी उतनी आनि ।
दुओ कूटि उतनोहिं लै, महिषागूगुर सानि ॥ २ ॥
गोलेके माधि राखिकै, गाडि भँवरमें देय ।
पाकि जावे तब काढिकै, षट गोली करि लेय ॥ ३ ॥
सांझ भोर नित दीजिये, युद्धधीर करि नेम ।
खुलि जहै सीना तुरत, रहै सदा तनु क्षेम ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—छाती जाकी बंद है, सरदीते यह जानि ।
यह औषध ताकी करै, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
समुदखारको लीजिये, तोला भारि यह जानि ।
लीजै पपरी खैरकी, ताते चौगुन आनि ॥ २ ॥
ताहीके रस माहिमें, लीजै खरिल कराइ ।
गोली बाँधै ताहिकी, उर्द समान बनाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोली एक खवाइये, प्रातकाल तिहि लाइ ।
चारिघरीके बादसो, देइ नहारी आइ ॥
चौदह दिन यहि विधि करै, अश्व तुरत खुलि जाइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, कीजै यही उपाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—सबै औषधी कारि चुकै, अश्व खुलै जो नाहिं ।
फस्त लीजिये ताहिके, तुरी तुरत खुलि जाहि ॥ १ ॥
याहूते जो ना खुलै, कीजै और उपाय ।
दोनों तरफन आनिकै, दीजै ताहि दगाय ॥ २ ॥

अथ सब देहँ जकारि जाय तिसकी दवा ।

दोहा—एक छुहारे माहिमें, देउ अफीम भराइ ।
कपरौटी तापर करो, लीजै अग्नि भुँजाइ ॥ १ ॥
चारि छुहारे आनिकै, या विधि लेइ बनाइ ।
आधा आधा अश्वको, देत नितै प्रति जाइ ॥ २ ॥
पानी दीजै तप्त कारि, दाना दीजै नाहि ।
या विधि दीजै आठ दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जी साबुन पोस्त लै, हालिम हर्दी लाइ ।
टका टका भरि औषधी, लीजै सबै पिसाइ ॥ १ ॥
पाव सेर गुड ताहिमों, लीजै सबै मिलाइ ।
भूँजै आटा ताहिमों, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
साँझ सबेरे अश्वको, यक यक गोली देइ ।
या विधि कीजै सात दिन, अश्व नीक करि लेइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

दोहा—साँभारि लहसुन लीजिये, टका पचीस मँगाय।
सो दीजै दिन तीसलौं, अंग सकल खुलि जाइ॥

अन्यमत।

दोहा—जो जकडो घोडा तुरत, हनि कोडा दौराय।
खूब पसीना गलित लखि, पट दे खूब उढाय॥ १॥
टहलावै अतिही तुरँग, जावै अरक सुखाय।
बंद मकानहि बाँधिये, कबहूँ पवन न जाय॥ २॥
फिरि कंमरते पोंछिकै, परै न लखि यक रोम।
सेर शराब पिआइये, अरष बढै तन तोम॥ ३॥
लखै फायदा करत नित, उतनीही ले प्याइ।
यह है अजमाइस कियो, जकड पैर खुलि जाइ॥ ४॥
की जलमें पैरावई, ले तुरंग नित जाय।
तबहूँ खुलि जैहै जकड, सो अतिही सुख पाय॥ ५॥

अन्य।

दोहा—की मदारको पात लै, देउ अढाई आनि।
माहि पाती मुख लाइ घृत, दिवस एक दै जानि॥

अन्य।

दोहा—आध पाव इसबंदसम, नागौरी असगंध।
अजवाइनि उतनीहि लै, खुरासानि लखि बंध॥ १॥
आँबाहरदी सम करौ, गूगुर महिष समान।
पाव मालकाँगनि मिलै, लहसुन पाव प्रमान॥ २॥
लै फिटकरी छटाँक यक, सज्जी लोट छटाँक।
डारि सोहागा खील सम, सुधा फिटकरी पाक॥ ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीसि छानि सम लीजिये, गुड पुरान यक सेर ॥
सोरह गोली करि धरौ, साँझ भोर मुख गेर ॥ ४ ॥
दाना नीर न दीजिये, जबलौं गोली खाय ।
जो पानी दीन्हों चहै, दीजै लोह बुझाय ॥ ५ ॥
कई बेर याको सुघर, राखो है अजमाय ।
जकडो सब खुलिजाइ है, दवा करौ मनलाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौपाई—लेउ अकरकरहा मँगवाई । एक छटाँक वजन करवाई ॥
काली मिर्च असगँध नागौरी । आध आध पावै लै धरी ॥
एक जायफर देउ मिलाई । सहत सानि गोली बनवाई ॥
चनाके आटा साथ खवावे । जकडा खुलै अइव सुख पावे ॥

अथ सीना शोथकी दवा ।

चौपाई—जो घोडेको सूजै सीना । ताकी औषध सुनो प्रवीना ॥
अहि केसरि अँवरा दुइ लीजै । गुरचसत्त जातीफल दीजै ॥
दाडिमफल शक्करऔलोधा । दश २ दमरी भरि सब शोधा ॥
चौथाई घृत डारि खवावे । हरै शोथ वाजी सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०—कांजी खुरासानि बच आनै । गोरोचन अरु मोम विधानै ॥
पाँच पाँच दमरी मित कीजै । सेर एक घृतमें औटीजै ॥
नितही नित वाजीको दीजै । कई रोज इमि जतन करीजै ॥

अन्य ।

दोहा—औंरा नागेश्वर मुरच, बरैं सोरा आनि ॥
फल अनार अरु जायफल, सैंधव सम करि जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवा सवा भारि पीसि जल, चौथाई घृत नाय ।
अवशि जानियो ताहिको, दीन्हें दुःख नशाय ॥ २ ॥
जो घोडेके तँग लगे, छूटे यही उपाय ।
जलमें कागज भेइ तहँ, लाय तंग कसि जाय ॥ ३ ॥

अथ सर्व अंग शोथ ।

चौ०—जो घोडाके शोथा पकरै । ग्रीवा जिहि औरौ तनु जकरै ॥
ताको प्रथम सेंक यह करै । घुघुवारी सैंधव करि धरै ॥

अन्य ।

चौपाई—ता पाछे यह लेपन करै । अंगरोग घोडेको हरै ॥

दोहा—अजवाइनि अजमोद लै, हींग सोंठि सम लेउ ।
कारीजीरी मिर्च सो, लेपन तिहि करि देउ ॥

सोरठा—जबै शोथ मिटि जाय, सूधी गर्दन होइ तब ।
कीजै यही उपाय, रग छातीकी खोलिये ॥

अन्य ।

चौपाई—तूत बकायन रंड सँभारू । अंवरबेलि धतूरा डारू ॥
दाडिम लै दल और मकोई । लेउ बुद्धि जन सम करि सोई ॥
जलमें चुरै बफारा दीजै । सकल शोथ हयको हरि लीजै ॥

अथ मिषरोग लक्षण व दवा ।

दोहा—हयके सीना माहिंमें, होत वर्म जो आइ ।
दर्द होत है ताहिमें, औरौ यह दरशाइ ॥ १ ॥
गर्म लगै करके छुये, तौन वर्म यह जानि ।
दाना घास न खात है, रहत सुस्त यह मानि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राई सरसों जरद लै, अरु अजवानि लाइ ।
जवाखार अरु सोंठि लै, हरदी सहित पिसाइ ॥ ३ ॥
अरु अँबिलीके पात लै, तेऊ लेउ पिसाइ ।
जेती हैं सब औषधी, तिनको देइ मिलाइ ॥ ४ ॥

सोरठा—लीजै गर्म कराइ, ताहि लगावै बर्मपर ।
रंडपात सेंकवाइ, ता ऊपरते बाँधिये ॥

चौपाई—ऊपर कपरा देइ बँधाई । बहु मजबूत ताहि करवाई ॥
बर्म बैठि ताहीसे जावै । नहिं बैठै तौ फोरि बहावै ॥
पीब निकसि जब जावै ताको । नींब उसेइ धुवावै वाको ॥
फिरि तापर मलहम लगवाई । होइ अराम अइव सुख पाई ॥

अन्य खानेकी दवा ।

दोहा—अजवायिनि अजमोद लै, पिपरामूल मँगाय ।
चीता हरदी दारु लै, और केफरा लाय ॥ १ ॥
स्याह मिर्च सम भाग सब, कूटै सबको आनि ।
पैसा साढे तीनि भरि, सबै औषधी जानि ॥ २ ॥
रंडतेलको लीजिये, तोले चारि मँगाइ ।
ताहीमें सब औषधी, दीजै आनि मिलाइ ॥ ३ ॥
दाना पीछे साँझको, औषध देउ खवाय ।
पानी पीजै गर्म करि, जब ठंढा ह्वै जाय ॥ ४ ॥
एक खुराक दवा कही, जानि लेउ मनमाँहि ।
जबतक होइ अराम नहिं, देत दवा नित जाहिं ॥ ५ ॥

अथ बलगीरा रोग लक्षण व दवा ।

दोहा—छाती भारी होइ जो, नेको चला न जाइ ।
दम भरि आवै ताहिके, बलगीरा सो आइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हालिम हरदी सोंठि लै, सज्जी साबुन लाइ ।
लेउ सोहागा वजन सम, गुडके साथ मिलाइ ॥ २ ॥
दोइ टका भरि औषधी, हयको देउ खवाय ।
याको दीजै आठ दिन, तौ छाती खुलि जाय ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, टका चारि भरि जानि ।
भरो सही खुलि जायगो, सात रोजमें आनि ॥ ४ ॥

अन्य बंद बंद जकडेकी दवा ।

चौ०—बलगीराकी औषध कही । बंद बंद जो जकडो सही ॥
गूगुर दुइ पैसा भरि लीजै, । गऊमूत्रमें औटि करीजै ॥
प्रातै घोडे देव खवाई । बंद बन्द जकडो खुलि जाई ॥

अन्य ।

दोहा—साँभरि लहसुन भाग सम, दीजै नित्त खवाय ।
जकरो सो खुलि जाइ है, लंघन ताहि कराय ॥ १ ॥
तप्त नीर नित दीजिये, दाना देउ न ताहि ।
औषध दीजै नेमसों, नीको लीजो वाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०गूगुर टका एक भरि लेहू । हींग सोहागा खील करेहू ॥
अजवाइनि सोंचर मिलवाई । घोडेको दे प्रात खवाई ॥

अन्य ।

चौ०—हींग सोहागा मासे बीसा । औषध वजन बराबरि पीसा ॥
दाना मेटि मसाला दीजै । सात रोज मां नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौ०—प्रथम छोहारा खाली करै । लै अफीम ताहीमें धरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारि कपरौटी दीजै ताही । आधा रोज खवावै वाही ॥
अश्व अंग खुलि जाय तुरंता । दाना मति दीजै बुधिमंता ॥

अन्य—चौपाई ।

सज्जी साँभरि बोडी पोस्ता । हालिम गुड साबुन ले दोस्ता ॥
टंक टंक भरि औषध लेहू । पाव सेर गुड तामें देहू ॥

अन्य ।

चौ०—हालिम हरदी गुड सम लेहू । प्रात समय घोडे को देहू ॥
चारि घरी कैजा करि राषै । नीको होय अश्व ऋषि भाषै ॥

अन्य ।

चौ०—अश्वाकी छाती हो भारी । हिलै नहीं जो दीजो टारी ॥
हफतम दाम फस्त खुलवावै । नाशै सकल रोग बहि जावै ॥
जो छातीको लोहू लीजै । तो विचार या विधिसों कीजै ॥
प्रथम घरी यक राह चलावै । ता पाछे रगसीर खुलावै ॥
गर्ममसाला दीजै ताही । क्रमते दाना दीजै वाही ॥
गर्म नीर अचवनको दीजै । छाती खुलै मानि यह लीजै ॥

अन्य ।

चौ०—हालिम हरदी सोंठि सोहागा। सोंचर साबुन सज्जी पागा॥
गुडसों मिलै वजन सम लेहू । टंक सोहागा तामें देहू ॥
सातरोजलौं घोडे दीजै । छाती भरी नीक सो लीजै ॥

अथ जौगीरा लक्षण व दवा ।

चौ०—दाना वाजी खायो होई । तुरतै पानी पीवै सोई ॥
ताते द्रोत रोग तनु आई । छाती फूलि ताहिकी जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—लीजै रेहू सोंठि अरु, वजन बरोबरि आनि ।
गरम करै जल सानिकै, ऊपर लेवै जानि ॥

खानेकी दवा ।

दोहा—लेउ सोहागा फिटकरी, कारीजीरी आनि ।
अरु कुटकीको लीजिये, भाग बरोबरि जानि ॥ १ ॥
ए सब लीजै कूटिकै, सोरह तोले आनि ।
गूगुर हरदी हींग लै, अरु हालिमको मानि ॥ २ ॥
दुइ दुइ तोले लेहु ये, सोऊ लेउ कुटाइ ।
अरु अजवाइनि लीजिये, साबुन सहित मिलाइ ॥ ३ ॥
दोऊ लीजै पाव यक, भाग बरोबरि जानि ।
तोले एक अफीम लै, सो लीजै जल सानि ॥ ४ ॥
फिरि मानुषके बार लै, तिनको लेउ जराइ ।
यवको आटा सेर भरि, सोऊ लेउ मँगाइ ॥ ५ ॥
गोली बाँधौ बीस सब, यवके आटा सानि ।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—सोंठि मिरच अरु पीपरी, हींग फिटकरी लाइ ।
अजवाइनि सोंचर सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दश दश मासे औषधी, सबको लेउ मँगाइ ।
दाना दीजै नाहिं तिहि, देत औषधी जाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, सात रोज लगु देइ ।
रोग हरै अरु बल बढै, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्यमतु जौगीरा लक्षण व दवा

दोहा—बहु दिन थाने बँधि रहै, करै न लीदि पेशाब ।
नथुना मारि जु दम करै, रहै जकडि बेताब ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई–सेंहुडको पोढा लै आवै । बित्ता बित्ता ताहि कटावै ॥
ताके बीचम लोन भराई । ऊपरते माटी थुपवाई ॥
पावकमें पकाइ सो लीजै । सूखि जाय तब बाहर कीजै ॥
ताकी माटी सकल छुटावै । पीसि कूटि कपरा छनवावै ॥
एक मास घोडेको दीजै । जोगीरा याहीसों छीजै ॥
पिपरी सहत खवावै कोई । जोगीरा ताके नहिं होई ॥

अन्य ।

चौपाई–सोंठि बैतरा हींग मँगावै । पिपरी मिर्च श्याम ले आवै ॥
लहसुन लेउ जौन इक पुतिया । तामें डारौ अदरख बतिया ॥
जवाखार अरु लोटासज्जी । आध पाव दोनौं करि लेजी ॥
लेउ फिटकरी एक छटाँका । गनती चारि मैनफल पाका ॥
मदिरा एक सेर मँगवावै । दवा पिसि तामें सनवावै ॥
गोली करौ छटाँक प्रमाना । प्रात एक नित दीजै खाना ॥
या विधि दवा करै जो कोई । जोगीराको नाश करेई ॥

इति श्रीशालहोत्र संग्रह केशवसिंह कृत सीनाथो-
थवर्णनो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ लीदिकी पहिचान ।

चौ० देखो लीदि करै जो पतरी । अति बदबोहि करै तिहि अँतरी ॥
जेहु दाना तिहि हजम न होवै । कई रोज दाना नहिं देवै ॥
गेरह रोज जु देय मसाला । मिलै टका भरि भाँग सुआला ॥
शुद्ध उदरते लीदि करावै । अश्व अराम होइ सुख पावै ॥
पेट चलै पिचकाकी सरसै । ताको भाँग देइ सुख वरसै ॥
लुगदी बनै छटांक प्रमाना । दीजै तीनि दिवस सुख माना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—की छटाँक मेंहदी लै आवै । टका प्रमाण कतीरा नावै ॥
जीरा मासा एक जु लीजै । मूदा बेल टका भरि कीजै ॥
सबको पीसि नान्ह करि छानौ । ताको लै पानीमें सानौ ॥
आधी प्रात साँझ दे आधै । बहुतै उदर तुरैको बाँधै ॥

अथ बहुत दस्त आवैं तिसकी दवा ।

चौ०—दस्त बहुत आवैं जिहि तुरगा । ताकी दवा करौ संसगा ॥
घोडा जो बेताब दिखावै । अरु दम बहुत करै दुख पावै ॥
करि पुरान चावरको भाता । ईसबगोल मिलाइ सुखाता ॥
दधि गाईको देउ मिलाई । तामें दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ अतीसार ।

दोहा—अरसीपात रु नींबको, पात फूल युत लेहि ।
सरसर दमरी सकल जल, साथ पीसिके देहि ॥

अथ आनू नाम मर्ज ।

चौपाई—लीदिमाँह चिकनाई दरसै । आनू नाम मर्जको सरसै ॥
सो तुरंगको दीजै राई । आनू याते रोग नशाई ॥

अथ लीदिमें लोहू आवै तिसकी दवा ।

दोहा—देवदारु जर मुरहरी, अरु अँगेथु असगंध ।
पारा शर मासे सकल, पीसि दिये सुख संध ॥

अन्य

दोहा—अँवरा परवर मूलसम, कुकुरौंधा बुध आनि ।
चाउर साँठी मुरहरी, नित दै दशमा सानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अश्वजतन या विधि करै, शालहोत्र मत देखि ।
रहै अरोगी सर्वदा, नित सवार सुख पेखि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—हर्रा असिल सबुज ले आवै । देवदारु अरु पीपरि नावै ॥
महुरेठी जर असगँध आनै । पाँच पाँच दमरी सब ठानै ॥
पानी साथ पिसाय सु लीजै । शालहोत्र मुनि वचन करीजै ॥
नितही नित्त तुरग यह पावै । लीदि बेकार रुधिर नहिं आवै ॥

अन्य ।

दोहा—लीदि करै जो रक्तयुत, ता वाजीको देहु ।
तुरत रोग ताको हरै, नकुल मतो सुनि लेहु ॥
छंद—हरै महुरेठी विचारु । ले पीपरी अरु देवदारु ।
घृत साथ सानि मोथा मिलाउ । लै तुरत ताहि बाजी खवाउ ॥

अथ रक्तविहीन अतीसार ।

छंदतोमर—लीजिये जो सोराकंद । महुरेठी औ आनंद ॥
मोथे बहेरे चारु । गिरि करनिका निरधारु ।
हय होत रक्त विहीन । तिहि पिंड देउ प्रवीन ॥
सब मिटै रोगनिदान । यह कहत सुकवि विधान ।

अन्य ।

चौपाई—दोनों हरैं गंधक लीजै । करुये तेल सानिकै दीजै ॥
रक्तविहीन दोष सब हरै । शालहोत्र वाणी उच्चरै ॥

अन्य ।

चौपाई—अरसी पत्र नीबके लेहू । पीपरकली भलीविधि देहू ॥
पिंड बनाय बाजिमुख धरै । अतीसार सब याते हरै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यमति संग्रहणी।

दोहा—शिशिर और हेमंत ऋतु, पेटु झरै जो आइ।
और बताने माहिमों, शरदी कछु दरशाइ॥ १॥
औंरागूदी बेलकी, नागरमोथा लाइ।
सौंफ फिटकरी पोस्ता, कली अनार मँगाइ॥ २॥
टका टका भरि वजन सम, सबको लेउ भुँजाइ।
आधा दीजै अश्वको, आधा देउ धराइ॥ ३॥
पानी दीजै गर्म करि, दाना दीजै नाहि।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, पेट बंद ह्वै जाहि॥ ४॥

अथ गर्मीकी ऋतु चैतते कुवाँर लगु पेट झरै तिसकी दवा।

दोहा—गरमीकी ऋतु माहिंमें, पेट झरत जो होइ।
होइ बताना सुरुख जो, शरदी मायल सोइ॥ १॥
औंरा जीरा फिटकरी, कली अनार मँगाइ।
लेउ बरोबरि सबनको, तोले पट मँगाइ॥ २॥
पृथक पृथक भूँजै सबै, सबको कूटि मँगाइ।
कही एक मौताज यह, हयको देउ खवाइ॥ ३॥
औषध दीजै तीनि दिन, साँझ सबेरे लाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, दस्त बंद ह्वै जाइ॥ ४॥

बदहजमीते पेट झरै तिसकी दवा।

दोहा—होत हाजमा जाहिते, कही औषधी आइ।
दीजै ताहि मिलाइकै, यही दवामें लाइ॥ १॥
दाना जाको नाहिं पचै, बदहजमी दरशाइ।
पेट झरन ताते लगै, या विधि करै उपाइ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हलदी तामें नाहिं करै, दोइ पहर लगु जानि ।
बदहजमीकी औषधी, दीजे नाहिं न आनि ॥ ३ ॥
दाना जौलौं लीदिमें, देत देखाई ताहि ।
चारि पहर लगु ताहिको, औषध दीजे नाहि ॥ ४ ॥
बोडी लेउ अनारकी, सौंफ सहित भुँजवाइ ।
मिरच स्याह अरु पीपरी, देउ बहेर मिलाइ ॥ ५ ॥
लीजै सोंचर लोनु पुनि, अजवाइनि अरु जानि ।
औषध तोले दश सबै, भाग बरोबरि आनि ॥ ६ ॥
औषधि देउ खवाय यह, अरु कैंजा करि देइ ।
यहि विधि कीजै तीनि दिन, बाजी नीको लेइ ॥ ७ ॥
पेट झरत है जाहिको, दाना दीजै नाहि ।
कोई होइ विकार जो, कोन्यो महिना माहि ॥ ८ ॥
अतीसार संग्रहणी, की साधारण माहि ।
आवैं जाको दस्त सो, यही औषधी ताहि ॥ ९ ॥

अथ कोखि चढि जाय तिसकी दवा ।

दोहा—कुटकी एक छटाँक लै, दूनी मिरचै गोल ।
मदिरा बोतल एक लै, कूटि पिलावै घोल ॥

लेप ।

दोहा—राई खारी निमक लै, पीसि लेप कर कोखि ।
शालहोत्र मुनिके मते, लेहै रुजको सोखि ॥

अधिक दौरायेते जो रोग पैदा होवें तिसकी दवा ।

दोहा—अति दौराए ते तुरै, श्वास अधिक उपजात ।
ताकी श्री हरि जाति है, नकुलमते विख्यात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई—चाउरको चूरण करि लीजै। गौके दूध मिलाइक दीजै॥

अथ उदरवायु बंद पेट फूलेकी दवा।

दोहा—उदर वायु जो बन्द हो, पेट फूलि तेहि जाहि।
दवा किये खुलि जाति है, यामें विस्मय नाहिं॥

चौपाई—उदर होइ घोडेको बंदा। औषध कीजो चेतनचंदा॥
राई भाँटा तक्र मिलाई। तुरत दीजिये ताहि खवाई॥
दत पवन लीदिको करि है। उदर विकार अश्वकी हरि है॥

अन्य।

चौपाई—प्रथम सोंठि अजवाइनि लावै। मैदा कार घटमें औटावै॥
मलै उदर औ कोखि लगाई। ता पाछे यह करो उपाई॥

अन्य।

चौपाई—सोंठि सोहागा सोंचर गंधी। सहिंजनके रस गोली बंधी॥
उदर व्याधि चौरासी बाई। हरै शूल सब अश्व जु खाई॥
एक टकाकी वजन प्रमाना। पवन रोगको हरै निदाना॥

अथ लीदिबंदकी दवा।

चौपाई—सोंठि मिर्चकी गोली बाँधो। मूलद्वार मध्य सो साधो॥
टहलावै फेरै चित लाई। लीदि करै जो करो उपाई॥

अन्य।

चौपाई—कारीजीरी मिर्च मँगावै। खलि सोहागाकी करवावै॥
सज्जी राई कुटकी लेहू। हींग टका भरि तामें देहू॥
जवाखार औ बायविडंगा। खारी सोंचर सोंठि प्रसंगा॥
अजवाइनि लै सब सम कीजै। अदरखरसमां गोली कीजै॥
एक छटांक अश्वको दीजै। वायु दोष अरु गुल्म हरीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—सोंठि घीवमें सानिकै, गुदा मध्य दे मेलि ।
लीदि करै क्षण एकमें, देइ रोगको ठेलि ॥
चौपाई—ककरी भांटा भरत करावै । राई पीसि तक्र मिलवावै ॥
खारी डारि अश्वको दीजै । उदरव्याधि याते हरि लीजै ॥

अन्य ।

दोहा—हींग टका भरि लायकै, घिउ कच्चे दुइ सेर ।
दूबा करिकै दीजिये, लीदि करै बहुतेर ॥

अथ वातोदर रोग ।

सोरठा—बाढि पेट बहु जाय, वातोदर सो जानिये ।
ताको कहौं उपाय, शालहोत्र मत जानिकै ॥

दवा ।

दोहा—हरदी तिल औ फिटकरी, काली मिरच मँगाइ ।
टका टका भरि औषधी, चूरण लेउ कराइ ॥ १ ॥
कुम्हडाकेरे फूल पुनि, अरु सेहुँडके पात ।
राख दुहुँनकी लीजिये, एक टका भरि तात ॥ २ ॥
गाइ दहीको तोरु पुनि, टका चारि भरि लाइ ।
टका एक भरि औषधी, ताके संग खवाइ ॥ ३ ॥
दशदिन औषध दीजिये, नितप्रति हयको आनि ।
चारि घरी दिनके चढे, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अथ जलोदर रोग ।

सोरठा—पेट बढत नित जाइ, झलझलाइ ताकी नसैं ।
ये लक्षण दरशाइँ, ढबढबाइ डोलति विषे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—जवाखार सैंधव सहित, सोंचर सांभरि आनि ।
दशदश पल ये लीजिये, सज्जी सहित बखानि ॥ १ ॥
दुइसै पल अरु लीजिये, गायमूत्र मँगवाइ ।
तामें इनको डारिकै, दीजै अग्नि चढाइ ॥ २ ॥
चौथे हींसा जब रहै, लीजै ताहि उतारि ।
गेहूँ लीजै सात पल, दीजै तामें डारि ॥ ३ ॥
भीजि जाइँ गेहूँ जबै, तिनको लेउ सुखाइ ।
तिनको फेरि पिसाइकै, दूधमाहिं चुरवाइ ॥ ४ ॥
फेरि सुखावै धूपमें, दोइ टका भरि लेइ ।
टका एक भरि गुड मिलै, मेथीके सँग देइ ॥ ५ ॥
औषध दीजै तीस दिन, दुहूँ पहर यह जानि ।
क्षुधा बढै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अथ उदरदाहकी दवा ।

चौपाई—दूधमाहिं पत्रजै पकावहु । मिश्री और इलाची लावहु ॥
दाह होय जिहिके हिय माही । सो हय शीतल होत सदाही ॥

अन्य ।

चौपाई—यवजीराको मिलै सबेरे । दीजै पिंड कहतहौं टेरे ॥
ग्रीषमऋतुकी औषधि जानौ । तुरँग सुखी तनु बहु सुख मानौ॥

अन्य ।

दोहा—लहसुन तेल मिलाइकै, जल संयुत करि देहु ।
दाह मिटै हयकी सकल, वर्षाऋतुकी येहु ॥

अथ उदरज्वालाकी दवा ।

दोहा—आदी भीमकपूर लै, दुकरा भरि परमान ।
सोंठि इलाची लीजिये, दश दश मासे जान ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता आधी पत्रज मिलै, धूपकाल अनुमान ।
माठा मिलै सु दीजिये, उदरज्वाल हर जान ॥ २ ॥

अथ अजीर्णकी दवा ।

दोहा–सोंठि बैतरा पीपरी, मिर्च हर्रकी छालि ।
अजवायन विरिया नमक, दश दश मासे डालि ॥ १ ॥
गोदाधि मिलै सु दीजिये, दाना नहीं खिलाय ।
दिवस आठय नमक दै, तुरत अजरिण जाय ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्र संग्रह केशवसिंहकृतउदरव्याधिकथनो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ विषहरण विधि ।

दोहा–तीनि भांतिके विष सबै, थावर जंगम मानि ।
कृत्रिम जानौ तीसरो, इनमें सब विष जानि ॥ १ ॥
अरुण आँखि आँसू चलैं, कोवा फाटो होइ ।
गिरै परै उठि बल करै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥
कंद मूल फल आदि दै, थावर विष पहिचानि ।
तिनकी औषधि कहत हौं, लक्षण सहित बखानि ॥ ३ ॥

थावर विषहरण दवा ।

दोहा–नागफली रसउत सहित, औ नारीको आनि ।
बदरीफल केसरि सहित, भाग समान बखानि ॥ १ ॥
तक्रमाहिं सो घोरिकै, हयको देहु पिआइ ।
शालहोत्र मुनि सो कहैं, थावर विष मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–असगँध मधु लै आठपल, दशपल घृतहि मिलाइ ।
सो बाजीको दीजिये, थावर विष मिटि जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य भेद ।

दोहा—घास होत इक शरद ऋतु, ताहि बाजि जो खाय ।
प्रथमहि सूखे देह सब, फिरि पाछे मरिजाय ॥ १ ॥
मुंडी मूसरि सहित मधु, और बिजौरा लाइ ।
दोइ दोइ पल लाइ करि, लीजै काथ बनाइ ॥ २ ॥
हयको दीजै तीनि दिन, उतरि तासु विष जाय ।
शालहोत्रमें यह कहो, नाहिन और उपाय ॥ ३ ॥

जंगम विषहरण दवा ।

दोहा—जंगम विष सर्पादि हैं, ते जो काटैं आनि ।
ताके लक्षण कहत हौं, शालहोत्र मत जानि ॥

सर्प काटनेका लक्षण व दवा ।

दोहा—अंग तोरि गिरि गिरि परै, दाना घास न खाय ।
अरुण नेत्र कोवा फटैं, सर्प डसा सो आय ॥ १ ॥
लीदि बंद नहिं होति है, छलकै बारंबार ।
लार बहुत मुखते गिरै, जानौ सर्पविकार ॥ २ ॥
जटामासि रसउत सहित, बचहि कुलिंजन लाइ ।
दोइ दोइ पल तौलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—चंदन अरु लै उर्दको, आठ टका भरि आनि ।
हयको दीजै नीरमो, शालहोत्र मत जानि ॥

अन्य ।

दोहा—दुद्धी रसउत रूसको, बारह पल मँगवाइ ।
तासम मदिरा मेलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गरवरिया ले बोलि सो, गरुडमंत्र पढवाइ ।
निर्विष कीजै बाजिको, दिये औषधी जाइ ॥ २ ॥
निर्विष होवै बाजि जब, तब यह औषधि देइ ।
साँझ सकारे सात दिन, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥
कानोटरी अर्कजर, मिरचै सम करि लेइ ।
संग नीरमों पीसिकै, प्रात साँझ नित देइ ॥ ४ ॥

अन्यभेद ।

दोहा—छोट सँपोला घासमें, धोखे लै हय खाय ।
बारि बहुत मुखते गिरै, फूलि ग्रीव अरु जाय ॥
सोरठा—अंग फूलि सब जाइ, मन मलीन बाजी रहे ।
औषध दीजै ताहि, शालहोत्र मत जानिकै ॥
दोहा—केंचुआ लीजै पाँच पल, मिर्चे लेउ मिलाइ ।
सेरु घीउमें बाँटिकै, हयको देउ खवाइ ॥

सर्व जंगम विषहरण दवा ।

दोहा—चौराई—अरु अर्कजर, लीजै अदरख पान ।
मिर्च कसौंजी अंडजर, सबको एक प्रमान ॥ १ ॥
दूनो घीउ मिलाइकै, हयको देउ पिआइ ।
शालहोत्रमें यह कहो, विषधरको विष जाइ ॥ २ ॥

अन्य मत साँप काटेके लक्षण व दवा ।

चौ०—ऐसी घरी साँप जिहि डसै । सो अवश्य यमपुरमें बसै ॥
पशु मनुष्यको डसै भुजंगा । सो विचारि लीजै सब अंगा ॥
कवित्त—मूल मघा कृत्तिका विशाखा औ भरणी शिव, नखत फनिंदको कहत बुधिमान हैं ॥ छठि आठैं पंचमी चतुरदशि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और नौमी, भौम शनि वार कहैं वेदन कथान हैं ॥ रवि और चंद्रमाके ग्रहण समय काटै, एते आहिकाटनका कछू ना जतन है ॥ गरुड जो राखै चाहै अमृत दै अभिलाषै, यतने तो जात प्राणी यमके निकेत हैं ॥

दोहा—ओंठ चिबुक गल जठर शिशु, उरु बाहू औ काँध ।
इंद्रि काँखमें जो डसै, परै सो नर यम बाँध ॥

चौ०—देवालय पुरानि फुलवाई । औ मशानकी भूमि जनाई ॥
साँप धौरहरमें जो डसै । यमानिकेत निश्चय सो बसै ॥
मौन होइ की भौंरी आवै । दाह स्वेद तनु पीर जनावै ॥
शूल होइ की ग्रीव पिराई । हिबुके चलै जीभ ठिठुराई ॥
ऊरध श्वास चलै अकुलाई । पीर होइ पेडुरिनमों आई ॥
डसे उरग ये लक्षण देखै । निश्चय तासु मरन अवरेखै ॥
अंगतरी घोडा जो गिरै । दाना घास सबै परिहरै ॥
सीक करै छुलके बहुबारा । ताको काटो भुजँग विचारा ॥

दोहा—जा घोडेको सर्पने, काटो होय सुजान ।
जीभ दोखि स्याही लखै, दवा करौ बुधिमान ॥ १ ॥
गरुडमंत्र पढवायकै, निर्विष कीजै ताहि ।
औषध तासु खवाइये, दिना सात लगु वाहि ॥ २ ॥

दवा ।

चौपाई—पानपाठिकी मूल मँगावै । एक छटाँक ताहि पिसवावै ॥
स्याह मिर्च तिहि आधी लीजै । जलके संग अश्वको दीजै ॥

अन्य ।

दोहा—लाजी कछुही मांसमें, मूल बिजोरा नाय ।
गूलरिफल सम घृत मिलै, नासु दिये विष जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—गूलरिदुद्धी लै सुघर, नागकेसरी नाय ।
गुंजाफल अरु मधु गुरच, नासु दिये विष जाय ॥

अन्य ।

दोहा—चीत मूल अरु मालती, रस धतूरको आनि ।
पीसि नासु दे अश्वको, करिहै विषकी हानि ॥

अन्य ।

चौ०—काली मिर्च नींबकी पाती । जितनै तुरँग खाय दिन राती॥
तासों जहर शांति ह्वै जावै । औषध किये सुखी तनु पावै ॥

अथ कृत्रिमविषहरण ।

दोहा—विष जे होवें योगते, कृत्रिम काहिये ताहि ।
सहत घीउके योग ज्यों, कृत्रिम विष त्यों आहि ॥

दवा ।

दोहा—फानि केसरि पुनि कुसुम मधु, और केतकी लाइ ।
सो घोडेको दीजिये, कृत्रिमविष मिटि जाय ॥

बाघने पकरा होइ तिसकी दवा ।

दोहा—दाँत लगे जहँ बाघके, फूलि तहाँ फिरि जाइ ।
पाकत फूटत फिर भरत, नाहीं नीक देखाइ ॥ १ ॥
मछरी लेके तीसपल, तिनको लेउ पकाइ ।
जीरा पीसै पाँच पल, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावे जखम पर, विष ताको मिटि जाइ ।
नीक होइ जबलौं नहीं, रोज लगावत जाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कुत्ताके काटेकी दवा ।

सोरठा—लघु बिरवा यक होइ, निकट तालकी भीटपर ।
है मंजरियुत सोइ, पाती तुलसीसम अहै ॥

दोहा—श्वेतफूल ताते कढैं, नहीं गंधको लेश ।
श्वान डसे तेहि बाजिको, औषधि जानौ वेश ॥ १ ॥
मिर्चैं पैसा एक भरि, औषधि पाती टंक ।
याको दीजै सात दिन, विष नाशै निरशंक ॥ २ ॥

चांडालकी गोलीसे मरनेवाले घोडेकी दवा ।

चौ०—ले गिरगिट दुइ चारि मँगाई । जलसँग पावकमध्य पकाई॥
नारि भराय अश्वमुख नावै । सो गोलीसे मरै न पावै ॥

अथ माहुरकी गोली ।

दोहा—जहर शंखिया तेलिया, समुदखार हरतारु ।
स्याह धतूरे बीज लै, कुचिला तामें डारु ॥ १ ॥
पारा लेउ अफीम पुनि, और हर्दिया लाइ ।
खुरासानि अजवाइनी, अरु अजमोद मँगाइ ॥ २ ॥
आकरकरहा पीपरी, खील सोहगा आनि ।
कालेश्वर अरु मिर्च लै, सज्जी स्याह बखानि ॥ ३ ॥
नागौडी असगँध सहित, बहुरि लौंगको आनि ।
एक एक तोले सबै, येती औषधि जानि ॥ ४ ॥
अर्कदूध पुनि लीजिये, तोले पाँच मँगाइ ।
खेरु पपरिया लेउ पुनि, छा तोले तौलाइ ॥ ५ ॥
मरी गाइको पित्त पुनि, तीनि अदति सो जानि ।
खरिल कीजिये तीनि दिन, अदरखके रस सानि ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोली ताकी बाँधिये, छोटे चना प्रमान ।
बलगम वायु नशात है, सत्य बात यह जान ॥ ७ ॥
दाना दैके साँझको, गोली एक खवाइ ।
यवके आटा संगमें, अदरखरसहि मिलाइ ॥ ८ ॥
चारि घरी कैजा करै, जहरवात मिटि जाइ ।
नाशै बलगम रोग सब, सकल वायु नाशि जाइ ॥ ९ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृतविषवर्णनो
नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ कुलिंजनरोगवर्णन ।

दोहा– तीनि प्रकार कुलिंज है, कहत सबै गुण खानि ।
ताको वर्णन करत हौं, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आँत एक कूलून है, नाभि पिछारी जानि ।
वायु भरति है ताहिमें, करत दोष बहु आनि ॥ २ ॥
करत नहीं है लीदिको, अरु पेशाब नहिं होइ ।
फिरि ताकाति नाहिं रहाति है, ये लक्षण सब जोइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि चति अजमोद लै, दुइ दुइ तोला लाइ ।
घोडबच लौंगै दुहुँनको, दुइ तोले मँगवाइ ॥ १ ॥
आधसेर गुड डारिकै, पांचसेर जल माहि ।
तप्त कीजिये अग्निपर, जब आधा जारि जाहि ॥ २ ॥
ताहि उतारौ अग्नितें, लीजै ताको छानि ।
फेरि पिआवै वाजिको, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिरि हुकना हयको करै, औ कैजा कारि देइ ।
सीताराम प्रसादते, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अथ बेलिरोग लक्षण ।

दोहा—बेलि कहत हैं ताहिको, दोनों रानन माहि ।
अगिले दोनों पाँइमें, निकसाति है वह आहि ॥ १ ॥
पहिले सूजनि होति है, दुइ दुइ राहै जानि ।
बढिकै सूजनि फिरि वहै, पाकि जाति यह मानि ॥ २ ॥
पाकति फूटति फिरि भरति, यह गति ताकी होइ ।
मलहम कितनो जो धरो, नीक नहीं वह सोइ ॥ ३ ॥
जो कदाचि केहुँ जतनते, नीक कहूँ ह्वै जाइ ।
तो निश्चय यह जानियो, निकसाति है फिरि आइ ॥ ४ ॥

दोहा—पहुँचा आँगुर आठको, सेंहुँडको यक लेउ ।
तामें एक भेलावँ धारि, लेपि मृत्तिका देउ ॥ १ ॥
गाडै ताको आगिमें, खूब पाकि जब जाइ ।
लीजै ताहि निकारि तब, माठा देउ छँडाइ ॥ २ ॥
आटा लीजै मोठको, तामें देउ मिलाइ ।
दाना पाछे साँझको, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
एक भेलावँ बढाइये, रोज दूसरे माहि ।
और यही सब विधि करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ४ ॥

चौ०—नित प्रति एक भेलावँ बढावे । याविधि चौदह रोज खवावे
एक एक घटवत फिरि जाई । शालहोत्र यह दियो बताई ॥

दोहा—तीनि दफा यहि विधि करै, रोज बयालिस माहि ।
दाना दीजै मोठको, सेर एक सो ताहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–मिरचै तोले दोइ लै, मोठ महेला माहि ।
दाना पाछे साँझको, हयको दीजो ताहि ॥ १ ॥
दुइ तोले भारि मिर्चको, रोज बढावत जाइ ।
आधपाव पहुँचै जबै, तब फिरि नहीं बढाइ ॥ २ ॥
चालिस रोज खवाइकै, क्रमते देउ छडाइ ।
शालहोत्र मुनि यों सबै, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–खुरासानि अजवाइनि लेहू । गुड पुरान सो तामें देहू ॥
दोनों तोले दश भारि लीजै । पारा तहँ तोले भारि कीजै ॥
दोहा–सबको मिलवै एकमें, काँसे थारी माहि ।
लेइ कटोरी काँसकी, तासों घोटति जाहि ॥ १ ॥
तबलगु ताको घोटिये, जब पारा मिलि जाइ ।
साढे ग्यारह तासुकी, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
गोली दीजै रोज यक, बखत शामके आनि ।
दाना पहिले देइ करि, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३ ॥
भूँजो आटा मोठको, सूखो देउ खवाइ ।
दीजै सूखी घास तेहि, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ सूखीखांसीकी दवा ।

दोहा–दिये मसाला बहुत विधि, मिटत नहीं वह आहि ।
आवति सूखी धाँस है, गरमी जानौ ताहि ॥ १ ॥
दूध निखालिस गाइको, तीनि सेर मँगवाइ ।
डारै चावर तासुमें, आध सेर पुनि लाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खीर बनावै तासुकी, प्रातहि देइ खवाइ ।
औषधि दीजै सातदिन, सूखी धाँस नशाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जुँदवेदस्तरके सहित, सौंफ कलौंजी आनि ।
तीनि तीनि तोले सबै, औषध कही बखानि ॥ १ ॥
तिल अरु लाही तैलको, सत्तरि तोले लाइ ।
तीनों औषधि पीसिकै, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि रोजमें देउ सब, औषध गर्म कराइ ।
सूखी धांसनि जाइ मिटि, बडे सबेरे खाइ ॥ ३ ॥
औषध यतनी लेइ फिरि, तीनि रोजलौं देहि ।
वाजी मोटो होइ अरु, शालहोत्र मत येहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—अदरख पिपरी लीजिये, तोले चारि मँगाइ ।
सैंधव तोले एक भरि, तामें देउ मिलाय ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, मोठ महेला माहि ।
धाँसत वाजी होइ जो, तासु रोग मिटि जाहि ॥ २ ॥

अथ खांसी लक्षण ।

दोहा—घास संग काँटा कहूँ, खाइ वाजि जो जाइ ।
अटकि नरीके भीतरै, दैवयोग यह आइ ॥ १ ॥
ताते खाँसत वाजि है, और दूबरो होइ ।
घूँटि घूँटि जलको पियै, खात घास कम सोइ ॥ २ ॥
की फुंसी परिजाति है, की कछु और विकार ।
की सूखो बलगम जमै, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

दोहा—लकरी लावै नींबकी, थोरी टेढी होइ ।
ना अति मोटी लीजिये, ना अति पातारि सोइ ॥ १ ॥
लंबी लीजै एक गज, ताको साफ कराइ ।
एक छोरमें ताहिके, कपरा देउ बँधाइ ॥ २ ॥
लकरीयुत घियमाहिमों, दीजै ताहि भिजाइ ।
लीजै माटी चूल्हकी, तोलै डेढ मँगाइ ॥ ३ ॥

चौ०—स्याह मिर्च षटमासे लीजै । दोनों मिलिकै पीसि धरीजै ॥
लकरी कपरा बँधी जौन है । तापर दवा लगाउ तौन है ॥
अश्वगरे सो लकरी बाँधै । तीनिरोज याही विधि साधै ॥
जब लकरीको लेइ निकारी । तब कपराते सेंकै भारी ॥
पानी फेरि देरको प्यावै । होइ अराम अश्व सुख पावै ॥

अथ रक्त खाँसीकी दवा ।

दोहा—आवत खाँसी वाजिको, रक्त गिरत ता माँहि ।
खाँसी सो है रक्त युत, जानि लेउ सो ताहि ॥ १ ॥
मिश्री लीजै एक पल, ता सम सौंफ पिसाइ ।
सेर एक गोदूधसँग, प्रातहि देउ पिआइ ॥ २ ॥
घास खानको दीजिये, हरी दूब मँगवाइ ।
बाँधे शीतल छाँहमें, हरी घास बिछवाइ ॥ ३ ॥
जल पीवनको दीजिये, कूपोदक यह जानि ।
औषध दीजै सात दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अन्यमत खांसी व धाँसैकी दवा ।

दोहा—मधु बच गुरच इंदोरनी, सकल पीसि छनवाय ।
लै दश मासे दीजिये, शीत धाँस मिटि जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

चौपाई—ककरासिंगी हर्र मँगावे। अँवरा सैंधव सज्जी लावे॥
सेंहुडा दमरी पाँच मँगाई। सम करि पीसि अश्वमुख नाई॥

अन्य।

चौपाई—लोध बहेरा सज्जी लीजै। मालकांगनी सम सब कीजै॥
चालिसटंक दवा पिसवावे। पाँच सेर गुड तामें नावे॥
पिंड बनाय सात दिन दीजै। खाँसी जाय व्यथा हरि लीजै॥

अन्य।

चौपाई—सेर एक बाहेरा लावे। अजवाइनि दुइ सेर मँगावे॥
रूसेके पाता यक सेरा। तीनों लै हाँडीमें भरा॥
प्रथम पात हाँडीमें धरै। उपर बहेर जवाइनि भरै॥
आधे पात उपर धरवावे। क्वाथ बनाय उपरते नावे॥
लेउ समूल कटैया गोली। ताहि क्वाथ करु विधिवत सोली॥
जेहि हाँडीमें है अजवानी। तामें काढा डारो छानी॥
सो हाँडी चूल्हेपर धरिकै। काढा पचै जवाइनि चुरिकै॥
लेउ जवाइनि छाँह सुखाई। एक छटाँक वजन नित खाई॥
यकइस दिन घोडेको दीजै। खाँसी जाय दुःख सब छीजै॥

अन्य छन्द पद्धरी।

अदरख सुचारि भारि ले मँगाय। तिहि कोरि छ मासे हींग नाय॥
तिहि भूँजि कुचिलि दीजै खवाय। दानाके बाद खांसी नशाय॥

अन्य।

प०—की दै पियाज पानी पियाय। कारि तौल पाँचभारि दुखविहाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

प०—की बाँसपात उतनेहि मान । ताको खवाय है सुखद जान ॥

अन्य ।

प०—की आध पाव लै कंटकारि । दे भुलभुलाय है धाँस हारि ॥

अन्य ।

प०—की सेर जवाइनि ले पिसाय । तिहि कपरामें लीजे छनाय॥
वह राखतीनिदिन सो खिलाय। करिवजनचारि भारि दुख विहाय॥
दानाके बाद जब अस्त भान । तबहिं हयको दे यह विधान ॥

अन्य ।

प०—की देइ मलाई पाव एक । पानीके बाद पुनि दिन अनेक॥
जबलौं न मिटै हय धाँस जान । तबलौं यह दीजे बुधिनिधान ॥
जो खुश्क धाँस धाँसै तुरंग । दे ताहि नमक राई औ भंग ॥

अन्य ।

प०—कचरीकि चारि भारि रलि पिसान।दानाखवायदेयह विधान॥

अन्य ।

दोहा—देउ बहेरे शोधिकै, लोन सु कुटकी संग ।
अजवाइनि सम पीसि दै, जैहै धांस तुरंग ॥

अथ शिरदमके लक्षण व दवा ।

दोहा—करै अधिक दम अश्व जो, जानौ शिरदम तासु ।
ताहि दपटिबो जहर है, रंडीभणित प्रकासु ॥ १ ॥
दुइ सेर प्याज मँगायकै, कतरि पाव भारि लेय ।
नमक डारि तोला दुइक, आशु तुरीको देय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याम अवाधि जल देइकै, तबहीं तुरी खवाय।
आठ दिवस यहि रीति दै, नहिं गरमी डरुलाय॥ ३॥

अन्य।

दोहा—मधु बच गुर्च इंदारुनी, ता फल लेउ मँगाय।
मासा दश सम पीसि दै, शीत श्वास मिटि जाय॥

अन्य।

दोहा—प्रातै खसै भिजाय नित, कइउ रोज सुखकारि।
दाना बाद खवाइये, होय अश्व सुखकारि॥

अथ गर्मीते दम करै तिसकी दवा।

दोहा—दूध सेर लै आठ भारि, चीनी अरु करपूर।
मासा भारि तिहि घोरि दै, तीनि दिवस सुखमूर॥

अन्य।

सोरठा—त्रिफला सेर भिजाय, तासु जोस लै आठ भारि।
घोरि सिता उतनाहि, तीनि दिवस प्यावो गुणद॥

अथ शूनकपाली मगजहीन लक्षण।

दोहा—जो मगमें काँपत चलै, सुधि न रहै जिहि गात।
शून कपाली तुरँग सो, अति पीडै मगजात॥

दवा।

दोहा—सेतू लीजै प्रातही, आधी सहजर लेय।
गोपयसों सम भाग करि, वासर मुनि तिहि देय॥ १॥
गोघृत मिर्च पिसाइकै, सो तुरंगको देइ।
महाबली सो होत है, शूनकपाली खोइ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ गर्म मिजाजकी दवा ।

दोहा—शक्कर ईसबगोल लै, यवपिसान सँग देय ।
शालहोत्रके वचन यह, गर्मीको हरि लेय ॥

अन्य ।

दोहा—दधि गाईको लाइकै, कपरा बाँधि झुलाय ।
पानी वाको झरि गिरै, दाना साथ खवाय ॥

अन्य प्रकार रोग लक्षण व दवा ।

दोहा—मुँह बाये वाजी रहै, मंद अग्नि अरु होइ ।
भूमि खनै अरु पाँय सों, ऐसे लक्षण सोइ ॥ १ ॥
गजपीपरि सैंधव सहित, हींग भरंगी आनि ।
कुटकी और अतीस पुनि, टका टकाभारि जानि ॥ २ ॥
सबै औषधी पीसिकै, छानै कपरा माहि ।
धेनुदूध लै पाँच पल, कवि श्रीधर चित चाहि ॥ ३ ॥
औषधि लीजै एक पल, दूध माहि मिलवाइ ।
डेढ पहर दिनके चढे, औषध देउ पिआइ ॥ ४ ॥
पंचमूल लै बीसपल, आठसेर जल माहि ।
ताहि चढावै आग्नि पर, सात सेर जरिजाहि ॥ ५ ॥
ताहि पिआवै साँझको, कपरा माहि छनाइ ।
रहै औषधी शेष जो, तिलके तैल जराइ ॥ ६ ॥
तैल लगावै देहमें, श्रीधर कहो बखानि ।
या विधि कीजै पाँच दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अथ राजरोग लक्षण ।

दोहा—पित्त हृदयमें बहु बढै, नेत्र अरुण अरु होइ ।
करै पेशाब जु रक्तकी, अरु मल सूखो सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—आवै खाँसी सूखि, शीश लचाये अरु रहै।
देत भूँखको दूखि, दाना घास न खाइ कछु ॥ १ ॥
सूजैं पाछिल पाँइ, दुऔ कोखि मारे रहै।
गूँथी सी परि जाँइ, ता हयकी सब देहमें ॥ २ ॥
पानी बहुत सुहाय, थानविषे अति सुख रहै।
ये लक्षण दरशाइँ, राजरोग सो जानिये ॥ ३ ॥

दवा।

दोहा—पीपरि लौंग कपूर अरु, बडी इलाची आनि।
स्याह श्वेत जीरा दुवौ, केसरिनाग बखानि ॥ १ ॥
ज्यानोरी जैफर सहित, चंदन कहो उशीर।
वंशलोचनहि लीजिये, सकल हरत है पीर ॥ २ ॥
लेउ मिर्च कंकोल अरु, अगरु तगरुको आनि।
कमलगटा पुनि लीजिये, येती औषध जानि ॥ ३ ॥
चारि चारि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ।
मिश्री लीजै एक पल, सबको पासि मिलाइ ॥ ४ ॥
षट तोले यह औषधी, जलमें पीसि मिलाइ।
चारि घरी दिनके चढे, हयको देउ पिआइ ॥ ५ ॥
दिन यकइसलौं अश्वको, या औषधिको देउ।
सीतारामप्रतापते, वाजी नीको लेउ ॥ ६ ॥

अथ पीनसरोग लक्षण व दवा।

दोहा—कीडा परत दिमागमें, गिरत नाकते आइ।
बहुत गंधि नासा करै, विकल अश्व दरशाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा ।

दोहा—जर लटजीराकी सहित, बीज कसौंजी आनि ।
कारीजीरी लुहचनै, दीजै गोघृत सानि ॥ १ ॥
टका एकभारि औषधी, दोइ टकाभारि घीउ ।
या विधि दीजै पाँच दिन, सुखी होइ हयजीउ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बरुणकटैया जर सहित, सेर सेर मँगवाइ ।
फिरि जल बारह सेरमें, ताको लेउ चुराइ ॥ १ ॥
तीनि सेर बाकी रहै, लीजै ताको छानि ।
पिपरी पैसा पाँच भारि, डारै तामें आनि ॥ २ ॥
ताहि कराही माहि करि, दीजै अग्नि चढाइ ।
सहत डारिये एक पल, जब गाढो ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
यवके आटा संगमें, दीजै दिनप्रति सात ।
दाना यवको दीजिये, साँची मानौ बात ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—गंधित पारिमल आनिकै, ताको रांग कढाइ ।
फूँकि देइ नथुना विषे, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—जलसों घोरि कपूरको, डारै नथुना माहिं ।
साँची मानौ बात यह, कीट सबै झरि जाहिं ॥

अथ गंडमाला ।

दोहा—गरेमाहि गूंथी परैं, स्रवै रुधिर तिन माहिं ।
गूंथी नीकी होइँ जो, वैसिय फिरि ह्वै जाहिं ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धनियां मिरच कपूर अरु, तिनको लेउ पिसाइ ।
टका एक भारि औषधी, ताको अर्क कढाइ ॥ २ ॥
सो लै डारै कानमें, लुबुदी देइ खवाइ ।
या विधि कीजै पाँच दिन, रोग नाश ह्वै जाइ॥ ३ ॥
दाना दीजै मूगको, श्रीधर कहो बखानि ।
हरी दूबको दीजिये, दिन चौदहलौं आनि ॥ ४ ॥

अन्य

दोहा—मेंहदी पिपरी सोंठि अरु, चँदसुर दाख मँगाइ ।
पुनि जर लीजै उरदकी, लोध सहित कुटवाइ ॥ १ ॥
टका टका भारि औषधी, चौगुन जलमें डारि ।
ताहि पकावै अग्नि पर, मंद आँचको वारि ॥ २ ॥
चौथा हिस्सा जल रहै, लीजै तबै उतारि ।
ताहि छनावै बसनमों, सहत टका भारि डारि ॥ ३ ॥
या विधि ताको पाँच दिन, मूँगमहेला देउ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, बाजी नीको लेउ ॥ ४ ॥

अथ अंडसूजनि ।

सोरठा—शोथ अंडमें होइ, छुवत माहिं जूडो लगै ।
शालहोत्र मत सोइ, शिरा अंडकी बेधिये ॥

अन्य ।

पिपरी मिर्च अतीस बच, कूठ रेणुका आनि ।
सोंठि सहित सब औषधी, टका टका भारि जानि॥ १ ॥
औषध पैसा तीनि भारि, प्रातहि देउ खवाइ ।
टका एक भारि औषधी, तिलको तैल मँगाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोले तीनि मिलाइकै, दुऔ कान डरवाइ ।
पांच रोजके भीतरै, अंडवृद्धि मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य प्रकार राजरोग ।

दोहा—अंग होइ दुर्बल सबै, फाटि जीभ गइ होइ ।
बाई होइ शरीरमें, भूँख प्यास नाहिं सोइ ॥

अन्य ।

चौपाई—देत लगाम सदा दुख पावै । छाहीं ताको बहुत सुहावै ॥
भौंहन ऊपर गडवा होई । तरुण होइ तो जीवै सोई ॥
दोहा—कष्टसाध्य सो जानिये, तरुण तुरी जो होइ ।
जानौ वृद्ध असाध्य है, ऐसे लक्षण सोइ ॥

दवा ।

दोहा—तीनि टका त्रिफला वजन, चीत टकाभरि आनि ।
रंडी गूदी लीजिये, चारि टका भरि जानि ॥ १ ॥
टका एक भरि औषधी, षोडशगुण जल जानि ।
काढा कीजै तासुको, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥
दोइ टका भरि जल रहै, लीजै ताहि छनाइ ।
मदिरा डारै एक पल, हयको देउ पिलाइ ॥ ३ ॥
वा अदरखरस डारिकै, औषध दीजै प्रात ।
दश पल आमिष सुअरको, की स्याहीको तात ॥ ४ ॥
खूखो ताहि भुँजाइकै, मध्यादिवसको देइ ।
दाना दीजै तीस पल, वाजी नीको लेइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—सरवनि पिथवनि हर्र पुनि, पित्तपापरा आनि ।
लीजै वायविडंग पुनि, भाग समान बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोघृत ताहि मिलाइकै, दीजै ताको नासु ।
यह औषध करु रातिको, रोग नाश अति आसु ॥ २॥

अन्य ।

चौ०—दश पल रक्त छागको लीजै । चारिटका भरि पानी कीजै॥
दोइ टका भरि गोघृत लेऊ । सैंधव पैसा यक भरि देऊ ॥
दोहा—सबको मिलवै एकमें, हयको देउ पिआइ ।
चौदह दिन या विधि करै, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥

अथ कान बाहिर होइ तिसकी दवा ।

दोहा—टका एक भरि लीजिये, लाही तैल मँगाइ ।
रंडपातको अर्क पुनि, ता सम लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
हींग सोंठि मूरीबिया, नौनौ मासे लाइ ।
रंडपातके अर्कमों, टिकिआ तासु कराइ ॥ २ ॥
अर्क सहित जो तैल है, दीजै अग्नि चढाइ ।
गर्म खूब जब होइ वह, टिकिया देउ डराइ ॥ ३ ॥
सोरठा—टिकिया देउ जराइ, काढि डारिये ताहि फिरि ।
राखै तैल धराइ, नितप्रति डारै कानमो ॥
दोहा—तीनि रोजके भीतरै, बधिर कान खुलि जाइ ।
शालहोत्र मत देखिये, श्रीधर वर्णो आइ ॥

अथ तिल्ली बढिजाइ तिसकी दवा ।

सोरठा—हय असवारी माहि, कमर लगावत चलत है ।
चढो न ताते जाहि, ऊँचि भूमि पर वाजिसों ॥
दोहा—ताकी दोनों कोखिमें, खडो दाग दगवाइ ।
फिरि वाजीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोंठि मिरच पीपरि सहित, और सोहागा आनि ।
सज्जी चीता नमक पुनि, भाग बरोबरि जानि ॥ २ ॥
षट तोले यह औषधी, तामें सहत मिलाइ ।
सात रोज लगु वाजिको, रोज खवावत जाइ ॥

अथ पैरके नस्तर रोगका लक्षण व दवा ।

चौपाई—चला न जाय उतानै गिरै । धरती पाउ देत नाहिं परै ॥
धीरा पाँव धरत अति गाढो । चलते गहबर रहिगा ठाढो ॥
एते लक्षण जीमें आनि । सो नस्तर लीजै पहिंचानि ॥

दवा ।

चौ.-सैंधव बच अजवाइनि आनौ । वाइम नस्तरसहि निजजानौ ॥

अन्य खानेकी दवा ।

चौपाई—बायविडंग पीपरी लावै । पिपरामूल सौंफ मँगवावै ॥
पाँच पाँच टंके सब लीजै । कूटि छानि मैदा करि दीजै ॥
प्रात खवावै घोडे आनी । वाइमनस्तरसहि निज जानी ॥

अन्य ।

चौ०—गोघृत औ तिल तेल मँगावै । चहूं चरण मालिसि करवावै ॥
यहि विधि मर्दन कीजै प्राता । निर्मल होइ अश्वको गाता ॥

अथ अपररोग पाँवसूजनेका ।

सोरठा—काटै जो निज पाँव, सूजैं चारौ पाँव शिर ।
याको करौ उपाव, शालहोत्र मुनि जो कहो ॥ १ ॥
खुरासानि बच आनि, वै चाँदी अरु खिरहरी ।
और चिरेता जानि, देवदारु सम टंक दश ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घृतसों सबन मिलाय, जो दीजै हयको सुघर।
रुजको देय नशाय, शालहोत्र मुनिके मते ॥ ३ ॥

अथ विषबेलि कुष्ठ।

दोहा—पहिले लोहू काढिये, चौबंदी रग खोल।
पीछे औषध कीजिये, शालहोत्रके बोल ॥

चौ०-प्रथम भेलावाँकी विधि कीजै। एक एक बढि सौलग दीजै॥
सौते एक एक कम करै। एक रहै तब मलहम धरै ॥

मलहम।

चौपाई—पात बबूर नींबके लीजै। मेषशृंगकी भस्म करीजै ॥
मुर्दाशंख सोहागा लावै। अजै क्षीरमें खरल करावै ॥
खैर पापरी सेंदुर सानै। सर्षपतेल मोमको आनै ॥
सबको खरल करौ दिन एका। मलहम कीजै बुद्धि विवेका ॥
अंग अश्वके लेपन करै। सो विषबेलि कुष्ठ सब हरै ॥

अथ चमडा सख्तकी तरकीब।

दोहा—सख्त चर्म होवै जहाँ, तौ घृत नमक मिलाय।
कई रोज लावै तहाँ, ह्वै पपरी गिरि जाय ॥ १ ॥
तौ फिटकरी लगाइ बहु, पीसि महीन सुजान।
अतिही सुख पावै तुरँग, भाष्यो सुमति प्रमान ॥ २ ॥

अथ पित्ती उखरैके लक्षण व दवा।

दोहा—परैं ददोरा गातमें, बहुत भाँति अलसाय।
ताको पित्ती कहत हैं, जतन किये रुज जाय ॥ १ ॥
केंचुलि लेउ छटाँक यक, गेरू आधा पाव।
गुड यक पाव मिलायकै, घोडे प्रात खवाय ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य मत ।

दोहा—बहुत ददोरा वाजितनु, अकस्मात परि जाहि ।
की असवारीमें परैं, पित्ती जानौ ताहि ॥ १ ॥
लोनु घोरिकै देहमें, प्रथमहि देउ लगाइ ।
ता पाछे औषध कहौं, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—दुइ दुइ तोले लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ ।
खील सोहागाकी बहुरि, मासे छा मँगवाइ ॥
सोरठा—हरिको देउ खवाइ, मिटै ददोरा देहके ।
रोग नकि ह्वै जाइ, शालहोत्र यह है कहो ॥

अन्य ।

दोहा—बाँसपात लै सेर दश, जलमों ताहि उसेइ ।
सगरी देहीं वाजिकी, धोइ तासुते देइ ॥

अग्निमें जरै तिसकी दवा ।

दोहा—कुचिलि पिआजैको सुघर, रस सब लेइ निचोय ।
जरो जहाँ व्रण पाइये, तहाँ ताहि चुपरोय ॥

अथ बोगमारोग लक्षण व दवा ।

दोहा—मनमलीन अतिही विकल, बहै पसीना जोर ।
ईश दयाते हय बचै, बोगमा मारो जोर ॥
चौपाई—बहुत पसीना हयके छूटै । सर्व अंगते धारा फूटै ॥
पहर एक दुइमा मारि जाही । नकुलमतो यह संशय नाहीं ॥
ताकी दवा करो ततकाला । रोग जानियो हयको काला ॥
आँवाकी बहु भस्म मँगावे । लै लै अश्व बदन मलवावे ॥
सूखे स्वेद साध्य तब जानो । नहिं सूखे असाध्य अनुमानो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—दुइ गुल दोउ श्रुति भीतर दागै। एकै गुल दुमनोकमें लागै॥
चालिस दिन नाहिं दाना देवै । बचै तौ फिरि नाहिं बोगमा होवै ॥

अन्य ।

चौ०—ब्रिनुआँ कंडा भस्म करावै । आँवाँ राख ताहि मिलवावै ॥
दोनों भस्मकि मालिसि करै । अंग पसीना हयको हरै ॥
सिंगरफ गुटिका मुनिवर भाषो । सर्वरोगपर सो पुनि राखो ॥
गोली चनाप्रमान खवावै । अश्वरोग सब दूरि करावै ॥

अन्य ।

चौ०—निंबुकागजीको रस लाई । लेउ पिआज अर्क निकराई ॥
और पुदीनाको पिसवावै । तीनों तीनि छटाँक मिलावै ॥
चनाके आटा साथ खवाई । रोग अश्वको सकल बिहाई ॥

दोहा—एक ग्रंथमें जानिये, बोगमा नाम बखानि ।
दूसर मत अब कहतहौं, अरष नाम सो जानि ॥

अथ कमरी घोडाके लक्षण ।

दोहा—नीचेते ऊंचे सुघर, चाबुक मारि चढाय ।
साफ चढै नाहिं कमर कज,अडि कमरी लखि जाय ॥ १ ॥
निशिमें थाने बैठियो, साफ उठै कज नाहिं ।
ठहर उठै कमरी लखै, तजै तुरत लखि ताहि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—पाँच महीनेको सुमाति, पुष्ट वराह मँगाय ।
तीनि भाग कारि एक लै, रांधि मसाला नाय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेर एक गेहूं मिलै, पकि सीरो ह्वै जाय ।
तौ हालिम मैदा बनै, आध सेर तहँ नाय ॥ २ ॥
चालिस रोज खवाइये, नितको वजन बनाय ।
राखै खूब उठाय पट, कमर ऐब मिटि जाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०—लहसुन और भेलावँ जवाइनि। दुइ दुइ सेर करो यक ठाइनि
हाँडी मध्य भरावो भाई । तेल पताल यंत्र निकराई ॥
विधिसों हाँडी छिद्र करावे । लहसुन और भिलाउँ भरावे ॥
ताके नीचे दूजी हाँडी । अजवाइनि तामें धरु भाँडी ॥
वाको तेल जवाइनि खपवै । तौनि जवाइनि घोडे देवै ॥
एक छटाँक देउ जो बुधवर । दवा अजूबा सर्वरोग हर ॥
नव दिन करै दवा मन लाई । शालहोत्र मत दियो बताई ॥

अथ पीठिमें लचका परै ताकी दवा ।

दोहा—लखु घोडेकी पीठिमें, जो लचका परि जाय ।
तौ लै चावर पीच बहु, गरमै थार भराय ॥ १ ॥
पूँछदंडि तिहि बोरिदे, खोलि पछारी देहि ।
झरझराय है झटकि अँग, मिटै लचक सुख लेहि ॥ २ ॥

अथ झोली काढनेकी विधि ।

दोहा—जो झोली काढिबो चहै, तौ यह जतन विधान ।
दाग चारि पारा करै, पसुरीपै बुध जान ॥ १ ॥
पाव एक लै सोंठि अरु, सज्जी आधा पाव ।
पाव उर्द आटा मिलै, रोटी बनै पकाव ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धारि अहराकी अग्निमें, ताको देइ जराय ।
काढि पीसि बारीख करि, पुरिया चालिस ठाय ॥ ३ ॥
जलके साथ खवाइये, नितही नित मतिमान ।
सो झोली निश्चय कढै, रंगी भनित प्रमान ॥ ४ ॥

अथ सरदी गर्मीकी दवा ।

दोहा—सज्जी लौंग अफीम पुनि, अकरकरहको आनि ।
खुरासानि अजवाइनिहि, छा छा मासे जानि ॥ १ ॥
गुग्गुल हालिम कैफरा, खील सोहागा आनि ।
बच अरु हरदी सोंठि ले, यक यक तोले जानि ॥ २ ॥
साबुन तोले दोइ भरि, गुड पुरान मिलवाइ ।
पैसा पैसा भरि सबै, गोली लेउ बँधाइ ॥ ३ ॥
यक यक गोली दीजिये, साँझ सबेरे माहि ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, सरदी गर्मी जाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—सुमिलखार अरु शंखिया, खील सोहागा आनि ।
पुनि अफीम अरु येलुआ, मासे बीस बखानि ॥
सोरठा—सबको भाग समान, दश मासे सज्जी बहुरि ।
तिल दश टंक प्रमान, टंक टंक गोली करै ॥ १ ॥
ताहि खवावै प्रात, सर्दी गर्मी नाश करि ।
क्षुधा अधिक सरसात, हयको दीजै तीनि दिन॥ २ ॥

अथ शीतकी दवा ।

दोहा—सहदेई अरु कूट बच, इन्द्रायनफल चारु ।
दूनी लीजै वारुणी, पिंडा करि निरधारु ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहत सहित दीजै विधिहि, हयको साँझ सबेर ।
अश्व शीत नाशै सकल, कहत नकुलमत टेर ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—गूलरिफल जो लावै आछे । सूकरमांस मिलावै पाछे ॥
औ महिषीदधि मधुहि मिलावै । शीत मिटै हय पेलि खवावै ॥

अथ घोडीके गर्भ न रहत होय तिसकी दवा ।

दोहा—रोहू मछरी साठि पल, थोरी लेउ पकाइ ।
ताके सुरुआ माहिमों, रोटी देउ सनाइ ॥ १ ॥
अरघी घोडी होइ जो, ताको देउ खवाइ ।
औषध कैकै तीनि दिन, घोडी देइ छडाइ ॥ २ ॥
गर्भ रहत है ताहिके, बच्चा नीको होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत सोइ ॥ ३ ॥

अथ बच्चाको देनेकी दवा ।

चौ०—गोघृत तोले तीनि मँगावै । चौबिस रत्ती हींग मिलावै ॥
सो बच्चाको देउ पिआई । दूध हजम ताको ह्वै जाई ॥

अन्य ।

दोहा—निंबूके रस माहिमों, गर्म नीर मिलवाइ ।
सोरह मासे तौलिकै, दीजै ताहि पिआइ ॥

अथ घोडीके दूध न होइ तिसकी दवा ।

चौ०—मैदा मोहूँकी लै आवै । ता सम शक्कर ताहि मिलावै ॥
ताहीके सम गोघृत लीजै । तामें मिलै यैलुआ दीजै ॥
दोहा—डेढ पहर दिनके चढे, यलुआ देउ खवाइ ।
दिन यकइस लै तासुको, दूध अधिक सरसाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यमत अथ घोडेको नवसंगम बार ।

दोहा—रवि गुरु औ बुधवार लखि, घोडीको हय देहि ।
साँझ सकार न दीजिये, सरा होत अच्छेहि ॥ १ ॥
लघु न्याजा जिहि अश्वको, असिल कौमतिहि जानि ।
लघुयोनी घोडी लखै, सुभग जने बच्चानि ॥ २ ॥

अथ घोडी अलंग करकी विधि ।

दोहा—भाँटा और मसूरको, सम करि ताहि पकाय ।
तीनि दिवस घोडी दिये, अतिमस्ती करि जाय ॥

अन्य ।

दोहा—की बासी रोटी दिये, ताहि अलंग जनाय ।
आखिर होत अलंग लखि, तौ घोडा दै जाय ॥ १ ॥
दोष तीनि दिन ताहिको, दाना नहिं देजात ।
गुरु अलंग भराय जो, घोडी नहिं ठहरात ॥ २ ॥
जो गाभिनि ह्वै जाय लखि, कम कम अश घटाय ।
अधिक अशनते दबि गिरै, की शिशु लघु प्रगटाय ॥ ३ ॥
एक दाँय जो प्रगट शिशु, तौ अलंग नहिं काज ।
जने बादि षटदिवसपै, फिरि भराय करि साज ॥ ४ ॥
जो नजीक जानिबो लखै, घृत दे दिन चालीस ।
पाव वजन बलवान शिशु, जनिबो सुगम सुदीस ॥५॥

अथ घोडाकी मस्ती घोडीकी अलंगशांति करनेकी विधि ।

दोहा—बासी जल दश दिवस लै, पोतापर छिरकाय ।
है अजमायो तुरँगकी, मस्ती कम ह्वै जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—कई रोज बासी जलहि, छिरकि योनिपर देइ ।
कारि है दफा अलंगको, कहौं नकुलमत सोइ ॥

अथ घोडा मस्त करनेकी विधि ।

दोहा—घोडीकी मुत्तालिका, निजकरमें भारि लेहि ।
नथुनामें फिरि वाहिके, दे लगाय बल तेहि ॥ १ ॥
तीनि दिवस यहि विधि करै, काम बढै हयगात ।
परखि योनिनेजा सुघर, घोडै कारिकै घात ॥ २ ॥

अथ घोडा झरत होय तिसकी दवा ।

चौपाई—जीरा श्वेत कतीरा लीजै । धनियां वजन बराबरि कीजै ॥
पीसि छानि बुकुनू करवावै । चारि टका भरि साँझ भिजावै ॥
भोर भये घोडेको दीजै । सात दिवसमों नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—धनियां जीरा श्वेत मँगावै । बीजा मेंहदीकेर मिलावै ॥
टका टका भारि साँझ भिजाई । सात रोज उठि प्रात खवाई ॥
दोहा—यवको आटा पाव यक, दवा पीसि सब लेइ ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग दूरि करि देइ ॥

अथ आखता करनेकी विधि ।

दोहा—बच्चा पैदा होय जब, मलि पोता घृत लाय ।
घोडी देखि न मन करै, मध्य जवानी आय ॥

अन्यमत अथ मदन आधिक करन विधि ।

दोहा—बल केवल है वीर्यको, क्षीण वीर्य जब होइ ।
बल ताको तब ना रहै, सुस्त रहै हय सोइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दवा

चौपाई—लै कंकोल केतकी आनै। दाख खांड जेठी मधु सानै॥
घृतसों इनको पिंड बनाई। घोडहि देउ पुष्ट परि जाई॥
दोहा—पीपरि मिर्चै सोंठि पुनि, टका टका भरि लेइ।
मीन मांस पकवाइ घृत, दोइ सेर सो देइ॥
चौ॰मदिरा दधि मधुमाखी आनै। बरियारा सम भाग बखानै॥
यह घोडेको देउ खवाई। छीनो धातु पुष्ट परिजाई॥
दोहा—कपरामें दधि बाँधिकै, सेतुआ ताहि मिलाइ।
आध सेर नित दीजिये, बूढ तरुण ह्वै जाइ॥ १॥
औषध दीजै पुष्टकी, दिन एकइसलौं जानि।
दीजै ताहि प्रमाण करि, कद मोसम पहिचानि॥ २॥

अथ मदहरनविधि।

दोहा—तालमाहिं गहदी विषे, सुर्ख कीट वह होइ।
जीवत लावै तुरतही, टका दोइ भरि सोइ॥ १॥
लीजै सिंहजराव पुनि, खदिर भाँग अरु आनि।
हयको दीजै पाँच दिन, दोइ दोइ पल जानि॥ २॥

अन्य।

दोहा—लेउ फिटकरी दोइ पल, तासम सिंहजराउ।
मासे चारि कपूर पुनि, तामें आनि मिलाउ॥ १॥
हयको दीजै सात दिन, उतरि तासु मद जाय।
दीजै चौदह रोज सो, अति सीधा ह्वै जाइ॥ २॥
सारठा—नील दोइ पल लेइ, तासम लावै फिटकरी।
सात रोज लग देइ, मद बाजीके नहिं रहै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—नीलाथोथा फिटकरी, ताहि कपूर मिलाइ ।
दीजै पैसा एक भरि, तीनि दिवस लगु लाइ ॥ १ ॥
दूबर बाजी जो रहै, करत बदी जो होइ ।
गुड दैकै मोटा करै, होत सीध तब सोइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—झल्लापन बाजी करै, अरु बोलत जो होइ ।
ताकी औषध कहतहौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
आध सेर परमान करि, गोहूँ मैदा लाइ ।
रोटी तासु पकाइ करि, बासी देउ धराइ ॥ २ ॥
मसका लीजै गाइको, पाव सेर सो जानि ।
हयको दीजै सात दिन, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥
सहित कतीरा खदिर पुनि, धनिआँ ताहि मिलाइ ।
हयको दीजै सात दिन, झल्लापन मिटि जाइ ॥ ४ ॥

अथ रंग बदलैकी विधि ।

दोहा—ऐब रहै नाहिं जाहिते, पलटि रंग अरु जाइ ।
शालहोत्र मुनि जो कहो, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि बार मुडाइकै, साबुन देइ लगाइ ।
धोवै कुम्हडा नीरसों, रोज रोज सो लाइ ॥ २ ॥
लीजै साबुन फिटकरी, कुम्हडा नीर मिलाइ ।
खरिल करै सो पहर भरि, ताकी विधि यह आइ ॥ ३ ॥
धरि राखै सो छाँहमें, रोज लगावै ताहि ।
एक मास यहि विधि करै, रंग श्वेत ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य श्वेतरंग करनेकी विधि ।

दोहा—बीरबहूटी लीजिये, एक टका भरि सोइ ।
लेउ निसोदर ताहि सम, बहुत खरा सो होइ ॥ १ ॥
और लेउ हरतारको, जौन तावकी आनि ।
पीसै तीनों एकमें, ताकी यह विधि जानि ॥ २ ॥
खबहा कुम्हडा पेडमें, लाग जहाँपर होइ ।
ताहि छेद करि भरि दवा, बंद कीजिये सोइ ॥ ३ ॥
ताको बौंडा माहिमों, लगा रहै सो देइ ।
पाकि खूब जब जाइ वह, तोरि तासुको लेइ ॥ ४ ॥
जहाँ श्वेत कीन्हों चहै, डारै बार मुँडाय ।
फेरि फिटकरी पीसिकै, तापर देउ मलाय ॥ ५ ॥
वाही कुम्हडा नीरसों, धोवै ताको आनि ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत जानि ॥ ६ ॥

अन्य नील रंग करन विधि ।

दोहा—खबहा कुम्हडा एक लै, पाकि गयो जो होइ ।
भरै ताहि बासन विषे, फाँकी करिकै सोइ ॥ १ ॥
गंधक लीजै सेर भरि, तामें देउ डराइ ।
आगि बरत जहँ नित रहै, दीजै तहाँ गडाइ ॥ २ ॥
गाडो राखै सात दिन, लीजै फेरि निकारि ।
वाही बासन माहिं करि, धरिये तासु सुधारि ॥ ३ ॥

सोरठा—श्वेतरंग जहँ आइ, कियो चहै तहँ श्यामको ।
दीजै तहाँ लगाइ, सात रोज दोनों बखत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—धोवै अठयें रोज फिरि, नील रंग ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मत देखिकै, केशव दियो बताइ ॥

अन्य माथेकी सफेद चित्ती मिटावैकी विधि ।

दोहा—सोंठि बैतरा रगरिकै, अरु हरतार पिसाय ।
कइउ रोज रगरौ सुघर, चित्ती श्वेत मिटाय ॥

अन्य ।

दोहा—यक भाँटाकी काटिकै, पानीमें दे डारि ।
मींजि तासु बापर मलै, मिटै सफेदी झारि ॥

अथ थनीदोष मिटावैकी विधि ।

दोहा—सज्जी चूना जल मिलै, घसि करि थनी लगाय ।
कई रोज यहि विधि करै, थनी दोष मिटि जाय ॥

अथ भौंरी मिटावैकी विधि ।

दोहा—जहँ भौंरी बद देखिये, सो यहि रीति मिटाय ।
तहँकी खाल तरासिकै, सेंदुर तेल लगाय ॥ १ ॥
बार बराबरि निकारि हैं, जो तनिकौ रहि जाइ ।
फेरि दुबारा लाइयो, कहो सुधीन उपाय ॥ २ ॥

अन्यमत वदन पर चित्ती परै तिसकी दवा ।

दोहा—बीज कुसुमके लीजिये, आधसेर परमान ।
ताहि पकाय खवाइये, दाना साथ विधान ॥ १ ॥
कईरोज दीजै तुरँग, चित्ती बदन नशाय ॥
यहि समान औषध नहीं, जो कीजै मनलाय ॥ २ ॥

अथ अकरब सितारा मिटावैकी विधि ।

दोहा—भाल सितारा अकरबै, मेटै यही उपाय ।
घिसि घिसि बार उडाइ दे, हरदी पीसि लगाय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताजि सितरंग सो अंग रँग, बार निकरिहैं चारु ।
युद्धधीर यहि विधि कहौं, शालहोत्र मत सारु ॥ २ ॥

अथ अंगमें बार बढानेकी दवा ।

दोहा—ले पुरान तंदुल पकै, तासु पीच माले केश ।
की चावरको धोवनो, मलै बढैं कच वेश ॥

अथ बछेरा ऊपरका ओठ आपनी ओर ऊपर खींचै तिसकी दवा ।

चौपाई—ओंठ बीचमें जो नस देखै । खडी होय ताको अवरेखै ॥
काटि देइ तबहीं वहि नसकै । हरदी नमक ताहिमें भरिकै ॥
कडुकतैल तामें मिलवावै । दिनमें कइउ बेर चुपरावै ॥

अथ घोडा उन्मीलिकै आगेको हालै तिसकी दवा ।

चौपाई—हींग पलाशबीज मँगवावै । गुड घृत और बिजोरा लावै ॥
मिलै कचूर भाग सम कीजै । आगू हालन मिटै जु कीजै ॥

अथ घोडा जल्द करैकी दवा ।

चौपाई—हरदी दारुहरद ले आवै । अँवरा सरसौं तेल मिलावै ॥
पानी साथ पीसिकै देवै । यकइस दिनमें जल्द करेवै ॥

अन्य ।

चौपाई—दारुहरद हरदी ले आवै । गंधक अँवरासार मँगावै ॥
पाँच पाँच दमरी भरि लीजै । तामें सरसौं तेल करीजै ॥
बासी जलसों पीसि पियावै । नितही नित यह जतन बनावै ॥
शालहोत्र यह वचन बखानै । जल्द होइ अति ही सुख मानै ॥

अन्य चलैकी दवा ।

चौपाई—कुटकी पाव एक ले लीजै । गूगुर और सोहागा दीजै ॥
और अँगथुवा छालि मँगावै । अजमोदा यक भरि सब लावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरदी ले सबकी चौथाई । मासे अर्द्ध अफीम मिलाई ॥
सबन पीसि दिन सात खवावै । पानी एकै बार पिआवै ॥
तबलौं हयको अशन न दीजै । अठयों लावा धान सुकीजै ॥
नवयें दिन बेसन हय पावै । पिंडा सात दिवसतक खावै ॥

अथ अश्वकी बदी वर्णन ।

चौपाई—पानी देखे अधिक डराई । पक्षी उडत चौकरी जाई ॥
तंग कसत पर पाछे गिरै । सरपटमें नहिं फेरे फिरै ॥
होत सवार थान नहिं छाँडै । असवारीमें पाछ निहारै ॥
घोडी देखि न आगे जावै । दगे भुशुंडी पेलि परावै ॥
माजा पकरै उलटै पाछे । करत खरहरा खींचै काछे ॥
शालहोत्र इनको तजि दीनो । ए कारि हैं असवारहि हीनो ॥

अथ ऐब छूटनेकी विधि ।

चौपाई—पानी देखे जो हय उझकै। कारि समीप जलऔगी चटकै
आगेते पाछे बड गल्ला । तुरतै तुरै मारिगा हल्ला ॥
यहि विधि करै मास जब एकै । छाँडि देइ हय जलकी टेकै॥
जो हय पक्षी उडतै भटकै । ताके उपर भुशुंडी चटकै ॥
पग धायेपर करै अवाजै । फेरि कबहुँ नहिं करै अकाजै ॥
तंग लेत जो पाछू टूटै । गांठि फराकी कबहुँ न छूटै ॥
गांठि सवारीते रहै थाने । छाँडि देउ कछु दिवस बिताने ॥
मुँहका जोर न मानै घोडा । खारदार दुइ दै मुख तोडा ॥
श्वेत दूब घृत लै मुख मलिये । रोगके रुकै चलाये चलिये ॥
असवारीसों फेरि लै आवै । पत्थर चून कपोल लगावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगे देइ सईसै वासै। पाछे जाइ तुरैके पासै॥
रुकतीबेर चाबुकै मारै। कबहुँ तुरी अड थान न करै॥
जो घोडा आननकर काचो। आल बराबरि देइ कमाचो॥
बागजेर बँद ढीली वाके। कबहुँ तुरै पाछे नहिं ताके॥
घोडी दोखि तुरँग जो अडतो। ताको नकुल मसाला पढतो॥
खरी जु लीदि खैरकी बुकनी। सात दिवस लौं दीजै धुकनी॥

अन्य।

चौपाई—लकरीमेंको कीरा खावै। तनुते मदन दूरि ह्वै जावै॥

अन्य।

चौपाई—अंड चिराय आखता कीजै। जासों तुरी बदी नहिं कीजै॥
दगे भुशुंडी जो हय भागे। ताके निकट खवाइसि दागे॥
जा दिशि जाय वही दिशि दागै। चौंक छुटै कबहूँ नहिं भागै॥

अन्य।

चौपाई—मोजा पकरि करै यहि कामै। चाम तोंवरी घालि लगामै॥
मुँह मारते तोंबरी अडिहै। कबहुँ तुरंग न मोजा धरिहै॥

अन्य।

चौपाई—करत खरहरा जो हय पकरै। घास समीपै खंभा जकरै॥
नुकता ऐंचि खंभ ढिग करै। कबहूँ तुरँग सईस न धरै॥

अन्य।

दोहा—मारै पुस्तक जो तुरँग, देइ सवार गिराय।
कर सँभारि कोडा हनै, ताहि बुलंद चढाय॥ १॥
चढत चलबली जो करै, चढै न देइ सवार।
थोर अशान बाहब अधिक, चढि उतरै बहुबार॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गृह साँकरमें मेलि है, राखै तहँ जन कोय ।
एक हूल मारै सँभारि, मिटै तासु बद खोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अधिक चलाकी चलवली, बल दिमाक जिहि माहि ॥
मध्य सवारी अड करै, तासु भेद अस आहि ॥ १ ॥
दौरावै बहु तुरगको, जबलौं कूबति ताहि ।
थकित होय जब तुरँग बल, खोवै गति सो ताहि ॥ २ ॥

अन्य बदी छूटैकी धूप व अंजन ।

दोहा—दुष्ट अश्वहित मंत्र अरु, यत्न पूर्वही उक्त ।
धूपांजन अब कहत जो, करो मुनीश प्रयुक्त ॥ १ ॥
बीछि डंक अरु अस्थि लै, अतिकराल अहिमेल ।
सिद्धि करै घृत सानि सब, विषम धूप करि खेल ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—दुवौ इलाची अगर लै, अरु उसीर बुध आनि ।
अहिकेसरि चंदन गुरच, तैल खजूरिहि सानि ॥ १ ॥
अनल डारि धूपित करै, दुष्ट अश्वके पास ।
सकल बदीको मूलते, कारकं तुर्त्त विनास ॥ २ ॥
तीसर विष लोबान लै, दधि घृत चंदन तेल ।
मेलि गदैला धूप करि, दोष अश्वको ठेल ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—गोमै है सब संधिमें, लेपि निशीथ प्रभात ।
धूपित करि लहि अष्टमी, दुष्ट साधि है जता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य बदी छूटैको नासु ।

चौ०—लघु सुंठी अरु सैंधव लीजै । पीसि महीन सुजलसों दीजै॥
नासु देय नथुनाके माहीं । बदी छूटि बहु सुख उपजाहीं ॥

अथ लारबहैकी दवा ।

छंद मंदिरा—वारुणीको लेउ बुधजन, और मिश्री जान ।
सहत औ निंबू बिजौरा, चारु चारु समान ॥
सबनको यक ठौर कारि, जल कूप लेउ पचाइ ।
उदर कृमि अरु लार नाशै, क्वाथ देइ पिआइ ॥

वारुणी विधि ।

दोहा—लै अंगूर कि दाखको, मदिरा करौ सुजान ।
ताको कहिये वारुणी, नकुलमते परमान ॥

अथ मसाहरण विधि ।

दोहा—जा वाजीकी देहमें, मासा जो परिजायँ ।
काटेते सो ना मिटैं, होहिं फेरि ह्वै जायँ ॥ १ ॥
अदरख गांठी चारि लै, सीपचून मँगवाइ ।
सेंकि सेंकि रगरै बहुत, तौ मासा मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—चोंगली कागदकी करै, मासा ऊपर लाइ ।
एक तरफ मो ताहिको, दीजे आगि लगाइ ॥ १ ॥
सब चोंगली जरिजाय जब, मासा तब नाशिजाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, गुखुरू बहुरि नशाइ ॥ २ ॥

अथ वादी वायुसीरके लक्षण व दवा ।

दोहा—क्षण क्षण वह अपशब्दको, करत तुरी जो होइ ।
ये लक्षण सो जानिये, वायुसीर है सोइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घिउ गाईको पावभरि, गोहूँ रोटी माहि ।
दीजै चालिस रोज तक, वायुसीर मिटि जाहि ॥ ॥

अथ कीरापरैका मलहम ।

दोहा—लीजै चूना सीपको, सोतौ तोले चारि ।
मासे छा पुनि तूतिया, लीजै तामें डारि ॥ १ ॥
लीजै तेल छटांक भरि, तिलको कहौ बखानि ।
रार सफेदा दुहुँनको, तोला तोला जानि ॥ २ ॥
नींब सँभारु बकायनहि, और सरीफा जानि ।
पाती लीजै सबनकी, पुनि भँगराकी आनि ॥ ३ ॥

सोरठा—तिनको रँगनु कढाय, तीनि तीनि तोले सबै ।
राखै तिनहिं धराय, अब मलहमकी विधि कहौं ॥

दोहा—रार चून पुनि तैल घृत, कांसे थारी माहि ।
एक उपर शतबारलौं, जलसों धोवै ताहि ॥ १ ॥
अर्क सबै तब डारिकै, फिरिकै धोवै वाहि ।
डारै औषध फिरि सबै, जब सफेद दरशाहि ॥ २ ॥
कीट होइ जिस जखममें, डारै कीट निकारि ।
लावै मलहम जखमपर, दिनमें बेरा चारि ॥ ३ ॥
फेरि परत नाहिं कीट हैं, जखम सूखि अरु जाइ ।
शालहोत्रमें देखिकै, केशव वर्णे आइ ॥ ४ ॥

अथ बहुत रोग हरण औषध ।

दोहा—पात धतूर मदारके, ग्यारह ग्यारह आनि ।
मिर्चैं लीजै स्याह पुनि, सौ अरु सोंठि बखानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मासा एक अफीम पुनि, समुदखारको लाइ ।
दोऊ एक समान करि, पात सहित पिसवाइ ॥ २ ॥
गोली बाँधे तासुकी, झलबेरी परमान ।
दीजै साँझी बेर यक, गोली एक बिहान ॥ ३ ॥
दाना देकै साँझको, गोली देउ खवाइ ।
गोली देकै भोरही, देउ नहारी लाइ ॥ ४ ॥
सनिा जाको बंद है, अरु मटकानि जो होइ ।
सर्दीको नाशत अहै, कफको डारै खोइ ॥ ५ ॥
सर्दीके महिना विषे, अति गुणज्ञ सो आहि ।
शालहोत्र मत देखिकै, श्रीधर वर्णो ताहि ॥ ६ ॥

अथ जिसकी कमर मटकति होइ तिसकी दवा ।

दोहा—नकछिकनीको लीजिये, षटमासे मँगवाइ ।
दुइ दुइ तोले लीजिये, हर्दी सोंठि मिलाइ ॥ १ ॥
तोलाभरि पुनि मिर्च ले, सबको लेउ पिसाइ ।
मुर्गी अंडा एक ले, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
जानो यक मौताज यह, सातरोज लगु देइ ।
दीजै दोनों बखतमें, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥
औषधि देकै वाजिको, घटिका चारि बिताइ ।
तब दानाको दीजिये, तुरी नीक होजाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—हर्दी तोले तीनि भारि, गूगुल तोले दोइ ।
मांस एक खरगोसको, की सियारको होइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आधपाव घिउ माहिमो, थोरो ताहि पकाइ ।
सबै औषधी पीसिकै, तामें देउ मिलाइ ॥ २ ॥
लीजै बँगलापान पुनि, यकतालीस मँगाइ ।
औषधमाहिं मिलाइकै, यहको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
कही एक मोताज यह, सो दीजै दिन सात ।
दाना दीजै नाहिं तिहि, तुरी नीक ह्वै जात ॥ ४ ॥
पिछले दोनों पाँइ जो, तुरी घसीटत होइ ।
ताके भीतर पाँवकी, रगै दगावै सोइ ॥ ५ ॥

अथ मलग्रहणी लक्षण ।

दोहा—जो पियरो पानी गिरै, मुख अरु नासा माहि ।
मलग्रहणी लक्षण निरखि, यतन करौ हय चाहि ॥
चौ०—मधु अरु दूध मिलायक दीजै । मलग्रहणी ताकी हरिलीजै॥

अथ शिथिलतारोग देहमें काम न रहै ।

दोहा—बीजा लेउ पलाशके, टंक एक मँगवाय ।
बीज केवाँच समान लै, सैंधव टंक मिलाय ॥ १ ॥
गोघृतके सँग दीजिये, जाय शिथिलता रोग ।
औषध करै विचारिकै, भाषत कोविद लोग ॥ २ ॥

अथ विषशोधन विधि ।

दोहा—बिन शोधे विष औषधी, खान न दीजौ मीत ।
अति दुखदायक होति है, करत जीव भयभीत ॥
सोरठा—सुमिलवार ले जानि, जहर शंखिया होत जो ।
सुनौ सकल बुधवान, विष शोधनका जतन अब ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—प्रथम शंखियाकी विधि जानौ। एक टका भरि सो परमानौ॥
फिरि अमलोनियाँको मँगवावै। चारि टका भरि सो तौलावै॥
दोनों इकमे खरिल करावै। एक पहर मौताज बतावै॥
पतरी पतरी टिकिया करै। घामें सुखे और विधि धरै॥
लीजै अजयादूध मँगाई। एकसेर पक्के तौलाई॥
इक माटीकी हाँडी लावै। दूध डारि तिहि आग्रे पकावै॥
टिकिया कपरा पोटरि बांधै। डोरा कासि हाँडीबिच साधै॥
दूधमें बूडी पोटरी राखो। डोलयंत्र या विधि कहि भाखो॥
जस जस दूध कमी ह्वै जावै। तस तस पोटरीको सकिलावै॥
दूधके बाहर जबै निकारी। कपराकी तह करु तब चारी॥
तामें पोटरी फेरि बँधावै। वाको ऐसो जतन करावै॥
पाव एक रस छिरका लावै। तिहिमाँ डोलयंत्र पकवावै॥
चौथाई छिरका रहि जावै। तब उतारि टिकिया जल ध्वावै॥
करिकै साफ सुखैकै धरै। सुमिलखार या विधि अनुसरै॥

अथ काषादि विष शोधन।

सोरठा—करियारी बछनाग, और सिंगिया हरादिया।
पुनि कुचिला निर्दाग, काष्ठादी विष जो सबै॥

चौ०—प्रथम एक विष शोधन कीजै। ताको तौलि टका भरि लीजै
पानी पांचसेर मँगवावै। महिषाको गोबर लै आवै॥
माटीकी हाँडीमें भरै। कंडा आँच याम त्रय करै॥
जल जरि जाय और फिरि भरै। जहर धोयकै कतरा करै॥
चारि टका भरि लै चौंराई। मूल सहित लीजो पिसवाई॥
सेरक पानीमें घुरवावै। कतरे जहर डारि पकवावै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहर सवा इक आँच करावे । फेरि उतारि ताहि धुलवावे ॥
कपरामें पोटरी करवाई । अजयादूध डेढ स्यर लाई ॥
हाँडीमें भरि अग्नि पकावे । तिहिमा डोलयंत्र करवावे ॥
जस जस दूध घटे हँडियामें । तस पोटरी सकिलावे वामें ॥
दूध जबै थोरा रहि जावै । पानी मा तब ताहि धुवावे ॥
घामें सुखै धरौ तब भाई । दवा माहिं याको डरवाई ॥
याही विधि सब विष शोधवाई । काचिलै माति डारौ चौराई ॥

अथ काढा सर्वरोगपर ।

छंद हरिगीतिका–भृंगराजहि लै भलीविधि मांसपिंडहि आनि ॥
लेउ फल इंद्रायनीके औ पुरनवाँ मानि ।
बेल लोधो लाख लैकै सैंधवे सब सानि ॥
कूपजलमें औटि लीजै अष्टअंश प्रमानि ।

दोहा–सिद्धिअर्थ काढा कहो, वाजिनके सुखहेत ।
अंगरोग नाशै सकल, तुरँग बली बहु होत ॥

अन्य ।

छंदतोमर–लै मोथ महुआ पात । अरु नागकेसरि तात ॥
सम लोन सेंहुडा दूध । कारि काथ देउ अमुग्ध ॥
सब मिटैं वाजी सोग । तहँ हरैं बाइस रोग ॥
यह मानि लीजो मित्त । अति होय चंचलचित्त ॥

अन्य ।

छंद छप्पय–दारु हर्द अरु सहत लेउ सैंधव समान करि ।
सर्षप सरस सफेद खाँड सौंफ मिलाय धारि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औंरा सम करि देउ लेउ इमि फूल फिरंगहि ।
सम करि तुलसी बीज डारि औषधके संगहि ॥
कीजे क्वाथ कूपजलले सो अंश तीसरो दीजिये ।
वात पित्त कफरोग जे सब अश्वके तनु छीजिये ॥

अन्य—छन्द भुजंगप्रयात ।

सुँठी हर्र लेकै सुमोथा मिलावै । तहाँ फालसी मांस पिंडा रलावै ॥
सत्रली हरिद्रा मालती मिलावै । इकबारमें तीसरो अंश प्यावै ॥
सोरठा—सन्निपात मिटिजाय, नशै तीजरो वाजिको ।
बहु उपचार बनाय, भाष्यो ग्रंथन नकुलमत ॥
चौपाई—महुरेठी औ केसरिनागा । लेउ भेलावँ पात रज भागा ॥
शंखाहूलि बहेरे लेहू । त्रिफला तहि युक्त करि देहू ॥
क्वाथ वाजिको दीजो चारू । धाँस मिटै सुधकर सारू ॥
दिन दिन सबल करै उत्साहा । जानिलेउ काढा नरनाहा ॥

अथ पिंड सब रोगनाशन ।

छंद—कुटकी जेती लीजिये महुरेठी पिपरी प्रमान ।
वच पीसिके मोथा मिलावहु पंच अमृत ज्ञान ॥
पिंड याको देउ हयको रोग अंगन सब नसै ।
पुष्ट होय मुनीन्द्र भाषैं चारु चरणसों लसै ॥
सोरठा—दूरि होत सब रोग, जा वाजीको दीजिये ।
कहत सयाने लोग, शूल आदि मिटिजाँय सब ॥

अन्य ।

चौ०—केसरिफल श्रीकमलक आनो । तारामखिगिरिकनिकाजानो
ले सबको करि पिंड खवावो । वाजी पवन समान चलावो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

छंदचर्चरी–बच कपूर मँगाय सैंधव कीजिये यक ठाँव ।
सहत पीपरि गुर्च मेलो पिंड याको नांव ॥
देउ प्रथम खवाय वाजी होय हलको अंग ।
शालहोत्र विचारिये यह वरणिये शुभ संग ॥

अन्य ।

चौ०–मिर्च स्याह अरु लहसुन लेहू । केसरिनाग युक्त करि देहू ॥
मास दुगुनमें ठीको करौ । पिंड बनाय अश्वमुख धरौ ॥
दोहा–यह खवाइ सब दुख हरौ, मारग चलै सचेत ॥
शालहोत्र मत पिंड यह, भाषो ग्रंथ निकेत ॥

अन्य ।

छंदहूलना–पतालफिरंग सोबरू मँगाइये ।
पंकज केसरी आनि जँभीर रलाइये ॥
रक्तदोष मिटि जाय सु पिंड बताइये ।
होत तुरी आनंद सो ग्रंथन गाइये ॥

अन्य ।

छंदनराच–तमालपत्र सालिमो सो पुहकरो समानिको ।
तहाँ सो लोध चिरचिरा औ तेंदुवा प्रमानिको ।
करौ सुपिंड दूधमो हरौ सो वातरोगको ।
सो शालहोत्र देखिकै करो जु वाजि भोगको ॥
दोहा–लेउ चिरैता कूटिकै, छिरका मध्य पचाय ।
पिंड खवावै वाजिको, शूल सकल मिटि जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

छंदहरिगीतिका—मूंगको रस औटि लीजे देउ मिर्च मिलाइके ।
सहिंजना रस औटि लीजे देउ नासु बनायके ॥

अथ सर्वरोग नाशन ।

छंदछप्पय—इंद्रायनि फल चारु कमलगट्टा सुलेउ युति ।
शिलाजीत दुइ निंबु नागकेसरि विशाल अति ॥
कमलके फल औ सहत लेउ बुधिवान टंक भरि ।
महुरेठी तिहि युक्त जानि लीजे समान करि ॥
तिहि लेउ सकल घृत अठगुनो शोधि अग्नि परिपक्व करि ।
पुनि देउ वाजी पुष्ट करिहै सबै व्याधि इमि जाय हरि ॥

अन्य ।

दोहा—बाम अंग हय पासुरी, नचि लहसुन होय ॥
दुःख देइ अति शूल करि, गोल कठोरनि सोय ॥
सोरठा—हृदय व्याधि कृश होय, वाजि अग्निसों लीह युत ।
तिनाहिं मिटावे सोय, सो घृत दीजे जो कहो ॥

अन्य—भुजंगप्रयात ।

बहेरे नयेके सोहै चारि आनै । कहो टंक लैके कुसुंभै प्रमानै ॥
तुचा दाडिमै कुमकुमै लै मिलावै।सबै एकके घी गुनै अष्ट लावै॥
करै दूरि आवश्यके चोट नासै । बढै पौरुषै औ हियेमें विलासै ॥
हरै तापको चारु वेगै बढावै । कहौं ग्रंथकी रीति सो प्रीति भावै॥

अथ पित्तशांतिघृत ।

छंद—बचहि करौ जो कूटि सो मेल लाइये ।
अजयाघृत लै प्रमाणसों सब मिलाइये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अग्निमाहिं परिपक्क सो अश्व खवाइये ।
पित्त शांति करिदेत सो ग्रंथन गाइये ॥

अथ खजुलीघृत ।

छंद–त्रै हरदयुत करि जानु गंधक मैनशिलयुत आनिये ।
पुनि तिगुन ले नवनीत ताते यहै घृत्त बखानिये ॥
परिपक्क याको करहु नीको तुरी देउ बनाइकै ।
जाइ खजुरी वाजितनुकी अंग अंग मलाइकै ॥

अन्य–चौपाई ।

सहत निंबु नखगुलको आनौ । घिउ परिपक्क अठगुणौ जानौ ॥
तिनमें औषध चारि मिलावै । रोग मिटै हय पेलि खवावै ॥
दोहा–जिहि प्रकार सब नकुल मत, घृतको कह्यो विधान ।
रोचक चारु तुरंग हित, वरणो सुकवि निधान ॥

अथ बछेरा आरोग्य करण विधि ।

छंद–विन ऐब बछेरा कियो चाहि । नित भूँजि सोहागा देइ ताहि ॥
मासा तीनिक पानी मिलाय । सबरोग दूरि करि तुरँग खाय ॥

अन्य–छंद ।

चारौ बँदके भीतर सुजान । दागे द्वै द्वै खत करि प्रमान ।
बिन ऐब बछेरा होत आसु । कीजै सुधारि यह रीति तासु ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत फुटकररोगवर्णनो नाम
अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ षटऋतुके नासु वर्णनम् ।

दोहा—वात पित्त कफते सुमति, उपजे तुरै अजार ।
वरणौं तासु विनाश हित, नासु छ ऋतु उपचार ॥

वसंतऋतु ।

चौपाई—मीने मेष बसंत बखानौं । मास चैत बैशाख सुठानौं ॥
नींबपात रस लेउ निकारी । मोथा सोंठि बूँकि तिहि डारी ॥
पात दतूनि गर्मपै गेरै । नासु दिये रुज हनत घनेरै ॥

अन्य ।

चौ०—महुआ अरु इंद्रारुनि लावै । खाँड और परवर रस नावै ॥

ग्रीष्मऋतु ।

चौ०—वृष औ मिथुन ग्रीषमै भाखो । मास ज्येष्ठ आषाढ सुराखो ॥
ग्रीषम पिपरामूल मँगावै । ताको कपरछान करवावै ॥
थोरा जल मिलायकै दीजै । नासु दिये सब रोगै छीजै ॥

वर्षाऋतु ।

चौ०—कर्क सिंह वर्षाऋतु जानौ । सावन भादौं मास बखानौं ॥
नींबपात वेतरा मँगावै । दुकरा दुकरा भरि सम नावै ॥
जलसों पीसि नासु दे भाई । पावसमें सब रोग विहाई ॥

अन्य ।

चौ०—खाँड सफेद सहज सम लीजै । पीपरकी जर तामें दीजै ॥
ढाई ढाई टंक सुआनो । पीसि नासु दीजै मतिवानो ॥

शरदतुऋ—चौपाई ।

कन्या तुला शरदऋतु कहिये । आश्विन कातिकमास सुलहिये ॥
इंद्रजवा अरु जवाखार बच । तामें मिले धतूर नासु रच ॥
सरदीऋतुमें हयको दीजै । नाशै रोग परम सुख लीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिमऋतु—चौपाई ।

धन वृश्चीक शिशिर ऋतु वरनौ । अगहन पूषमास सो जानौ ॥
पिपरामूरि बूँकिकै छानै । तामें बकरीमूत मिलानै ॥
हिमऋतु नासु वाजिको दीजै । होय सुखी आतिही दुख छीजै ॥

शिशिरऋतु—चौपाई ।

मकर रु कुंभ शिशिर ऋतु कही । माघ फाल्गुन महिनासही ॥
दाडिमरस कटुतेल मिलावै । अपामार्ग गोमूत्र मँगावै ॥
लै झालरि जर सहित विधानै । नासु देइ शिशिमें सुख मानै ॥

अन्य ।

चौ०-लहसुन पिपरामूल हि लावै । मुंडी अहिकेसरि लै नावै ॥
सबको पीसि नासु हय दीजै । होय सुखी तनु रोगहि छीजै ॥

अथ सितंगको ना ु ।

चौ०—मुंडी सिता तालदल लीजै।पीसि कूपजलसों तिहि दीजै ॥
दीन्हें नासु तुरै सुख मानै । प्रबल सितंग तुरत ही भानै ॥

कफते रोग होय ताको नासु ।

चौपाई—अँवरा आँविलबेत लै आवै । अजामूत्र गोमूत्र मँगावै ॥
लोन सबै समभाग मिलावै । जलसों पीसि नासु सुख पावै ॥

अथ वातरोगको नासु ।

चौपाई—हर्रकि बकली फोरिक लीजै । पानीके सँग नासु करीजै ॥
वातरोगको तुरत नशावै । शालहोत्र वह नासु बतावै ॥

अन्य ।

चौपाई—अजामूत्र कटुतेल मिलावै । की गोमूत्र तैल सँग भावै ॥
वातरोग यह नासु बिनाशै । शालहोत्र मुनि सार प्रकाशै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य।

चौपाई—अपामार्ग पानीसों पीसै। नासु दिये अतिही सुख दीसै॥
शालहोत्र यह सार बतावै। नासु दिये वाजी सुख पावै॥

अन्य।

चौपाई—लै अहिफेन पीपरामूरे। बायविडंग नागेश्वर चूरे॥
लै समभाग सुजलसों पीसै। नासु दिये वाजी सुख दीसै॥

अन्य।

चौपाई—खुरासानि वच सोंठि मँगावै। परवरकी जर गोघृत नावै॥
नासु दिये हय वात विनाशै। अरु शिररोग सकल सो नाशै॥

अथ तलपीको नासु।

चौ०—तलपीको केसरि दै नाशै। रिससों रुजको अन्य प्रकाशै॥

अन्य।

चौपाई—दुवो सोंठि सित सिरसो लेई। मलिकै पानी पीसिक देई॥

अन्य।

चौपाई—शंखाहूली हर्रा आनै। और शतावरि कुचिला ठानै॥
समकरि जलसे पीसि बनावै। नासु दिये वाजी सुख पावै॥

अथ नेत्ररोगनासु सर्वरोगपर।

सोरठा—नेत्ररोग कछु होय, पिपरी पीसो शीत जल।
दीजै नासु अनोय, नैन अरोगी होत हैं॥

अन्य।

चौपाई—चारि भेद जो नास बतायो। ताको शालहोत्र दरशायो॥
सौंठो कटु रूखो चिकनोई। नासु चतुर विधि गुदा गनोई॥
मीठो पित्त वात कटु दीजै। रूखो कफको शमन करीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तम टंक बयालिस दीजै । मध्यम चौंतिस टंक गनीजै ॥
अधम टंक छब्बिस परमाना । शालहोत्र यह रीति बखाना ॥
दोहा—बावन दिन उत्तम कहै, छब्बिस मध्यम जान ।
तेरह दिन पुनि अधम है, यहै नासु परमान ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

तुचा दाडिमै कमलगट्टा प्रमानौ।तहां श्वेत लै दूब अंकूर आनौ॥
इन्हैं पीसिकै शीत पानी मिलावै । भले नासु दै रक्तदोषै मिटावै ॥

अन्य—छन्द भुजंगप्रयात ।

बहेरे औ लौंगै सो मूत्रै मिलावै । कफै नाशको नासु सो वाजि पावै
घृतै क्षीर सोंठी भलो सारु आनै।नशै वायु हयके निसैसो बखानै॥

अन्य ।

चौ०—गुर्च सोंठि मेथी सम आनौ।सरसों तगर सकल लै मानौ॥
सन्निपात वाजीको जाई । जो यहि नासै देउ बनाई ॥

अन्य ।

सोरठा—लाख शतावरि आन, औंरा हर्र इलायची ।
देउ नास परमान, सन्निपात नाशै सकल ॥
दोहा—नासु नकुलमत जो कहै, ते हयके सुख मूल ।
समय अवस्था रोग बल, समुझि देउ अनुकूल ॥

कुरकुरीका नासु ।

दोहा—अदरखको रस लीजिये, एक छटाँकै जान ।
आध पाव गोमूत्र मिलि, और दवा पहिचान ॥
चौ०—सैंधव नमक सोंठि पिसवावै । चारों रकमैं एक मिलावै ॥
नासु देउ अश्वाको जबहीं । मिटि है शूल कुरकुरी तबहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य कुरकुरीका नासु ।

चौ०—सेंउढा दूध कपूर मिलाई । पैसा पैसा भारि तौलाई ॥
फूल पलाश सूख पिसवाई । एक छटाँक देउ मिलवाई ॥
नासु देउ रुज नीको लीजे । मिटि है शूल कुरकुरी छीजे ॥

अन्य मत नासुवर्णन ।

दोहा—मिष्ट सचिक्कन रूक्ष कटु, नास चारि विधि होइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष नशावत सोइ ॥ १ ॥
मिष्ट रूक्ष है वातको, कवि श्रीधर यह आनि ।
कटु अरु रूक्ष बखानिये, कफको नाशक जानि ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तते, श्रम आलस जो होइ ।
कीतौ कास श्वास जो, ताको डारे खोइ ॥ ३ ॥
पीपरि पिपरामूल अरु, बहुरि नींबरस जानि ।
गोपय सैंधव लोन पुनि, टंक टंक सब मानि ॥ ४ ॥
सोरठा—तीनि दिवस उठि प्रात, नासापुटमें दीजिये ।
औषध मासे सात, नाशै कासश्वासको ॥
दोहा—चेतमास खसकेर रस, जवाखारको लाइ ।
दोइ औषधी और पुनि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
त्रिफला शक्कर दूध वट, मिलै वैद्य जो देइ ।
नासापुटमें नासु यह, सर्व रोग हरि लेइ ॥ २ ॥
माघमास फागुन विषे, तेज पत्रको आनि ।
कमल गिलोइ मिलाइये, तीनि तीनि पल जानि ॥ ३ ॥
कूपवारि युत वाजिको, नास प्रात उठि देइ ।
शालहोत्रमें यह कहो, रोग सकल हरि लेइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—मिर्च सोंठि भूनींब अरु, सम भागहि करि लेउ ॥
कूपवारि गजपल विषे, पित्तनास कहँ देउ ॥
छोटि कटैया तगर पुनि, सरसौं केवल श्वेत ।
कूपवारिमें सानिके, नासु प्रात उठि देत ॥ २ ॥
आठ टका भारि औषधी, तीनि दिवस महँ देइ ।
सांची जानौ बात यह, वातरोग हरिलेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—श्वेत दूब चंदन सहित, लीजै मिश्री तोय ।
दीजै याको नास जो, रक्तदोष नाहिं होय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि सैंधव सोंठि अरु, खारीलोन समेत ।
दूरि होइ है श्लेषमा, नासापुटमें देत ॥

अन्य ।

सोरठा—पात सँभारू लाइ, नासु दीजिये वाजिको ।
तौ कनार मिटिजाइ, निकसिपरत बलगम अहै ॥

अन्य ।

दोहा—मिर्च सोंठिको कूटिये, और कसौंजी लेइ ।
होवै श्लेष्मा जाहिको, और शीत नाशि देइ ॥

अन्य ।

सोरठा—कंठरोग जब होइ, लटजीरा गोमूत्र लै ।
अजामूत्र महँ सोइ, खरिल कीजिये पहर भरि ॥
दोहा—दीजै नासापुटविषे, रोग दूरि ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मुनि यह कहो, या सम नाहिं उपाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा—आँखि ढबेली वाजिकी, बनी रहति जो होइ ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्र मत सोइ ॥ १ ॥
कमलगटाको पीसिये, बासी नीर मिलाइ ।
दीजै नासापुट विषे, आँखि साफ ह्वै जाइ ॥ २ ॥
नेत्र कंठ मुख भालमों, नासापुटमें जानि ।
एते ठौरन वाजिके, होत रोग जो आनि ॥ ३ ॥
औषध दीजै नास तब, शालहोत्र मतजोइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष देत है खोइ ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतसर्वरोगनाशकनामुवर्णनो नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ रसादि रक्त लेनेकी विधि ।

दोहा—सात रसादिक धातु हैं, तिनको करौं बखान ।
जो जानेते जानिये, अश्वरोग पहिंचान ॥ १ ॥
हयको रुधिर विकारते, होत बहुत विधि रोग ।
ताके रुधिर निदानमो, कीन्हों प्रथम प्रयोग ॥ २ ॥
रुधिर विकार विचारिकै, करौ चिकित्सा चित्त ।
औरौ भाषौं तीनि विधि, पित्त वात कफ मित्त ॥ ३ ॥

छंद—आषाढ करौ कम वाजि श्रौन।ताको भेषज करु बाँधि भौन
सहत घोरि साबुनहि देहु । ह्वैहै बलिष्ठ मत ग्रंथ येहु ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

जहाँ वाजिके अंग लोहू न होई । खवावै कछू रूक्ष संगै न सोई॥
तहाँ वातको कोप आनौ तुरंतै । करै रोगको आनि देहै दुरंतै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यमत फस्त खोलनेकी रगें जाननेकी विधि ।

दोहा—बहुतरोग ऐसे अहैं, फस्त खुलाए जाँय ।
ताके मैं लक्षण कहौं, भिन्न २ बिलगाय ॥

चौ०—ग्रंथ पढै अरु गुरुते सीखै । अपने नयनन खोलन देखै ॥
सिरामोक्ष क्रम है बहु गूढा । ताको नाहिं करिहै नर मूढा ॥
मुनिन कछुक प्रथमै लिखि राखा । तिहिअनुसारकरतहौंभाषा ॥
सकल शरीर रगनको जारा । हैं विशेष एकइस रुज हारा ॥
जगह ठौरके नाम बखानौ । तामें फस्त खोलिबो जानौ ॥
सकल चौपयाके रग होई । याही ठौर कहे सब कोई ॥
अश्वाके तनु यकइस खोलै । और पशुनके कमकम बोलै ॥

अथ जिह्वामें फस्त खोलनेके लक्षण ।

चौ०दुइ रग दुओ तरफ जिह्वातर । दशन सामुहे ताहि कहैं नर ॥
इनकी फस्त जु बुधजन खोलै । हलक नरकसी मुखरुजडोलै ॥

अथ नथुननकी फस्तके लक्षण ।

दोहा—नथुननके भीतर अहैं, दुओ तरफ रग दोइ ।
नेत्र श्रवण मुखरुज हरे, फस्त खुलावे कोइ ॥

अन्य काननकी फस्त ।

दोहा—दूनों श्रवणनके तरे, दुइ रग अहैं सुजान ।
जौन गई ग्रीवा तरफ, ताको करौं बखान ॥

चौ०—करनखाजुली कचको गिरना।मगजशोथ हर फस्तै खुलना

अन्य मोढनकी फस्त ।

दोहा—दुइ रग दूनों ओर हैं, मोढन पर बुधवान ।
जौन गई पीठी अलँग, ताके गुण पहिचान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—इन फस्तनको खोलै भाई। चारि ठौरके रोग नशाइ॥
कटि अरु पीठिमें रुज जानौ। उठि बैठेमें दुख पहिचानौ॥
हाथ पाँउ जो खींचे लाई। ताकी फस्तै यही खुलाई॥

अन्य जांघनकी फस्त।

दोहा—दुइ रग दूनों जंघमें, गई पेटकी ओर।
इनके खोले जात है, सुनो रोगके ठौर॥
चौ०—सिरी खफती अरु बेहोसा। शिर दे दे मारै बहु रोसा॥
औरौ एक रोग मुडहलना। यतने जाँइ फस्तके खुलना॥

अथ छातीकी फस्त।

दोहा—दुइ रग छातीमें अहैं, गई शीशके ओर।
पग छातीके रोगहर, फस्त खोलु यहि ठौर॥

अथ चारों चरणनकी फस्तैं।

दोहा—चारौं चरणन घूटना, ताके नीचे जानु।
भितरी तरफ बखानिये, ताके गुण पहिचानु॥
चौ०—यकतौ सुस्ती सकल शरीरा। दूजे भरा चले मग धीरा॥
कौनौ अंगहि शोथ दिखावै। कोई रोग पैरमें आवै॥
जौन चरनमें रुज पहिचानौ। तौनेही लखि फस्त बखानौ॥

अन्य।

दोहा—चारौं पगके घूटना, ताके नीचे जानु।
बहिरी तरफ बखानिये, दूसरि विधि पहिचानु॥
चौपाई—गरमी देखे जो हय तनमें। कोई रुज देखे जो पगमें॥
ताकी फस्त यहै खुलवाई। नीकि होई सब दुख मिटि जाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ गुदाके नीचे फस्त ।

दोहा—दुमके नीचे एक रग, गुदातरे पहिंचानु ।
अंडकोश रुज हरणको, मानो काल समान ॥
चौ०—फस्त खुलावो रुज पहिचानी । याके किये न होई हानी ॥
एक रोग कौनौ जो होई । फस्त खुलावो ताक्षण सोई ॥
दोहा—बाजी रग ऐसी अहैं, बाँधे जाहिर देइ ।
कोइ कोई विन बाँधे लखै, जो पहिचानै कोइ ॥
चौपाई—जौनी रगै देखि नहिं पावै । तहँके बार तुरत मुँडवावै ॥
दोहा—रुधिर लेउ परमान भरि, पीछू बंदिसि खोलि ।
ता ऊपर पट जल भिजै, बाँधि देउ रग ठोलि ॥
चौ०—जो शोणित नाहिं बंद दिखावै । ताकी जतन और करवावै ॥
कपर। फूँकि भस्म भरवाई । पीतौ कागज भस्म लगाई ॥
बब्बुर गोंदै पीसि मँगावै । छतके ऊपर सो चपकावै ॥
की दंबुल अखवैन भरावे । अरु रूमीमस्तंगि लगावै ॥
शोणित बंद होइ जो करिये । मनमें चिंता कछू न धरिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवासिंहकृत वाजीशिरामोक्षणवर्णनो
नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ वर्षभरेकी चिकित्सा ।

दोहा—तीनि फसल षट ऋतु अहैं, बारह महिना जानि ।
एक शालमें होत हैं, जानि लेउ सुखदानि ॥ १ ॥
तासु चिकित्सा कहतहौं, जानि लेउ मतिधीर ।
रोग निकट आवै नहीं, मोटा होइ शरीर ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ तीनि फस्ल कथनम् ।

दोहा—औषध दीजै बाजिको, रोग मुनासिब होइ ।
होइ मुनासिब फस्लको, तब गुण हयको सोइ ॥ १ ॥
रोग सरद है बाजिको, गर्मीकेरि बहार ।
औषध दीजै गर्म त्यहि, पै यह करै विचार ॥ २ ॥
ताकी औषध माहिमें, अती गर्म जो होइ ।
औषध आधे भाग करि, डारि दीजिये सोइ ॥ ३ ॥

सोरठा—अहै गरमतर जौन, होइ मुनासिब रोगको ।
हयको दीजै तौन, रोग हरै सब बाजितनु ॥

दोहा—सो बहार बरसातिमो, रोग गरम जो होइ ।
औषध दीजै गर्म त्यहि, खुश्की लीन्हें सोइ ॥ १ ॥
जौंही जाडे माहिमें, रोग रक्तकर आहि ।
औषध दीजै सरदसो, नहीं वातकर ताहि ॥ २ ॥

अथ गर्मीकी फस्ल ।

दोहा—मौसिम गर्मी माहिमो, कोप पित्तको जानि ।
राज्य रक्तकर होत है, कफको संचय मानि ॥ १ ॥
वात भई है नाश अरु, यह लीजै जिय जोइ ।
होइ मुनासिब नाहिनै, औषध दीजै सोइ ॥ २ ॥
राखै हयको याहि विधि, गर्मीकी ऋतु माहिं ।
बांधै ऐसे पेडमें, गर्मी लागै नाहिं ॥ ३ ॥
तीनि बखत महँ दिन विषे, दीजै नीर पियाय ।
निशिमें बांधै बाजि जहँ, प्रथम भूमि छिरकाय ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निशिभरि राखै ओस महँ, रोजरोज यह जानि ।
धोवै दुसरे रोज तिहि, दिनके अंत बखानि ॥ ५ ॥
यव भूंजे पिसवाइकै, शक्कर नीर मिलाय ।
हयको भोजन दीजिये, हरीघास मँगवाय ॥ ६ ॥
होइ मिजाज मुनासिबै, लेउ विहार विचारि ।
औषध दीजै भूँखकी, कवि श्रीधर निरधारि ॥ ७ ॥
होइ मुनासिब फस्त जो, ताकी तारू माहि ।
खोलि दीजिये फस्तको, कही तासु विधि आहि ॥ ८ ॥
कोऊ पंडित यह कहत, मधु माधवमो जानि ।
कोप होत है रक्तको, सफरा राज्य बखानि ॥ ९ ॥

अथ वर्षाकी फस्ल ।

दोहा—राज्य होत है वातको, अरु संजय जिय जानि ।
शांत रक्त अरु पित्त है, कफको कोप बखानि ॥
सोरठा—क्षुधा मंद परिजाइ, बाजी जाति कनारि है ।
औषध दीजै ताहि, जासों होइ कनार नाहिं ॥
दोहा—देइ दवाई वाजिको, पीपरि सोंठि मँगाइ ।
दोनों हरैं सहित पुनि, गऊमूत्र भिजवाइ ॥ १ ॥
कटुकतैलके साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दीजै गरम मिजाजको, तिलको तेल मिलाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै साँझको, रोग न आवै तीर ।
हरियारि घास खवाइये, देउ कुआँको नीर ॥ ३ ॥
बाँधै शीतल छाँहमें, वायु लगत जहँ होइ ।
देउ धुवां करवाइ तहँ, मच्छड भय नाहिं सोइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धोवै तिसरे रोज प्रति, वाजीको सुखदानि ।
दीजै वर्षानीर नहिं, सो बलगमकी खानि ॥ ५ ॥

अथ जाडेकी फस्ल कथन ।

दोहा—कोप होत है वातको, कफकी शांति बखानि ।
पित्त खून संचय अहै, कवि श्रीधर यह जानि ॥ १ ॥
बाँधै ऐसे ठौर महँ, लागै नहीं बयारि ।
दिनको बाँधै धूपमहँ, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
भोजन दीजै बाजिको, हर्दी सोंठि मिलाइ ।
गुड या शक्कर साथमें, तो मोटो ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
मेहनाति लीजै वाजिसों, जैसी इच्छा होइ ।
देउ मसाला भूँखको, वाजीको गुण सोइ ॥ ४ ॥

अथ ऋतु उपचार वर्णन ।

दोहा—अब वाजिनको कहतहौं, षटऋतुको उपचार ।
तामें भोजन विविधविध, शालहोत्रको सार ॥ १ ॥
भिन्नभिन्न भोजन कहौं, ऋतु ऋतुको मतिधीर ।
जासों पौरुष अतिबढै, मोटो होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ वसंतऋतुवर्णन ।

दोहा—घीउ वाजिको दीजिये, यवकी रोटी माहिं ।
आठ टकाभरि वजन घृत, शालहोत्र मत आहि ॥

मसाला ।

दोहा—त्रिफला लीजै तीनि पल, लोन एक पल साथ ।
हयको दीजै नित्तप्रति, यह भाष्यो मुनिनाथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्यमत ।

दोहा—मीन मेष संक्रांति कहि, चैत्र और वैशाख ।
ऋतु वसंत सो जानिये, नकुलमते सो भाष ॥

छंदतोमर—ऋतु है वसंत सुभाग । जहँ फूलियो वन बाग ॥
तहँ भँवर गुंज अनंत । जनु मैन बीज वयंत ॥
हय होत उर उत्साह । तहँ चाहिये नरनाह ॥
नितही फिरावत वाजि । पुनि चढैं ते नृप साजि ॥
तिहि निंबु देउ सलोन । सह तैल भाषत कोन ॥
कछु जानियो जब रोग । तब और औषध भोग ॥

दोहा—एकै ठौर न राखिये, होत वाजि आलस्य ।
मंद अग्नि तासों बढै, भक्षण भक्षत सस्य ॥

अन्य दवा ।

छंद—यवकूट बराबरिही भुँजाइ । तिहि मोटा अरदावा पिसाय ॥
दाज बसंत सुखतुरै होत । अति मोटो तनु बल अधिक देत ॥

अन्य ।

चौ०—चैत मास अरदावा दीजै । हरदी तैल लोन युत कीजै ॥

अन्य ।

चौ०—पानीके सँग सत्तू पावै । कबहूँ तुरंग न गरमी आवै ॥

अन्य ।

चौ०—ऋतुवसंत चैते वैशाखा । सैंधव घृत अरु तेलक चाखा ॥
घास न खाय तु रहै अरोगी । फेरै अति आलस संयोगी ॥

अथ ग्रीष्मऋतु ।

दोहा—ग्रीषम ऋतुहि बखानिये, जेठ अषाढ प्रमानि ।
वृष अरु मिथुन सुजानिये, बुधजन लीजो मानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्रीषमऋतुमें दीजिये, यवके सेतुआ लाइ ।
देउ मसाला तिफला, खांडमाहिं मिलवाइ ॥ २ ॥

छंद छप्पय—तप्त तरणि आकाश धरणि जलचर थला ।
विकल होत सब मृगा दुखित वनचरनला ॥
जरत नदी नद पीन सकल व्याकुल विहंगगन ।
चीर भीज बहुनीर धीर लेवत पटोर तन ॥
यहिविधि तप ग्रीषम मिटै गृही गुलाबसुगंध अति ।
तहँ चहिय तरुनि पंकज नयनि चंद्रबदनि इमि हंसगति॥

दवा ।

चौ०—ग्रीषमशीतिल भोजन दीजै । औ हयको घृत पान करीजै॥
शिरामोक्ष हयके अंग करो । सो घृत पिंड तासु मुख धरो ॥

दोहा—यहि प्रकार जो कीजिये, वाजीको उपचार ।
होय सबल अंगन बढै, नकुलमते अनुसार ॥

अन्य ।

चौ०—ग्रीषम जेठ अषाढ कहीजै । औ बचदे है शीतल कीजै ॥
घृत अरु भात देय नितही नित। नाशै रोग होय तनु सुखहित॥

अथ वर्षाऋतुवर्णन ।

दोहा—वर्षाऋतुमें जानिये, कर्क सिंह संक्रांति ।
सावन भादौं मास है, समुझि लेउ यहि भांति ॥

कुण्डलिया—वर्षामें नहिं कीजिये, तुरँग सवारी रीत ।
निर्बल याते होत है, जानिलेउ तुम मीत ॥
जानि लेव तुम मीत कूपजल पीवन दीजै ।
लै सर्षपको तेल अंगमें मर्दन कीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहै नकुल तहं बाँधु वायु ना लागै भाई ।
होय सबल सो पुष्ट सकल बाधा मिटि जाई ॥

मोदक ।

चौ०—अंतर दै यक दिवस खवावै । लोन टका दो तौलि मँगावै॥
सूध रहै तनु ओ मुख जानै । क्षीर पिआइ निदान बखानै ॥
दोहा—यहि प्रकार वर्षासमय, सेवहु वाजि विनोद ।
शालहोत्र मत समुझिकै, रहै न उरमें खेद ॥

अन्य

चौ०—साँठीके चावर गुण सेरै । खीर पकाय दूध सँग धरै ॥
गोघृत शक्कर देउ मिलाई । घोडेको नित प्रात खवाई ॥
यहि विधि खीर खवावै भाई । ताजा ह्वै सब सुख उपजाई ॥

अन्य

दोहा—सावन भादौंमें चही, जो वर्षाऋतु जानि ।
गोहूंको गजरा भलो, घीउ खांडमों सानि ॥

अन्यमत ।

दोहा—सावन भादौं मास दुइ, ऋतु वर्षाकी जानि ।
गोहूँ दरिया खीरकरि, देउ खाँडसों सानि ॥ १ ॥
दूध होइ जो तीस पल, तौ दरिया पल चारि ।
सात टका भरि खाँड पुनि, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
यासों कम दीजै नहीं, शालहोत्र मत जानि ।
शत पल दरियाते अधिक, देतनहीं सुखदानि ॥ ३ ॥
दूध लीजिये सतगुणा, आधी शक्कर जान ।
खीर दीजिये अश्वको, कद अरु भूँख समान ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–खीर दीजिये मोठकी, यही प्रकार बनाय ।
फेरि मसाला दीजिये, खीर हजम ह्व जाय ॥

खीर हजम होनेका मसाला ।

दोहा–हर्दी लीजै चारि पल, दुइ पल सज्जी आनि ।
हयको दीजै साँझको, दाना पाछे जानि ॥
चौ०–बीस टका भारि दरिया कीजै । यतना ताहि मसाला दीजै॥
कमज्यादा दरिया जो कीजै । तिहि मोताज मसाला दीजै ॥

अथ शरदऋतुवर्णन ।

दोहा–आश्विन कातिक मासमें, कन्या तुला प्रकास ।
शरदऋतुहि ताको कहैं, मानिलेउ विश्वास ॥
कुण्डलिया–आई जानौ शरदऋतु कीजै यही विचारि ।
दीजै नीको बाजिको, खीर खाँड आहार ॥
खीरखाँड आहार शरदमें, भोजन दीजै ।
दूध औटिकै शीत रातिको पान करीजै ॥
और मधुर दे वाहि उदर करि सक सितलाई ।
देउ मोठि घृत पिंड रीति ऐसी चलिआई ॥

अन्य ।

दोहा–आश्विन कातिक शरद ऋतु, मोठ मूंग अधिकात ।
काचो दानो दीजिये, औ हरदी गुड प्रात ॥

अन्य–चौपाई ।

शरद ऋतुहि आश्विन औ कातिक।भातपकाय देइ रुज नाशक॥
चीनी दूध भात मलि दीजै । औ तडागजल पिया करीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उठि प्रभात अरदावा दीजै । सकल दुःख अश्वाको छीजै ॥

अन्यमत ।

दोहा—आश्विनकातिक शरदऋतु, जानिलेउ मनमाहिं ।
लालि मिठाई दीजिये, मोठ महेला माहिं ॥ १ ॥
होइ मिठाई तीस पल, तो हरदी पल चारि ।
दीजै दुपहर मध्यमें, श्रीधर कहो बिचारि ॥ २ ॥
हर्दीकी विधि यह अहै, पयमो देउ भिजाइ ।
भीजी राखै तीन दिन, छाहीमो सुखवाइ ॥ ३ ॥
गुडमिलाइकै दीजिये, हर्दी हयको मीत ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ यह रीत ॥ ४ ॥

अथ हेमन्तऋतु वर्णन ।

दोहा—ऋतु हेमंत बखानिये, अगहन पूसै मास ।
वृश्चीकै धन होत हैं, नकुल मते विश्वास ॥

छंदनराच—जबै हेमंत आवई क्रिया करै यहै भली ।
जहाँ न पवन लागई बँधाइये तुरी थली ॥
घृतै कछू पिआइये चलाइये सो मंद ही ।
विचारि वाजि राखिये सो पाइये अनंद ही ॥

अन्य ।

छंद—हिमऋतु जब आवै तेल पिआवै अष्ट टंक परमान मनौ ॥
दिन यकइस दीजै पुनि गुनि लीजै खुइ दिखवावै भाँति भनौ ॥
दिन बीस प्रमानौ यह मत जानौ जौंके अंकुर आनि लहौं ॥
बाजी अनुरागै वायु न लागै शालहोत्र यह मते कहौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

छंद–दाना जौं दीजे यह गुणि लीजे अग्निमाहँ परिपक्व करौ ॥
जब जौं नहिं पावै चना खुलावै शुद्ध सकल सब भाँति करौ ॥
जब चना न पावै माष मंगावै पीसि मिलावै तेलु तहीं ॥
यहि भाँति पालौ बाजि बिशालौ शत्रुन घालौ जंगमहीं ॥
दोहा–दाना वरणे जे सबै, तिनमें मोठ विशेषि ।
भाष्यो चेतन चंद यह, शालहोत्र मत देखि ॥
छंद०–सब भैषज महँ कुरथी देहु। घृत तैल वाजि कहँ पंथ एहु॥
करु अग्निमाहँ परिपक्व सोय । जब जौं न होइ तब चना देय ॥
दोहा–ताते जौं दीजै तुरी, अच्छी भांति पकाय ।
होइ बली दूषणरहित, ऋतु हेमंत सुखपाय ॥

अन्य ।

चौपाई–अगहन पूसै हिमऋतु भाषौ । घोडेको छाहींमें राखौ ॥
उरद पकाय देइ घृत नाई । कीतौ तिलका तेल मिलाई ॥
चढै थोर अति ही सुख पावै । रोग हरै सब शोक नशावै ॥

अन्य ।

दोहा–मोठ महेला दीजिये, घीव बीस पल सानि ॥
कीतौ करुवा तैलको, आठ टका भरि आनि ॥ १ ॥
मोठ महेला माहिमों, ताहि नहारी देइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, यही रीति करि लेइ ॥ २ ॥

अथ शिशिरऋतु वर्णन ।

दोहा–शिशिर ऋतुहिमैं जानिये, माघ फाल्गुन मास ।
मकर कुंभ संक्रांति है , चेतनचंद प्रकाश ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु कही । तेल मँगाइ देनेको चही
बसु पल यकइस दिन मुख नावै । हरियर जौ की चना खवावै ॥
की हरिहरि मसुरी मँगवावै । घृत अरु तेल मिठाई पावै ॥
लहसुन मेथी निमक सु दीजै । होइ पुष्ट तनु रोगे छीजै ॥

दोहा—माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु, घीउ महेला सान ॥
मिर्च साथ सो दीजिये, होइ महा बलवान ॥ १ ॥
शिशिर माघ फाल्गुन कहो, दाना दीजै मोठ ॥
गुडके साथ खवाइये, मिर्च पीपरी सोंठ ॥ २ ॥

अथ बारहों महीनाके रातिब सावन भादों वर्णन ।

दोहा—खरे चनाके दिउल करि, तिनको लेउ पिसाइ ॥
तामें नीर मिलाइकै, लीजै खूब पकाइ ॥
सोरठा—अठगुन नीर मिलाइ, ताहि पकावै पहर भरि ।
जब गाढा ह्वै जाइ, लीजो ताहि उतारि तब ॥
दोहा—धारि राखै सो राति भरि, अठगुण दूध मिलाइ ।
ताको मीसै हाथसों, नहिं गुलथी रहि जाइ ॥
सोरठा—ताहि खवावै आनि, साठ रोज नित वाजिको ।
की चालिस दिन जानि, कीतौ दीजै बीसदिन ॥
दोहा—बेसन आधी खाँड लै, की तो गुडहि मिलाइ ।
दीजै दुपहरके बखत, प्रथमहि नीर पिआइ ॥

अन्य विधि ।

दोहा—गोहूँ दरिया सेर भरि, नीर माहि पकवाइ ।
अठगुण माठा डारिकै, लीजै फोरि पकाइ ॥ १ ॥
सोंचर लीजै दोइ पल, तामें देउ मिलाइ ।
दोइ पहर दिनके चढे, हयको देइ खवाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीजै चालिस रोज तक, बीस रोजकी मानि ।
करत मिठाईते अधिक, तौन फायदा जानि ॥ ३ ॥

अथ आश्विनकार्तिक वर्णन।

दोहा—मोठपत्र फलिका सहित, डारे ताहि खँदाइ ।
अश्व अगारी माहिं सो, दीजै ताहि धराइ ॥ १ ॥
थोरी थोरी रोजप्रति, ताहि बढावत जाइ ।
मंद मंद करि घासको, दीजै सबै छडाइ ॥ २ ॥
तेल कटुक ले आठ पल, दुइ पल लोन मिलाइ ।
कद अरु बैस विचारिकै, दीजै रोज खवाइ ॥ ३ ॥

अथ अगहन पौष माघ फाल्गुन भोजनविधि ।

दोहा—जानहुँ शिशिर हेमंतमें, बहुविधि भोजन आहि ।
जासों मोटा होइ हय, औ पौरुष सरसाहि ॥

अथ चैत वैशाख भोजनविधि ।

दोहा—मधु माधव महिना विषे, दही तीस पल लाइ ।
बाँधे कपरा माहिमों, जब पानी चुइ जाइ ॥ १ ॥
सहत मिलावे चारि पल, हयको देउ खवाइ ।
की सेतुआको दीजिये, खाँड सुतासु मिलाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—खबहा कुम्हडा छोलिकै, घीमें ताहि भुँजाइ ।
गुडमें ताको पागिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कुम्हडा दीजै तीस दिन, शालहोत्र मत जानि ।
सेतुवा दीजै जेठमों, यहो मतो उर आनि ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ मसाला ।

दोहा—चारि टका भरि तिर्फला, तासम खांड मिलाइ ।
दाना देकै साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

अथ ज्येष्ठ आषाढ भोजनविधि ।

दोहा—खरी लीजिये बीस पल, सो अरसीकी होइ ।
दूना दूध मिलाइकै, आनि भिजावै सोइ ॥ १ ॥
मोठ महेला साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दश दिन दीजे याहि विधि, दशपल और बढाइ ॥ २ ॥
दोइ मास तक दीजिये, खरी दूध मिलवाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा—कचरी लीजै दोइ पल, पल भरि सोंचर आनि ।
तीनि टकाभरि तिरफला, यवके आटा सानि ॥ १ ॥
डेढपहर दिनके चढे, हयको देउ खवाइ ।
दोइ घरी कैजा करै, पाछे नीर पिआइ ॥ २ ॥

अथ बारहोंमासके उपचार चैत्र वैशाख वर्णन ।

दोहा—औंरा हर्र बहेर पुनि, सैंधव लोन मँगाइ ।
एक एक पल लायकै, चारौं लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
कोबरको रसु डारिकै, ताहि खवावै आनि ।
नाशै आलस बल बढै, मधु माधवमा सानि ॥ २ ॥
बाँध राखै बाहिरै, शीतल छाहीं माहि ।
औषध दीजै प्रात ही, मंदअग्नि मिटि जाहि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—धूप होइ जब आनि, भीतर बाँधै थानपर ।
शालहोत्र मतजानि, कवि श्रीधर वर्णन कियो ॥

अथ ज्येष्ठ आषाढ वर्णन ।

दोहा—आठ टका भरि तैल घृत, दोऊ लेउ समान ॥
तामें डारौ अर्कको, दूध टका परमान ॥ १ ॥
एक एक दिन बीच दै, ताहि खवावत जाहि ।
हरीदूब अरु दीजिये, मास अषाढहि माहि ॥ २ ॥

अथ सावन वर्णन ।

दोहा—लहसुन सोंठि जवाइनी, आठ आठ पल आनि ।
दोइ सेर गुरमाहिमों, इनको लीजै सानि ॥ १ ॥
दीजै पिंडा बाँधिकै, तीनि रोज लग नित्त ।
सावन महिना माहिमो, हरीघास दे मित्त ॥ २ ॥

अथ भादौं वर्णन ।

दोहा—दूध विषे जल डारिकै, चौथे अंश प्रमानि ।
प्यावै भादौं मासभरि, रोग नाश यह जानि ॥

अथ आश्विन वर्णन ।

दोहा—दूध लीजिये साठि पल, करै अधाउट ताहि ।
ताहि पिआवै वाजिको, आश्विन भरि निर्बाहि ॥ १ ॥
लेउ बकैना फलनको, पुनि रनिके फल लाइ ।
दोनौं लीजै पाँच पल, रोज खवावत जाइ ॥ २ ॥
या विधि करै कुवाँर भरि, कवि श्रीधर मतिधीर ।
आलस नाशै बल बढै, मोटा होइ शरीर ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कार्तिक वर्णन ।

दोहा—मोठपत्र फलिका सहित, हयको दीजै नित्त ।
नीर पिआवे ताल्को, थोरा फेरै मित्त ॥ १ ॥
देउ मसाला वाजिको, कहो जु आश्विन माहि ।
मोटा होत शरीर है, अरु आलस नाशि जाहि ॥ २ ॥

अथ अगहन पौष वर्णन ।

दोहा—मार्गशीर्ष अरु पौषमें, बाँधे घामें माहि ।
मोठ चना अरु उर्दको, देउ महेला ताहि ॥ १ ॥
देउ मसाला भूँखको, फेरत नितप्रति जाइ ।
तौ बल बाढै वाजिको, आलस तासु नशाइ ॥ २ ॥

अथ माघ फाल्गुन वर्णन ।

दोहा—माघफाल्गुन मासमें, मोठ महेला माहि ।
तैल मिलावे पांचपल, रोज खवावत जाहि ॥

अथ तीनौंकाल वर्णन ।

दोहा—त्रिफला दीजै खाँडसों, ग्रीषम और वसंत ।
रोग हरे तनु बल बढै, जानि लेउ बुधिवंत ॥

अन्य ।

चौ०—सहत पंदरह टंक मँगावे । ग्यारह टंक कूट ले आवे ॥
बैंच देश टंक लेउ मँगवाई । पीसि छानि मैदा करवाई ॥
जौंके आटा साथ खवावे । अश्वाके तनु सुख उपजावे ॥

अथ वर्षाकाल ।

दोहा—हरदी वर्षा शरदमें, घोडे दीजै नित्त ।
नित्त नेवाला दीजिये, सुखी रहै तनु चित्त ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—वर्षाजलसों तुरँग न भीजै । धुवाँ बयारि धूरि धोईजै ॥
हरियारि दूब कूपजल पीजै । दाना नमक मिलै तिहि दीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—घुडवच पंद्रह टंक मँगावै । लोनके पानी साथ पिसावै ॥
आटामें पिंडा करि दीजै । बात पित्त कफ किर्म हरीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—चूना और कपूर मँगावै । टका टका भरि दोनौं लावै ॥
ऊँबारिकै पानीमें दीजै । सात रोजमें किर्मि हरीजै ॥

शीतकाल ।

दोहा—त्रिकुटा दीजै गुड सहित, हेम शिशिर ऋतु माह ।
शीतकाल व्यापै नहीं, कहत कविनके नाह ॥

चौ०—लहसुन मिर्चा अरुण मँगावै । टका टका भरि नित्त खवावै ॥
दाना खाय होत तब दीजै । ताके पाछे कैजा कीजै ॥

अथ आह्निक वर्णन ।

दोहा—राति रहै तनु घरि चारि जब, देउ सईस जगाइ ।
होइ सईस नपाक जो, देउ ताहि अन्हवाइ ॥

चौ०—फेरि सईस पास हय आवै । लीदि उठावै थान बनावै ॥
फिरि दानाको देइ खवाई । मूठिक दीजै घास हलाई ॥

दोहा—घासखाइ दुइ चारि मुँह, कैजा देइ कराइ ।
करै खरहरा चारि घरि, सो हयको सुखदाइ ॥

सोरठा—यक उरमाल भिजाइ, पोछैं हयकी आंखि मँह ।
अंड लेउ पुछवाइ, पाछे दोनौं कुक्ष फिरि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–भयो चहै असवार जो, हयको लेउ कसाइ ।
दोइ घरीलौं फेरिकै, फिरि टहलावै घाइ ॥ १ ॥
फेरि खरहरा कीजिये, दीजै घास हलाइ ।
खाइ रहै सुखसों तुरी, शालहोत्र मत आइ ॥ २ ॥
डेढपहर दिनके चढे, देउ मसाला ताहि ।
दोइ घरी कैजा करै, फिरि जल दीजै वाहि ॥ ३ ॥

सोरठा–पावत रातिब होइ, जलके पाछे दीजिये ।
नाहिन दीजै सोइ, पावक दाना होइ सो ॥ १ ॥
थोरी घास खवाइ, दोइ घरी कैजा करै ।
दीजै घास हलाइ, खात रहै सुखपूर्वक ॥ २ ॥

दोहा–दाना दैके साँझको, थोरी घास खवाइ ।
फेरि मलै घरि चारि लौं, कैजाको करवाइ ॥

सोरठा–गर्मीकी ऋतु माहि, पहर एक दिनके रहे ।
फिरि जल दीजै ताहि, शालहोत्र मुनि यों कहैं ॥

दोहा–एक बखत जल दीजिये, दोइ पहर दिन माहि ।
जाडेके माहिना विषे, रहै बढावत ताहि ॥

सोरठा–मलै वाजिको आनि, पहर एक दिन चढै ।
चारि घरीलौं जानि, फेरि बढावै वाजिको ॥

दोहा–फिरि दानाको दीजिये, बखत साँझको पाइ ।
रहै बढाये ताहिको, कैजा देउ कराइ ॥ १ ॥
भयो चहै असवार जो, गर्मीऋतुके माँहि ।
फेरै ठंढे बखतमें, शालहोत्र मत आहिं ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—जाडेकी ऋतु माँहि, चारि घरी दिनके रहे।
तब सो फेरै ताहि, साँझलगे यह जानिये॥
दोहा—नहीं होइ असवार जो, सब महिननमों जानि।
बागडोरि पर खोलिकै, देखै वाजी आनि॥
सोरठा—सब महिननमो जानि, दोइ घरी दिनके रहे।
देखै वाजी आनि, बागडोरि पर खोलिकै॥ १॥
दाना दीजे नाइ, होइ अनमनो वाजि जो।
जासों कसरि नशाइ, देउ मसाला भूँखको॥ २॥
दोहा—सब विधि वाजी सुखलहै, ताकी या विधि आहि।
देउ मसाला भूँखको, गयो पहर निशि माहि॥
देइ मसाला नित्तैप्रति, जाडेकी ऋतु जानि।
एक रोजको बीच दै, गर्मीकी ऋतु मानि॥
घास अगारी माहिमें, दीजै ताको डारि।
खाइ चहै तब घासको, सोइ जाइ रुज हारि॥ ३॥

अथ दाना वर्णन।

दोहा—तासों जौं जैसे बने, दीजे सब ऋतुमाह।
सूखा के गोला भुँजे, होत वाजि चितचाह॥
चौ०—जाको वाजि खाय जौं सदा। विन अहार मासे रह लदा॥
शूल न होइ खाँस नाहिं आवे। मलबेकार रक्त हरि जावे॥
सोरठा—मिले न जो जिहि ठांव, चना देय तत्काल ही।
जो न चनाको नाँउ, दीजै मोठ समेत माहि॥

अन्य।

सोरठा—मूँग देइ अभिराम, मोठ मिलै ना जाहिको।
होइ सकल बलधाम, तैल सहित दीजै तुरी॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाजी दाना हेत, और अन्न दीजै नहीं ।
भाष्यो ग्रंथ निकेत, दिये दोष बाढै सदा ॥ २ ॥

अन्य मत ।

दोहा—उत्तम दाना मोठको, मध्यम चना बखानि ।
साधारण जौं जानिये, कवि श्रीधर सुखदानि ॥ १ ॥
मोठ महेला दीजिये, जाडेकी ऋतु माहि ।
जौं अरु चना भुंजाइकै, करि अरदावा ताहि ॥ २ ॥
सोरठा—गर्मीकी ऋतु माँहि, अरदावाको दीजिये ।
चना दराय भिजाइ, सो दीजै वरषातमों ॥

सूखे चना देनेकी विधि ।

सोरठा—लीजै चना मँगाइ, मटर कंकरी बीनिकै ।
हयको देउ खवाइ, या विधि दीजै सालभारि ॥

अथ देशविभाग दाना विधि ।

दोहा—जौंको दाना दीजिये, सिंध नदीके, पार ।
महिला यमुना पारमें, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
शाह जहाना बादके, चारौं तरफ बखानि ।
मोठ महेला दीजिये, कवि श्रीधर सुखदानि ॥ २ ॥
मध्यदेश पूरब लगे, वाजि मिजाजहि जानि ।
माफिक जौन मिजाजके, दाना दीजै आनि ॥ ३ ॥
सोरठा—पित्तप्रकृति जो होइ, यवको दाना दीजिये ।
वातप्रकृति हय सोइ, देउ महेला मोठको ॥
दोहा—कफको होय मिजाज ज्याहि, चना देउ तिहि आनि ।
रक्त मिजाजहि माहिमें, अरदावाको जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टका तीस परमानसों, कम ज्यादा नाहिं देइ ।
टका तीनिसैसे अधिक, दाना कबहुँ न लेइ ॥ २ ॥
या विधि दाना दीजिये, कद अरु भूँख विचारि ।
जासों बाजी सुख लहै, सो लीजै निरधारि ॥ ३ ॥
शारँगधर अरु नकुलमत, शालहोत्र को पंथ ।
सो विचारि अनुसार मत, भाषा कीन्हों ग्रंथ ॥ ४ ॥

अथ चना देनेकी विधि ।

दोहा—चना पत्र फलिका सहित, बिरवा लेउ मँगाइ ।
तिनको जलमें धोइकै, दीजै धूप धराइ ॥ १ ॥
जबै जाँइ ऐलाइ वै, लीजै तबै खँदाय ।
आठ टका भरि तेलको, जलमो लेउ मिलाय ॥ २ ॥
लीजै सोंचर लोनको, चारि टका भरि जानि ।
ताहि मिलावै तेलमें, शालहोत्र मत मानि ॥ ३ ॥
तामें बिरवा सौंदिकै, हयको देउ धराइ ।
खात रहै सो राति दिन, दाना देउ छँडाइ ॥ ४ ॥
मंद मंद करि घासको, हयको देउ छँडाइ ।
सौंदे बिरवा खाइ नहिं, ताकी यह विधि आइ ॥ ५ ॥
सोरठा—जब बिरवा ऐलाँइ, हयको दीजै काटिकै ।
तेल लोनको लाइ, दीजै बेसन सानिकै ॥ ६ ॥
दोहा—खुइदि माहिं जस गुण अहै, तस याको दरशाइ ।
दीजै चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥

अथ खुइदि देनेकी विधि ।

सोरठा—खुइदि हरी जब होइ, गांठि परन अरु लागई ।
हयको दीजै सोइ, अब देनेकी विधि कहौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—बाँधे ऐसे थान हारि, जहाँ न लागे बाइ ।
और अँधेरा कीजिये, लघु दरवाज रखाइ ॥ १ ॥
दीजे चालिस रोज नित, हरी खुइदिको आनि ।
की तो दीजे तीसदिन, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥

अथ खुइदिके बाद यह मसाला देइ ।

दोहा—लालि मिठाई बीस पल, यतनी अदरख जानि ।
लहसुन लीजे ताहि सम, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
ताके हिस्सा तीन करि, प्रातहि एक खवाय ।
चारि घरी कैजा करै, जानि लेउ मनलाय ॥ २ ॥
डेढ पहर दिनके रहे, दूसर हिस्सा देइ ।
एक घरी कैजा करै, बाजी रुज हरि लेइ ॥ ३ ॥
साझ समयमें दीजिये, तीसर हिस्सा ताहि ।
चारि घरी कैजा करै, जानि लेउ मन माहि ॥ ४ ॥
हर्दी लीजे चारि पल, दुइ पल सज्जी लाइ ।
पहर एक रजनी गये, हयको देउ खवाइ ॥ ५ ॥
यहि विधि दीजे खुइदिको, शालहोत्र मतजानि ।
औरो भोजन विधि कहौं, सो अब लीजे मानि ॥ ६ ॥

अथ खिचरी देनेकी विधि ।

दोहा—डेढपाव चावर सहित, दालि अढाई पाउ ।
दालि होइ सो मूँगकी, दुइ पल अदरख लाउ ॥ १ ॥
धोवे ताको नीरमें, फिरि भूँजे घी माहि ।
ताहि मींजिये हाथसों, एक माहिं मिलि जाहि ॥ २ ॥
हर्दी लीजे चारि पल, दुइ पल सज्जी लाइ ।
खिचरी माहि मिलाइकै, पींडा लेउ बनाइ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बासर बीते पहर दुइ, हयको देउ खवाइ ।
दीजे चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ मोठकी खीर ।

छंद–पकवाय महेला मोठ क्यार । लीजो उतारि तब दूध डार ॥
मीठा मिलाय तब आँच राखि । लखि पको खूब धरु भूमि भाषि
दाना बदले याही खवाइ । जो थोर होय नहिं जल मिलाइ ॥
नहिं वजन तासु कीन्हों प्रमान । मौका जितनो तित करु विधान॥

अथ बछेराकी तैयारीकी विधि ।

छंदप०–श्रुतिसेर दूध औटै चढाय । गोहूँ दरिया यकसेर नाय॥
जब पकै खाँड यकसेर घेलि । पानी पिआय हय वदन मेलि ॥
दरि मिर्च चारि तोले सुजान । यकपाव मेलु तामें पिसान ॥
याको खवाय तब देइ नीर । दीजै यहि विधि नहिं भलो खीर ॥

अन्य ।

छंदप०–हर्दी हांडीमें धरु कुटाय । तिहिको प्रभातै लै आधपाय ॥
पयमें भिगोव वसु याम राषि । याहि खाय नहारी तबहिं भाषि ॥
यक पाव करे कम कम बढाय । दिन चालिसलौं यह तुरँग खाय॥
अति करत आशुही देह पुष्ट । जो होय बुरो लखि परत सुष्ट ॥

अन्य ।

छंदप०–यक सेर चना बेसन भुँजाय। तिहि सानि चारि रोटीपकाय
यक सेर दूध अरु खांड लाय । दै सानि दिवस चालिस दिढाय ॥
पानी पिआय फिरि देउ याहि।अति निबल अश्व सो सबल ताहि॥

अन्य–छंदपद्धरी ।

लखि हरितबालि जौंकी मँगाय । जित अश्व खाय सो दे खवाय॥
मुख रुके तबहिं गलियाइ देय । यक पहर बाद गुड सेर लेय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...ust, Delhi and eGangotri

दै कबहुँ पाव अदरख मिलाय।यक पाव कबहुँ लहसुन खवाय॥
यहि रीति करै तबलौं सुजान। जबलौं रहि हरियर जौं प्रमान ॥
जौं भूँजि चहै दीजै सुजान । करि आध सेर घीमें मिलान ॥
चालीस रोज दीजै बनाय । दाना तबलौं नहिं तिहि खवाय ॥
राखै हय जहँ अति ही अँधेर । बारै चिराग निशिहू सबेर ॥
जो करि पेशाब अरु लीदि लेइ । हयके तनमें सो लेपि देइ ॥
हत्थी खरहर कुछ नाहिं मलाहि । दिन चालिसलौं याही निबाहि॥
जब दिवस पूर खोलै तुरंग । तब देखै तैयारीक ढंग ॥

अथ तैयारीकी शिशुचासनी ।

दोहा–जौं पिसानकी रोटिको, अति महीन करवाय ।
सर्षपतैलहि सानिकै, शिशुको देइ खवाय ॥

अन्य ।

चौ०–अजवायानि अजमोद मँगावै । खुरासानि अजवायनि लावै॥
लहसुन साँभरि सम करि लीजै । जौं पिसानमें गोला कीजै ॥
साँझ सकारे गोली दीजै । शिशुको रोग सकल हरि लीजै ॥

अन्य ।

सारठा–शिशु तुरंगको देय, हालिम टंकनखार लै ।
अतिमोटो सो होय, ऊपर दूध पियाइए ॥

अन्य ।

चौ०–कनिक माँडिकै घोरै पानी । झीने कपरा लीजौ छानी ॥
ताहि ओटिकै लाटी कीजै । प्रातकाल घोडे शिशु दीजै ॥

अन्य ।

सोरठा–हरदी गोपय संग, वाजी बालक दीजिये ।
गात बढै सब अंग, वर्ष एकलगु जो करो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौपाई—अजवाइनि दूनौ मँगवावै । हरदी हरैं जंगी लावै ॥
साँभरि मिलै सुचूरण करै । सकल अजीरण शिशुको हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—हालिम हरदी सज्जी लेहू । मिर्च भरंगी मेथी देहू ॥
पोस्ता दाना सरसौं राई । कंचनरिपुकी खील कराई ॥
कुंड कुंड भरि यहि सब लेहू । पल अफीम तिहि माहीं देहू ॥
चूरण करि सब एकम लीजै । टंक टंक नित प्रातै दीजै ॥
वायु अजीरण खातै हरै । भूँख चौगुनी सैंधव करै ॥

अन्य ।

चौपाई—राई साँभरि भाँग मँगावै । अजवाइनि कालेश्वर लावै ॥
गऊमूत्रसों भिजै सुखावै । दुइ टंकै परभात खवावै ॥
भूँख चौगुनी लागै ताही । बात रोगको दूरि कराही ॥

अन्य ।

चौपाई—सुरभी दूध सेर दश लीजै । दुइ टंकै हालिम तिहि दीजै ॥
खीर करौ गुड सैंधव खाता । अश्वा बहुत पुष्ट ह्वै जाता ॥

अथ दुर्बल घोडेकी दवा ।

दोहा—आधपाव चँदसुर मिलै, दूध सेर भरि माहि ।
ओटि तुरँगको दीजिये, मांस बढै तनुचाहि ॥ १ ॥
कृशतनु अबल तुरंगको, पावसमें घृत देइ ।
अनलकोप ताको करै, रोग हरै सुख होइ ॥ २ ॥

अथ तैयारीकी विधि ।

चौपाई—चावल चौदह पाव मँगावै । सेर पाँच गोदूधहि लावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डेढपाव शक्कर बुध लीजै । भात पकाय एक करि दीजै ॥
यहि विधि यकइस रोज खवावै । दुर्बल बहु तनुमांस बढावै ॥

अन्य ।

चौ०—सेर पाँच गोदूध औटिकै । निशिमें देय दृढै तनु आतिकै ॥

अन्य ।

चौ०—पकवै मोथी तिलके तेलै । देय तुरँग दुइ मास महेलै ॥
असवारी नहिं तापर करै । अतिहि मोट ह्वै बलको धरै ॥

अन्य ।

चौ०—अरदावा तिल तेल मिलावै। यकइस दिन लगु तुरै खवावै ॥
की अरदावामें घृत दीजै । बाँधि मास भरि बहु सुख लीजै ॥

अन्य ।

चौ०—कारे उरद कि मसुरी मेलै । मेथी चुरै मेलि तिल तेलै ॥
यही महेला अश्व खवावै । मांस बढै सब रोग नशावै ॥

अन्य—चौपाई ।

मास एक जौं खुइदि खवावै । चना हारित की मसुरी पावै ॥
अतिहि मोट हय बलको धारै । शालहोत्र मत यहै विचारै ॥

अन्य ।

चौ०—जौंकी दारिया खरि खवावै । याहूसों बल बहुत बढावै ॥

अन्य ।

चौ०—बच्चहि कच्चा क्षीर पियावै । सैंधव मेलै बहु सुख पावै ॥
युवा अश्वको औटि खवावै । अति बल रोस दिनौदिन आवै ॥

अथ जौंकी दारिया देनेकी विधि ।

दोहा—जौंकी बाली सेर दश, पक्की तोल मँगाइ ।
तिनको सींकुर झुरासिकै, लीजै फेरि कुटाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाल मिठाई सेरु भरि, तामें देउ मिलाइ।
पै भूसा नहिं काढिये, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
याको दीजे साँझको, दाना दीजे नाहि।
बाजी मोटा होइ बहु, औ पौरुष सरसाहि ॥ ३ ॥

अथ हर्दी देनेकी विधि।

दोहा—हर्दी लीजे आठ पल, ताको लेउ पिसाइ।
दूध अध उटा बीस पल, तामें देउ भिजाइ ॥ १ ॥
चारि घरी भीजति रहै, ताकी यह विधि आइ।
मोठ महेला साथमो, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज लगु, यत्ती यत्ती लाइ।
बहुविधि भोजन बाजिके, कहँलौं वरणे जाँइ ॥ ३ ॥

सोरठा—जौने भोजन माहि, वेला ताकी नहिं कही।
सो दुपहरके माहि, पानी देकै दीजिये ॥ १ ॥
जब भोजनको देइ, होइ नहीं असवार तब।
जानि मतो यह लेइ, पैखाली नित फैरिये ॥ २ ॥

दोहा—जो असवार भयो चहै, तो दौरावै नाहिं।
और कुदावै नाहिनै, मंद मंद लै जाहिं ॥ १ ॥
कही जौन मौताज है, तामें लेउ विचारि।
कम ज्यादा कारि दीजिये, कद अरु भूँख निहारि ॥ २ ॥

अथ महेलाकी विधि।

छंदप०—जो चहै महेला गुणद कीन। मेथी मिलाय पकवै प्रवीन॥
खावै तुरंग बहु गुण बढाय। हय उदर व्याधि सगरी नशाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ ।

छंदप—कच्चा दाना जो तुरँग खाय। ताको तरकरिकै तिहि खवाय॥
यह हजम करै दाना जु खाय। किंचितहि मसाला तुरँग पाय॥
की सौंफ लेय दश सेर आनि। आधी भुजाय दोउ कूटि धानि॥
दाना खवाय दे आध पाय। अति ही सुख दायक तुरँग खाय॥

अथ हेलुवा बनानेकी विधि ।

छंदप०—ले सेर अढाई घृत मँगाय। उतनी प्रमाण हरदी पिसाय॥
अदरख पीसौ उतनै सुजान। मेथी लै पीसै सो प्रमान॥
दीजै कराहमें घृत चढाय। दे छोंडि खूब हरदी पकाय॥
तब अदरख औ मेथीको डाल। सब भूँजि खूब कीजो सुलाल॥
दे पांच सेर मीठा मिलाय। दश सेर दूध तिनमें रलाय॥
जब ह्वै जावै हलुआ सुढार। तब लेउ आगिपर सो उतार॥
दे पावसेर हय जल पिआय। यक सेर तलक कम कम बढाय॥
अकसीर समुझुहकमें तुरंग। जाडेतक करि दीजो हिरंग॥

अथ मूँगका हलुआ देनेकी विधि ।

दोहा—अदरख हर्दी खांड घिउ, औरौ मूँग पिसान।
एती चीजें लेउ सब, तिनको भाग समान॥ १॥
घीसों चौथे भाग कम, लेउ पिआजु मँगाइ।
घीमें भूँजै ताहिको, डारै फेरि कढाइ॥ २॥
हर्दी आदि पिसानको, घीमें लेउ भुँजाइ।
पृथक पृथक ये भूँजिये, मंद आँच करवाइ॥ ३॥
खाँड माहिं जल डारिकै, लेउ जलाउ बनाइ।
हर्दी आदि पिसानको, तामें देउ मिलाइ॥ ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दीजै चालिस रोज लौं, ताकी यह विधि आहि ।
आठ आठ पल चारि दिन, फेरि बढावै ताहि ॥ ५ ॥
अठयें दिनते तीस पल, रोज खवावत जाइ ।
युवा वाजिको को कहै, बूढ तरुण ह्वै जाइ ॥ ६ ॥

अथ सामान्य मोटा करैकी विधि ।

दोहा—श्याह मिर्च पीपरि सहित, पिपरामूल बखानि ।
लीजै राई सोंठि पुनि, बीस बीस पल जानि ।
चौपाई—मेथी हालिम हर्दी लावै । तीस तीस पल सो तौलावै ॥
वीस टका भरि जो घृत लावै । ताते दूनी खाँड मिलावै ॥
दोहा—खोवा लीजै गाइको, पाँच सेर यह जानि ।
तौल पोखता जानियो, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
सबको भूँजै घीउमो, एक माहिं मिलवाइ ।
शीतल करिकै ताहिको, पिंडा लेउ बनाइ ॥ २ ॥
टका अठारह तौलिकै, रोज खवावत जाइ ।
जाडेके महिना विषे, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
पानी दीजै बाजिको, दोइ पहर दिन माहि ।
दीजै चालिस रोज लगु, बूढ युवा ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

अथ चारौं रोगन देनेकी विधि ।

दोहा—जर्द स्याह रोगन दुवो, शूकर चर्बी आनि ।
तिनको कीजै भाग सम, ओरो साबुन जानि ॥

बनानेकी विधि ।

दोहा—घियके चौथे भाग करि, हर्दी लेउ मँगाइ ।
घीमें ताको भूँजिये, राखै फोरि धराइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—घी बाकी रहि जाइ, डारि कराही माहिं सो ।
ता तर आगि बराइ, तीनौं रोगन मिले करि ॥
दोहा—चारौं रोगन पाघिलिके, एक रूप ह्वै जाइ ।
हर्दी भूँजी जो धरी, तामें देउ मिलाइ ॥
सोरठा—लीजै फेरि उतारि, जब ठंढो ह्वै जाइ वह ।
पिंडा करो सुधारि, दश दश पलके तोलिके ॥
दोहा—यक यक पिंडा बाजिको, दीजै रोज खवाइ ।
चालिस दिनमो बल बढै, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥

अथ पिंडादि वर्णन ।

दोहा—कहत यथामतिसों अहौ, शालहोत्र मत जानि ॥
पिंडादिक जे बाजिके, करैं रोगकी हानि ॥ १ ॥
मधुमाखी मोथा सहित, हरैं सैंधव आनि ।
पिंडा बाँधौ भाग सम, गऊमूत्रमो सानि ॥ २ ॥
हयको दीजै पाँच दिन, मंदअग्नि मिटि जाइ ।
भोजन अति रुचिसों करै, दिनदिन तुरी तजाय ॥ ३ ॥

अन्य

दोहा—लटजीरा तेंदूसहित, पुहकरमूल तमाल ।
लोध दुग्ध युत पिंड करि, वात मिटै ततकाल ॥

अन्य ।

दोहा—धूप मूँगके जूसमें, बचको लेउ मिलाइ ।
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ ।

अन्य ।

दोहा—मिश्री दूध कपूर पुनि, एला पत्रज लाइ ।
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्रीषमऋतुमें जानिये, कोप पित्तकर होइ।
तब यह औषध दीजिये, चौरेहनी सो मोय ॥ २ ॥
लीजे लहसुन तैल पुनि, छाग माँसु मिलवाइ।
ताहि खवावै बाजिको, वात पित्त मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—दूध खाँड अरु माहिषि घृत, ताहि कपूर मिलाइ।
सो ले दीजे बाजिको, कफको देत नशाइ ॥

अन्य।

दोहा—औंरा गोरोचन सहित, बीज बरेरा लाइ।
सो ले दीजै बाजिको, गुल्म हृदय मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—सहदेई बच कूट पुनि, अरु इंद्रायनि आनि।
अतिहि श्वासको हरति है, करुण सहित सो जानि॥ १॥
सज्जी लोन प्रियंगु पुनि, और बहेरा लाइ।
यह घोडेको दीजिये, तो खांसी मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—हर्दी सोंचर पीपरी, अरु इंद्रायन लाइ।
सो घोडेको दीजिये, मूतकर्क मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—जेठीमधु पीपरि सहित, देवदारुको जानि।
गंधक बहुरि हरीतकी, भाग समान बखानि ॥ १ ॥
गोली ताकी बाँधिके, हरिको देउ खवाइ।
लीदि करे जो रक्तयुत, सो पीडा मिटि जाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

चौ०—दूनी हर्दी गंधक लाई । करुये तेलहि पिंड बनाई ।
सो घोडेको देउ खवाई । रक्तविकार तुरत मिटि जाई ॥

अन्य ।

दोहा—वटकलिका अरु नींब लै, अरसीपत्र मिलाइ ।
सो घोडेको दीजिये, अतीसार मिटि जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—जो घोडेकी देहमें, कृमि अव्रण ह्वै जाइ ।
थूहर रंडा पात लै, ताको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कद अरु मोसम देखिकै, बहुरि मिजाज विचारि ।
पिंडादिक तब दीजिये, श्रीधर कवि निरधारि ॥ २ ॥

अथ तुरंग तेज करैकी विधि ।

दोहा—पीपरि सैंधव सोंठि पुनि, सरसों तेल गिलोय ।
अँमिलबेत पुनि लीजिये, सम करि सबै मिलोय ॥ १ ॥
औषध यकइस दिनलगे, रोज पाँच पल देइ ।
नाशै आलस बल बढै, जल्द तुरत करि लेइ ॥ २ ॥

दोहा—त्रिफला कुटकी चीत लै, मोथा वायविडंग ।
औषध दीजै पाँच पल, खरी मद्यके संग ॥

अन्य ।

दोहा०—रहसनि पीपरि मधु सहित, केसरि श्रीफल आनि ।
औरो लीजे तालफल, ताकी गूदी जानि ॥ १ ॥
औषध भाग समानसों, चारि टका भरि लेइ ।
दीजै प्रातहि सात दिन, अति चंचल करि देइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ बहुत कोश चलानेकी विधि।

चौ०--काला साँपु बडा ले आवै। तनु नहिं फूटै रुधिर न आवै॥
ताके मुहँमें चना भरावै। गंती यकशत कम न करावै॥
माटीके घट भीतर धरिकै। मोहराबंद बहुत विधि करिकै॥
भूमि खोदि यक गडहा करै। ताके भीतर घटको धरै॥
आसपास बहु लीदि तुपावै। चालिस दिन याहि भाँति रखावै॥
ताके पीछे घट खुलवाई। सर्पके मुँहके चना धुवाई॥
घामें सुखै राखु धारि भाई। तीनि चनाको रोज खवाई॥
शीतकालमें ताहि खवावै। तुरँग बहुत सो वृद्धि करावै॥
बहुत दौर दमकस परमानै। दक्षिणके उस्ताद बखानै॥
सत्तारि साठि कोश लगु दौरै। दवा प्रमान कीन शिर मोरै॥
ऐसी दवा और नाहिं कोई। की सत्तू दाना सँग देई॥

अथ बरजतिया सर्प खवानेके गुण।

दोहा--ज्यों सुमेरु गिरि अचल है, औ शस्त्रनमें बान।
त्यौं बाजीको सर्प है, सब औषध परमान॥ १॥
बरजतिया आहि मारिकै, घुडशालामें राषि।
देउ ताहि ऋतु शिशिरमें, नकुलमते यह भाषि॥ २॥
चौ.-ज्यों रविकिरण तिमिर हारि लेई। त्यों सब सुख बाजीको देई॥
शिशिर खवावै सुनु बुधवंता। करत सकल रोगनको अंता॥

अथ मिठाई खवानेके गुण।

दोहा--मीठामें गुण तीन हैं, शिता खांड गुड माहि।
अति गुणदायक सोखकृत, बदी करै गुड चाहि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ।

दोहा–तिल लै खूब कुटाइये, गुड सम देउ मिलाइ ।
पिंड बनाइक दीजिये, सेर नित्त यहि भाय ॥
चौपाई–माघमास घोडेको दीजै । अति बल करै रोगको छीजै ॥

अथ तिल देनेकी विधि ।

दोहा–एक सैकरा साठि पल, कारे तिल मँगवाइ ।
ता सम अरसी लीजिये, दोऊ लेउ भुँजाइ ॥
सोरठा–तिलको लेउ कुटाइ, हर्दीको गादा बहुरि ।
अदरख लेउ मँगाइ, चारो चीजैं भाग सम ॥
दोहा–चारोंके सम लाल गुड, तामें देउ मिलाइ ।
चालिस पिंडा कीजिये, रोज खवावत जाइ ॥ १ ॥
दीजै चालिस रोज लगु, बाजी मोटा होइ ।
जाडेकी ऋतु देखिकै, हयको दीजै सोइ ।

अथ जलेबी देनेकी विधि ।

दोहा–सेर एक सो दीजिये, पाँच सेर लगु जानि ।
देउ जलेबी वाजिको, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
स्याहमिर्च लै दोइ पल, अरु अदरख पल चारि ।
यहको दीजै आनि कारि, लोन दोइ पल डारि ॥ २ ॥

अथ मेषको सींग देनेकी विधि ।

दोहा–सींग मेषको लीजिये, अग्नि माहिं भुँजवाइ ।
जरे सींगको लीजिये, खूब मिर्ही कुटवाइ ॥ १ ॥
माटीकी हाँडी विषे, ताको देउ धराय ।
तामें सहत मिलाइकै, कवि श्रीधर सुखदाइ ॥ २ ॥

In Public Domain; Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ना अतिगीली कीजिये, ना सूखो रहि जाइ।
हाँडी पर परिया धरै, माटी देउ लगाइ ॥ ३ ॥
चौ०—फिरि दुइ सेर कंडा लै आवै। हाँडीके तर तिनहिं जरावै
हाँडी जबहीं जाइ जुडाई। औषध तासों लेउ कढाई ॥
पीपरि मिर्च सोंठि लै आवै। सोंचर सज्जी लोन मिलावै ॥
सूख सहतरा तामें दीजे। पीसि कपरछन सबको कीजे ॥
षटमासे अरु मासे तीनी। एक एक औषधि कहि दीनी ॥
सबै औषधी लेउ मिलाई। औषधि सींग समान कराई ॥
दोहा—औषधि पैसा एक भरि, गूगुर मासे तीनि।
औषधि दीजै वाजिको, प्रथम दिवस कहि दीनि ॥
सोरठा—उतने गूगुर माहिं, औषधि पैसा दोइ भरि।
हयको देउ खवाइ, जानौ दुसरे दिन विषे ॥
दोहा—औषधि पैसा एक भरि, रोज बढावत जाइ।
दीजै वासर सात लौं, गूगुर उतने लाइ ॥ १ ॥
औषध पैसा पाँचभरि, तामें लेउ मिलाइ।
चारि टका भरि खांडको, घोडे देउ खवाइ ॥ २ ॥
या विधि दीजै सात दिन, फिरि याही विधिजानि।
औषध पैसा पाँच भरि, आध पाव घिउ सानि ॥ ३ ॥
दीजै वासर सात लौं, वात रोग नाशि जाइ।
मोट होइ अरु बल बढै, चोट पुरानी जाइ ॥ ४ ॥

अथ तैयारीकी दवा।

चौपाई—लेउ बकैना पात मँगाई। हरियर ताजे नरम सुहाई ॥
पीसि महीन सेर यक लीजै। आध सेर यव आटा दीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साँभारि नमक पाव अध लीजे । पिंड बनाइ अश्व मुख दीजे ॥
एक मास भारि देउ खवाई । ताजा होइ बहुत सुख पाई ॥

अथ महेला ताजा होइ झोंझ बढै ।

दोहा–सागु चकेंडा लीजिये, वर्षाऋतुमें जानु ।
जबलौं नहिं फूले फरै, करौ जतन यह मानु ॥

चौपाई–पाँच सेर यह सागु मँगावै । चारि सेर मोथी लै आवै ॥
आधा पाव लै साँभारि नमका । पकै महेला देउ तुरँगका ॥
एक माह यह जतन करीजै । रुष्ट पुष्ट बहु झोंझ बढीजै ॥

अथ पानी पियानेकी विधि ।

दोहा–कर्क आदि इमि रीतिते, भाषो मकर प्रयंत ।
दीजै पानी तुरँगको एक दाँइ बुधवंत ॥ १ ॥
कुंभ प्रथम दै मिथुन लगु, तीनि बेर जल देय ॥
तुरँग सुखी दिन प्रति सदा, जानि लेउ बुध सोय ॥ २ ॥

अथ ईंगुर गुटिका ।

दोहा–सुमिलखार ईंगुर सहित, त्रिकुटा गुग्गुल आनि ।
शोधा विष पुनि लीजिये, टंक टंक सब जानि ॥ १ ॥
लौंगै अदरख पान पुनि, खील सोहागा आनि ।
एक एक प्रति दोइ पल, श्रीधर सुकवि बखानि ॥ २ ॥
खरिल कीजिये दोइ दिन, अदरखके रस माहिं ।
झलबेरियाकी सदृशही, गोली बाँधै ताहि ॥ ३ ॥
आटा भूँजे जवनको, वह गोली तिहि संग ।
हयको देउ खवाय सो, रहै न रोग प्रसंग ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्य ईंगुर गुटिका शोधन विधि ।

दोहा—विष अरु ईंगुर शंखिया, तोले तोले आनि ।
पपरी लीजै खैरकी, बारह मासे जानि ॥ १ ॥
लेउ अकरकरहा बहुरि, अरु अजमोद मँगाइ ।
छाछा मासे दुहुँनको, कवि श्रीधर तैलाइ ॥ २ ॥
अदरखको रस डारिकै, दिनभरि खरिल कराइ ।
तोला भरि पारा बहुरि, तामें देउ मिलाइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा—बँगलापान मँगाइकै, ताको अर्क कढ़ाइ ।
एक दिवस फिरि ताहिमें, लीजै खरिल कराइ ॥ १ ॥
माटी बाँबीकी बहुरि, सोरहमासे आनि ।
ताते तिगुना लीजिये, दूध मदार बखानि ॥ २ ॥
फेरि खरिल ताको करै, जब रस रहै समान ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, गोली तासु विधान ॥ ३ ॥

ईंगुर गुटिकाका गुण ।

दोहा—कफ अरु वात विकारते, रोग जिते सब होंइ ।
देतै गोली एकके, तुरतै डारै खोइ ॥
सोरठा—माहिना जाडे माहिं, यक यक गोली तीनि दिन ।
जवके आटा माहिं, जाय खवावत वाजिको ॥
दोहा—राह चलेपै ना थकै, की तो थकिगा होइ ।
दीजै गोली एक तिहि, भरत नहीं है सोइ ॥

अथ हियातवटी सर्वरोगपर ।

दोहा—सिंगरफ तोला चारि भरि, शँखिया सुमिल समान ।
उतनो भूँजा कनकरिपु, सम पपरी खदिरान ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेसन तोला चारि भरि, लखि अदरखरस सान ।
दश रत्ती ओजन बनै, ताकी वटी विधान ॥ २ ॥
देइ सबेरे अश्वको, अति गुणदायक जानु ।
सकल रोग हर जानु यह, वटी हियात प्रमानु ॥ ३ ॥

अथ अमृतवटी सर्वरोगपर ।

चौ०—ईंगुर सुमिलखार मँगवावै । टंक टंक भरि वजन करावै ॥
गूगुर लौंग सोहागा आनै । पैसा पैसा भरि परमानै ॥
पीपरि मिर्च मेलि सम करै । अदरख पान अर्कमा धरै ॥
खरिल करै दिन तीनि बनाई । गोली चना प्रमाण कराई ॥
दोहा—अंमृत वटिका दीजिये, भूँजे आटा माह ।
सर्वरोगहर बल करै, मिटै जहर जो छाह ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवर्षभरेकी चिकित्साकथनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ मांस देनेकी विधि ।

दोहा—आमिष दीजै छागको, कद अरु भूँख विचारि ।
छाग होइ हलवानसो, यह राखौ निरधारि ॥ १ ॥
आमिष लीजै साठि पल, ताको साफ कराइ ।
ताको फेरि पकाइये, हर्दी दही लगाइ ॥ २ ॥
घीव लीजिये आठ पल, दुइ पल लेइ पिआज ।
गरममसाला डारिकै, ताहि पकावै साज ॥ ३ ॥
हाड निकारै मांसके, रोटी मीसि खवाय ।
सुरुवा राखै नाहिनै, दीन्हों जतन बताय ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आमिष व गूदा देनेका मसाला।

चौ०—एक टका भरि मिरचै लावै। ता सम हर्दी आनि मिलावै॥
अदरख और मिठाई लीजै। आठ टका भरि दोनों कीजै॥

दोहा—सो पानीके प्रथम ही, हयको देउ खवाय।
पानी देकै वाजिको, दीजै आमिष लाय॥

मेषका मांस देनेकी विधि।

दोहा—लीजै आमिष मेषको, चालिस पल तौलाइ।
कही पकावन विधि अहै, ताही विधि पकवाइ॥ १॥
जौकी रोटी बीस पल, तामें लीजै सानि।
दश पल डारै ताहिके, संग मद्यको आनि॥ २॥
बूढ तुरंगम होइ जो, दीजै चालिस रोज।
वाजी होइ जवान जो, ताको बीसै रोज॥ ३॥

मसाला।

दोहा—लहसुन मिर्चैं सोंठि पुनि, एक एक पल आनि।
सरसों सैंधव एक पल, श्रीधर कहो बखानि॥

सोरठा—याको देइ खवाइ, दोय घरी कैजा करै।
फिरि जल दीजै लाइ, ता पीछे आमिष कहो॥

शूकरका मांस देनेकी विधि।

दोहा—पल पचास तौलाइये, शूकरमांसहि जानि।
ताहि पकावै नीरमें, केवल हर्दी सानि॥ १॥
गूलरके फल सात पल, महिषी दही मिलाइ।
दीजै बूढे वाजिको, मोट सही ह्वै जाइ॥ २॥
कही क्षुधाकर औषधी, सो दीजै नित लाइ।
या विधि दीजै साठि पल, बूढ तरुण ह्वै जाइ॥ ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अखनी देनेकी विधि ।

दोहा—एक सैकरा साठि पल, आमिष छाग मिलाइ ।
थोरे घीमें भूजिये, थोरी हर्दी लाइ ॥ १ ॥
फेरि चुरावै नीरमो, अखनी लेउ कढाइ ।
ताकी विधि अब कहतहौं, जानि लेउ सुखदाइ ॥ २ ॥
ताहि बघारै घीउमें, तीनि बार यह जानि ।
दीजै चालिस रोज लग, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा—जवाखार साँभरि सहित, सोंचर सैंधव आनि ।
चारो लीजै एक पल, दुइ पल कचरी जानि ॥ १ ॥
कुटकी मिर्चैं सोंठि पुनि, डेढ टका भारि लेइ ।
एक रोजको बीच दै, सो वाजीको देइ ॥ २ ॥
फल भोजन जिनके कहे, शालहोत्र मत माहि ।
यह औषध सबमें उचित, जानि लेउ तुम ताहि ॥ ३ ॥

मुर्ग देनेकी विधि ।

दोहा—मुर्गा दीजै बीस दिन, की चालिस दिन जानि ।
छुट्टा मुर्गा सो चुनै, नितप्रति एक बखानि ॥
सोरठा—लीजै ताहि पकाइ, जौन पकावन विधि कही ।
हड्डी तासु कढाइ, बासी रोटी सानिकै ॥ १ ॥
हयको देउ खवाय, औषध दीजै गरम नहिं ।
साँक रोग नाशि जाय, दीजै वात बचाइ जो ॥ २ ॥

अन्य मांस देनेकी विधि ।

दोहा—तातर लवा बटेरको, और कपोत बखानि ।
मांस दीजिये ए सबै, सकल रोग हर जानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मांस पकानेकी विधि ।

दोहा–आठ टका भारि घीवमें, प्रथमहिं भूँजै आनि ।
फेरि पकावै नीरमें, पहर एक यह जानि ॥ १ ॥
गोहूं रोटी बीस पल, तामें लीजै सानि ।
पानी देके वाजिके, ताहि खवावै आनि ॥ २ ॥
जा वाजीके तनुविषे, वातरोग जो होइ ।
रोटी दीजै मोठकी, बहुरि गर्मकारि सोइ ॥ ३ ॥

अथ मुर्गीके अंडा देनेकी विधि ।

दोहा–अंडा दीजै वाजिको, ताकी यह विधि आहि ।
दिन प्रति एक बढाइये, दश बासर लौं ताहि ॥
सोरठा–ग्यारह दिनमें वाहि, दश अंडा अरु दीजिये ।
फिरि नव वासर माहि, दिनप्रति एक घटाइये ॥
दोहा–प्रति अंडाके भाग अध, लीजै खांड मिलाइ ।
ताते आधा घीव लै, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
चौपाई–दुइ मासे अदरखरस लीजै । प्रति अंडामें ताको दीजै॥
मोठ महेलामें सनवाई । कच्चे अंडा रोज खवाई ॥
दोहा–बल जाको घटि गयो, अरु जलदी थाकिजाइ ।
या विधि अंडा दीजिये, जोरु तासु सरसाइ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–अंडा दीजै बीस दिन, दिनप्रति एक बढाइ ।
एक एक कमती करै, क्रमसों देउ छँडाइ ॥ १ ॥
हरदी मासे दोइ लै, ताको लेउ पिसाइ ।
एक एक अंडा विषे, दीजै ताहि मिलाइ ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो रोटी सग भिजैकै, हयको देउ खवाइ ।
शालहोत्र मत कहतहौं, दिन दिन बल सरसाइ ॥ ३ ॥
ढीलो वाजी जो चलै, देह हलावत होइ ।
या विधि अंडा दीजिये, सुस्त चलत पुनि सोइ ॥ ४ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–दिनप्रति अंडा दश कहे, सो चालिस दिन देइ ।
ताकी विधि अब कहतहौं, जानि तासुको लेइ ॥ १ ॥
घीमों अंडा भूँजिकै, दुइ पल हर्दी लेइ ।
अंडनके सम खांडको, दोनों तामें देइ ॥ २ ॥
ताहि खवावै वाजिको, कवि श्रीधर यह जानि ।
मोटा वाजी होत है, बाढै बलकी खानि ॥ ३ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–अंडा दीजै वाजिको, ताकी यह विधि जोइ ।
पहिले दिनमें एक दै, दूजे दिनमें दोइ ॥ १॥
तीजे दिनमें तीनि दै, या विधि और बढाइ ।
दीजै चालिस रोजसो, हयको आनि खवाइ ॥ २ ॥
सहत रुपैया दोइ भारि, प्रतिअंडामो जानि ।
साढे दश मासे बहुरि, अदरखके रस सानि ॥ ३ ॥
अंडाके रस माहिमो, दोऊ देउ मिलाइ ।
भूँजो मोठ पिसान लै, तामें ढील सनाइ ॥ ४ ॥
मोटा वाजी होइ अरु, बल ताको अधिकाइ ।
औरौ बहुत कहा कहौं, बूढ तरुण ह्वै जाइ ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—विप्रवर्ण जो होइ, अंडा ताको नाहिं परै ।
जानि लेउ जिय सोय, औरो विधियककहतहौं ॥
दोहा—अंडा जाको नाहिं परै, अरु मुर्गाको मांसु ।
ताकी यह पहिचान है, प्रथमहि कीजै तासु ॥ १ ॥
सूर्यऋचा आकृष्ण है, पढे कानमें तासु ।
या अंडा या मुर्गको, तुमको देहौं मासु ॥ २ ॥
यह कहि दीजै कानमें, दीजै राति बिताइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत आइ ॥ ३ ॥
प्रात भये फिरि देखिये, जब हीं आवैं आँसु ।
ताको अंडा देइ नाहिं, अरु मुर्गाको माँसु ॥ ४ ॥
हठ करि कोऊ देइ जो, तो रोगी है जाइ ।
वाजी दूबर होइ अरु, अकसर करि मरि जाइ ॥ ५ ॥

अथ मछरीखवानेकी विधि ।

दोहा—रोहू मछरी साठि पल, तिनको खल काढाइ ।
घीमें तिनको भूँजिकै, पानीमो पकवाइ ॥ १ ॥
काँटा डारै काढि सब, दश पल घीउ मिलाइ ।
मोटी रोटी साथमें, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

चौ०—निर्बल अश्वहि देउ खवाई । चालिस दिनमाँ बल बढिजाई ॥
अति बूढो वाजी जो होई । या सम औषध और न कोई ॥

मछरी देनेकी अन्य विधि ।

दोहा—रोहू मछरी दोइ लै, साठि साठि पल होइ ।
की कम ज्यादा होइ कछु, या परमानहि सोइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिन मछरिनकी देहमें, देउ पिंडोर लेसाइ ।
भुँइमें गडवा खौदिके, कंडा देउ भराइ ॥ २ ॥
ता मधि मछरी गाडिकै, दीजै आगि लगाइ ।
कवि श्रीधर यह कहत हैं, तापर और उपाइ ॥ ३ ॥
बारबार घिउ डारिकै, मछरीके मुखमाहि ।
सुर्ख होइ जौलौं नहीं, तौलौं डारत जाहि ॥ ४ ॥
सोरठा—पाकि खूब जब जाइ, खाल काँट सब काढिये ।
हयको देउ खवाइ, मोटी रोटी सानिकै ॥ ५ ॥

मसाला ।

दोहा—सौंठि मिर्च अरु पीपरी, टका टका भरि आनि ।
सो छिरका मधि सानिकै, हयको दीजै मानि ।

अन्य मछरीके मूडदेनेकी विधि ।

चौ०—दश शिर रोहूके लै आवै । घीमें तिनको आनि भुँजावै ॥
तिनको भेजा लेउ कढाई । बेसनमो फिरि ताहि सनाई ॥
दश दिन याहि विधि रोज खवावै । दश दिनते दश और बढावै ॥
बीस रोज या विधिसों दीजै । फेरि और दश ज्यादा कीजै ॥
दोहा—तीस तीस फिरि दीजिये, दिन चालिसलौं जानि ।
शालहोत्र मुनिके मत, अश्व होइ बलखानि ॥ १ ॥
बूढे हयको दीजिये, करि मछरीको प्रेम ।
युवा वाजिको देइ नहिं, शालहोत्रको नेम ॥ २ ॥

अथ बोकराका शीश देनेकी विधि ।

चौ०—यक बोकराको शीश मँगावै । नितप्रति प्रात पकाइ खवावै ॥
यकइस दिनलौं या विधि कीजै । वृद्ध अश्वको ज्वान करीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुधिर देनेकी विधि।

चौ०—यक बोकराको रुधिर मँगावे। प्रात खवाइ जवान करावे॥
यकइस दिनलौं नितप्रति दीजे। वृद्ध अश्वको ज्वान करीजे॥

चर्बी देनेकी विधि।

चौ०—बोकरा की चर्बी मँगवावे। एक पाव नित प्रात खवावे॥
यकइस दिन याहूको दीजे। वृद्ध होइ तिहि ज्वान करीजे॥

अथ बरियाँ देनेकी विधि।

दोहा—उर्ददालिकी छीजिये, बत्तिस पलै भिजाइ।
कचरा ताको पीसिकै, बरियाँ लेउ बनाइ॥ १॥
धारि राखे सो राति भरि, हयको देउ खवाय।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों जतन बताय॥ २॥

अन्य।

दोहा—बरियां दीजे वाजिको, दही माहिं भिजवाइ।
राई लहसुन सोंठि पुनि, चारि कर्ष मिलवाइ॥

अन्य।

दोहा—लाल मिठाई तीस पल, कीजै तासु जलाउ।
तामें बरियां भिजैकै, हयको सोइ खवाउ॥ १॥
बरा दीजिये माघभरि, और मासमो नाहि।
वाजी मोटा होइ बहु, बाढे पौरुष ताहि॥ २॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतमांसवर्णनो
नाम द्वाविंशोऽध्यायः॥ २२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ मसालासाठिया ।

चौपाई—जवाखार अरु पापरखारी । सज्जीखारमैनफल डारी ॥
बच अरु पिपरामूरि मँगावै । अजवायनि खुरसानी लावै ॥
लेउ कैफरा और फिटकरी । सैंधव सोंचर लोन साँभरी ॥
पक्के कुआँ कि काई चँदसुर । कटु तुँबरी दल अर्क लेउ नर ॥
यहि षोडश लै दवा पिसावै । एकै एक छटाँक मँगावै ॥
कुटकी कूट भरंगी मेलै । बीज चकैडा मिरचै गोलै ॥
घुडरहसनि अरु हींग मँगाई । तुचा बकैना फलको लाई ॥
मुर्रा अरु हुरहुरके पाता । दश अध पई लेउ सम ताता ॥
हरदी मिरचा धनिआ लावै । हैसिमूलकी छालि मँगावै ॥
भँगरैला असगँध अजमोदा । गेरु धुरिय अरु कंजक गूदा ॥
रूसकटैया गोलि नवाली । दूनो जरका तुचा निकाली ॥
काराजीरी पिपरी लावै । घुघुआरी का गूद मिलावै ॥
मालकाँगनी गूगुरभैंसा । डारु सोहागा भूँजि महीसा ॥
लीजै दवा सत्तरह आनी । पाव पावकी है परमानी ॥
राई देशी भाँग मँगावै । दुइ दुइ सेर वजन करवावै ॥
सोवा सोंठि पाव लै तीनी । सेर अढाई लहसुन देनी ॥
अर्क फूल बंडार जु लीजै । मूल धतूरे तुचा करीजै ॥
टका टका भरि तीनों मेलौ । कचरी सेर एक तिहि घेलौ ॥
देशी अजवायनि लै त्रिफला । बाँसपात औ अदरख मेला ॥
फल इंद्रायनि पाक फूँकिकै । मेथी रंडपात जोगियाके ॥
यहि नौ औषध करौ विधाना । आध आध सेरै परमाना ॥
राई लेउ बनरसी भाई । सेर एक तामें मिलवाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहिंजनजरकी छालि मँगावै। और पुराना गुड लै आवै॥
दश दश सेर दुऔ परमानै। सकल पीसि कपरामें छानै॥
भैंसीकेरो दही मँगावै। तामें औषध सब सनवावै॥
घामें सुखे पीसि फिरि लीजे। तामें छिरका मर्दन कीजै॥
तुचा सहींजन सिल पिसवावै। एक कराही जल भरवावै॥
तामें छाली देव भराई। पीछे डारु मिठाई भाई॥
दूनों जब पानीमें चुरै। ताके पाछे औषध भरै॥

दोहा—सकल पकावै एकमें, जब पानी जरि जाय।
तबहीं धरै उतारिकै, घामे लेइ सुखाय॥ १॥
आध पाव नित दीजिये, तुरँग अरोगी होय।
भूंख बढै तनु बल करै, उदर व्याधि हरि लेय॥ २॥

अथ प्रथम मसाला बत्तीसा सर्व रोग पर।

दोहा—जिस औषधिका वजन नहिं, यामें कुछ दरशाय।
वह औषधि चोखी लियो, टका टका भारि भाय॥

चौपाई—पिपरी लहसुनऽ-पिपरामूरी। कुटकी बायविडंग कचूरी॥
मिर्च सोहागाऽ-काराजीरी। अजवायनि हरदी बहुपीरी॥
बच गूगूर अरु हर्र मँगाई। सज्जी जवाखारको लाई॥
मेथीऽ- सोंठि मैनफल लेहू। बीज कसौंजी तामें देहू॥
चीतो बीज पवाँर विधारो। कालेश्वर जीरा विधि न्यारो॥
सेर आध विजयाको लीजै। हींग टका भारि तामें दीजै॥
लेउ सोहागा और फिटकरीऽ-। भूँजि खील सो दूनो धरी॥
साँभरि सोंचर सैंधव खारी। आध सेर लीजे यह चारी॥
मानुषकी खुपरी लै आवै। महिषा सींगे ताहि मँगावै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुइ दुइ पलकी राख करावै । ताही क्रमते हींग मिलावै ॥
पीसि छानि सब औषध लीजे । चनाके आटामें तिहि दीजे ॥
टका टका भरि ताहि खवावै । रोग जाय सब बल उपजावै ॥

अथ द्वितीय मसाला बत्तीसा ।

चौपाई–भँगरैला औ भाँग भरंगी । सोंठि सोहागा सोवा संगी ॥
कुटकी कूटि केफरा कचरी । मेथी धनियाँ लहसुन पिपरी ॥
दोनों मिर्च मैनफल राई । त्रिफला डारु फिटकरी भाई ॥
अजवाइनि असगँध अजमोदा । बच बंडार पीत बहु हरदा ॥
अजवाइनि लीजै खुरसानी । सातौ खार मिलावौ आनी ॥
काराजीरी हींग मँगावै । अदरख अरु मुर्रा लै आवै ॥
सम करि भाग कूटि बहु पीसा । चूरण कहिये यह बत्तीसा ॥
टका टका भरि प्रात खवावै । अश्वाके कोइ रोग न आवै ॥

अथ तृतीय मसाला बत्तीसा ।

चौपाई–हरदी अजवायनि अरु राई । हालिम मँगरैलाको लाई ॥
धनियाँ काराजीरी सोवा । सौंफ हर्र वैशाखी मोवा ॥
हर्रै जंगी गूगुर मांई । काकजंघ मेथी मँगवाई ॥
पिपरी सोंठि पीपरामूरी । सनवीजा वंडार सुनौरी ॥
खसरा बावभरं गजपीपरि । कैफर लीजै चीत शतावरि ॥
लोध भिलावाँ मैदा मोथा । भाँग मैनफलको करु साथा ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै । अश्वै प्रात छटाँक खवावै ॥
होय तयार रोग सब खोवै । नकुलमतो बत्तीसा देवै ॥

अथ चतुर्थमसाला बत्तीसा ।

चौ०–बास जवास इँदारुनि आने । रंडमूल दल अर्क प्रमाने ॥
बीज कसौंजी औ कुकुरौंधा । कनकबीज दुधियायुत पौधा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साँभरि भँगरैलाको लीजै। गोभीरे खरपुरना कीजै॥
गुम्मा सहिंजन छालि मँगावे। कल्पनाथ कालेश्वर लावे॥
मेहदी सेहुँड बबुरकी छाली। मेथी हरैं हरदी घाली॥
जीरा सौंकके अरु राई। मुंडी लेउ सनाय मँगाई॥
पचगुरिया पँवारके बीजो। नैरपात अजवायन लीजो॥
सकल दवा सम भाग पिसावे। दशयें अंश नमक डरवावे॥
देउ नहारी संघ छटांका। रोग हरै बाढि क्षुधा धडाका॥

अथ मसाला सोरहिया।

चौ०—राई हरदी लोन मँगावे। सोंठि सोहागा सोवा लावे॥
पिपरी पिपरामूरि जवाइन। त्रिफला मिले करो यक ठाइन॥
बच बंडार जु हींग मँगावे। लहसुन ले सम भाग पिसावे॥
टका टका भारि घोडे दीजै। सोरह गुणको जाल करीजै॥

अथ मसाला वाराही चिकित्सा।

दोहा—मधु सैंधव कुकुरार्वधा, हरां समहि मिलाय।
गऊमूत्र यव अरदवा, घालि दिये अतिखाय॥ १॥
केला केथरापातलै, श्वेतखाँड घृत आनि।
सम कारि हयको देइ नित, अधिक क्षुधाकर जानि॥ २॥

अथ मसाला कामधेनु चूर्ण वातरोगपर।

चौपाई—लहसुन मेथी मिरचे गोली। पिपरामूल भरंगी मेली॥
लेउ सोहागा कैके फुकनी। तामें डारु तमाखू थुकनी॥
लेउ भेलावँ मैनफल हरदी। तोला दुइ दुइकी करु गरदी॥
सनफर लेउ भाँग मँगवाई। तोले चारि चारि मेलवाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सबको कूटि यकत्र करि, सहिंजनरसमें सानि ।
दुइ तोलाकी वजन करि, गोली तासु विधानि ॥ १ ॥
कामधेनु याको कह्यो, हयको देउ सुजान ।
उदर शूल मंदाग्नि हर, अतिहि गुणनकी खान ॥ २ ॥

अथ मसाला भस्मावती दाना चारा बढानेका ।

चौपाई—सोंठि बेतरा मिर्चैं पीपरि । कुटकी चारौ सेर सेर धरि ॥
कालानमक सेर लै आधो । कूटि छानि एकैमें साधो ॥
प्रात छटाँक अश्वको दीजे । बढे खुराक रोग तनु छीजे ॥
भसमावंती याको नामा । नकुलमतेको है अभिरामा ॥

अथ मसाला क्षुधाकरन ।

चौ०—गोदधि दुइ मन लेउ मँगाई । छालि सहींजन छा सेर लाई ॥
सैंधव साँभरि सज्जी लीजे । सोंचर खारी तामहँ दीजे ॥
राई लहसुन काराजीरी । अजवाइनि हरदी बहु पिपरी ॥
बायविडंग लीजिये संग । खील सोहागा करि यक अंग ॥

दोहा—कूटि छानि दधिमें मिलै, यामें देउ धराइ ।
टका टका भरि दीजिये, जब औषध उफनाय ॥ १ ॥
ग्रीषम ऋतुहि बचायकै, जो घोडेको देय ॥
होय वलिष्ठ शरीर तिहि, क्षुधा अधिक सो होय ॥ २ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन ।

चौपाई—सज्जी अजवाइनि औ राई । सांभरि बायविडंग कटाई ॥
सोंचर सैंधव सम करि लीजे । वजन बराबरि ये सब कीजे ॥
काराजीरी औ चौंराई । लहसुन पिपरामूर मँगाई ॥

दोहा—कूटि छानिकै दीजिये, मोठ महेला माहिं ।
टका टका भरि वजन नित, यहि सम औषध नाहिं ॥

अन्य ।

चौपाई—नींबि बकैना और कसौंजी । कंज सहित पौधी चारौंजी॥
ता पाछे विषखपरा लीजै । सेर सेर ए सब करि दीजै ॥
अदरख पान मिर्चको लेहू । करि गुटका घोडेको देहू ॥
चालिस दिन अश्वा जो पावै । क्षुधा अधिक बहु अंग बढावै ॥
सोरठा—भूँजे आटा माहिं, प्रातसमय नित दीजिये ।
बल दिन दिन सरसाय, चेतनचंद प्रमाण यह ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

चौपाई—सेर एक महुआ मँगवावै । अरसी सहित भार भुँजवावै॥
अजवाइनि मेथी औ भाँगा । टका टका भरि खील सुहागा ॥
सकल पीसि मैदा करवाई । सेर दोय गुड देउ मिलाई ॥
एक दिनाकी है मोताजा । दिन यकइस याही विधि साजा ॥
दोहा—जाय बंद नाहिं दीजिये, देखत मोटा होय ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, बढै पराक्रम सोय ॥

अन्य ।

चौपाई—हरदी सेर आठ ले आवै । सुरभी क्षीरमध्य भिजवावै ॥
दिना सात लौं भीजा करै । छाँह सुखाय पीसिके धरै ॥
सेर एक सोंठीको लावै । दुइ सेर गोघृत आनि मिलावै ॥
पाँच सेर गोहूंकी मैदा । सकल मिलाइ धरो कह चंदा ॥
आवसेर तिहि नित्य निकारै । दूध खाँड सँग हलुआ करै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—या विधि औषध कीजिये, एक मास नित प्रात ।
चेतनचंद प्रमाण यह, मोटा ह्वै है गात ॥

अथ मसाला तुच्छअहारी ।

दोहा—तुच्छ करै आहार जो, दुर्बल रहै शरीर ।
तुच्छ अहारी नाम तिहि, रोग सुनो मतिधीर ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोद लै, हरैं दूनौं आनि ।
साँभरि संग खवाइये, भूँख ताहि अधिकानि ॥ १ ॥

अथ मसाला बलगम व बैयारीका ।

चौपाई—कुटकी कूट रु काराजीरी । कालेश्वर हरदी बहु पीरी ॥
बायविडंग सोहागा लीजे । भूँजि फिटकरी तामें दीजै ॥
मिर्च कंज औ पिपरामूरी । पीपरि सोंठि समेत कचूरी ॥
त्रिफला आँवलतासुको लीजै । असगँध नागौरी तिहि दीजै ॥
अजवाइनि मेथी औ राई । लेउ पुरानो गुरहि मिलाई ॥
सब यकत्र करि सम पिसवावै । औषधते गुड दून मिलावै ॥
आध सेरका पिंड बनाई । घोडेको दे प्रात खवाई ॥
बलगम जहरवातको नाशै । नीक होय औ रूप प्रकाशै ॥

अन्य ।

दोहा—लौंग मिर्च औ पान ले, अदरख पिपरामूरि ।
नित नेवाला दीजिये, रोग रहै तिहि दूरि ॥

अथ मसाला ताजा होनेका ।

चौपाई—राई मेथी हालिम हरदी । पीसि छानि कीजै सब गरदी ॥
दोहा—डेढपाव तिहि लीजिये, गोहूँ दरि यक सेर ।
तीनि सेर गोदूधमें, साँझ भिजे दे भोर ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोडा दुर्बल देखिकै, चालिसदिन नित देय ।
रोग हरै बहु बल करै, हृष्ट पुष्ट तनु होय ॥ २ ॥

चौ०—सोवा अजवाइनि दुइ सेरै । राई लहसुन उतनै गेरै ॥
लेइ पियाज सेर दुइ छीली । आध सेर साँभारि तिहि मेली ॥
छंद—सब कूटि दही दश सेर राषि।धरु सात रोज घामें सो भाषि॥
ले पाउ कि आटा आध सेर । कै बूट माष हय वदन गेर ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन ।

दोहा—गुड तीनि सेर गोमूत्र सँग, दीजै ताहि पकाय ।
भूँख बढै बहु बल करै, सुंदर वदन दिखाय ॥

अन्य ।

चौपाई—मिर्च लेउ कंकोल मँगाई । मिर्चा अरुण बराबरि लाई॥
केवडाकी जर खाँड मँगाई । जेठी मधु सब्जी मिलवाई ॥
सातौं दवा बराबरि लीजै । एकै टंक मात्र नित दीजै ॥
दोहा—गुड दुइ स्यर घृतमें मिले , पिंड करौ नितएक ॥
सात रोज लग दीजिये , हृष्ट पुष्ट तनु झेक ॥

अथ मसाला निर्बल घोडेका ।

चौपाई—मेथी सोरह टंक पिसावै । ईगुर औ कंकोल मँगावै ॥
गंधपसार श्याम जो लीजै । और बिजौरा सम सब कीजै ॥
सोरठा—अबल सबल ह्वै जाय, जो हयको कीजै जतन ।
दवा किये रुज जाय, शालहोत्र इमि उच्चरै ॥

अथ मसाला वृद्ध घोडेका ।

दोहा—आमिष चुरै मधु दधि मिले, दीजै वृद्ध तुरंग ।
चोदह दिन नित दीजिये, होय युवा सम अंग ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ मसाला घोडेकी तैयारीका ।

चौ०-पिपरी पिपरामूल भरंगी । तोला दुइ दुइ करु यक संगी ॥
अदरख पाव एक मँगवावै । मिरचै आध पाव मिलवावै ॥
गानिके लौंग एकइस लीजै । बँगलापान एक शत कीजै ॥
कूटि छानि मैदा करवावै । तोला भारि सो नित्त खवावै ॥
जौके आटा सानिक दीजै । तुरँग तयार बहुत सुख लीजै ॥

अथ मसाला पाचकका ।

दोहा-मिर्च जवाइनि मैनफल, पिपरी बचाहि मिलाय ।
सज्जी सैंधव वीरिया, सम करि सकल पिसाय ॥ १ ॥
बडे अश्वको दीजिये, दुइ पैसा भारि रोज ।
लघुको पैसा एकभारि, दै छिरका सँग मौज ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-हर्रा हर्र जवाइनि लोनू । पीसि छानि बरतन धरु तोनू ॥
एक छटाँक साँझ भिजवावै । प्रात नहारी साथ खवावै ॥

अथ मसाला खुराक बढैका ।

दोहा-नमक भाँग अरु काचरी, राई सब सम आनि ।
कूटि सबै आटा मिलै, अशन बाद दै जानि ॥

अथ मसाला कम पानी पिये ताका ।

दोहा-तोला चारि जवायनी, दाना बाद खवाय ।
पीवै पानी बहुत सो, अति ही सुख दरशाय ॥

अथ मसाला अठरोजा ।

दोहा-कहौं मसाला अठरोजा, अठयें दिन जो देइ ।
भूँख बढै बहु अश्वकी, कोई रोग न होइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई—सोंचर नमक भेलावां लीजे । आध आध सेरै दोउ कीजे ॥
आधसेर अजमोद मिलावे । तिहि पाछे विधि और बतावे ॥
बायविडंग कूट अरु बचुकी । सोंठि और मीरोरफलनकी ॥
सोवा बीज बनरसी राई । घुडबच लोटा सज्जी लाई ॥
नरकचूर अरु काराजीरी । बीज पलाश ताहिमें डारी ॥
यहि बरहो औषध तोलावे । पाव पाव सम वजन करावे ॥
पीसि कूटि सब छानि धरीजे । दुइ तोला अठयें दिन दीजे ॥

अथ मसाला भस्मावंती चूरण ।

दोहा—भूँख बढै वादी हरै, चारा हजम कराइ ।
भस्मावंती नाम यहि, कहो मसाला आइ ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोदको, लोटा सज्जी लेउ ।
घुडबच सोंठी वैतरा, मिलै ताहिमें देउ ॥ २ ॥
सोवा बीज समीत है, ये षट औषध जानु ।
आध आध सेरै कही, यह परमान बखानु ॥ ३ ॥

चौपाई—नरकचूर औ कुटकी बचुकी । काराजीरी बकली हडकी ॥
बीज पलाश औ बायविडंगा । चारौं नमक करौ यक संगा ॥
पाव पाव सब वजन करीजे । एक छटांक हींग तिहि दीजे ॥
राई जौन बनरसी भाई । सेर अढाई तौलि मिलाई ॥
सकल दवा पिसवाइ छनावे । माटीके बरतन धरवावे ॥
नितप्रति एक छटांक खवावे । बरहौं मास रोग नहिं आवे ॥
मोठ पिसान मिलै सनवावे । पिंड बनाइ अश्व मुख नावे ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

दोहा—हर्र बहेरा आँवरा, कुटकी कचरी जान ।
मेथी अजवाइनि सहित, राई कहौं बखान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ—यह सब दवा सेर स्यर लीजे । साँभरि नमक तीनि स्यर दीजे॥
यह सब दवा कूटि छनवावे । माहिषी तक्रहि मिले सरावे ॥
आधपाव नित तुरँगहि दीजे । होइ बलिष्ट पुष्ट तनु लीजे ॥

अथ मसाला भूँख बढनेका ।

दोहा—रिंघिनि जर हालिम सहित, बायविडंग मँगाइ ।
अजवाइनि अजमोद लै, सोंठि चिरैता लाइ ॥ १ ॥
पात सँभारू ढाँखके, अरु औंराके जानि ।
पुनि लहसुनको लीजिये, सैंधवलोन बखानि ॥ २ ॥
अजवाइनिको लीजिये, दूनो भाग प्रमान ।
आधे भागहि हींग लै, सबको भाग समान ॥ ३ ॥
सबको गुडमें सानिकै, गोली लेउ बँधाइ ।
औषध तोले चारि भरि, दीजे रोज खवाइ ॥ ४ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन ।

दोहा—खुरासानि अजवाइनिहि, कुटकी बायविडंग ।
सात सात तोले सबै, काराजीरी भंग ॥ १ ॥
साँभरि सोंचर लोन लै, खारी लोन मँगाय ।
दुइ दुइ पल ये लीजिये, सबको लेउ पिसाय ॥ २ ॥
धरै एक बासन विषे, गऊमूत्र मँगवाइ ।
तामें भिजवै सात दिन, लीजे फेरि सुखाइ ॥ ३ ॥
गोली ताकी बाँधिकै, दिन यकइसमें देइ ।
दाना पाछे साँझको, क्षुधा अधिक कै लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—काराजीरी लीजिये, हर्दी कुटकी आनि ।
फूल कटैयाके बहुरि, बीज तमाखू जानि ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लीजे सज्जी लोन पुनि, टका टका भरि आनि।
गदहपुरेना पात अरु, कंजागूदी मानि ॥ २ ॥
पाँच पाँच पल दुहुँनको, सबके साथ पिसाइ।
टका एक भरि दीजिये, क्षुधा तासु सरसाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—अजवाइनि अजमोद पुनि, सोंठि पीपरी आनि।
घुडबच पिपरामूल अरु, अदरख मिर्च बखानि ॥ १ ॥
राई जीरा स्याह लै, कचरी लेउ मँगाइ।
औंरा हर्र बहेरकी, बकली लेउ कढाइ ॥ २ ॥
सोंचर सैंधव लोन पुनि, खारी लोन बखानि।
येती औषध सबनकी, पाउ पाउ भरि जानि ॥ ३ ॥
जवाखार साँभरि सहित, पाउ एक भरि आनि।
तोला भरि पुनि हींग लै, पीसै सबको मानि ॥ ४ ॥

सोरठा—दही माहिं सो सानि, डारै सिरका सेर दुइ।
धूममाहिं सो आनि, धरिराखै तिहि तीन दिन ॥

दोहा—दोइ टका भरि बाजिको, दीजै आइ खवाइ।
दाना पाछे साँझको, और क्षुधा सरसाइ ॥

अन्य।

दोहा—सोंठि सोहागा फिटकरी, कुटकी वायविंडग।
मिर्च कैफरा हींग पुनि, अरु घुडबचके संग ॥ १ ॥
जीरा लेउ सफेद पुनि, सबकर भाग समान।
गोली बाँधै तासुकी, झलबेरा परमान ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साँझ सबेरे बाजिको, यक यक गोली देय ।
नितप्रति देउ खवायसो, क्षुधा अधिक तिहिं लेय ॥ ३॥

अथ मसाला क्षुधाकरन गर्मीके दिननका ।

दोहा–लै अजवाइनि पाव भरि, हर्र सेरु भरि आनि ।
जवाखार पुनि लीजिये, तोले चारि बखानि ॥ १ ॥
दही गाइको सेर दुइ, तामें लेउ पकाइ ।
ओषध पैसा चारि भरि, दीजे रोज खवाइ ॥ २ ॥
दाना दैकै साँझको, हयको दीजे आनि ।
क्षुधा तासुकी अति बढै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अथ मसाला क्षुधाकरण और बलगम वगैरह जानेका ।

दोहा–औंरा हर्र बहेर पुनि, गोली मिर्च मँगाइ ।
काराजीरी लेउ पुनि, अरु अजवाइनि लाइ ॥ १ ॥
पीपरि पिपरामूल अरु, हर्दी राई आनि ।
लीजै अदरख सौंफ पुनि, हालिम सोंठि बखानि ॥ २ ॥

सोरठा–पाव पाव ये आनि, दुइ तोले पुनि हींग लै ।
तोले चारि बखानि, खुरासानि अजवाइनिहि ॥ ३ ॥

दोहा–कालेश्वर घुडबच सहित, सोंचर साँभरि आनि ।
आधे आधे पाव सब, जवाखारको जानि ॥ १ ॥
खील सोहागाकी बहुरि, आध पाव मँगवाइ ।
गूगुर तोले चारि भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
टका टका भरि औषधी, हयको देउ खवाइ ।
दाना दैकै साँझको, कैजा देउ कराइ ॥ ३ ॥
तासु क्षुधा बहुतै बढै, बलगम जाइ नशाइ ।
बीस रोज यह औषधी, रोज खवावत जाइ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीछे जाहि कनारके, क्षुधा मंद परिजाय ।
यहि चूरणते वाजिको, अतिहि गुणाकर आय ॥ ५ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरण ।

दोहा—खुरासानि अजवाइनिहि, राई हर्दी आनि ।
खारी मेंहदीपात पुनि, पाउ पाउ ए जानि ॥ १ ॥
चर सोंसज्जी सोंठि तज, अरु घुडबचको लाइ ।
यक यक देउ छटाँकसों, पुनि फिटकरी गनाइ ॥ २ ॥
काराजीरी फिटकरी, कुटकी बायविडंग ।
बीज कटैया मिर्च पुनि, अरु कालेश्वर संग ॥ ३ ॥
सोरठा—साँभरि सौंफ मँगाइ, आधे आधे पाव ये ।
लोटा सज्जी लाइ, इंदरजव गूगुर सहित ॥ १ ॥
खील सोहागा लाय, दुइ दुइ तोले तौलि सब ।
तोला हींग मिलाइ, पुनि अजवायानि पाव भरि ॥ २ ॥
धरिये बासन माहिं, सबै औषधी कूटिके ।
डारति तामें जाहि, गऊमूत्र मँगवाइके ॥ ३ ॥
भीजि औषधी जाइ, मोहरा देइ लिसाय तब ।
लीदि माहिं गडवाइ, खोलै चालिस दिन नहीं ॥ ४ ॥
फिरि लीजै निकसाइ, कीट परत हैं ताहिमें ।
लीजे ताहि सुखाइ, फिरि ताको धरि राखिये ॥ ५ ॥
दोइ टका भरि लाइ, हयको देउ नहार मुहँ ।
क्षुधा अधिक ह्वै जाइ, शालहोत्रमें है कह्यो ॥ ६ ॥
दोहा—गोहूँ आटा संगमें, चालिस रोज खवाइ ।
या औषधको दीजिये, जाडेकी ऋतु पाइ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षुधा बढै अरु बल बढै, मोटा होइ शरीर ।
चारि टका भारि दीजिये, हरै शूलकी पीर ॥ ४ ॥

अथ शूल कुरकुरीकी औटी ।

चौपाई—बायविडंग जवाइनि लावै । आधपाव दूनौं तौलावै ॥
कुकुरौंधेकी पाती लीजै । साँभरि नमक ताहिमें दीजै ॥
पाव एक दूनौं लै धरिये । पीसि कूटि जल मिलै पकैये ॥
नीर गरम जब जानौ भाई । पाव एक गुड मीठ मिलाई ॥
नारि भराय पिआय सु दीजै । मिटै कुरकुरी शूल हरीजै ॥

अन्य

चौ०—मूँगजूस सेर आधक लीजै।घुडबच दुइ तोला करि दीजै॥
एक छटाँक सहींजन छाली । जलमें पीसि देउ मुख घाली ॥

अन्य

चौ०—बडी हर्रकी बकली लावै । कटुक चिरैता पीसि मिलावै॥
रसके शिरकामें सनवाई । तीनों तीनि छटांक कराई ॥
पिंड बनाइ अश्वमुख नावै । शूल कुरकुरी नाश करावै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत मसालावर्णनो
नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ अग्निपुराणे अध्याय २९० अश्वशांति शालहोत्र उवाच ।

श्लोक—अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्दिनीम् ।
नित्यां नैमित्तिकीं काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरञ्च श्रियमुच्चैःश्रवाश्च तम् ।
इन्द्रराजं समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत् ॥
अश्वयुक्शुक्लपक्षस्य पञ्चदश्याञ्च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत् ॥
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४ ॥
घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान् दिक्षु दद्यात् सवस्त्रकान् ॥
यवाज्यं जुहुयात् प्राच्यं यजेदश्वांश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु ॥
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैर्विष्णुं श्रियं यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माणं शङ्करं सोममादित्यञ्च तथाश्विनौ ॥
रेवन्तमुच्चैःश्रवसं दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुम्भैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत् ॥
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान् देवतानां शतं शतम् ॥ ८ ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशांतिर्नाम नवत्यधिक-
द्विशततमोऽध्यायः ॥ २९० ॥

इति शालहोत्रसंग्रह समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण—मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी—मुंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहिरात.

	की० रु० आ०
अष्टांगहृदय–(वाग्भट) मूल मोटा अक्षर वाग्भट विरचित	२–८
अमृतसागर हिन्दी भाषामें	२–८
अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित	०–१०
अर्कप्रकाश भाषाटीका रावणकृत (सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया	०–१४
अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित.	८–०
आयुर्वेद सुषेण भा० टी०	०–१४
आदिशास्त्र भा० टी० सहित (कोकशास्त्र ...	०–१०
उपदंशतिमिर (गर्मी) नाशक भाषामें	०–३
कूटमुद्गराख्यसटीक	०–२
कूटमुद्गर भा० टी०	०–२
कुमारतंत्र रावणकृत भाषाटीका	०–८
चर्य्याचंद्रोदय भाषाटीका व्यंजन बनानेका ग्रंथ	१–८
चिकित्साधातुसार भाषा	०–५
चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग	४–०
ज्वरतिमिरनाशक भाषाटीका प्रकारके ज्वरोंकी अच्छी २ अनुभवी दवाओंका संग्रह	१–०
जर्राही प्रकाश–जर्राही (शस्त्रक्रिया) संबंधी सब प्रकारके विषयोंका वर्णन है.	१–८
डाक्टरी चिकित्सासार भाषा	०–१०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	की. रु. आ.
नपुंसकसंजीवनी प्रथम भाग....	.... ०–६
तथा दूसरा भाग....	.... ०–६
नपुंसकचिकित्सा भाषाटीका	.... ०–६
नाडीदर्पण नाडी देखनेमें अत्यंत उत्कृष्ट	.... ०–६
नाडीपरीक्षा भाषाटीका अतिसुलभ	.... ०–१॥
निदानदीपिका संस्कृत	.... १–८
पथ्यापथ्यभाषाटीका	.... ०–१२
पशुचिचिकित्सा अर्थात्–वृषकल्पद्रुम	.... १–०
पाकप्रदीक वाजीकरण भा०टी०	.... ०–८
पाकमाला बालबोधोदय भा०टी	.... ०–३
बालतंत्रभाषावार्तिक	.... ०–१४
बालसंजीवन (वार्तिकमें)	.... ०–८
बालबोधपाकावली....	.... ०–२
बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथम भाग	.... ३–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर द्वितीय भाग	.... ३–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर तृतीय भाग....	.... ३–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर चतुर्थ भाग....	.... २–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचम भाग	.... ६–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर छठा भाग	.... ४–८
बृहनिघंटुरत्नाकर संपूर्ण आठोंभाग	.... ३०–०
वोपदेवशतकवैद्यक भाषाटीका समेत	.... ०–६
भावप्रकाश भा०टी० अति उत्तम	.... ७–०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहिरात.

	की. रु. आ.
माधवनिदान-मधुकोष और आतंक-दर्पण संस्कृतटीकासमेत	३-०
मदनपालनिघंटु भाषाटीका ग्लेज	२-०
,, रफ	१-१२
हिकमतप्रकाश	१-४
माधवनिदान भाषाटीका उत्तम ग्लेज	२-०
माधवनिदान ,, रफ	१-८
मिजान तिब्ब सर्वांग चिकित्सा	२-०
योगतरङ्गिणी बहुतही उत्तम भा० टी०	२-०
योगचिन्तामणि भाषाटीका	१-४
रसराजमहोदधि दूसराभाग (उपरोक्त सर्वालंकारों समेत छपकर तैयार है)	०-१२
रसराज महोदधि तृतीय भाग	०-१[illegible]
रसराजमहोदधि चतुर्थ भाग....	०-१२
रसराजसुन्दर भाषाटीकासह....	३-४
रसमञ्जरी भाषाटीकासह	०-१४

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापखाना, कल्याण-मुंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शालहोत्र संग्रह

(चित्र दर्पण सहित)

1908

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

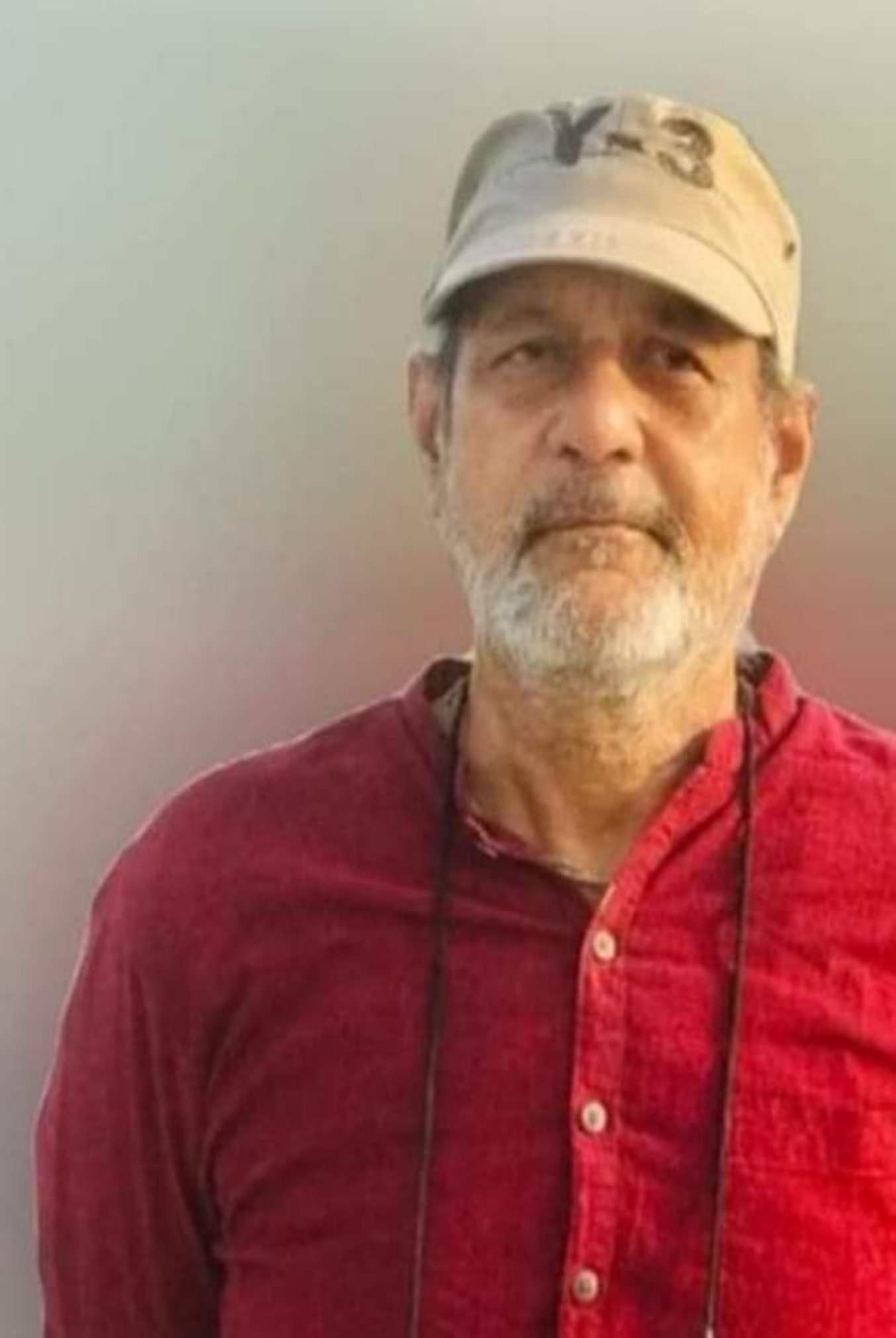
Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/ VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.